

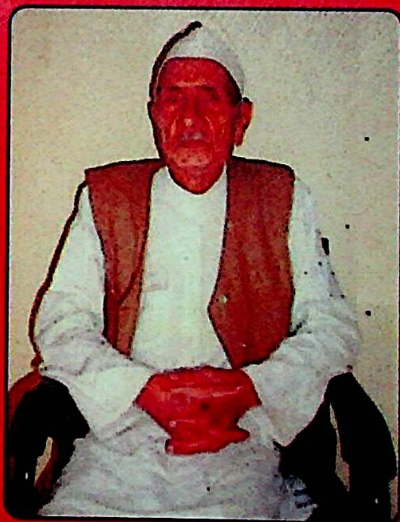
माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्याः

गुरु शिष्य परम्परा के संवाहक

आचार्य विद्यासागर दीक्षित जी

के जन्म शताब्दी वर्ष पर प्रकाशित

"आचार्य श्री-स्मृति ग्रंथ"



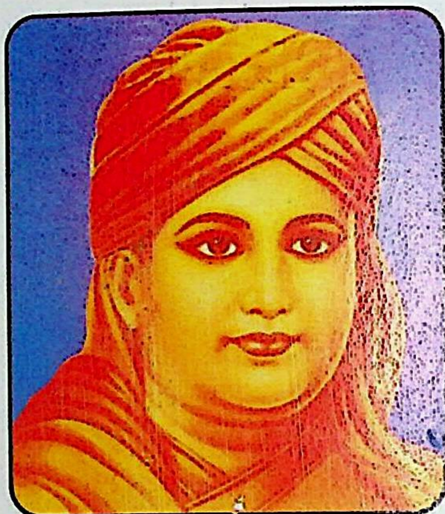
१९ जनवरी १९०७ — २८ जून २००६

विद्यायाः सागरो ह्येषः, ज्ञान-विज्ञान-सागरः।
दीक्षया दीक्षितो धीरो, यशसा द्युतिमान् धृती ॥

पद्मश्री डा० कपिल देव द्विवेदी

संयोजक

पाल प्रवीण



महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

सुजप्ता गायत्री सुरसरिति च स्नातमतल
मश्रृण्वं वेदान्तं कृतमिह च पूजार्चनमपि।
परं ते कल्याणी यतिवर! सुवाणी वितरति
यथोन्मेषं चित्ते तदिह न मया क्वाप्युपगतम्।।

बड़ी श्रद्धा से गायत्री जाप किया, गहरे गोते लगाकर गंगा स्नान किया मैंने, वेदों और उपनिषदों के प्रवचन सुने और मन लगाकर पूजा तथा अर्चना भी की। हे यतिवर! परन्तु तेरी कल्याणकारी वाणी जो स्फूर्ति और ताजगी वितरित करती है, वह मैंने अन्यत्र कहीं नहीं पायी।

आचार्य दीपंकर

पूज्य आचार्य श्री दीक्षित जी को आचार्य दीपंकर जी द्वारा रचित 'दयानन्द चरितम' काव्य अत्यधिक रुचिकर लगता था अतः अनेकों बार उसे पढ़ते व सुनते रहे।



गुरु शिष्य परम्परा के संवाहक

आचार्य विद्यासागर दीक्षित जी

के

जन्म शताब्दी वर्ष पर

प्रकाशित

आचार्य श्री–स्मृति ग्रंथ

संयोजक

पाल प्रवीण



विद्या सागर फाउण्डेशन

प्रकाशक : विद्यासागर फ़ाउण्डेशन
'योगाश्रम'
एम०एस० 120, सेक्टर-डी०
अलीगंज, लखनऊ (उ०प्र०)
मो. 9919238189

प्रकाशन वर्ष : जनवरी 2008

मुद्रक : "देव प्रिन्टर्स"
ताड़ीखाना, सीतापुर रोड
लखनऊ (उ०प्र०)
मो. 9415666915, 9839329396

चित्रांकन : कमलेश सिंह
अरविन्द सिंह
मनोज सिंह

सम्पादक मण्डल : पाल प्रवीण
श्रीमती कमलेश पाल
कौशल कुमार, बी०के० शर्मा

प्रेमोपहार

श्री/श्रीमती....स्नेहमयी बहिनजी मेधा देवीजी....
.............वाराणसी.............की प्रतिष्ठा में



कमलेश पाल पाल प्रवीण

विनीत (भेंटकर्ता)

महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती

के सहज अनुयायी महान राष्टभक्त शिक्षाविद्

आर्य समाज–आर्य वानप्रस्थाश्रम, हस्तिनापुर (मेरठ)

के संस्थापक

पूज्य आचार्य विद्या सागर दीक्षित जी

के



स्मृति चरणों में सादर समर्पित

पाल प्रवीण
कमलेश पाल



महात्मा नारायण स्वामी

कर्मयोगी, आर्यजगत के उज्ज्वल रत्न
हैदराबाद सत्याग्रह संग्राम के
प्रथम सर्वाधिकारी
नारायण स्वामी स्कूल
रामगढ़, नैनीताल के संस्थापक
एवं आचार्य विद्यासागर दीक्षित जी
के प्रेरणा स्रोत



स्वाँमी विद्यानन्द 'विदेह'

आचार्य जी के आध्यात्मिक गुरु
वेद संस्थान अजमेर, नई दिल्ली के संस्थापक
जिन्होंने आचार्य जी को वेद प्रचार करने हेतु
प्रेरित किया व जिनका साहित्य आचार्य जी के
वेद मन्दिर व पुस्तकालय हस्तिनापुर में सुरक्षित है।

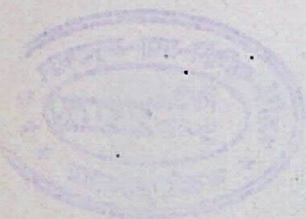


सोलह भाषाओं के ज्ञाता, श्रेष्ठकवि
ग्रन्थकार, गांधीवादी, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
श्री बसन्त सिंह "भृङ्ग"
जो आचार्य जी को सर्वश्रेष्ठ मानते थे
एवं आचार्य श्री स्मृति ग्रंथ के मूल प्रेरक



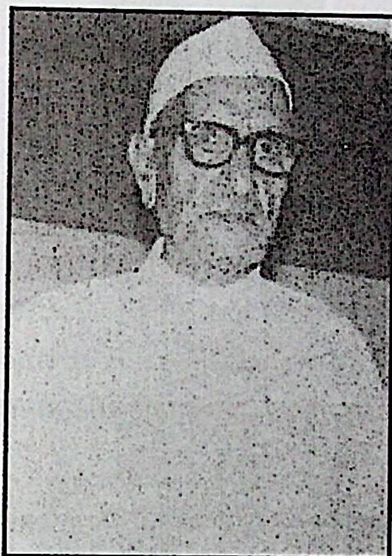
आचार्य जी
को
कोटि कोटि नमन

आचार्य श्री – स्मृति ग्रंथ





TRIBUTES





Lives of great men all remind us
we can make our lives sublime
and departing leave behind us
foot prints on the sand of time

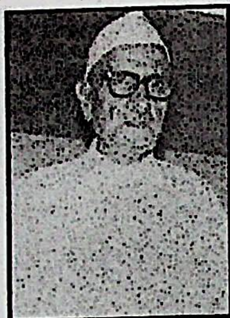
(H.W. Long Fellow)

Respected Acharya Sri Vidya Sagar Dikshit Ji
left ever lasting impressions on me and my wife Ruchira
when we met him at Hastinapur in July 1999.
Later on I was thrilled to recieve his beautiful Letter of Thanks.
I pay homage and tributes to his great soul.



15-11-07

Piyush Gupta
Singapore



"Books may teach us about science, maths history, philosophy But it is only a teacher like you who teaches us the wonderful lessons of life"

We are so happy
you were our Ideal Teacher

In Fond Rememberance :

Anand Prakash Goyal, Asha Ram 'Indu", Thakur Amar Pal Singh, Anand Prakash Rastogi, Yogendra Kumar "Lalla", Surendra Prakash Rastogi, Anurag Dublish, Santosh Pal Dublish, Vinay Pal Dublish ShubhKaran Jalan, Surendra Vir Rastogi, Chandra Mohan, Dr. Bhupendra Rastogi, Padam Rastogi, Gopal Dixit, Navneet Chandra, Sher Bahadur, Veer Sen, Ved Prakash Mittal, Upendra Kaushik, Surendra Kumar Gupta, Dinesh Mittal, Aditya Mittal, Avi Mittal, Dr. Mahendra Rastogi, Hitesh Dublish, Anurag Dublish, Bhuvnesh Chandra Gupta, Rakesh Chandra, Lokesh Chandra, Mahendra Kamil, Sushil Kamil & All old students scattered and different parts of India and out side our country

आर्य समाज आर्य वानप्रस्थाश्रम

हस्तिनापुर (मेरठ)

के

संस्थापक आचार्य श्री विद्यासागर दीक्षित जी

को कोटि कोटि नमन





डा० सुखबीर सिंह
प्रधान



जगदीश चन्द्र दीक्षित
सुपुत्र



श्रीमती सत्यबाला
साधिका

श्रवण कुमार, राधेश्याम यादव, कान्ती प्रसाद गुप्ता
अरण्य कुमार, पवन कुमार, श्रीमती राठी
श्रीमती प्रकाशवती, श्रीमती सरोज शर्मा, नेकराम यादव
श्रीमती अर्चना यादव, श्रीमती शीला शर्मा, तेजपाल सिंह
चौ० रणबीर सिंह, ड़ा तारासिंह, श्रीमती सर्वेश चौधरी
एवं आर्य समाज हस्तिनापुर के समस्त सदस्य एवं पदाधिकारीगण
एवं आश्रम निवासी



परम पूज्य गुरुजी (पिताजी) जिनके व्यक्तिगत पुरुषार्थ व दीक्षा से मेरा जीवन ही बदल गया व जिनके संरक्षण में रहकर मैं आर्य समाज, हस्तिनापुर से आर्य समाज राधेपुरी दिल्ली पहुंच गया व वेद प्रचार में जुट गया। पूज्य पिताजी को कोटि कोटि नमन

अवनीश शास्त्री
आर्य समाज राधेपुरी
दिल्ली



पूज्य आचार्य जी को हम कोटि कोटि नमन करते हैं।

महावीर सिंह आर्य, मेरठ, "बागेश्वर शास्त्री, मेरठ, पं० सोमदत्त शर्मा, नाटिंघम हिन्दू टैम्पल, नाटिंघम (यू.के.), आचार्य सालिगराम वेदालंकार, लखनऊ, श्रीमती शैला शर्मा एवं परिवार दयानन्द शर्मा एवं परिवार, गोपाल चन्द दीक्षित एवं परिवार, सुरेश चन्द्र दीक्षित, देहरादून, राजवीर सिंह धनपुर, सुश्री राजदुलारी व ऊधम सिंह, गुढ़ा



पूज्य आचार्य विद्यासागर दीक्षित जी
के मिशन को चलाते रहने हेतु हम संकल्प लेते हैं
एवं उन्हे कोटि कोटि नमन करते हैं

पं. चेतराम शर्मा, डा. मानवेन्द्र शर्मा, विद्यासागर जैन, ज्ञान पाल दुबलिश, बी.डी. रहेजा, कृष्ण कुमार नागर, अमर नाथ सिंह, भगवान शंकर त्रिवेदी, विनोद गोयल, डा. प्रभुदत्त शर्मा, बी.डी. शर्मा, अशोक शर्मा, सुशील कुमार रस्तोगी, एच.सी माथुर, भानुप्रताप, ब्रजपाल सिंह चौहान, जी.एल. मित्तल, जी.पी. शर्मा, महेन्द्र सिंह, नरेश चन्द्र रस्तोगी, ज्ञानचन्द्र रस्तोगी, नरेन्द्र कुमार गोयल, विर्द्याणव शर्मा (पुलिस विभाग), जगदीश त्यागी, हरिप्रकाश गोयल, हाकिम राय, श्री व श्रीमती नागिया, विमल चन्द ढाली, नरेन्द्र नाथ गुप्ता, श्रीमती शान्ती गुप्ता, पवन कुमार शर्मा, डा. यादव, गुरुचरण दास, प्रतीक मित्तल एवं मवाना के समस्त विद्यालयों के शिक्षकगण जिन्हें आचार्य जी के जीवन से सदैव प्रेरणा मिलती रही।



गुरु पूर्णिमा एक संकल्प दिवस

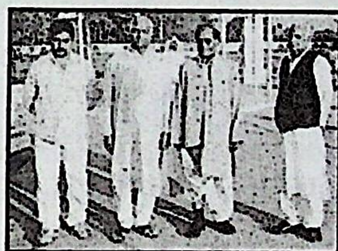
किसी किसी मोड़ पर आकर जीवन का प्रवाह थम सा जाता है। जीवन रुक रुक कर चलना शुरु हो जाता है आगे बढ़ने की शक्ति मानो खो बैठता है। तब मानव संकल्पों और विकल्पों के दोराहे पर आ खड़ा होता है। तब अनायास ही समय की धारा कुछ क्षण, कुछ घड़ियों या कुछ पल के लिये किसी भी दिन किसी वरदहस्त को प्रत्यक्ष ला खड़ा करती है, जो उसमें अदम्य साहस, अद्भुत स्फूर्ति अनिर्वचनीय दृढ़ता भर देती है। वह पावन क्षण, पवित्र घड़ियां लेकर आता है, गौरवान्वित गुरु पूर्णिमा का दिन वरदहस्त है सदगुरु का जो श्रद्धा और विश्वास की ज्योति जगाकर मानव जीवन को ज्ञान-युक्त कर चमत्कृत कर देता है।

पूज्य सुधांशु जी महाराज

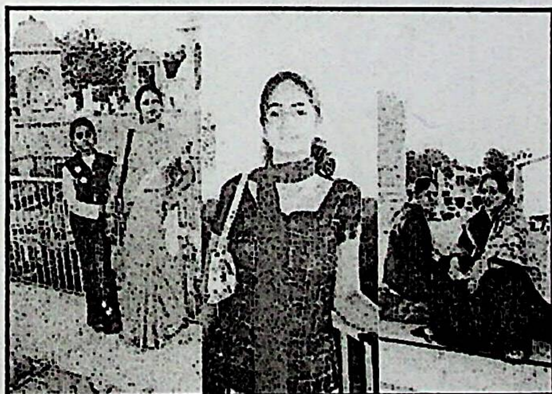
स्रोतः जीवन संचेतना साभार



आर्य्य लोकवार्ता लखनऊ परिवार के सदस्यो को आचार्य श्री दीक्षित जी के दर्शन करने का सौभाग्य दिनांक ३ दिसम्बर २००४ को प्राप्त हुआ



श्री अजय मिश्र, पाल प्रवीण,
डा० वेद प्रकाश आर्य, श्री वी० के० मिश्र, दिल्ली



कु० अनूषा, श्रीमती शशि, कु० निमिषा
श्रीमती सरला आर्या, श्रीमती मंजू मिश्र, दिल्ली

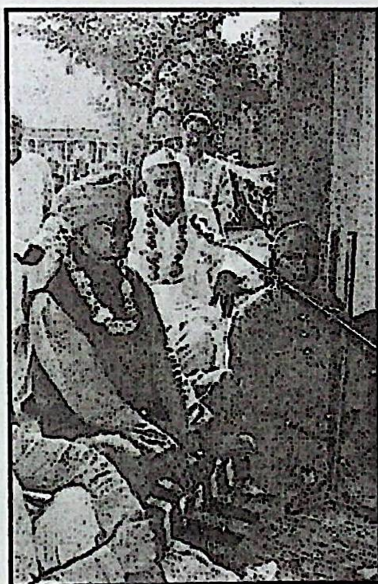
हम सभी पूज्य आचार्य जी को कोटि कोटि नमन करते है।



१३ मार्च २००१ में आर्य समाज मन्दिर में यज्ञ के उपरान्त आचार्य जी को समस्त उत्तरांचल मे निवास कर रहे उनके शिष्यों एवं छात्राओं की ओर से शॉल उढ़ाकर सम्मानित करती हुईं श्रीमती वीरबाला रस्तोगी एवं सुश्री राधा भट्ट (राधा बहिन) पाल प्रवीण



आचार्य जी के साथ डा० रमेश चन्द्र कर्नल पाल प्रमोद पाल प्रवीण एवं श्रीमती कमलेश पाल



आर्य समाज आर्य वानप्रस्थाश्रम हस्तिनापुर के दो दिवसीय वार्षिकोत्सव अक्टूबर ६६ पर लिये हुये चित्र स्वामी कर्मानन्द जी आचार्य दीक्षित जी यज्ञ वेदी पर यज्ञ करते हुये पीछे खड़े हैं श्री दिनेश जैमिनी



सहभोज में आचार्य जी सभी आमंत्रित वक्तागण धर्मप्रेमी सज्जनों व अपने भक्त श्री जयप्रकाश पाण्डेय वरिष्ठ पत्रकार, मवाना के साथ

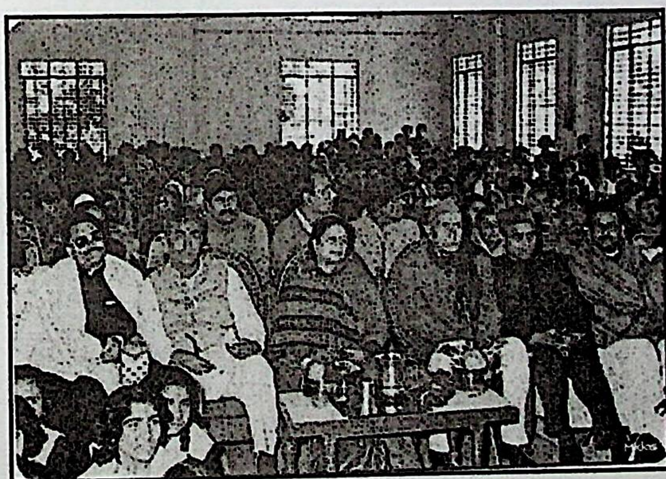


आर्य समाज आर्य वानप्रस्थाश्रम हस्तिनापुर के दो दिवसीय वार्षिकोत्सव (अक्टूबर १९९९) की पूर्णाहुति के बाद तत्कालीन उप जिला अधिकारी, मवाना को भविष्य की योजनायें समझाते हुये आचार्य दीक्षित जी एवं श्री वसन्त सिंह भृंङ्ग·
बीच में खड़े हैं श्री जगदीश चन्द्र दीक्षित
नीचे के चित्र में आचार्य जी उप जिलाधिकारी मवाना के साथ





आचार्य जी के साथ बैठे हैं पाल प्रवीण, शिवम एवं पीछे खड़े हैं पवन कुमार शर्मा, कपिल कुमार व विकास शर्मा



तत्कालीन मंत्री भारत सरकार श्रीमती मोहसिना किदवई के हस्तिनापुर आगमन व समारोह का चित्र जिसमें आचार्य जी भी विराजमान हैं

आचार्य श्री स्मृतिग्रंथ एवं विद्यासागर फाउण्डेशन के सहयोगी गण

पद्म श्री डा० कपिल देव द्विवेदी	श्री हरिनारायण सिंह
श्री जगदीश गांधी	श्री प्रहलाद सिंह मित्तल
डा० वेद प्रकाश आर्य	श्री बी० के० शर्मा
डा० वेद प्रकाश "वटुक"	श्री कौशल कुमार
न्याय मूर्ति करण लाल शर्मा	सुश्री राधा भट्ट
श्री रामनिवास विद्यार्थी	श्रीमती वीरबाला रस्तोगी
श्री द्वारिकाधीश तिवारी	श्री लालमणि जोशी
श्री आर० के० गोयल	डा० नरेश चन्द्रा
श्री भारत भूषण	श्री ज्ञानपाल दुबलिश
श्री आनन्द प्रकाश अग्रवाल	श्रीमती कमलेश पाल
श्री पीयूष गुप्ता	प्रो. जी.पी. शर्मा
श्री नारायण सिंह विष्ट	श्री देवीशंकर गुप्त
श्री शैलेश बिष्ट	श्री महेन्द्र सिंह
श्री कान्तेश चन्द्र गुप्ता	श्रीमती कैलाश सोनी
डा० अभय देव शर्मा	श्री वेद प्रकाश गर्ग
वैद्य राजेन्द्र प्रकाश	सुश्री (डा०) शक्ति साहनी
ए.वी.एम. सुरेन्द्र नाथ गोयल	श्री नरेन्द्र कुमार (एडवोकेट)
एअर कमोडोर अशोक कुमार	श्रीमती शैला शर्मा
कैप्टन पाल प्रदीप	श्री दयानन्द शर्मा
श्री कर्नल पाल प्रमोद	श्री गोपाल दीक्षित
श्री अशोक कुमार गुप्ता	डा० राजेश्वर शास्त्री
ब्रिगेडियर आर० के० गुप्ता	डा० अजय वीर गर्ग
विंग कमांण्डर कान्ती गुप्ता	श्री अभयवीर गर्ग
श्री जगदीश चन्द्र दीक्षित	श्री योगेन्द्र लल्ला
ठा० अमर पाल सिंह	श्री भानु प्रताप सिंह
श्री ओम प्रकाश शर्मा	श्री ब्रज पाल सिंह चौहान

विनय पीयूष



पल मधुमय हो, क्षण मधुमय हो!
मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः।
मधु द्यौरस्तु नः पिता।।
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः।

ऋ १/९०/७ व ८

पल मधुमय हो, क्षण मधुमय हो!
रात मधुर हो,
दिन मधुमय हो,
धरती का कण-कण
मधुमय हो!
हमको जगतपिता दिनकर की
जगमग किरण-किरण मधुमय हो!
वन मधुमय हो!
धन मधुमय हो!
प्राण मधुर हो,
तन मधुमय हो!
हमको मंगलमय दिनकर की
पावन किरण-किरण मधुमय हो!

काव्यानुवाद : अमृत खरे
लखनऊ

आचार्य श्री स्मृतिग्रंथ एवं विद्यासागर फाउण्डेशन के सहयोगी गण

श्री धर्मेन्द्र कुमार आर्य	श्री ब्रह्मभिक्षु, श्रीमती सुनीता गुप्ता
श्री नगेन्द्र सिंह आर्य	श्रीमती हेमलता दयाल श्री रवि दयाल
श्री एच. सी. माथुर	श्री प्रताप सिंह 'प्रताप भैया'
श्रीमती तारा शुक्ला	श्री अनूप टण्डन श्रीमती रेनू टण्डन
श्री प्रेमचन्द्र गुप्ता	श्री लक्ष्मण सिंह नेगी
श्री तुफैल अहमद	श्री जगदीश सिंह चौहान
श्री केहर सिंह	श्री नारायण सिंह ढैला
श्री जय प्रकाश पाण्डेय	श्री ज्ञान सिंह महरा
श्री इत्रपाल ढाका	श्री आनन्द गोयल
श्री नरेन्द्र सिंह चौधरी	श्री आनन्द प्रकाश रस्तोगी
श्री अरण्य कुमार	श्री अवि मित्तल
श्री पवन कुमार	श्री अरुण टांक
श्री नरेश चन्द्र अग्रवाल	डा० भूपेन्द्र रस्तोगी
श्रीमती विद्या अग्रवाल	श्री पद्म प्रकाश रस्तोगी
श्रीमती पाल प्रमिला	श्री विनीत मित्तल
श्रीमती प्रतिभा पाल	श्री मनोज प्रकाश
श्रीमती अरुषी मित्तल	श्री ओम प्रकाश गोयल
श्रीमती प्रणीता सिंघल	श्री जगदीश त्यागी
श्री लौकेश कुमार मित्तल	श्री हरि प्रकाश गोयल
श्रीमती प्रकाश अग्रवाल	श्री गुरुचरनदास गर्ग
श्री नवनीत चन्द्र, इं. प्रदीप कुमार	श्री भगवान शंकर त्रिवेदी
डा० सुखबीर सिंह, श्री. राधेश्याम यादव	श्री कृष्ण कुमार नागर
श्री अभिषेक गीतांजलि देविका	श्री रुकन सिंह
श्री ज्ञानेश्वर दास	श्री नरेन्द्र कुमार गोयल
श्री कान्तीप्रसाद गुप्ता	
श्री रामतीर्थ उपाध्याय	

श्री पाल प्रवीण
संयोजक

अनुक्रमणिका

प्रकाशकीय

मूल्याधारित आदर्शों को व्यावहारिक जीवन के आचरण में ढालकर समाज के सम्मुख उपस्थित करने वाले सशक्त उदाहरण थे आचार्य श्री विद्यासागर जी दीक्षित केवल नाम के नहीं यथार्थ में आचार्य।

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि के साक्षात् प्रतिरूप। किसी अनुचित बात के सामने दृढ़तापूर्वक अनम्य तो तर्कसंगत समाजोपयोगी किसी बाल प्रस्ताव को भी उदारतापूर्वक स्वीकार करने हेतु निःसंकोच सन्नद्ध।

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः" के आदर्श को साकार करते हुए वर्षों तक पक्षाघात से पीड़ित रोगशय्या रूढ़ा अपनी धर्मपत्नी की समस्त दैनिक क्रियाएँ स्वयं के हाथों से निरालस निष्ठापूर्वक सम्पन्न कीं।

विद्ययामृतमश्नुते का वह केवल पाठ ही नही पढ़ाते थे अपितु सम्पर्क में आने वाले जिज्ञासुओं को पात्रतानुसार ज्ञानार्जन कराते परामर्श प्रेरणा व सहयोग देते यथावश्यक सहायता व पथ प्रदर्शन करते।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् उनके समक्ष नारा मात्र नहीं वरन एक आन्दोलन एक कार्यक्रम जीवन ध्येय थाजिसकी पूर्ति हेतु नियमित पठन-पाठन यज्ञ-हवन सभा-सम्मेलन, विचार-विनिमय, पत्र-व्यवहार, पुस्तकालय व आर्य समाज भवन निर्माण उनके साकार स्मारक हैं।

'आचार्य श्री स्मृतिग्रन्थ' प्रकाशन कार्य में सहयोग का अवसर देकर विद्यासागर फाउण्डेशन ने जो मुझे उपकृत किया है वह मेरे लिये सन्तोष और सौभाग्य का विषय है। आचार्य श्री के प्रशंसक, प्रेमीं, भक्त व उनके प्रति निष्ठा व श्रद्धा से पूर्णतः ओतप्रोत मेरे परमादरणीय महाकवि बसन्त सिंह "भृंङ्ग" जी के संकेत तथा अग्रज तुल्य भाई पाल प्रवीण जी के आदेशानुसार अपनी अल्प सुविधा व सीमित क्षमताओं के अन्तर्गत किये गये इस श्रम से छात्रों, शिक्षकों, बुद्धिजीवियों, धार्मिक सामाजिक राजनैतिक व्यक्तित्वों तथा जनसामान्य को किंचित् भी लाभ पहुँच सका तो हमें तो कृतार्थता का अनुभव होगा ही, कथनी करनी की एकरूपता के अनुकरणीय उदाहरण स्व० आचार्य जी की आत्मा को भी अपूर्व शान्तिलाभ हो सकेगा। इसी आशा के साथ

सश्रद्ध - कौशल कुमार
सचिव विद्यासागर फाउण्डेशन

ग्राम बहजादका, पिलौना (मेरठ)
दूरभाष - ०१२३३-२७४३४१

प्रस्तावना

आशीर्वादों के पीयूषवर्षी मेघ

महा मनीषी आचार्य विद्यासागर दीक्षित–

किसी भी राष्ट्र के नवनिर्माण एवं स्थायी विकास की प्रणाली का नाम है 'शिक्षा'। युग-प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में ईश्वर चर्चा के पश्चात् जिस विषय का निरुपण किया है, वह शिक्षा ही है। इसे संयोग कहें या दुर्भाग्य कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सर्वाधिक उपेक्षा की शिकार भी शिक्षा ही हुई। स्वाधीन भारत के प्रथम शिक्षामंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद बनाये गये जो ऋषियों, मुनियों की उस विरासत क़ो संजोकर रखने में विफल सिद्ध हुए, जिससे चारित्र्य, नैतिकता, राष्ट्रप्रेम और सांस्कृतिक गौरव की समृद्धि सम्भव थी। राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोने वाली हिन्दी, विश्व की भाषाओं की जननी संस्कृत, अखिल विश्व को शान्ति और सन्तोष प्रदायिनी वैदिक विचार धारा कुछ इस कदर विस्मृत कर दी गई कि मां भारती के हृदय को सुशोभित करने वाली मणिमाला की लडियां ही बिखर गईं और भारत के अनेक भाग शनैः शनैः आतंक अराजकता और उच्छृंखलता की चपेट में आते गये। इस भयावह स्थिति का पूर्वानुमान करते हुए कतिपय वंदनीय महापुरुषों ने पतनोन्मुख वातावरण को सुव्यवस्थित बनाने का प्राणपण से प्रयास किया था; हस्तिनापुर के भग्नावशेषों से उठकर राष्ट्रिय क्षितिज पर छा जाने वाले ऐसे ही दिव्य पुरुष थे - आचार्य विद्या सागर दीक्षित।

देश के सांस्कृतिक वैभव को महिमा-मण्डित करने वाले, वेद उपनिषद् एवंदर्शन शास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान, बहुभाषाविज्ञ तथा महान संगठनकर्ता महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज की स्मृति को चिर स्थायी रखने के उद्देश्य से रामगढ़ (नैनीताल) में संस्थापित एक विद्यालय को सन १९४० में जब उपयुक्त प्रधानाचार्य की आवश्यकता हुई तो चयन समिति ने जिस उदीयमान नवयुवक का चयन किया, वे विद्यासागर दीक्षित जी थे। कई वर्षों तक पर्वतीय क्षेत्र को ज्योतिर्मान् करने के पश्चात् विद्यासागर जी गंगा के

मैदानी भागों मे उतर कर आ गये और अपनी जन्मभूमि के सन्निकट मवाना (मेरठ) में ए०एस० कालेज की कमान संभाली। थोड़े ही दिनों में दीक्षित जी की कीर्ति कौमुदी इस तरह प्रसरित हुई कि वे एक ओर शिक्षकों के सबसे बड़े संगठन 'माध्यमिक शिक्षक संघ' के शीर्ष स्थान पर आ विराजे, दूसरी ओर शिक्षक/स्नातक निर्वाचन क्षेत्र से विधान परिषद के सदस्य भी निर्वाचित हुए। श्रेष्ठ आचरण एवं असाधारण योग्यता के बलपर वे विद्यासागर से आचार्य विद्यासागर दीक्षित जाने लगे और उन्होंने अपने अनुयायियों, सहयोगियों की ऐसी कार्यकुशल एवं प्रवीण शिष्य मण्डली तैयार कर दी, जिसके द्वारा दिग्दिगन्त में उनके यशः सौरभ का प्रसार होने लगा।

कीर्ति के इस अविकल विस्तार से दीक्षित जी कभी भी अहं से अभिभूत नहीं हुए वरन् अपने मूल से जुड़ते गये। हस्तिनापुर में आर्य समाज मंदिर, आर्य वानप्रस्थाश्रम जैसी बहुविध लोकोपकारी संस्थाओं का सृजन एवं पोषण उनके द्वारा होता रहा। आचार्य जी के लोकोत्तर गुणों से आकृष्ट होकर जनवरी २००३ में आर्य्य लोकवार्ता ने आचार्य विद्यासागर दीक्षित विशेषांक का प्रकाशन कर उनके ९६वें जन्म दिवस पर अपने श्रद्धासुमन श्रीचरणो में अर्पित किये। जिनकी सुगन्ध आज भी वातावरण में महक रही है। ३ दिसम्बर २००४ को वह स्वर्णिम तिथि भी इन पंक्तियों के लेखक के जीवन में आई जब उसने स्वयं हस्तिनापुर के विद्यासागर सदन मे पहुंचकर जीवन के ९७ बसन्त देख चुकने वाले इस वयोवृद्ध महामनीषी के दर्शनों का लाभ तथा आशीर्वाद प्राप्त किया। आचार्य श्री के आशीर्वादों की वह बहुमूल्य सम्पदा आज भी अमोघ शक्ति के रूप में आर्य्यलोकवार्ता का मार्ग प्रशस्त कर रही है और भविष्य में भी करती रहेगी; इसमें अणु मात्र भी सन्देह नहीं है।

डा० वेद प्रकाश आर्य
प्रधान सम्पादक
आर्य्य लोकवार्ता

वेदाधिष्ठान
५३९क/२३४, हरीनगर
इन्दिरानगर, लखनऊ-२२६०१६

दो शब्द

यद्यपि आचार्य श्री विद्यासागर दीक्षित जी से मेरा व्यक्तिगत प्रत्यक्ष परिचय बहुत ही स्वल्प रहा तथापि स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी होने के नाते तथा मेरे अग्रज मास्टर सुन्दरलाल जी के समवयस्क तथा सहयोगी होने के कारण उनसे मेरा परोक्ष परिचय आत्मीय था। छठे दशक में जब मेरी पुस्तक "ऋचाओं की छाया में" काशी विश्व विद्यालय प्रकाशन वाराणसी से प्रकाशित हुई तब आचार्य श्री ने उक्त पुस्तक को अपने शिक्षण काल के पूर्व सहयोगी तथा आर्य समाज के मूर्धन्य विद्वान काशी निवासी आचार्य कपिल देव द्विवेदी जी को पत्र लिखकर आग्रह पूर्वक मंगवाई थी। यह उनका मेरे प्रति विशेष ममत्व का बोधक था। इस पुस्तक के प्रकाशन में तत्कालीन विधायिका कुमारी श्रद्धा देवी का उल्लेखनीय अहैतुकी योगदान था। उन्होने ही बाबू सम्पूर्णानंद तत्कालीन मुख्य मंत्री उत्तर प्रदेश से पुस्तक की प्रस्तावना भी लिखवाई थी। आचार्य श्री तथा बहिन श्रद्धाजी मेरे अग्रज तथा अग्रजा तुल्य होते हुए भी मेरे प्रति आदर और पूज्य भाव रखते थे। यह मेरा सौभाग्य था। मेरी सारस्वत साधना के प्रति उनके ममत्व और श्रद्धाभाव का हस्तिनापुर निवासी श्री बसन्त सिंह भृंङ्ग द्वारा (जो स्वयं भी उच्च कोटि के साहित्यकार तथा कवि हैं) यदा कदा परिचय मिलता रहता था।

मैं आर्य समाज हस्तिनापुर तथा आर्य वानप्रस्थाश्रम के संस्थापक कर्मण्य यशस्वी शिक्षाविद् स्वतन्त्रता संग्राम के अग्रिम पंक्ति के सेनानी श्रुति-सम्मत शतायु जीवन के सुयोग को प्राप्त करने वाले आदर्श आचार्य तथा शिक्षक "सा विद्या या विमुक्तये" तथा "त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्" को चरितार्थ करने वाले आचार्य श्री के लिये प्रभु की अमृतमयी गोद की कामना करता हुआ उन्हें विनत प्रणाम करता हूं।

रामनिवास विद्यार्थी
पूर्व अध्यापक
जागृति विहार
मेरठ

आभार

आचार्य श्री स्मृतिग्रंथ के लिए जिन विद्वानों ने संस्मरण, काव्य कुसुम, हृदयोद्गार, शुभकामना संदेश व धनराशि भेजने का अनुग्रह किया है मैं सर्व प्रथम उन सभी सज्जनों, महिलाओं का हृदय से आभार प्रकट करता हूं। "आचार्य श्री स्मृति ग्रंथ को सुन्दर व उपयोगी बनाने हेतु मैं कृतज्ञ हूं आदरणीय डा० वेदप्रकाश आर्य प्रधान सम्पादक आर्य्य लोकवार्ता लखनऊ का जिनकी महती कृपा व मार्गदर्शन से यह ग्रंथ तैयार हो पाया है। गत १० माह से हम निरन्तर डा० आर्य जी के सम्पर्क में रहे व उनके बहुमूल्य सुझावों को ध्यान में रखकर कार्य करते रहे। मैं सदैव आभारी रहूंगा अपने पूज्य चाचा जी आदरणीय श्री बसन्त सिंह "भृङ्ग" जी का जो मुझे इस दिशा में प्रेरणा लिखित रूप में व मिलने पर देते रहे।

मैं धन्यवाद देना चाहूंगा अपनी पत्नी कमलेश जी व पुत्र चि० अभिषेक, भाई समान मित्र श्री कौशल कुमार जी श्री देवी शंकर शास्त्री जी व आचार्य शालिगराम वेदालंकार को जिनके पूर्ण सहयोग के बिना यह स्मृतिग्रंथ इस रूप व आकार में प्रकाशित नहीं हो सकता था।

पूर्ण मनोयोग से सुरुचिपूर्ण मुद्रण हेतु देव प्रिन्टर्स, सीतापुर रोड, लखनऊ को हार्दिक धन्यवाद दिये बिना यह आभार प्रदर्शन अपूर्ण होगा।

इतने परिश्रम के उपरान्त भी स्मृति ग्रंथ के प्रकाशन में कहीं न कहीं त्रुटियों का रह जाना स्वाभाविक है। सुधी पाठकों से नम्र निवेदन है कि ऐसी असावधानियों को क्षमा करने की कृपा करें।

पाल प्रवीण
संयोजक
आचार्य विद्यासागर दीक्षित
जन्म शताब्दी समारोह समिति

योगाश्रम
एम०एस० १२०
सेक्टर-डी०, अलीगंज
लखनऊ (उ०प्र०)
मो.: ९९१९२३८१८९

दिनाँक १९ जनवरी २००८

शुभ कामनाएं
एवं
श्रद्धा सुमन



गुरु–शिष्य परम्परा

योगर्षि स्वामी रामदेव



गुरु और शिष्यों के बीच संबंध प्रगाढ़ गहरा होना चाहिये, तभी शिष्य अच्छी शिक्षा ग्रहण कर पायेंगे। अपनी माता का कर्ज़ उतारने के लिए पूरी ईमानदारी के साथ शिक्षक भी विद्यालयों में बच्चों को योग की शिक्षा दें क्योंकि वर्तमान समय में योग ही वह माध्यम है जिससे गुरु शिष्य के बीच पवित्र संबंध बन पायेगा। जीवन का निर्माण तो आचार्यों से ही होता है। बालक को माता पिता के कुल से हटाकर गुरु के कुल में भर्ती करा दिया जाता था। कुल का अर्थ है परिवार। बालक जहां रहे परिवार के वातावरण में रहे, यह इस पद्धति का आधारभूत सिद्धान्त था। गुरुकुल में बालक को ग्रहण करते हुए गुरु जनता के समक्ष घोषणा करता था कि वह बालक को अपने पास इस प्रकार रखेगा जैसे माता संतान को गर्भ में धारण करती है। गुरु और शिष्य का इतना निकट संबंध हो सकता है उसकी शिक्षाविदों ने कल्पना नहीं की होगी। आचार्य शब्द का अर्थ है जो विद्यार्थी को आचार सिखावे सदाचारी बनाये। आचार्य का काम अपने शिष्य को जहां शास्त्रों में निपुण करना था वहां उसे सदाचार की शिक्षा देना भी था।

मुझे यह ज्ञात कर प्रसन्नता है कि उपरोक्त सिद्धान्तों व परम्परा को जीवित रखने वाले एक महान शिक्षाविद, आदर्श शिक्षक, राष्ट्रभक्त, आचार्य श्री विद्यासागर दीक्षित जी की प्रतिष्ठा में उनके जन्म शताब्दी वर्ष में स्मृतिग्रंथ प्रकाशित किया जा रहा है।

मेरी समस्त शुभकामनाएं व आशीर्वाद आपके साथ हैं।

स्वामी राम देव
पतजंलि योगपीठ
दयानन्द ग्राम, बहादराबाद
हरिद्वार (उत्तरांचल)



जगदीश गांधी
संस्थापक/प्रबन्धक
सिटी माण्टेसरी स्कूल, लखनऊ

आदरणीय श्रीपाल,

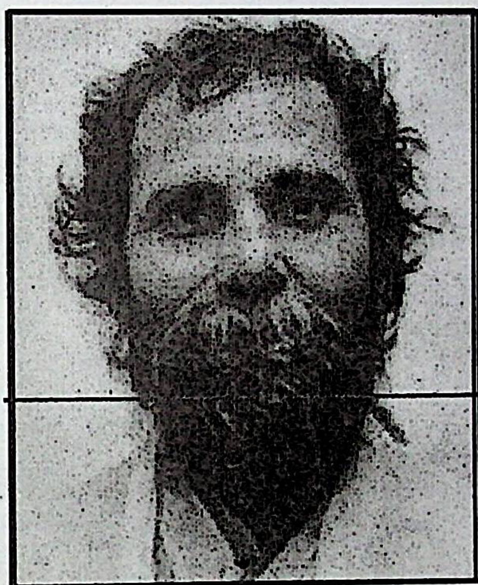
यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि सुविख्यात शिक्षाविद्, आदर्श शिक्षक, स्वतंत्रता–सेनानी आर्यसमाज एवं आर्य वानप्रस्थाश्रम, हस्तिनापुर (मेरठ) के संस्थापक आचार्य विद्यासागर दीक्षित के सम्मान में 'आर्यलोक वार्ता' के तत्वावधान में 'विद्यासागर फाउण्डेशन' के संयोजन से 'आचार्य श्री' विशेषांक/स्मृति ग्रन्थ का प्रकाशन किया जा रहा है। महान आत्मा आचार्य विद्यासागर दीक्षित विशेषांक/स्मृति ग्रन्थ के प्रकाशन के माध्यम से वैदिक विचारधारा को जन–जन तक पहुंचाने हेतु हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनायें स्वीकार करने की कृपा करें। युग प्रवर्तक महर्षि दयानंद सरस्वती का आध्यात्मिक ज्ञान युगों–युगों तक मानव जीवन के मार्ग को आलोकित करता रहेगा। 'आचार्य श्री' ने संस्कारों तथा वैदिक ज्ञान से ओतप्रोत शिक्षा के द्वारा संस्कारित बालकों के जीवन निर्माण का जो लक्ष्य हमारे समक्ष रखा है वह उनकी दिव्य दृष्टि का परिचायक है। विद्यालय को प्रकाश का केन्द्र बनाकर ही समाज को बचाया जा सकता है। 'आचार्य श्री' जन्मशताब्दी वर्ष में वृक्षारोपण, पर्यावरण गोष्ठियां, शिक्षक सम्मान, रक्तदान, मेधावी–निर्धन छात्र–छात्राओं को पारितोषिक–प्रोत्साहन जैसे कार्यक्रमों से वैदिक एवं आध्यात्मिक युग के निर्माण का मार्ग प्रशस्त होगा। आर्य्य लोक वार्ता सम्मान समारोह 14 अक्टूबर 2007 को सी0एम0एस0 गोमती नगर के प्रेक्षागृह में आयोजित करके आपने हमारा गौरव बढ़ाया है। मैं आचार्यश्री स्मृतिग्रंथ के प्रकाशन हेतु अपनी समस्त शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

सम्मान सहित,

भवनिष्ठ

जगदीश गांधी

संलग्नक : लेख व चित्र
श्री पाल प्रवीण संयोजक
योगाश्रम लखनऊ



आचार्य विद्यासागर दीक्षित जी को जनवरी २००१ में भव्य समारोह में सम्मानित करने वाले गुरुकुल प्रभात आश्रम टीकरी, मेरठ के कुलाध्यक्ष, आचार्य स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी हम सभी के लिए एक वरदान हैं। वे विद्वान हैं, योगी हैं, त्यागी है और तपस्वी हैं। ऐसे विवेक बुद्धि सम्पन्न व्यक्तियों से ही समाज समग्र प्रेरणा एवं नई दिशा प्राप्त करता रहा है।...

उन्हे कोटि कोटि नमन

संयोजक



धर्म प्रेमी श्री पाल प्रवीण जी!

आपका पत्र मिला। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप सुप्रसिद्ध श्री विद्यासागर दीक्षित जी का जन्म शताब्दी वर्ष के रूप में एक आयोजन कर रहे हैं। आचार्य जी जैसे उदात्त चरित्र वाले व्यक्ति के जीवन-चरित्र के परिचय से समाज को लाभ ही प्राप्त होगा। आप इस शुभ कार्य को सम्पन्न कराकर निश्चित ही जन जागरण का पवित्र कार्य करने जा रहे है।

परमात्मा आपको इसमें सफल बनाये। आयोजन की सफलता के लिए पुनः प्रभु से प्रार्थना।

आपका
स्वामी विवेकानन्द सरस्वती
(कुलाध्यक्ष)
गुरुकुल प्रभात आश्रम
भोला झाल, टीकरी, मेरठ (उ०प्र०)

आचार्य गुरु की प्राप्ति दुर्लभ होती है



ए.वी.एम.एस.एन. गोयल

आर्य्य लोकवार्ता प्रधान संपादक, डा० वेद प्रकाश आर्य जी, विद्यासागर फाउण्डेशन संरक्षक, नारायण सिंह बिष्ट जी व संयोजक पाल प्रवीण जी सहयोगी आदि को मैं नम्रता पूर्वक अपनी बधाई देना चाहता हूं कि आप सब को सुविख्यात आदर्श शिक्षक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी व आर्यवानप्रस्थाश्रम, हस्तिनापुर के संस्थापक आचार्य विद्यासागर दीक्षित जी की परम गुरु कृपा प्राप्त है। जीवेम शरदः शतम् को चरितार्थ करके उनकी महाआत्मा निर्वाण पद प्राप्त कर सभी को आशीर्वाद प्रदान कर रही है।

इसका महत्व अति विशेष है- आप धन्य हैं।

प्रेरणायुक्त सहयोगी

अवियोगी सुरेन्द्र नाथ गोयल
६६, पूर्वी मार्ग, बसन्त कुंज, नई दिल्ली

आनन्द प्रकाश अग्रवाल चन्दन कुँज, जी.९६/२
पूर्व महाप्रबन्धक यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया शास्त्री नगर
विशेष न्यायिक मजिस्ट्रेट, अध्यक्ष विश्व संवाद केन्द्र मेरठ

प्रिय श्री पाल प्रवीण जी,



सप्रेम नमस्कार,

आचार्य विद्यासागर दीक्षित महान शिक्षाविद्, आदर्श शिक्षक एवं स्वतन्त्रता सेनानी शतायु होकर ब्रह्मलीन हुये। वैदिक परम्पराओं के अनुरूप जीवन जीते हुये, 'आर्य वानप्रस्थाश्रम' हस्तिनापुर के संस्थापक आचार्य के रूप में जिन आदर्श मापदण्डों को प्रस्थापित किया है वे अनन्तकाल तक समाज का पथ प्रशस्त करते रहेंगे।

आचार्य दीक्षित जन्म शताब्दी वर्ष सानन्द सम्पन्न हो तथा "आचार्य श्री" विशेषांक में प्रकाशित विषय सामग्री मानव जाति के लिये कल्याणकारी हो, ऐसी प्रभु से कामना है।

सादर आपका आनन्द प्रकाश



अपने भोपाल प्रवास व योग-प्राणायम शिविर के समय २००४ में मुझे आचार्य विद्यासागर अंक व "युगबोध" विचार सरणी पुस्तिका प्राप्त हुई थी जिनके माध्यम से आचार्य श्री विद्यासागर दीक्षित के विषय में विस्तृत ज्ञान प्राप्त हुआ था।

मुझे यह ज्ञात कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि विद्यासागर फाउण्डेशन द्वारा पूज्य आचार्य जी की पावन स्मृति में "आचार्य श्री" स्मृतिग्रंथ का प्रकाशन हो रहा है। यह भी हर्ष का विषय है कि माननीय आचार्य जी की स्मृति को संजोये रखने हेतु वर्ष २००७ को जन्म शताब्दी वर्ष के रूप में मनाने का निश्चय किया है।

आचार्य श्री दीक्षित का जीवन प्रशंसनीय व अनुकरणीय रहा है। उन्होंने अपने जीवन में शिक्षा तथा वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार हेतु बहुत

काम किया है। मेरी शुभकामनाएं स्वीकार कीजिए।

आइए हम सब मिलकर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सच्चे सिपाही आचार्य विद्यासागर दीक्षित के स्वप्नों को साकार करने का संकल्प लें।

समस्त शुभ कामनाओं सहित!

योगाचार्य, सूर्यदेव आर्य

पतंजलि योग प्रशिक्षण समिति — आर्य सदन

जीन्द - हरियाणा — संगठन मंत्री

आचार्य विद्यासागर दीक्षित जन्मशताब्दी पर

गुणी च गुणरागी च विरलः सरलो जनः

मेधा देवी, प्राचार्या



गुणराशि मण्डित, त्रिभुवन श्रेष्ठ, 'पूज्य विद्यासागर दीक्षित जी' वह विरले तत्व हैं जो आज दिवंगत होकर भी जीवित ही हैं। चन्दन भी तो बार-बार घिसा जाने पर भी तद्वत् सुन्दर सुगन्धित बना रहता है उसकी सुगन्ध समाप्त नहीं होती, तथा ईख के दण्ड का माधुर्य भी कितना ही छीलें-चूसें पर वैसा ही स्वाद सर्वदा लगता है। स्वर्ण को भी कितना ही जलायें-तपायें वह वैसा ही कान्त वर्ण रहता है इसी प्रकार उत्तम उत्कृष्ट जनों की प्रकृति प्राणान्त होने पर भी विकृति को प्राप्त नहीं होती, वे तो वैसे ही जनमानस में छाये रहते हैं। उनका अस्तित्व समाप्त नहीं होता।

इसका ही प्रतिफल है कि २००७ को **'आचार्य दीक्षित जन्म शताब्दी वर्ष'** मनाने का निश्चय प्रशंसकों ने किया है और 'आचार्य श्री विशेषांक स्मृति ग्रंथ' प्रकाशित करने जा रहे हैं यह अत्युत्तम संकल्प है। इसके लिये संयोजक 'भ्राता श्री पाल प्रवीण जी' बधाई के पात्र हैं। वस्तुतः रेगिस्तान की राह में भटके हुए पथिक के लिये जैसे रेत पर बने हुए किन्हीं के पैर के निशान उस राहगीर के पथ प्रदर्शक बन जाते हैं वैसे ही अज्ञानान्धकार में भटकते हुए मानव के लिए महापुरुषों का जीवन चरित्र दीपक बन जाता है। वे जन भाग्यशाली हैं जो गुणों की दीप्ति से झिलमिलाते

हुऐ ऐसे दीपकों से अपने गृह को आलोकित रखते हैं। आज इन शब्दों से शत-शत श्रद्धांजलि पूज्य आचार्य प्रवर को हम अर्पित कर रहे हैं। अस्तु!

पाणिनि कन्या महाविद्यालय

वाराणसी (उ०प्र०)

o o o o o o o o o o o o o o o o o

परम पूज्य पिताजी के निधन से हम सभी दुखी हैं।

सिद्ध व महान पुरुषों के आसपास "औरा" जैसा प्रभा मण्डल हमेशा बना रहता है और उनके रहने के स्थान में जाने के बाद भी मुझे उस प्रभामण्डल का आशीर्वाद मिलता रहा है। उस महान आत्मा को और उस पवित्र स्थल को मेरा शत शत नमन और श्रद्धांजलि। अपना स्नेह और सम्मान व्यक्त करने के लिए मेरे पास भाषा के कोई शब्द नहीं है। आचार्य श्री/विशेषांक हेतु मैं अपनी शुभ कामनाएँ प्रेषित करती हूं।

ऊषा बहुखण्डी

६१, इन्द्रानगर देहरादून (उत्तरांचल)

o o o o o o o o o o o o o o o o o

ओ३म् आ नो भद्राः कृतवो यन्तु विश्वतः

Let noble thoughts come to us from all sides

नरेन्द्र सिंह चौधरी



मुझे यह जानकर बड़ा अच्छा लगा कि विद्यासागर फाउण्डेशन वैदिक विचार धारा के मूर्धन्य विद्वान स्व० आचार्य विद्यासागर दीक्षित की जन्म शताब्दी के अवसर पर विशेषांक निर्गत करने जा रहा है।

महापुरुषों के जीवन हम सभी के लिए एक प्रेरणा स्रोत हैं।

यत् यत् आचरति् श्रेष्ठः तत् तत् एवेतरो जनः ।
सः यत् प्रमाणम् करुते, लोकः तत् अनुवर्ततें ।।

आपका यह पुनीत कार्य निश्चय ही समाज कल्याण हेतु आपके अन्य अनेकों कार्यों में एक महात्वपूर्ण कड़ी है। आप साधुवाद के पात्र हैं और

इस पुनीत कार्य के लिए मेरी ओर से एवं स्वाध्याय मण्डल के सभी सदस्यों की ओर से पूर्ण शुभकामनाएँ।

पूर्व अधीक्षण अभियन्ता
संस्थापक अध्यक्ष स्वाध्याय मण्डल
ए-१६४, डिफेन्स कालोनी, मेरठ

० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

उ०प्र० माध्यमिक शिक्षक संघ, के संस्थापक अध्यक्ष, पूर्व विधायक सदस्य विधान परिषद, महान शिक्षाविद्, स्वतन्त्रता सेनानी परम सम्माननीय विद्यासागर दीक्षित जी के शैक्षिक सुधारों के प्रति दिखाये गये मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए उ०प्र० माध्यमिक शिक्षक संघ, दृढ़ संकल्पित है, तथा उनका ऋणी है। संगठन स्व० दीक्षित जी को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है। एवं उनकी प्रतिष्ठा में प्रकाशित होने वाले स्मृतिग्रंथ हेतु अपनी शुभ कामनाएँ प्रेषित करता है।

मन्त्री/अध्यक्ष
उ०प्र०मा० शिक्षक संघ
जनपद-मेरठ

डा० उमेश त्यागी
प्रान्तीय उपाध्यक्ष
उ०प्र० माध्यमिक शिक्षक संघ
162A, दारुलशफा, लखनऊ

० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

श्रद्धेय दीक्षित जी सच्चे व आदर्श आर्य समाजी थे। महर्षि दयानंद के संदेशों को प्रचारित एवं प्रसारित करने में अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। आर्य समाज हस्तिनापुर की स्थापना में उनका विशेष योगदान रहा। अनेकों आर्य समाजों को स्थापित करने में तन-मन-धन से सदैव सेवा करते रहे। अन्य कई संस्थाओं के संस्थापक व पदाधिकारी भी रहे। कुशल प्रशासक, प्रधानाचार्य, एवं शिक्षक विधायक रहे।

आचार्य श्री-स्मृति ग्रंथ हेतु हमारी शुभकामनाएँ स्वीकार करें।

नरेन्द्र कुमार एडवोकेट
प्रधान
आर्य समाज मवाना

नगेन्द्र सिंह आर्य
मंत्री

हमें यह कहते हुए गर्व है कि आदरणीय दीक्षित जी, उत्तर प्रदेश

माध्यमिक शिक्षक संघ के स्थापना वर्ष १९५६ में प्रदेशीय अध्यक्ष निर्वाचित हुए थे तथा १ जनवरी १९५७ की प्रथम निर्वाचित राज्य कार्यकारिणी की अध्यक्षता आपके द्वारा की गई थी जिसमे वेतन समानता की प्रमुख मांग से युक्त मांग-पत्र स्वीकार किया गया था।

श्री दीक्षित जी की अध्यक्षता में प्रारम्भ और स्थापित यह संगठन वेतन समानता के लक्ष्य को प्राप्त करके राष्ट्रिय वेतनमान का लक्ष्य प्राप्त कर चुका है तथा सेवा सुरक्षा की दृष्टि से भी उल्लेखनीय कीर्तिमान स्थापित हुए है। संस्थापक सदस्य और पदाधिकारी के रूप में उनकी अविस्मरणीय सेवाओं के प्रति हमारा संगठन सदैव श्री दीक्षित जी का आभारी रहा है। उनके अथक प्रयासों व प्रेरणाओं को हम कभी नहीं भूल सकते। उनकी प्रतिष्ठा में प्रकाशित होने वाले आचार्य श्री विशेषांक/स्मृतिग्रंथ के लिए हमारी शुभकामनाएं स्वीकार कीजिए।

मण्डलीय मंत्री
उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ
मेरठ मण्डल, मेरठ

o o o o o o o o o o o o o o o o

माननीय पूर्व प्रधानाचार्य एवम् महान स्वतन्त्रता सेनानी विद्यासागर दीक्षित जी भारतीय संस्कृति के महान उपासक एवम् अनुशासन प्रिय व्यक्ति थे उनका जीवन अनुकरणीय रहा है। आपकी मृत्यु से जो क्षति इस समाज एवं परिवार को हुई उसकी पूर्ति कभी भी नहीं की जा सकती है।

आदरणीय दीक्षित जी की प्रतिष्ठा में प्रकाशित होने वाले आचार्य श्री विशेषांक/स्मृति ग्रंथ के लिए महाविद्यालय परिवार अपनी समस्त शुभकामनाएं प्रेषित करता है।

डा० शक्ति साहनी
प्राचार्या
लक्ष्मी देवी आर्य कन्या डिग्री कालेज
मवाना (मेरठ)

राम कृष्ण यादव
प्रधान
नरेन्द्र कुमार एडवोकेट



आर्य उपप्रतिनिधि सभा जि. मेरठ-बागपत को यह ज्ञात कर हर्ष की अनुभूति हो रही है कि प्रख्यात शिक्षाविद् वैदिक विद्वान आर्य समाज आर्य वानप्रस्थाश्रम हस्तिनापुर के संस्थापक पूज्य आचार्य विद्यासागर दीक्षित जी की प्रतिष्ठा में विद्यासागर फाउण्डेशन के तत्वावधान में आचार्य श्री विशेषांक/स्मृतिग्रंथ प्रकाशित किया जा रहा है। कृपया हमारी शुभकामनाएं स्वीकार कीजिए। परम आदरणीय दीक्षित जी आर्य जगत् के महान स्तम्भ थे। वे सच्चे कर्मयोगी थे। वैदिक परम्परा के वास्तविक संवाहक थे। महर्षि दयानंद के सच्चे सिपाही थे वैदिक सिद्धान्तों एवं स्वामी दयानंद के सिद्धान्तों को प्रसारित करने में उनका योगदान भुलाया नहीं जा सकता। अनेकों आर्य समाज एवं प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारी रहे। हमें पूर्ण आशा है कि आदरणीय दीक्षित जी के समृतिग्रंथ में सम्मिलित पठन सामग्री व उनके अटूट सिद्धान्तों को पढ़कर पाठकगण लाभान्वित होंगे।

नगेन्द्र सिंह आर्य
संयोजक
आर्य उपप्रतिनिधि जिला सभा, मेरठ-बागपत

o o o o o o o o o o o o o o o o o



मुझे जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि श्री पाल प्रवीण जी स्वर्गीय श्री विद्या सागर दीक्षित प्रथम अध्यक्ष उ०प्र० मा० शिक्षक संघ की प्रतिष्ठा में स्मृतिग्रंथ प्रकाशित कर रहे हैं। यह एक स्तुत्य कार्य है। स्वर्गीय दीक्षित जी के सदगुणों के सम्बन्ध में जो कुछ मैंने सुना है वे एक आदर्श शिक्षक कुशल वक्ता तथा परम समाज सेवी व प्रेरणास्रोत थे। मैं श्रद्धेय दीक्षित जी को हार्दिक नमन करता हूं। मेरी शुभ कामना है कि दीक्षित जी के सम्बन्ध में जो स्मृतिग्रन्थ प्रकाशित किया जा रहा है वह समाज, शिक्षा, शिक्षक एवं छात्रों के लिये प्रेरणादायक रहेगा।

राम जपित सिंह
शिक्षक नेता
अवकाश प्राप्त प्रवक्ता
एस०के०पी०इ० कालिज
आजमगढ़ (उ०प्र०)



डा० वेद प्रकाश आर्य
प्रधान सम्पादक
आर्य्य लोक वार्ता

आत्मीय सुहृद् पाल प्रवीण जी,

आचार्य विद्यासागर दीक्षित जन्म शताब्दी समारोह समिति के तत्वावधान में प्रकाशित हो रहे 'आचार्य श्री स्मृति ग्रंथ' हेतु मैं निम्नांङ्कित काव्य पंक्तियों के माध्यम से अपनी भावनाएं प्रेषित कर रहा हूं।

परमात्मा आपके परिश्रम को सार्थकता प्रदान करें।

विद्या के मणिदीप राष्ट्र शिक्षा निर्माता,
नीति निपुण आचरण स्नात वैदिक उद्गाता।
शिक्षक संघ संगठित फहरी कीर्ति ध्वजाएं
शिष्य मण्डली गायन करती यश गाथाएं।
सद्गुण के प्रकाश से जग को किया उजागर
ईश्वर चन्द्र स्वरुप जयति जय विद्यासागर।।

'वेदाधिष्ठान' ५३६क/२३४
हरीनगर, पो. इन्दिरानगर
लखनऊ



डा० वेद प्रकाश 'वटुक'
निदेशक
फोकलोर इन्स्टीट्यूट
बर्कले कैलीफोर्निया

हृदयोद्‌गार

निस्पृही, साधुमना, निष्ठावान और विनम्रता की मूर्ति, गुरु श्रेष्ठ स्वतन्त्रता सेनानी और समाज के प्रकाश स्तम्भ महामानव आचार्य प्रवर श्री विद्यासागर दीक्षित जी की प्रतिष्ठा में प्रकाशित होने वाले आचार्य श्री स्मृतिग्रंथ हेतु मैं अपनी शुभकामनाए अपने निम्र हृदयोदगारों के साथ प्रेषित कर रहा हूं।

विद्या देती विनय विनय के सागर थे वे
विद्या करती मुक्त मुक्ति के आगर थे वे।
सागर थे वे गहन भरे अनन्त रत्नों से
जहां कहीं भी रहे घिरे लगते अपनो से।
ज्ञानी जिनका ज्ञान तमस में शुभ प्रकाश था
दानी जिनका दान दरिद्रता का विनाश था।
जिसके सिर पर रखा हाथ वह धन्य हो गया
छाया पा उनकी अनन्य सामान्य हो गया।
अपना था परिवार विश्व ही सारा उनका
लोहे को भी छुआ हो गया कोष स्वर्ण का।
दिव्य मूर्ति वे रहे हृदय में सदा प्रतिष्ठित
उनके पूत आप्त वचनों से हों हम दीक्षित।।

वेद प्रकाश 'वटुक'



"पृथ्वी को सदैव ही बृहत, सत्य, उग्रतप, ऋत, तेजस्विता, दीक्षा, तपस्या, तितिक्षा, ब्रह्मचर्य तथा यज्ञ कार्य ही धारण करते हैं।"

अथर्ववेद (१२-१-१)

आचार्य विद्यासागर दीक्षित जी में यह सारे गुण मानो मूर्तरूप हो उठे हैं, तथापि प्रचार के अभाव में कितने लोग आचार्य जी को जान सके हैं। ऐसे उदात्त व्यक्ति और उसके जीवन के अनेकानेक पक्षों पर आचार्यश्री- स्मृतिग्रंथ प्रकाश डालेगा, ऐसा मेरा मानना है।

डा० शांति देव बाला

लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ (अवकाश प्राप्त) रीडर राजनीतिशास्त्र

गुरु शिष्य परम्परा को जीवित रखने वाले
महान आचार्य श्री विद्यासागर दीक्षित



यद्यपि मैं श्रद्धेय गुरु जी से कभी नहीं मिल पाया परन्तु उनकी महानता का अनुमान मुझे फरवरी-मार्च ०३ से बराबर है जबसे मैंने आर्यलोकवार्ता द्वारा प्रकाशित आचार्य विद्या सागर अंक पढ़ा। यही नहीं पूज्यवर की प्रतिष्ठा में प्रकाशित हुए उन सभी पाठकों, बुद्धिजीवियों, वैदिक विद्वानों, आचार्य जी के शिष्यों सहयोगियों के हृदयोद्‌गारों लेखों को भी मैंने आर्यलोकवार्ता के विभिन्न अंको में पढ़ा। मुझे आश्चर्य भी है व हर्ष भी है यह देख सुनकर कि श्रद्धेय दीक्षित जी के उपासकों, शिष्यों व प्रशंसकों की एक लम्बी सूची है। पूज्य आचार्य जी के दो पट्‌ शिष्यों आदरणीय श्री पाल प्रवीण जी व कर्नल पाल प्रमोद जी को मैं कई वर्षों से (जब मैं ऋषिकेश में रहता था) जानता हूं। यह भी सत्य है कि गुरु की ऊंचाई उसके शिष्यों की सफलता व ऊचाई से नापी जाती थी। मैं यह कह सकता हूं कि आचार्य दीक्षित जी अवश्यमेव ही महान गुरु-सद्‌गुरु हैं। मुझे यह ज्ञात कर प्रसन्नता हो रही है कि विद्यासागर फउण्डेशन के तत्वावधान में पुनः आचार्य श्री विशेषांक स्मृति ग्रंथ प्रकाशित किया जा रहा है। कृपया मेरी हार्दिक बधाई व शुभ कामनाएँ स्वीकार कीजिए।

ज्ञानेश्वर दास

सिकन्दराबाद, आंध्र प्रदेश



आचार्य श्री विद्यासागर जी दीक्षित–एक परिचय

श्रीमती कमलेश पाल

आचार्य पं० विद्यासागर दीक्षित का जन्म ग्राम धनपुर (तौफापुर) मवाना तहसील, जनपद मेरठ उत्तर प्रदेश में १६ जनवरी १६०७ को हुआ था। आपके पिता पं० हरदेव सहाय व माता श्रीमती महादेवी ने आपकी प्रारम्भिक शिक्षा पर बहुत ध्यान दिया।

जन्मभूमि से ४ किलोमीटर दूर ए०एस० पाठशाला, मवाना में आपने शिक्षा ग्रहण की। १६२२ से १६२४ तक आप एंग्लो संस्कृत स्कूल, मवाना के छात्र रहे। १६३० में आपने स्नातक डिग्री प्राप्त की। किन्तु इसी बीच में १६३१ में महात्मा गांधी के आन्दोलन में आपने सक्रिय भाग लिया।

आपका विवाह श्रीमती विशम्भरी देवी के साथ २२ जून १६२२ में हुआ। आपके दो पुत्र व दो पुत्रियां है। ज्येष्ठ पुत्र श्री जगदीश चन्द्र दीक्षित आचार्य जी की निरन्तर सेवा करते रहे। आपने शिक्षा पूर्ण करने के साथ ही यह संकल्प लिया कि अपना व समाज का जीवन महात्मा गांधी के सिद्धान्तों के अनुरूप बनायेंगे। समाज सेवा करने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अपने अपने सभी शैक्षिक प्रमाण पत्र अग्नि में जला दिये तथा स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। मवाना के विख्यात क्रान्तिकारी (काकोरी कांड वाले) श्री विष्णु शरण दुबलिश जी से आप बहुत प्रभावित हुए। नमक आन्दोलन सत्याग्रह मेंखुलकर भाग लिया। १६३० में आप जेल भी गये। फैजाबाद जेल में मौलाना आजाद व अन्य अग्रणी नेताओं के साथ आप रहे। जेल से बाहर आने के बाद आपने निर्णय लिया कि समाज की सेवा अध्यापन के माध्यम से करेंगे। विद्याभवन उदयपुर, मेवाड़ से आपने अपना अध्यापन कार्य आरम्भ कर दिया। दिल्ली के रामजस हाईस्कूल में अध्यापन कार्य करने के बाद आपने १६३४-३५ में देवीजी मल्ल आशाराम इंगलिश स्कूल शिकारपुर बुलन्दशहर में प्रधानाचार्य के पद का कार्य भार संभाला।

टेहरी गढ़वाल के भूतपूर्व जज तथा 'फाउन्टेन हैड आफ रिलीजन्स' ग्रन्थ के रचयिता पं० गंगा प्रसाद उन दिनों रामगढ़, नैनीताल स्थित नारायण स्वामी जी के संन्यास आश्रम में रहते थे। उन्होंने तथा डॉ० इन्द्रसेन जो दिल्ली विश्वविद्यालय मे दर्शन शास्त्र के विभागाध्यक्ष थे, आचार्य दीक्षित जी को रामगढ़ बुला लिया तथा नारायण स्वामी स्कूल स्थापित करने का उत्तरदायित्व सौंपा। आचार्य जी ने अपनी निष्ठा, लगन व अथक परिश्रम से १६४० में थोड़े ही दिनों में उस संस्था को हाईस्कूल में परिणत कर दिया। उनकी सूझबूझ व नये नये रचनात्मक कार्य करने के फलस्वरूप तीन वर्षों में ही विद्यालय की दुमंजिली बिल्डिंग खड़ी हो गई। आप विद्यालय के शिक्षकों का चयन स्वयं करते थे, पं० कपिल देव द्विवेदी ऐसे ही योग्य शिक्षकों में से एक थे।

१६४७ से १६६६ तक आपने अपनी मातृसंस्था एंग्लो संस्कृत विद्यालय मवाना की तन मन धन से सेवा की। आप पहले इस संस्था के हैडमास्टर रहे तथाअपने अथक प्रयासों व अध्यापकों के सहयोग से इस संस्था को हाईस्कूल से इण्टर कालेज तक पहुंचाया। इसी विद्यालय के प्रधानाचार्य पद पर कार्य करते हुए १६६८ में एंग्लो संस्कृत डिग्री कालेज की स्थापना की जहां विज्ञान व अन्य विषयों की डिग्री कक्षायें चल रही हैं।

मातृ संस्था के पुरातन छात्रों की सूची, उनके पते व विवरण तैयार करके पत्रों के माध्यम से तथा स्वयं उनसे भेंट कर संस्था की बहुमुखी उन्नति हेतु सुझाव आमंत्रित किए व उनसे अधिक से अधिक दानराशि प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की। पुरातन छात्र सम्मेलन आयोजित कर सभी का सहयोग लेते रहे तथा ठोस व रचनात्मक सुझावों को कार्यरूप में परिणत करते रहे। मातृसंस्था की आर्थिक दशा सुधारने हेतु आचार्य जी ने छात्रों के पूर्ण सहयोग व श्रमदान से मवाना में मोटर स्टैण्ड के समीप मिली हुई भूमि पर १०-१२ दुकानें इतनी तीव्रगति से बनवाई कि इसे बहुत आश्चर्यजनक घटना माना गया।

आचार्य जी ने अपने सहयोगियों, शिक्षकों को अपनी टीम में इस प्रकार रखा व उन्हें विभिन्न उत्तरदायित्व दिये यथा वाद विवाद प्रतियोगिता, अन्त्याक्षरी, मुक्त्याक्षरी प्रतियोगिता, प्रार्थना सभा स्थल पर ही दैनिक प्रार्थना के उपरान्त छात्रों से वर्तनी पूछना, साधारण ज्ञान सिखाना, स्काउटिंग, बैण्ड बाजा लेजियम का अभ्यास, ड्रिल श्रमदान आदि।

आपने तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू तथा भारत सरकार के अन्य वरिष्ठ मंत्री श्री जयराम दास दौलत राम, उ.प्र. के पूर्व मुख्यमंत्री पं. गोविन्द बल्लभ पंत, डॉ. कैलाश नाथ काटजू, भारत सरकार के शिक्षविदों, वैज्ञानिकों को समय समय पर मवाना में आमंत्रित किया व उनके ज्ञान मार्गदर्शन व विचारों से सभी छात्रों, शिक्षकों व नागरिकों को लाभान्वित कराया। वैदिक विद्वान (वेदों का परवाना) स्वामी विद्यानन्द "विदेह" समय-समय पर और विशेष रूप से दीक्षान्त समारोह पर कई वर्ष तक मवाना में पधारते रहे व अपने प्रवचनों व आहवानों से छात्रों को उत्साहित करते रहे।

आप १९६२ से १९६८ के बीच अखिल भारतीय माध्यमिक शिक्षक संघ के कोषाध्यक्ष के रूप में कार्य करते रहे। उनके अनेकों सहयोगी, शिक्षक, शिक्षकनेता आज भी उनका गुणगान करते हैं। आचार्य जी के योगदान को आज भी शिक्षक वर्ग नहीं भूल पा रहा है जो उन्होंने उत्तर प्रदेश के माध्यमिक शिक्षक संघ के पुनर्गठन में व उसके सुदृढ़ीकरण में दिया था। प्रदेश के प्रत्येक जिले के विद्यालयों में गये, शिक्षकों की समस्याओं को सुना, वार्षिक अधिवेशनों में सारगर्भित व ओजस्वी नवजागृति उत्पन्न कर देने वाला अध्यक्षीय भाषण दिया। शिक्षकों के हितों के लिए जूझते रहे।

आप उत्तराखण्ड कुमाऊं से उत्तर प्रदेश विधान परिषद के लिए १९६२ में एम.एल.सी. चुने गये। इस अवधि में भी आचार्य जी समाज सेवा के अतिरिक्त शिक्षकों के सम्मान व उनकी समस्याओं के निराकरण हेतु परिषद में अपनी आवाज़ बुलन्द करते रहे।

आचार्य जी एंग्लो संस्कृत कालेज मवाना के प्रधानाचार्य पद से ६३ वर्ष की आयु में सेवानिवृत्त हुए। मवाना के कुछ नागरिकों ढिकौली ग्राम व आस पास के कुछ प्रतिष्ठित निवासियों विशेषतया डा० राजेश्वर शास्त्री ने आचार्य जी से आग्रह किया कि मवाना के तीन कोनों में इण्टर कालिज डिग्री कालिज कार्य कर रहे हैं एक कोना छूटा हुआ है अतः एक विद्यालय स्थापित किया जाय। आचार्य जी अनुरोध को अस्वीकार नहीं कर सके और इस दिशा में कार्य आरम्भ कर दिया। स्थान तालाशा गया एक कमरे का निर्माण कराया। उन्होने अपनी एक टीम बनाई। ए.एस. इण्टर कालेज मवाना से सेवानिवृत्त अध्यापकों यथा श्री शिवनारायण शर्मा, श्री नत्थूसिंह पाण्डेय व श्री दुर्गाप्रसाद के सहयोग से स्कूल की स्थापना दिसम्बर १९७० में की। अथक परिश्रम, लगन व सूझबूझ से डेढ़ वर्ष में स्कूल को हाई स्कूल की मान्यता दिला दी। छात्रों से प्राप्त फीस से जो धन प्राप्त होता था वह नगण्य था उससे केवल चाय ही पी जाती थी। सभी शिक्षक व प्रधानाचार्य अवैतनिक कार्य करते रहे। आज महाराणा प्रताप इण्टर कालिज को देखकर आचार्य जी की याद आ जाती है। ठोस रचनात्मक कार्य करने का ज्वलंत उदाहरण उन्होने एक बार फिर प्रस्तुत किया जो वास्तव में सभी के लिए अनुकरणीय है। इससे पूर्व १९६८ में एंग्लो संस्कृत डिग्री कालिज की मवाना में स्थापना करने के लिए विद्यालय की प्रबन्ध कमेटी के अध्यक्ष व मंत्री के विरोध करने पर भी अपने प्रयास तेज रखे। किसी बात से नाराज तत्कालीन उप कुलपति आगरा विश्वविद्यालय ने आचार्य जी को स्पष्ट कह दिया था कि वे ए.एस. डिग्री कालेज की अनुमति/मान्यता नहीं देंगे किन्तु आचार्य जी उनकी चुनौती को अनदेखा करते हुए तत्कालीन राज्यपाल से बराबर सम्पर्क कर सभी आपत्तियों का निराकरण करते रहे, वरिष्ठ अध्यापकों के सहयोग से वैज्ञानिक प्रयोगशाला व उपकरणों को जुटाते रहे तथा नागरिकों व ग्रामवासियों से दान राशि प्राप्त कर आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करते रहे और अन्ततोगत्वा डिग्री कालिज का उद्‌घाटन श्री ज्ञान प्रकाश आई.ए.एस., तत्कालीन जिलाधिकारी मेरठ के कर कमलों से सम्पन्न कराया। आज डिग्री कालिज की प्रगति देखते ही बनती है।

आचार्य जी स्वामी विद्यानन्द विदेह जी से १६४८-४६ से ही बहुत अधिक प्रभावित रहे बाद में उन्हें अपना आध्यात्मिक गुरु मान लिया। स्वामी जी के मार्गदर्शन में आपने प्रधानाचार्य पद से सेवानिवृत्त हो जाने के बाद मवाना बिजनौर हस्तिनापुर के आसपास वेदप्रचार कार्य आरम्भ कर दिया। वेदों का अध्ययन तो आचार्य जी ४०-५० वर्षों से कर रहे थे। वे अपनी धर्मपत्नी श्रीमती विशम्भरी देवी के साथ स्वामी विद्यानन्द विदेह जी द्वारा स्थापित वेद संस्थान राजौरी गार्डन नई दिल्ली के आश्रम में रहे तथा स्वाध्याय किया। कुछ माह विदुर कुटी आश्रम में रहने के बाद आचार्य जी ने अपना निवास हस्तिनापुर में बनाया।

हस्तिनापुर में आर्यसमाज व आर्य वानप्रस्थाश्रम की स्थापना २८ फरवरी १६६६ को हुई। संस्थापक, अध्यक्ष के पद पर आचार्य जी कई वर्षों तक रहे साथ ही साथ वे प्रत्येक कार्य चाहे किसी भी स्तर का हो, संदेशवाहक, उपदेशक, पुरोहित, कोषाध्यक्ष, के रूप में स्वयं निःसंकोच करते रहे। वे अपने को वैदिक प्रचार में व्यस्त रखते थे और उन कार्यों को करने में प्रसन्नता अनुभव करते थे। आचार्य जी ६६ वर्ष से भी अधिक होने पर भी अनेकों शिष्यों, सहयोगियों, शिक्षकों, बुद्धिजीवियों के प्रेरणास्रोत रहे है।

आचार्य जी ने गत १०-१५ वर्षों में विशेषतया १६६० व १६६६ के बीच अपने पुराने सहयोगियों (जो पूरे प्रदेश में विभिन्न स्थानों में निवास कर रहे हैं) एवं अपने पुराने शिष्यों से पत्र व्यवहार द्वारा सम्पर्क बनाये रखा। बहुत से पत्रों को पढ़ने के उपरान्त यह तथ्य उभर कर आता है कि आचार्य जी ज्ञान एवं विद्या के अथाह सागर थे। उनके पुराने शिष्य व सहयोगी उनके दर्शन करने दूर दूर से हस्तिनापुर आते रहे हैं।

आचार्य जी को स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, प्रधानाचार्य व सदस्य विधान परिषद की जो पेंशन भारत सरकार व उत्तर प्रदेश सरकार से प्रतिमाह प्राप्त होती थी तथा कुछ गुरुभक्त शिष्य जो कभी कभी गुरुदक्षिणा के रूप में धनराशि उन्हें अर्पित करते थे उसमें से एक बड़ी राशि आचार्य जी

आर्यसमाज व आर्य वानप्रस्थाश्रम हस्तिनापुर के विकास हेतु, अनेकों शिक्षण संस्थाओं को हस्तिनापुर या बाहर, प्रधान मंत्री के बाढ़पीढ़ित सहायता कोष में, भूकम्प पीड़ितों की सहायता हेतु व कुछ समाजसेवी संस्थाओं को भेजते थे।

आचार्य जी ने ६६ वर्ष से भी अधिक आयु तक जनकोलाहल से दूर हस्तिनापुर (मेरठ) में सादगी से एक तपस्वी के समान जीवन व्यतीत किया है। आपको देखने भर से यह प्रतीत होने लगता था कि वे दिव्यता, सौम्यता की मूर्ति हैं। सदैव प्रसन्न मुद्रा में रहते थे। वेद प्रचार में ही आपने अपना जीवन अर्पित कर दिया था। अपने व ऋषि मुनियों द्वारा स्थापित उच्चादर्शों पर अमल करते हुए आचार्य जी ने समाज के सम्मुख उदाहरण प्रस्तुत किया है। वे कर्मयोग, ज्ञानयोग व भक्तियोग की त्रिवेणी के संगम थे।

आचार्य जी कृत रचनाओं में विविध ज्ञान दर्शन कम्परेटिव ग्रामर व मौखिक गणित सीरिज प्रमुख हैं।

भारत विकास परिषद, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस समिति, लायन्स क्लब, मातृसंस्था ए.एस.इण्टर कालेज, डिग्री कालेज मवाना स्वतंत्रता संग्राम सेनानी परिषद, विभिन्न आर्य समाज, प्रभात गुरुकुल आश्रम टीकरी मेरठ व अन्य समाज सेवी संस्थाएं साहित्य समितियां आचार्य जी को सम्मानित करती रही। हस्तिनापुर नगर पंचायत प्रत्येक वर्ष आचार्य जी से ही १५ अगस्त व २६ जनवरी को ध्वजारोहण कराते थे। आचार्य जी अपनी प्रशंसा, प्रसिद्धि व गुणमान करवाना नहीं चाहते थे। उनके सम्मान प्रतिष्ठा में उनके कुछ पुराने शिष्य जो पुस्तिकाए तैयार करते रहते हैं उन्हे भी आचार्य जी यह कहकर व लिखकर मना करते थे मेरा जीवन इतना साधारण है जिसके लिए किसी भी प्रयास की आवश्यकता नहीं है। प्रकृति गुण दोष मय है। ऐसी कोई भी वस्तु नहीं जिसमें गुण ही गुण हों या दोष ही दोष हों। अतः जीवन के सभी पक्षों पर प्रकाश डालना सत्य की रक्षा करना है और एकांगी चित्रण करना असत्य है। ऐसे निस्पृह

समाजसेवी शिक्षाविद् वीतरागी आचार्य प्रवर को हम कभी नहीं भूल सकते गत १२-१३ वर्षों मेंमुझे परम श्रद्धेय आचार्य दीक्षित जी के दर्शन करने व उनके मार्ग दर्शन, विचार विमर्श के अवसर अनेकों बार मिलते रहे। हस्तिनापुर प्रवास के समय हम अधिक से अधिक उनके पास रहे यह हमारा सौभाग्य ही था व प्रभु कृपा। उन्होने मुझे भी कुछ पत्र सम्बोधित किए थे जिनसे मुझे असीम ज्ञान व धैर्य मिला।

पूज्य आचार्य जी के विषय में मेरी अपनी धारणा यह है कि वे स्वाध्याय शील व्यक्ति थे अतः उनमें महात्मा विदुर के अनुसार उनिद्र रोग के विकारों का प्रक्षालन हो जाने से वे वास्तविक सुख की नींद सोते थे।

महर्षि याज्यवल्क्य के अनुसार स्वाध्यायशील व्यक्ति आत्मनः परम चिकित्सक भवति होता है अर्थात वह अपनी चिकित्सा करना जान जाता है। कहते हैं कि स्वाध्यायशील व्यक्ति को ऐसा आराम प्राप्त होता है जो अद्वितीय है। स्वाध्याय श्रम से प्रज्ञावृद्धि हो जाने से सभी सिद्धियां आ विराजती हैं। इसके प्रत्यक्ष प्रमाण थे श्रद्धेय आचार्य श्री दीक्षित जी।

ऐसी पुण्य आत्मा को मैं कोटि कोटि नमन करती हूं।

कमलेश पाल
योगाश्रम
एस.एस. १२०, सेक्टर डी.
अलीगंज, लखनऊ



आचार्य जी अपनी धर्म पत्नि श्रीमती विशम्भरी देवी के साथ

गुरुवर को शत शत नमन



विश्व में सदा ही ऐसे युग पुरुषों की आवश्यकता रही है जो अपने कार्य-कलापों एवं व्यक्तित्व से समाज के प्रत्येक क्षेत्र का उत्थान करना ही दिन चर्या का अंग मानना जिनका उद्देश्य रहा हो। ऐसे महान गुणों से विभूषित है आचार्य श्री विद्यासागर दीक्षित जी।

अनेक शिक्षण संस्थानों की स्थापना करवाकर विभिन्न रचनात्मक कार्य चलवाते रहे जिससे विद्यार्थियों का चहुंमुखी विकास हो। नयी पीढ़ी को दया, त्याग, तपस्या एवं शान्ति का पाठ पढ़ाया जा सके।

भारत की स्वतंत्रता हो या आध्यात्मिक एवं सामाजिक उत्थान हो किसी भी क्षेत्र को अछूता नहीं छोड़ा हम उन्हे कर्मयोग, ज्ञानयोग एवं भक्तियोग की त्रिवेणी कह सकते हैं। इनके जीवन के सभी पक्षों पर प्रकाश डालना तो सूर्य को दीपक दिखाना है।

आचार्य दीक्षित जी का जन्म वर्ष शताब्दी समारोह का आयोजन विभिन्न स्थानों में हो रहा है, ज्ञातकर प्रसन्नता हुई। अभी कुछ दिन पूर्व लखनऊ में शिक्षक दिवस पर विद्यासागर फाउण्डेशन के तत्वावधान में यज्ञ के उपरान्त सात आदर्श शिक्षकों को सम्मानित किया गया। आचार्य स्मृतिग्रंथ के लिए मैं अपनी हार्दिक शुभ कामनाएं प्रेषित करती एवं आचार्य प्रवर को शत शत नमन।।

तारा शुक्ला
प्रवक्ता (अवकाश प्राप्त)
नवयुग कन्या महाविद्यालय
एम.एस.-३२, सेक्टर-डी.
अलीगंज, लखनऊ

१०.०६.०७

पूज्य आचार्य दीक्षित जी को नमन

धर्मेन्द्र आय



मेरे परम हितैषी व शुभचिन्तक आदरणीय पाल प्रवीण जी ने मुझसे दूरभाष पर कहा कि श्रद्धेय आचार्य विद्यासागर दीक्षित जी की जन्मशताब्दी के अवसर पर प्रकाशित हाने वाले स्मृति ग्रन्थ हेतु शब्द सुमनों की एक माला आचार्य प्रवर को अर्पित करुं। वस्तुतः आचार्य जी से मेरा व्यक्तिगत परिचय कभी नहीं रहा। सन १९६१ में मैं रायबरेली में अध्यापक नियुक्त हुआ व शिक्षक आन्दोलन के सम्बन्ध में लखनऊ गया था। वहां दीक्षित जी का ओजस्वी प्रभावशाली भाषण सुना था। नवयुवक होने के कारण मैं उनके बिल्कुल समीप जाकर बैठ गया। बड़े प्यार व स्नेह से उन्होंने मेरा परिचय पूछा। बात आई गई हो गई। बाद में आर्य्य लोकवार्ता द्वारा प्रकाशित आचार्य विद्यासागर अंक को पढ़कर ज्ञात हुआ कि वह व्यक्ति जिसके वक्तव्य ने मुझे प्रभावित किया था इतना बडा कर्मयोगी व स्वामी दयानन्द का सिपाही है। उनका भव्य व्यक्तित्व मधुर किन्तु ओजस्वी वाणी दमकता चेहरा व स्नेहमयी दृष्टि सभी मानस पटल पर आ रही है। उनके कार्य स्तुत्य व अनुकरणीय है। लम्बा जीवन उनकी सात्विकता व सरलता का द्योतक है। उन्होने पाल प्रवीण जैसे कई प्रवीण शिष्यों का निर्माण कर आर्य जगत की बडी सेवा की। भाई पाल प्रवीण व विद्यासागर फाउण्डेशन के अन्य सदस्य आचार्यश्री स्मृतिग्रंथ का प्रकाशन करके कुछ अंश तक गुरुऋण से उऋण हो जाएगें। मुझे पूर्ण आशा है कि विभिन्न संस्मरणों कविताओं व लेख आदि से स्मृतिग्रंथ बहुत आकर्षक बन जाएगा। ऐसे निस्पृह, वीतरागी, शिक्षाविद, कर्मयोगी, वेदानुरागी आचार्य प्रवर के चरणों में श्रद्धापूर्ण नमन व वन्दन।

धर्मेन्द्र आर्य
पूर्व प्रवक्ता प्रधानाचार्य
४४०, सत्यनगर, रायबरेली।
मो. ९४१५७४०१८९



सरोज आर्या
१८३, साकेत मेरठ

आदरणीय भाई पाल प्रवीण जी नमस्ते।

आपके भेजे हुए पत्र दि० २२.२.२००७ के द्वारा विदित हुआ कि आप परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर दीक्षित जी (हस्तिनापुर) की प्रतिष्ठा में स्मृति ग्रंथ "आचार्य श्री" विशेषांक प्रकाशित कर रहे हैं।

आचार्य जी का व्यक्तित्व महान था उनका जीवन त्यागमय था, वह विद्वान, धार्मिक, सदाचारी, सत्य, प्रेम, करुणा इत्यादि अनेक गुणों से विभूषित थे। वे अपनी इच्छाओं को सीमित रखते थे, वैदिक ग्रन्थों का उनका विशेष अध्ययन था, उनका जीवन परोपकार में अधिक व्यतीत होता था। आर्य समाज आर्यवानप्रस्थाश्रम हस्तिनापुर में उन्होंने स्थापित कर एक उदाहरण प्रस्तुत किया।

मुझे उनके दर्शनों का सौभाग्य गुरुकुल प्रभात आश्रम में भोला झाल मेरठ में हुआ था पश्चात उनके दर्शन मवाना में फरवरी ०३ में ए०एस० कालिज में आयोजित समारोह में हुए थे।

मैं आचार्यवर की प्रतिष्ठा में प्रकाशित होने वाले आचार्यश्री स्मृतिग्रंथ हेतु शुभ कामनायें एवं आचार्य जी के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं।

सरोज आर्या
भूतपूर्व प्रधाना
आर्य स्त्री समाज,
साकेत मेरठ

ओम प्रकाश शर्मा

नेता : शिक्षक दल
अध्यक्ष : उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ

सदस्य विधान सभा परिषद
लखनऊ

दिनांक : ६ जनवरी २००८



मेरे लिये अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि श्री विद्यासागर दीक्षित जी के जन्म शताब्दी वर्ष पर "आचार्यश्री-स्मृति ग्रंथ" का प्रकाशन होने जा रहा है। श्री दीक्षित जी से मेरा परिचय वर्ष १६५६ में हुआ, जब वह ए०एस० इंटर कालेज, मवाना के प्रधानाचार्य के पद पर कार्य कर रहे थे। उत्तर प्रदेश के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की सेवा दशाओं और उनके वेतन आदि में सुधार हेतु श्री दीक्षित उस समय प्रयत्नशील थे और शिक्षकों को संगठित करने में संलग्न थे। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ की स्थापना वर्ष में कानपुर के टाउन हाल में आयोजित प्रथम राज्य सम्मेलन में श्री दीक्षित जी अध्यक्ष निर्वाचित हुए। इस सम्मेलन में मैं स्वयं जनपद मेरठ के एक प्रतिनिधि के रुप में सम्मिलित था। आगे आने वाले अनेक वर्षों में श्री दीक्षित के नेतृत्व में प्रदेश के माध यमिक शिक्षकों ने अपनी सेवा दशा सुधारने और प्रबन्धकीय स्वेच्छाचारिता से मुक्ति पाने के अनेक संघर्षों में उत्साहपूर्वक भाग लिया। श्री दीक्षित एक ओजस्वी वक्ता और उत्कृष्ट कोटि के संगठनकर्ता सिद्ध हुए। अनेक वर्षों तक इस संगठन के अध्यक्ष रहे तथा इसी संगठन केअधिकृत प्रत्याशी के रुप में विधान परिषद उ०प्र० के सदस्य उत्तराखण्ड शिक्षक क्षेत्र से निर्वाचित हुए। विधान परिषद उ०प्र० के सदस्य के रुप में भी उन्होने शिक्षकों के संघर्षों को बल प्रदान किया और उनके नेतृत्व में यह संगठन उत्तरोत्तर विस्तृत होता गया। श्री दीक्षित का जीवन शिक्षा और समाज सेवा के प्रति समर्पित रहा। स्वाधीनता आन्दोलन में वह जेल गये तथा शिक्षक संगठन के आन्दोलनों में भी जेल जाने में कई बार अगुवाई करते रहे। ए०एस० इंटर कालेज मवाना जिसको उन्होने उत्कृष्ट कोटि का विद्यालय बनाने में अथक प्रयास किया उसी की प्रबन्ध समिति के शिक्षक विरोधी कार्यों के विरोध में

सत्याग्रही होकर विद्यालय के साथियों के साथ जेल जाने में उन्होने कोई संकोच नहीं किया और प्रबन्धक के भ्रष्टाचार को सेवा निवृत्त होने तक कभी सहन नहीं किया। श्री दीक्षित एक आदर्श शिक्षक और प्रशासक के रुप में सदैव जाने जाते रहे। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ के संस्थापक अध्यक्ष के रुप में तथा शिक्षक आन्दोलन के इतिहास में वह सदैव स्मरण किये जाते रहे हैं। उ०प्र० माध्यमिक शिक्षक संघ के कार्यकर्ता के नाते मुझे सदैव उनका स्नेह और आशीर्वाद प्राप्त हुआ है। उनकी स्मृति में इस ग्रन्थ के प्रकाशन के अवसर पर श्रृद्धावनत् होकर मैं उन्हे एक युग पुरुष के रुप में देखता हूं।

ग्रन्थ के प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाऐं समर्पित हैं।

ओम प्रकाश शर्मा

एक पुराना संस्मरण दुर्लभ चित्र



भूतपूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह के साथ खड़े हैं
पूज्य आचार्य दीक्षित जी श्रेष्ठ शिक्षक
श्री ज्ञान पाल दुबलिश श्री आर० सी० सिंह तत्कालीन
प्रधानाचार्य कृषक इण्टर कालेज, मवाना एवं शिक्षकगण व छात्र

आचार्य विद्यासागर दीक्षित जी को नमन

श्री पं. विद्यासागर दीक्षित से मैं एक-दो बार हीमिला हूं। पर वेद संस्थान से तो वे उसके जनवरी १६४८ में स्थापन से ही सस्नेह जुड़े रहे है। श्री स्वामी विद्यानन्द विदेह वेद संस्थान के संस्थापक ने वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश के पश्चात सर्वप्रथम जहां अपने वेदप्रवचन किए थे, वह मवाना कलां मेरठ में ए.एस.इण्टर कालेज ही था, जहां श्री दीक्षित जी प्राचार्य थे और श्री स्वामी जी के अनुज श्री सदानन्द आर्य प्राध्यापक थे। श्री दीक्षित जी का विद्या प्रेम और वेदनिष्ठा और साथ ही उनकी सादगी, सरलता, भोलापन उनके पावन, प्राञ्जल आत्मा का दर्पण है।उनका मैं हृदय से मान करता रहा हूं। उन जैसे महान पुरुष समाज को समीचीन दिशा बोध प्रदान किया करते हैं। ऐसा उनके जीवन से सदैव होता रहा है। यह उनके शिष्यों द्वारा उन्हे नाना विधियों से अपनी श्रद्धा अभिव्यक्त करने की ललक से स्पष्ट है।

पूज्य श्री विद्यासागर दीक्षित जी का लगभग शतायु होकर विदा हो जानां चित्त को सालता है। वह पवित्र आत्मा, विश्वात्मा, अन्तर्यामी के विधान से, शाश्वत शांन्ति, सनातन आनन्द के साथ मोक्ष लोक में सदा रहें यह भावना है। उनका नाम स्मरणमात्र चित्त को उनके प्रति श्रद्धा से मग्न कर देता रहा है आगे भी करेगा। जिनके व्यक्तित्व में विद्या का संस्कार रोम रोम में बसा हुआ था ऐसे महाभाग्यवान नरोत्तमों में उनकी गणना होगी।

पूज्य पं० विद्यासागर दीक्षित जी का शताब्दी वर्ष मनाया जा रहा है जो एक उत्तम संकल्प है। उनकी पावन स्मृति में प्रकाशित होने वाले आचार्यश्री स्मृतिग्रंथ के लिए मैं अपनी समस्त शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूं।

उन पावन आत्मा को मेरा सभक्तिक प्रणाम

डा० अभय देव शर्मा
अध्यक्ष वेद संस्थान
राजौरी गार्डन, नई दिल्ली

आचार्य विद्यासागर दीक्षित जी की स्मृति में



"बहुतों ने धन पाया चले गए
बहुतों ने बल पाया चले गये"

कालखण्ड ने उन्हे विस्मृति के गर्त में तिरोहित कर दिया, परन्तु मानवता की सेवा में जिन्होंनें अपना जीवन होम कर दिया वे अमर हो गए।

आचार्य श्री विद्या सागर दीक्षित जी एक ऐसी ही दिव्य विभूति थे जिन्होने अपनी विद्या और शिक्षा को सार्थक करते हुए अपना सम्पूर्ण जीवन लोक सेवा में अर्पण कर दिया।

आचार्य दीक्षित जी उच्च कोटि के शिक्षाविद् व आदर्श शिक्षक थे। ऐसी दिव्य आत्माएँ परमात्मा की कृपा से ही धराधाम पर अवतरित होती है और आनेवाली पीढ़ियों का मार्ग प्रशस्त करती हैं।

ऐसे महान आचार्य जी की पुण्यात्मा को कोटिशः हार्दिक नमन।

मैं आचार्य श्री स्मृतिग्रंथ हेतु अपनी शुभकामनाए प्रेषित करता हूं।

विदुषामनुचरः
डा० पूरन लाल वर्मा

अमरनाथ धाम, ४, अमर नाथ कालोनी
चार खम्भा, संजय नगर, बरेली (म०प्र०)

प्रख्यात शिक्षा शास्त्री -समाज सेवी
वैदिक विद्वान आचार्य विद्यासागर दीक्षित



मुझे यह ज्ञात कर अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है कि विद्यासागर फाउण्डेशन द्वारा पांच वर्ष उपरान्त पुनः आचार्य श्री स्मृतिग्रंथ प्रकाशित हो रहा है। मैने जनवरी २००३ में प्रकाशित आचार्य विद्यासागर अंक पढ़ा था व पूरे वर्ष ०३-०४ में आचार्य श्री विद्यासागर दीक्षित जी की प्रतिष्ठा में बहुत से पाठकों बुद्धिजीवियों के लेख प्रकाशित होते रहे। आचार्य जी के प्रशंसकों शिष्यों की इतनी बड़ी श्रृंखला है यह ज्ञात कर और भी

अधिक सन्तोष मिलता है।

आचार्य दीक्षित जी के तपस्वीजीवन और क्रियाकलापों व उनके उच्च आदर्शों उनके वेद प्रेम व राष्ट्र भक्ति के विषय में पढ़कर हमारे ज्ञान के क्षितिज का विस्तार तो होता ही है साथ ही उनके इतने अधिक प्रशंसकों शुभचिंतकों के विचारों से भी हम लाभान्वित होते है। मुझे पूर्ण आशा है कि आचार्य जी के जन्म शताब्दी वर्ष में आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों व आचार्य श्री विशेषांक/स्मृति ग्रंथ के माध्यम से समाज को एक नई दिशा मिलेगी। मैं अपनी समस्त शुभ कामनाएं प्रेषित करती हूं।

इन्द्रा शर्मा
बटलर पैलेस, लखनऊ

मनीषी, विद्वान शिक्षा शास्त्री आचार्य विद्यासागर दीक्षित

वेद प्रकाश गर्ग



विद्वत्ता की प्रतिमूर्ति आचार्य श्री दीक्षित जी के दर्शनों का सौभाग्य एक बार मुझे भी प्राप्त हुआ था। काफी समय पहले सन १९६० के लगभग प्रान्तीय माध्यमिक शिक्षक संघ का अधिवेशन मुजफ्फरनगर में हुआ था जिसकी अध्यक्षता पं. विद्यासागर दीक्षित जी ने की थी। उनका व्यक्तित्व आकर्षक एवं, प्रभावी था। अध्यक्ष पद से उनका दिया गया भाषण, तत्कालीन परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में ज्ञान का प्रतिरूप था। सभी ने उसकी सराहना की थी। भारतीय संस्कृति के आदर्श पुरुष आचार्य विद्यासागर दीक्षित का सारा जीवन ही अनुकरणीय तत्वों से परिपूरित है। ऐसे निष्ठावान सद्गुरु का अवतरण सौभाग्य से ही होता है। यद्यपि कर्मनिष्ठ आचार्य श्री दीक्षित जी का पार्थिव शरीर अब हमारे मध्य नहीं हैं किन्तु वे यशः शरीर से आज भी जीवित हैं वही हमारे लिए पथ प्रदर्शक सम्बल और पाथेय हैं।

आचार्य दीक्षित जी एक आदर्श शिक्षक एवं सद्गुरु रहे हैं। उनके अनेक शिष्य इस युग में "गुरु शिष्य परम्परा का जो आदर्श समाज के सम्मुख प्रस्तुत कर रहे हैं वह अनुकरणीय व वंदनीय है और विरल तो वह है ही। गुरु की सेवा केप्रति आचार्य जी के शिष्यों का यह समर्पित भाव अन्यतम है। अन्यथा आचार्य श्री के प्रति विशेषांक स्मृति ग्रंथ का प्रकाशन सच्ची श्रद्धा से कौन करता? आचार्य श्री दीक्षित जी का शताब्दी वर्ष मनाया जा रहा है यह ज्ञात कर भी मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है।

अतः मैं उन सभी शिष्यों, शिक्षकों, सहयोगियों, के प्रति श्रद्धावनत हूं। विद्या सागर फउण्डेशन के सदस्यों को मैं बधाई देता हूं व अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूं।

विद्यावाचस्पति वेद प्रकाश गर्ग
१४, खटिकान, मुजफ्फर नगर



आर्यसमाज व आर्य वानप्रस्थाश्रम हस्तिनापुर के संस्थापक, स्वतंत्रता सेनानी एवं वेदों के ज्ञाता आचार्य विद्यासागर दीक्षित जी के उच्च सिद्धान्तों व उनके जीवन की सादगी, वेद प्रचार तथा आदर्शों को दूर दूर तक पहुंचाने में हम सभी व उनके शिष्य प्रयासरत हैं। आचार्य श्री दीक्षित जी ने अपने अध्यापन कार्यकाल में प्रधानाचार्य पद पर कार्य करते हुए अनेक छात्रो छात्राओं व अपने सहयोगी शिक्षकों के जीवन में देशप्रेम की अग्नि प्रज्ज्वलित की व उन्हे एक आदर्श नागरिक बनाने हेतु सफल प्रयास किए। उनके अनेकों छात्र विदेशों में व अपने देश के विभिन्न स्थानो पर उच्च पदों पर पहुंचे कुछ सेना में कुछ वायुसेना में कुछ पुलिस में व बहुत से इंजीनियर व सफल चिकित्सक हैं। मैं आचार्य श्री विद्यासागर दीक्षित जी को नमन करती हूं।

श्रीमती शकुन्तला गोयल
पी.एल. शर्मा रोड
मेरठ उ.प्र.

(श्रीमती गोयल महान स्वतंत्रता सेनानी वैदिक विदुषी, मेरठ की गौरव महिला थीं) १६.११.०२

आचार्य विद्यासागर दीक्षित को नमन्

प्रहलाद सिंह मित्तल



भारत के महान सपूत आचार्य विद्यासागर दीक्षित से मिलने का मुझे कभी सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ पर उनके विद्यार्थियों और उनके संम्पर्क में आए अन्य व्यक्तियों की उनके प्रति व्यक्त भक्ति भावना, आदर और प्रेममय उद्‌गारों और उनके जीवन के विषय में पढ़कर, मन में एक ही विचार आया कि "गुरु हो तो ऐसा"। जनवरी २००३ में प्रकाशित आचार्य विद्यासागर अंक को पढ़ने के उपरांत जो इस महान व्यक्ति की झलक मिली तो उनके सभी छात्रों से कुछ छोटी सी ईर्ष्या की अनुभूति हुई काश! हमें भी कोई ऐसा गुरु कभी मिला होता। कैसा अद्‌भुत व्यक्ति है यह? कैसा है यह आचार्य जिसे उसके इतने सारे छात्र सहयोगी श्रद्धा और भक्ति के साथ स्मरण करते हैं अनेकों दशक बीत जाने के बाद भी? लगभग चालीस वर्ष पूर्व मैंने निम्न पंक्तियां लिखी थी जो आचार्य जी के जीवन चरित्र के संस्मरण के साथ एका-एक याद आ गई:-

उसी पवन में
एक नाव पूरब को जाती
दूजी जाती पश्चिम
पवन नहीं है दिशा निर्णायक
निर्णायक है पाल नियंत्रण।

आचार्य विद्यासागर दीक्षित जी कुशल नाविक थे, जिन्होने अपनी जीवन नय्या को संसार की नित बदलती हवाओं द्वारा कभी दिशा भ्रमित नहीं होने दिया, मन रूपी पाल का कुशल नियंत्रण कर उसे प्रज्ञता के गन्तव्य तक ले गए। साथ ही वे अनेकों को भी पाल नियंत्रण सिखा, उनको भटकने से बचने का कौशल सिखा गए। उनके इतने शिष्य सहयोगी आज के भ्रष्ट वातावरण में भी नैतिक एवं आदर्श जीवन जी रहे हैं यह उनकी ही देन है।

मैं चाहूंगा कि इस देश रत्न द्वारा लिखे सभी लेखों, पत्रों और प्रेरक-वाक्य पर्चियों का भी संकलन प्रकाशित किया जा सके तो अति उत्तम होगा। यद्यपि कार्य भागीरथ है, पर उनके शिष्यों के लिए असंभव नहीं लगता।

इस महान विभूति और आदर्श गुरु को नमन, शत-शत नमन।

पूर्व चीफ इलैक्ट्रिकल इंजीनियर (भारतीय रेल)
३४-ए, ज.ला.ने. मार्ग, टैगोर टाउन, इलाहाबाद-२११००२

आदर्श शिक्षक वेदों के प्रकाण्ड पंडित आचार्य विद्यासागर दीक्षित को नमन्

डा० कर्मवीर मित्तल



स्वर्गीय दीक्षित जी से मेरा व्यक्तिगत परिचय तो नाम मात्र ही था। सच तो यह है कि प्रिय पाल प्रवीणं द्वारा भेजे गये पत्रों से पहले मैं यही समझता था कि वे गुरु रहे हैं व उन पर अगाध भक्ति थी औरउनका प्रवीण पर अगाध प्रेम व आशीर्वाद। मेरी बहिन श्रीमती सत्यबाला जी लगभग २५ वर्षो से आर्य समाज आर्य वानप्रस्थाश्रम हस्तिनापुर में अपनी कुटियां बनाकर रही है जिस आश्रम की स्थापना पूज्य आचार्य विद्यासागर दीक्षित जी ने की थी। प्रवीण के अतिरिक्त मुझे अपनी दोनो बहिनों सत्यबाला जी व हेमलता दयाल से श्रद्धेय विद्यासागर दीक्षित जी के उज्ज्वल चरित्र समाज सेवा सत्यविद्या वेद का प्रचार व उनकी अनुशासन प्रियता के विषय मे ज्ञात होतारहा है। अचार्य जी का जन्म शताब्दी वर्ष २००७ मनाया जा रहा है व उनकी प्रतिष्ठा मे स्मृति ग्रंथ प्रकाशित हो रहा है ज्ञात कर मुझे प्रसन्नता हो रही है। मैं श्रद्धेय विद्यासागर दीक्षित जी जो एक उच्च कोटि के शिक्षाविद रहे हैं को नतमस्तक होकर नमन करता हूं व आचार्य श्री स्मृतिग्रंथ के लिए अपनी समस्त शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूं।

कर्मवीर मित्तल
सेवानिवृत्त विभागाध्यक्ष
रुड़की विश्वविद्यालय, रुड़की
७६/२, सिविल लाइन्स, रुड़की

R. K. Goel
I.A.S. (Retd.)
Retd. Commissioner, Meerut Division

Phone : 0121-2760612
B-39, Shastri Nagar,
MEERUT-250005

7 March 07.

I am happy to learn that Vidya Sagar Foundation is bringing out a souvenir on the Birth Centenary of Acharya Vidya Sagar Dixit Ji.

Around 1949-50, when I was posted as Sub Divisional Magistrate, Mawana, I had occasion to come into contact with Acharya Ji. I was highly impressed by his sincere and enlightened approach towards the alround improvement and betterment of his students. A respected educationist, teacher, thinker and scholar; an embodiment of simple living and high thinking.

Acharya Ji was held in high regard both by the teaching community and the local people. The large number of students who have excelled in different fields in life, bear testimony to his guidance and inspiration.

I am glad to be able to pay my tribute to Acharya Ji on the occasion of his birth centenary.

(R. K. Goel)

SOME WORDS FOR SHRI VIDYA SAGAR DIKSHIT JI, M.A., B.T.

I knew, Shri Dikshit Ji when he was Principal of N.S.S. High School, Ramgarh (N.T.) in forties. Though I had no schooling from this institution, I came to know much about shri Dikshit ji, by being a permanent resident of Ramgarh and my father's association with this institution. My father, Late Bachi Singh Pradhan, who was one of the founder members of this school and also Vice-President of the school committee, used to inspire us by telling great qualities of Dikshit Ji. He was a great administrator, a true teacher - "GURU" who had a dynamic personality and was, in real sense, highly dedicated to the cause of education. The people of Ramgarh and all his ex- students still remember him with great respect - infact adore him. They say that gone are the days of Dikshit Ji, when there was true education and great discipline in the school. Dikshit Ji evolved a new and noble system of promotion to weaker students by taking a vow of maintaining a clean-shaved head for a year. He called it a "Vrati system" to remind them that they have to study harder and harder to pass in good division in the next annual examination.

It was ill luck of Ramgarh people that Dikshit Ji's period of office was short and he had to leave this fast developing institution. But he left an abiding impression in the hearts of his students, the people of Ramgarh and all those who came in contact with him. Had he completed his full term in this institution, this school would have progressed beyond imagination.

I pray to God for giving a long life to GURU DIKSHIT JI and wish that good sense should prevail on Government to reward him by a National Award.

Date : 5.9.96

SOBAN SINGH DARAMWAL
EX-ADHYAKSHA, ZILA PARISHAD, NAINITAL

BOHRACOTE
RAMGARH (NAINITAL)



"GREAT GURU VIDYA SAGAR DIKSHIT JI"

Vijai Kumar Sharma

Dikshit ji certainly left his footmarks on the sands of time. A complex of educational Institutions at Mawana, Araya Samaj Mandir and Vanprasth Ashram at Hastinapur and the founding of U.P. Teachers Association are the Hallmarks of his social concerns and dedication.

As a freedom fighter he led a purposeful, disciplined and dedicated life. Work is worship was his Moto.

He was much concerned about ameleorating the economic and social status of the teaching community who were living a gloomy and bleak life during the middle of the previous century. He tried to awaken the sluggish conscience of the people and students to give due respect to their gurus.

He devoted his retired life to the multifarious activities of Arya Samaj. He worked to bring back the creative and dynamic spirit of the vedic ages and Swami Dayanand's great zeal to remove the dead wood of tradition, ritualism narrow-mindedness and orthodoxy. That spirit now seems to be lost in the gusty winds of politics.

Let his admirers continue his noble works. I pray to God for the success of Acharya Ji's Birth Centenary.

Vijai Kumar Sharma
292, Hastinapur, Meerut
Retired Teacher



NOSTALGIC MEMORIES
(By Air Commodore Ashok Kumar, IAF - Retd.)

Our revered Acharya Ji, Shri Vidya Sagar Dikshit has not only been a devoted academician, literarily a leading light but also an epitome of sincerity, love and affection for all those who came in contact with him. Unluckily for me he took over reins at A. S. High School, Mawana just after I had passed out from there in 1946. I was, therefore, not one of those privileged to be his student. Nontheless, I was aware that he always had a special corner for me in his heart and watched my activities wih keen interest. I vividly recall how so very excited he was on my selection for the Air Force and displaying his abundant generosity even hosted a farewel party when I left to join the service. This kind and thoughtful gesture was so deeply touching that I still cherish its memories. To give further vent to his joy he eventually provided a place of honour to my photograph in his office, for which I am ever so grateful to him. In order to illustrate his qualities I have an instance to relate. It was the summer of 1947 and I was at Bhowali (Nainital) for University Officers Training Corps (UOTC) Camp. We had gone on a Route March which entailed a night halt at Ramgarh High School where Dikshit Ji had been the Head Master before joining at Mawana. While talking to one of the local teachers I learnt that in those days Dikshit Ji was holidaying there with his family.

I was thrilled and decided to go and meet him. But when I went he was not at home. However, 'Tayee Ji' was there who fondly greeted me and instantly served refreshmet before allowing me to leave. Next morning I had a pleasant surprise in store for me. While we were preparing to depart, I suddenly found myself face to face with the towering figure of Acharya Ji, standing there with a broad smile. With all his affection he embraced me in a bear hug which for me was a highly rewarding experience.

Yes! Having learnt about my visit he had come to meet me with all his blessings and a basket full of garden fresh juicy apricots of his own orchard which he fondly distributed amongst us. Soon it was time for us to march off and we left with Dikshit ji standing in his white shawl like an angel, waiving, bidding au revoir. He remained there appearing to be a Guru in real sense until we were out of sight.

I am happy to learn that a Book Smrati Granth is being prepared in the honour of respected Acharya Ji, I also wish to express my feelings & reverence

Ashok Kumar
(Gurgaon)

REVERED GURU JI ACHARYA

Shri Vidya Sagar Dikshit
A Friend Philosopher & Guide
A Real Karmyogi

AN IDEAL TEACHER

We make our personality by the teachers. Zeal without knowledge is fire without light. Pupil without teachers is like day without sun.

On the eve of Teache's Day I pay my heart felt regards and respects to adorable Guruji Acharya Shri Vidyasagar Dikshit who was meany 100 years and was residing at HastinapurDistrict Meerut. UP. He left us all on 28th July 2006.

Respected Shri V.S. Dikshit after completing his education in 1930 had made social service as the object of his life. He burnt all his educational certificates and began to take active part in the struggle for Motherland's independence. He was imprisoned also by the Britishers. After his release he decided to serve the community through education and accordingly respected Dikshit Ji started his carrier of a teacher from Vidya Bhawan Udaipur, Mewar, Rajasthan. He remained Head Master of Narain Swamy School Ramgarh District Nainital and later on was Principal Anglo Sanskrit Inter College Mawana District Meerut for more than 23 years. While in Teaching profession he never had alignment to any political party. He had firm belief that Teaching (education) is the best medium for serving the community and it is dangerous for the country to make politics as a profession. Such were the views of respected Dikshit ji more than 75 years before which hold good even today. He was of the view that adopting politics by a teacher is the chief cause of degradation in the education system. Shri V. S. Dikshit remained Upadhyaksha, Kosha dhyaksha and Adhyaksha of Pradeshik Sangh of Madyamik Shiskhak Sangh. He also served as Kosha Adhaksha of Central madhyamik Shikshak Sangh. He was elected as Member of the legislative Council UP in may 1962-68

Respected Guruji shri V.S. Dikshit possessed a towering and magnetic personality. He was quite knowledgdeable. Knowledge

is power and Guruji its giver. He was an authority on Vedas. Ramayana & Gita He even at the age of 99 years was quite mentally alert, he had a sharp memory always imparting education on various subjets to his so many old students colleagues and intellectuals by sending long letters. He was very simple in living but he was always bubling with enthusiasm to bring social reforms in the society. I have always been praying to Guruji. "Let your benign wisdom dispell all darkness and lit up our path to knowledge. "What a wonderful world it would be if there were more and more teachers like respected 'Acharya Vidya Sagar Dikshit?

I bow my heed to his ideals and principles .

PAL PRAVIN
S-120, Sector-D
LUCKNOW

05-09-07



प्रस्तुति : आचार्य जयदत्त उप्रेती

विद्या सागर दीक्षितो
बुधवरैर्नित्यं सदाऽभ्यर्चितः।
विद्यावान् गुणवान् बुधो विमलधीर्मान्यो वदान्यो महान्।
शिक्षाविद् विनये नयेऽपि निपुणो देशस्य श्रेष्ठो गुरुर
वन्द्योऽसौ पुरुषोन कस्यवद सखे! सभ्याग्रगण्यः सुधीः।।
जयन्ति ते सुकृतिनः सन्मार्ग सन्दर्शकाः।
नास्ति येषां यशस्काये जरामरणजंभयमं।।

"स्वस्त्ययन"
तल्ला थपलिया
अल्मोड़ा (उत्तरांचल)

काल पुरुष श्रद्धेय विद्यासागर दीक्षित जी की कालजयी स्मृतियों को शत शत नमन



समाज का निर्माण एक अनवरत प्रक्रिया है जिसकी नींव में समाज के लिए सृजनात्मक, रचनात्मक, धनात्मक व सकारात्मक विचार पुञ्ज रखने वाले दूरदर्शी महापुरुषों के पत्थर लगे हैं। प्रत्येक काल में अपने दिन प्रतिदिन एवं पल प्रतिपल के जीवन मूल्यों से दिशा देने वाले मानवता प्रेमी सद्पुरुषों ने इस निर्माण को आगे बढ़ाया है। श्रद्धेय विद्यासागर दीक्षित जी ने एक इन्सान, विद्यार्थी, शिक्षक, प्रशासक, राजनेता एवं समाज की अग्रणी पंक्ति में खड़े लोगों में से एक होकर भी हमारे सनातन धर्म की उन गौरवशाली परम्पराओं का निर्वहन किया और हमें **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** और **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** के मार्ग पर चलने के लिए अपने जीवन दर्शन से अनेक प्रेरक प्रसंग प्रस्तुत किये। महान् व्यक्ति वह होता है जिसके सम्पर्क में आने वाला हर व्यक्ति अपने आपको बड़ा महसूस करे। एक आदर्श गुरु के रुप में पूज्य विद्यासागर दीक्षित जी ने सैकड़ों छात्रों को अपनी प्रेरक वैचारिक शक्ति से दीप्यमान कर दिया और एक कुशल कारीगर की तरह उन्हे अनुशासित, विचारवान, सुसभ्य और देश व समाज के लिए कुछ कर गुजरने की भावना से अभिसिंचित नागरिक बनाकर सही मायनों में मानव धर्म निभाकर दिखाया।

वर्तमान समय में जबकि समाज व्यक्तिकेन्द्रित ओर व्यक्ति आत्मकेन्द्रित होता जा रहा है समाज को सही दिशा में फलने फूलने के लिए आचार्य विद्यासागर जी जैसे कालपुरुष के जीवन दर्शन को आत्मसात करने की आवश्यकता है। उनकी स्मृतियां कालजयी हैं जो चिरन्तन काल तक 'अच्छा समाज' अच्छे लोग अच्छे व्यवहार अच्छी वाणी अच्छी जागरूकता और कर्तव्यों के प्रति अच्छी समझ विकसित करने के लिए पूज्य विद्यासागर जी का सौम्य, सुशील धीर-गम्भीर व तेजस्वी चेहरा हमारे स्मृति पटल पर उकेरित करता रहेगा।

डा० नरेश चन्द्रा
पूर्व अध्यक्ष नगर पालिका परिषद, मवाना (मेरठ)

विद्या के लिए समर्पित व्यक्तित्व

आचार्य विद्या सागर दीक्षित जी को नमन

डा० श्रीमती मनोरमा तिवारी



मेरे आदरणीय गुरु पद्मश्री डा० कपिल देव द्विवेदी जी को नमन करती हुई उनके परम आदरणीय वरिष्ठ सहयोगी व मार्गदर्शक प्रातः स्मरणीय आचार्य विद्या सागर दीक्षित जी के प्रति श्रद्धावनत होती हुई उन्हे कोटि कोटि नमन व निम्न हृदोयद्गार अर्पितं करती हूँ:

तुम वन्दनीय तुम अतुलनीय
तुम ममता के आगार विभु।
मैं नत मस्तक हूं नमन करूँ।
प्रभु दो अनन्त वरदानम मुझे।।
परमाराध्या महाशक्ति तुम
युग युग की एक विभूति हो
नत मस्तक हो आज सभी नमन तुम्हें हम करते हैं।।
गुरुं गुरूणां प्रभुं प्रभूणाम्
आराधनीयम् च
नमामि शिरसा नतमस्तकाहं
नतमस्तकाऽहं, शिरसा नमामि।।

श्रीमती मनोरमा तिवारी
पूर्व प्राचार्या
महिला डिग्री कालिज, लखनऊ
एम.एस.७७, सैक्टर-डी., अलीगंज
लखनऊ

आचार्य श्री दीक्षित आदर्श शिक्षक वेदों के मर्मज्ञ स्वतन्त्रता सेनानी

दलवीर सिंह राघव



यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे जनवरी २००३ में प्रकाशित "आचार्य विद्यासार अंक" व अन्य पठन सामग्री श्री पाल प्रवीण से गत ३ वर्षों में मिलती रही जिसके माध्यम से मैं श्रद्धेय आचार्य विद्या सागर दीक्षित जी के अनेकों गुणों व उनके विशाल व्यक्तित्व के विषय में जान पाया। गत २५-३० वर्षों से शिक्षा के स्तर में निरन्तर ह्रास हो रहा है। विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक अपने दायित्वों से दूर हो रहे हैं-विद्यार्थी भी शिक्षा ग्रहण नहीं करना चाहते हैं। शिक्षा का राजनीतिकरण होता जा रहा है। आचार्य विद्या सागर दीक्षित जी के उज्ज्वल चरित्र, उनके क्रियाकलापों को पढ़कर व उनके विषय में सुनकर मुझे अपनी बाल्यावस्था व छात्र जीवन के पुराने संस्मरण याद आ रहे हैं जब मेरे श्रेष्ठ गुरु व विभिन्न विषयों के शिक्षक हमें दक्ष करने का प्रयास करते थे। मैं भी प्रारम्भ से ही शिक्षा के क्षेत्र से जुड़ा हुआ हूं। मुझे यह ज्ञात कर प्रसन्नता हो रही है कि श्रद्धेय दीक्षित जी की स्मृति में "आचार्य श्री विशेषांक" प्रकाशित किया जा रहा है। आचार्य जी के जन्मशताब्दी वर्ष में जहां विभिन्न स्थानों पर उनके शिष्यों व प्रशंसकों ने आदर्श शिक्षक सम्मान पर्यावरण गोष्ठी, योग प्राणायाम शिविर आदि आयोजित करने का निश्चय किया है,हमने भी इस दिशा में पहल की है। अभी कुछ दिन पूर्व ३ जून २००७ को **"विद्यासागर फाउण्डेशन" आर्य लोकवार्ता** व डी०ए०वी० विद्यालय, भोपाल के संयुक्त तत्वावधान में आर्य समाज तांत्या टोपे नगर, भोपाल में साप्ताहिक यज्ञ के तुरन्त उपरान्त **"पर्यावरण गोष्ठी"** आयोजित की गई। इस गोष्ठी में शिक्षा विदों, पर्यावरण विशेषज्ञों एवं समाज सेवी संस्थाओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया। कुछ पठन सामग्री (पैम्फलैट्स) वितरित की। आचार्य श्री विद्या सागर दीक्षित जी के अमृत वचनों विचारों जो पर्यावरण पर आधारित थे उन्हें भी सभी के सम्मुख प्रस्तुत किया गया। ऐसे उच्च कोटि के शिक्षा शास्त्री, आदर्श गुरु को मैं नमन् करता हूं।

प्रधान

भोपाल (म०प्र०) मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

निष्काम सेवा, जिनके जीवन का उद्देश्य था

कृष्णचन्द्र शर्मा



तन समर्पित, मन समर्पित और यह जीवन समर्पित!
चाहता हूं देश की धरती तुझे कुछ दे सकूँ मैं।

कवि की भाव पूर्ण पंक्तियां आचार्य विद्यासागर जी दीक्षित पर सटीक बैठती है उन्होंने अपनी दिनचर्या के साथ परोपकार का शुचिता पूर्ण आदर्श जोड़ रखा था। स्वयं के जीवन के बारे में आप कहा करते थे इदं राष्ट्राय-इदन्नमम्। अर्थात यह राष्ट्र के लिए है। अपने शिष्यों के साथ वात्सल्य पूर्ण व्यवहार जीवन के अनुभवों को अपने शिष्यों में सहजता के साथ उँडेल देना समाज के विकास में सतत् योगदान, वैदिक विचारधारा से जनमानस को परिचित्त कराना नैतिकता का पाठ पढ़ाना आचार्य जी की अपनी विशेषता रहीं। आचार्य जी अपनी सहज एवं निश्छल नीतियों एवं निष्काम सेवा भावना के कारण अपने राजनैतिक जीवन के क्षितिज पर भास्कर की भांति चमकते रहे। आचार्य श्री की मानवता की सेवा ने उन्हें जन-जन का प्रिय बना दिया। समदर्शिता का भाव अपने पराये की भावना से कोसों दूर वसुधैव कुटुम्बकम् के आदर्श को जीवन में जीने वाले उस परमयोगी आचार्य का उपकार हम सब पर है।

हम उनके चरित्र को पढ़कर एवं सुनकर श्रद्धावनत हैं और शत् शत् नमन उस ऋषि तुल्य आचार्य को करते हैं। मानवता की सेवा करने का भाव यदि मन में जगे तो आचार्य जी के जीवन एवं आदर्शों को पढ़ें चिन्तन करें जिससे बहुत बड़ी प्रेरणा एवं संबल मिलेगा।

विदुषामनुचरः
कृष्ण चन्द्र शर्मा
प्राचार्य
डी०ए०वी० उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
टी०टी० नगर, भोपाल (म०प्र०)

हृदयोद्गार पूज्य आचार्य जी को समर्पित

हृदयोदगार

भद्रपाल सिंह आर्य



आचार्य श्री विद्यासागर जी दीक्षित। प्रथम उस आचार्य को नमन् जिसने आचार्य जी का नामकरण संस्कार किया, जिनका स्वयं का आचार व्यवहार अपने निकट के लोगों के लिए सन्देश सीख और शिक्षण था। विद्या के क्षेत्र में अनेकानेक उपाधियों से विभूषित एक उज्ज्वल आभा मण्डल के आलोक से ज्ञान के आलोक को जीवन भर प्रसारित करते रहे। आचार्य श्री विद्यासागर जी ज्ञान को जीवन में आत्मसात कर लेने वाले स्वयं दीक्षित बनकर दूसरों को बरबस अपना अनुव्रती बना लेना आचार्य जी की अपनी विशेषता रही।

"मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्य देवो भव", अतिथि देवो भव", के साथ मातामह देवो भव आचार्य जी के साथ जुड़ता है। आचार्य जी के नाना जी स्वयं लब्ध प्रतिष्ठ महा महोपाध्याय की उपाधि से विभूषित थे, योग्य पिता की विदुषी पुत्री अर्थात आचार्य श्री की माता श्री परम सुशीला, साध्वी, प्रभुभक्ता एवं संस्कारदा थीं। आपके पूज्य पिता श्री आपकी अपार प्रेरणा के स्रोत रहे। योग्य आचार्यों के सान्निध्य ने आपको कुन्दन बना दिया, शिक्षित एवं दीक्षित होने के अनन्तर आचार्य श्री ने शिक्षण जैसे पवित्रतम कार्य को सेवा के रूप में अङ्गीकार किया। वे आजीवन अज्ञान, अन्याय और अभाव को दूर करने के लिए कृत संकल्प रहे।

आर्य्य लोकवार्ता मासिक पत्र के परामर्शदाता आदरणीय पाल प्रवीण एवं बहन श्रीमती कमलेश पाल से आचार्य जी के जीवन के संस्मरण सुनकर जो मैं समझ सका कि- आचार्य श्री वेदों के मर्मज्ञ, शिक्षाशास्त्री, आदर्श शिक्षक, कुशल प्रशासक, मृदुभाषी प्रखर चिन्तक विचारक एवं उदार मना थे। आचार्य जी की लोकप्रियता उनके शिष्यों की आचार्य के प्रति अगाध श्रद्धा एवं सम्मान द्वारा स्वयं सिद्ध हैं।

मैं ऐसे युग पुरुष के श्री चरणों में अपनी श्रद्धाञ्जलि आदराञ्जलि के रूप में समर्पित करता हूं।

भद्रपाल सिंह आर्य "स्नातक"
पुरोहित
आर्य समाज तात्याटोपे नगर, भोपाल (म०प्र०)

श्री विद्या सागर दीक्षित मेरे आदर्श एवं प्रेरणास्रोत

त्रिलोकी नाथ माहेश्वरी

पूज्य आचार्य श्री विद्या सागर दीक्षित से मेरी आत्मीयता थी। वे सदैव मेरे प्रेरणा स्रोत रहे हैं। मुझे श्री दीक्षित जी से न केवल योग विद्या का ज्ञान प्राप्त हुआ वरन् मैंने अपने जीवन में उनके कुशल मार्ग दर्शन में बहुत कुछ प्राप्त किया है। मेरी सबसे बड़ी उपलब्धि है उनका (जिन्हें मैं अपना ज्येष्ठ भ्राता मानता रहा हूं) आशीर्वाद जो मुझे सतत् प्राप्त होता रहा है।

मैं दीक्षित जी का आभारी हूं क्योंकि उनके सत्संग के प्रताप से मैंने योग विद्या के बल पर बड़ी व्याधियों यथा डायबिटीज हृदय रोग, कैंसर व नेत्र व्याधि को हंस-हंस कर सहन किया एवं मैं अपनी वृद्धावस्था में भी अपने सभी कार्य, नियमित दिनचर्या स्वयं कर लेता हूं। बहुत वर्ष पूर्व श्रद्धेय श्री दीक्षित जी मुझे नियमित रूप से योग प्राणायाम सिखाते थे। उनके पत्रों से अपनत्व व मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है।

मैं ही क्या जो भी सज्जन शिक्षक सहयोगी उनके सम्पर्क में आए उन सभी ने सफलता प्राप्त की व अपना जीवन सुखमय बनाया। ऐसे महापुरुष को मेरा कोटि-कोटि नमन।

त्रिलोकी नाथ माहेश्वरी
६६ सराय किरोद्री
खुर्जा (उ०प्र०)

१६.०१.२००१

परम पूज्य आचार्य दीक्षित जी को नमन



परम पूज्य आचार्य विद्यासागर जी दीक्षित एक वेदाध्ययन करने वाले मधुरभाषी, आदर्श शिक्षक व उदारता की मूर्ति थे। यद्यपि उनके विषय में पहले सुना तो बहुत था परन्तु जब मेरी पूज्या मौसी श्रीमती सत्यबाला विदुषी हस्तिनापुर आर्य समाज में कमरा बनवाकर रहने लगी तभी मेरा परिचय आचार्य जी से आमने सामने हुआ और उनसे

वार्तालाप करके ही उन जैसे महानुभाव के विचारों से प्रेरणा मिली। उनके विचार उच्च व रहन सहन सादा था। उनकी पत्नि का भी पूर्ण सहयोग उन्हें प्राप्त हुआ था वे भी एक योग्य सुसंस्कारो वाली महिला थी। मुझे आचार्य जी का कहना आज भी याद है **"दृढ़ संकल्प द्वारा मनुष्य ऊँचा उठता है आत्मा परमात्मा का संबन्ध पिता पुत्र के समान है और स्वाध्याय व सत्संग से हामरी आत्मिक व नैतिक उन्नति होती है।"**

उनसे मिलने व वार्तालाप करने के मुझे थोड़े समय तक ही अवसर मिले। यदि उनके संसर्ग में अधिक आती तो मुझे अधिक लाभ होता परन्तु फिर भी जो कुछ भी अल्प समय में मैं प्राप्त कर सकी यदि उस पर आचरण करूँ तो बहुत कुछ लाभ उठा सकती हूं। ईश्वर हमें शक्ति दे कि हम उनके बताए मार्ग पर चल सकें और उनके अधूरे कार्यों को पूर्ण करने का प्रयत्न करते रहें यही हमारी सही श्रद्धांजलि होगी।

प्रेम मंजरी
उपप्रधाना
आर्य समाज बुढ़ाना गेट
मेरठ

o o o o o o o o o o o o o o o o o

आचार्य श्री विद्यासागर दीक्षित जी को नमन

रघुवीर सिंह शास्त्री



पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर दीक्षित जी अपने समय में योग्यतम शिक्षक एवं कुशल प्रशासक रहे हैं। उनका उज्ज्वल चरित्र उच्च सिद्धान्त व शिक्षकों के हित में जो श्रेष्ठ कार्य उन्होने किए उसकी याद सदैव बनी रहेगी।

मैं नव जीवन किसान इण्टर कालिज के मवाना में उप प्रधानाचार्य के पद पर कार्यरत था। मैं उनसे समय समय पर मिलता रहात था व ज्ञान प्राप्त करता रहा। श्री गहलौत के सेवानिवृत्त होने के बाद मैं प्रधानाचार्य बना

व प्रबंधन का कार्य मेरे ऊपर आ गया। समय समय पर मैं आवश्यकता होने पर श्रद्धेय दीक्षित जी से सलाह मशविरा लेता था। मुझे उनसे सदैव मार्गदर्शन प्राप्त होते रहे। जिससे मैं कृतार्थ होता था। पूज्य दीक्षित जी शतायु होने पर इस संसार से विदा हो गए। उनकी रिक्तता सदैव बनी रहेगी।

उनकी प्रतिष्ठा में प्रकाशित होने वाले स्मृतिग्रंथ हेतु मैं अपनी समस्त शुभ कमनाएं समर्पित करता हूं एवं श्री दीक्षित जी को कोटि कोटि नमन करता हूं।

रघुवीर सिंह शास्त्री
पूर्व प्राचार्य
३-डी.६, नेहरुनगर, गाज़ियाबाद

आचार्य जी को कोटि कोटि नमन



मुझे हर्ष है कि आचार्य विद्यासागर दीक्षित जन्म शताब्दी वर्ष समारोह समिति द्वारा स्व० दीक्षित जी का मान सम्मान किया जा रहा है व स्मृतिग्रंथ प्रकाशित हो रहा है। इस शुभ कार्य में मैं भी अपनी ओर से दोचार शब्द प्रेषित कर रहा हूं। मुझे दुख है कि मैं स्वयं उनका दर्शन तो नहीं कर सका परन्तु उनके विषय में पूर्ण जानकारी मुझे २००३ में ही मिली थी। मेरी कामना है कि यदि उनकी तरह के कुछ योग्य शिक्षक और साथी उनके पद चिन्हों पर चलने का प्रयास करते तो सम्पूर्ण शिक्षा जगत का उत्कर्ष होगा। आचार्य श्री दीक्षित जी को यादकर प्राचीन काल के आरुणि की गुरुभक्ति जैसे एक चित्र का आभास होता है। मैं अपनी ओर से स्व: दीक्षित जी के स्मृतिग्रंथ हेतु अपनी हार्दिक शुभ कामनाएं प्रस्तुत कर रहा हूं।

भगवत शरण
पूर्व सम्पादक
दैनिक जागरण एवं वरिष्ठ पत्रकार
अलीगंज, लखनऊ

पूज्य गुरुजी मेरे प्रेरणा स्रोत



पूज्य गुरुजी श्री विद्यासागर दीक्षित आचार्यों में श्रेष्ठ, परिश्रमी, कर्मयोगी व तपस्वी थे। वे एक आदर्श शिक्षक थे। मुझे ए.एस. इण्टर कालिज मवाना मेरठ में शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था जिसके प्रधानाचार्य पूज्य गुरुजी श्री दीक्षित जी कई वर्षों तक रहे थे। प्रत्येक छात्र में उसके विकास में रुचि लेते थे। आचार्य श्री विद्यासागर दीक्षित देवमन से विद्यार्थियों के सम्मुख पढ़ाने आते थे, राक्षस मन से नहीं। देवमन आचार्य से ही विद्यार्थी अध्ययन करना पसन्द करते थे एवं उत्तम विद्यार्थी अभी भी कामना करते है कि ऐसे श्रेष्ठ व प्रिय आचार्य उन्हें पढ़ाने के लिए पुनः पुनः आयें। जिस आचार्य के दर्शन मात्र से विद्यार्थी खिन्न और उदास हो जाते हैं उस आचार्य से उनकी विशेष उन्नति नहीं हो सकती, यह मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त है। पूज्य गुरुजी यह भली भांति जानते थे कि रमणीयता के साथ पढ़ने पढ़ाने मे पूर्ण मनोयोग होता है। आचार्य जी जितने रमणीय ढंग से विद्यार्थियों के सामने विषय वस्तु विचार रखते थे, उतनी ही तन्मयता से विद्यार्थी श्रवण व मनन करते थे। इस प्रकार पढ़ा पढ़ाया बिना रटे अनायास ही हृदयंगम हो जाता था। गुरुजी मेरे व अनेक छात्रों के ही प्रेरणास्रोत नहीं थे किन्तु अपने सहयोगियों व अन्य विद्यालयों के शिक्षकों के लिए भी उदाहरण है। मुझे जब भी अवसर मिलता था मैं उनके दर्शन करने हस्तिनापुर जाता रहा हूं। अक्टूबर ९९ में मैं अपनी पत्नि के साथ उनके निवास पर गया था बहुत सी बातें हुई। उन्ही के सुझाव पर मैं उस दिन आर्य समाज मंदिर आर्य वानप्रस्थाश्रम भी देखने गया जिससे बहुत प्रसन्नता हुई थी। पूज्य गुरुजी के शान्ति यज्ञ १० जुलाई २००७ में मैं सम्मिलित हुआ था। दूर दूर से उनके शिष्य प्रंशसक आये हुये थे। मै पुनः पूज्य गुरु जी को शत शत नमन करता हूं।

ब्रिगेडियर आर.के.गुप्ता
(सेवा निवृत्त)

गंगा नगर, मेरठ



श्रद्धा सुमन

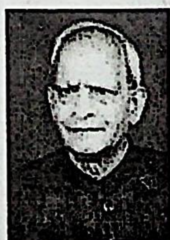
आचार्य पं. सुधाकर द्विवेदी शास्त्री

विद्या विवेक विनयार्जित पुण्य कीर्तिम्
श्रुत्यर्थ भूषित विभूषित भव्य मूर्तिम्।
आचार्यवर्यमनुगम्यमथ प्रबुद्धैः
विद्यार्णवं विमल ज्ञान गुरुं नमामः।।

अर्थ : जो विद्या विवेक तथा विनय द्वारा पवित्र यश को प्राप्त करने वाले, वेदों के अर्थ व्याख्यान से सुशोभित भव्य मूर्तिवाले हैं
जो प्रबुद्ध व्यक्तियों द्वारा अनु गमन करने योग्य हैं,
विद्यारुपी सागर में स्नान करने से विमल ज्ञान वाले
उस गुरु को मैं नमस्कार करता हूं।

पूर्व अध्यक्ष
संस्कृत विभाग
जवाहर लाल नेहरु
परास्नातक महाविद्यालय
बाराबंकी (उ०प्र०)

श्रद्धा सुमन



पद्मश्री डा० कपिल देव द्विवेदी

विद्यायाः सागरो ह्येषः-ज्ञान विज्ञान सागरः।
दीक्षया दीक्षितो धीरो यशसा द्युतीमान् कृती,
समाजोत्थानप्रवणः शरण्यः कर्मकृतप्रधीः
दिवंगतोऽपि यो लोके यशसा द्योतते सदा

अर्थ : यह महानुभाव ज्ञान विज्ञान और विद्या के सागर हैं, दीक्षा प्राप्त करके सार्थक रुप में दीक्षित हैं जो धीर यश के द्वारा कान्तिमान यशस्वी हैं

समाज के उत्थान में निपुण हैं, शरण में आने वालों की रक्षा करने वाले कर्मठ तथा उत्तम बुद्धि वाले हैं दिवंगत होने पर भी अपने यश द्वारा आज भी प्रकाशमान है।।

मैं अपने प्रेरणा स्रोत आचार्य दीक्षित जी को कोटि कोटि नमन करता हूं।

निदेशक
विश्वभारती अनुसंधान परिषद
ज्ञानपुर, भदोई (उ०प्र०)



वेद तत्त्व निधिः श्री विद्यासागर दीक्षितः
"वेद सिद्धान्तोके निधान श्री विद्यासागर दीक्षित"

विद्वान् वेद शास्त्राणां वेदाङ्गानां च प्रवाचक वेद तथा शिक्षा आदि वेदाङ्गों के ज्ञाता एवम् प्रवचन कर्ता हैं।

द्या वा भुवि चान्तरिक्षे यशसा सोमवत् स्थितः ।।१।।	जिनका यश चन्द्रमा के प्रकाश के समान द्युलोक पृथ्वी एवं अन्तरिक्ष में फैले।
सा भूमिः धन्य तमा यत्र जन्म लेभे महात्मना ।	इस महा पुरुष ने जिस भूमि पर जन्म लिया वह धन्य हो गयी।
गतिः स्यात, सूक्ष्म तत्त्वेषु सङ्गात्स्वल्प क्षणादपि ।।२।।	इस महात्मा के क्षण मात्र के सत्सङ्ग से मनुष्य की ज्ञान के सूक्ष्म तत्त्वों में गति हो जाती है।
रहस्यं दिव्य वोधानां जानीथान्मन्द धीरपिं।	मन्द बुद्धि वाला व्यक्ति भी दिव्य ज्ञान के रहस्यों को समझ लेता है।
दीप्तिः सर्व कालेषु कविवत् दीप्यताम सदा ।।३।।	इस महापुरूष का यशः प्रकाश गुरु बृहस्पति के समान सर्वत्र विस्तार को प्राप्त हो।
क्षितौ जन्म भवेत्सफलं सकलं दर्शनादपि। तस्याध्यापक वरेण्यस्य मानवस्य मुहुर्मुहुः ।।४।।	इस आदर्श अध्यापक के दर्शन मात्र से मनुष्य का सारा जन्म सफल हो जाता है।

प्रस्तुति
विद्यावारिधि ओजोमित्र शास्त्री
पूर्व उप कुलपति
गुरुकुल महाविद्यालय, अयोध्या
संस्थापक : आर्य कन्या विद्यालय
तिंदौला, बाराबंकी (उ०प्र०)
आर्य समाज महावीरगंज, लखनऊ

श्रद्धा सुमन



श्रद्धेय आचार्य विद्यासागर दीक्षित जी भारत माता के मणिमुक्ताहार के जाज्वल्यमान मणि थे। उनके पवित्र विचारों व आदर्शों से रामगढ़, नैनीताल समस्त उत्तरांचल, मवाना, मेरठ, दिल्ली, हस्तिनापुर, विदुर कुटी के निवासियों, छात्रों, सहयोगियों एवं उन सभी स्थानों जहां आचार्य जी ने निवास किया सुदीर्घ काल तक सुवासित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वे उच्च शिक्षाविद, प्रखर चिन्तक, राष्ट्रभक्त, वेदभक्त, ईश्वर भक्त, स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी होने के साथ साथ एक अनुभूतिप्रवण आदर्श उपदेष्टा भी थे।

अनेक बुद्धिजीवियों, सहयोगियों व शिष्यवृन्द को लिखे उनके अमृत वचन इस बात के साक्षी हैं। ऐसे सुधीजन भारत की धरती पर पुनः पुनः जन्म लेकर इसे पवित्र करते रहें मैं यह प्रभुदेव से प्रार्थना करती हूं और विविध विद्याओं के सागरभूत उस महामना मनीषी के चरणों में अपने श्रद्धा सुमन समर्पित करती हूं इन वचनों के साथ .

ते वन्धास्ते कृतिनः श्लाध्यास्तेषां हि जन्मनोत्पत्तिः ।

यैरुज्झितात्मकार्यैः सुहृदार्था हि साध्यन्ते ।।

विनीता

डा. प्रियंवदा वेदभारती (प्राचार्या)

गुरुकुल आंर्य कन्या विद्यापीठ

नजीवावाद (बिजनौर)

श्रद्धा सुमन

श्रीमती कैलाश सोनी



दयानन्द के वीर सैनिक बनेगें, दयानन्द का काम पूरा करेंगे।

उक्त गान जो प्रभात फेरियों में आर्यजन महिलायें बच्चे गागा कर गलियों मोहल्लों में घूमा करते थे व आर्यवीर दल का प्रमुख नारा हुआ करता था उसे चरितार्थ करने वाले व अपने जीवन में उतारने वाले महामानव आचार्य विद्यासागर दीक्षित जी तहसील मवाना मेरठ में ही नहीं वरन पूरे उत्तर प्रदेश उत्तरांचल में प्रसिद्ध शिक्षाविद महान स्वतन्त्रता सेनानी राष्ट्रभक्त थे आचार्य श्री दीक्षित जी ने सेवा निवृत्ति के उपरान्त हस्तिनापुर में ३० वर्षों से भी पूर्व आर्य समाज आर्य वानप्रस्थाश्रम की स्थापना की। वहां के वार्षिक उत्सवो में मेरठ के बहुत से आर्य समाजों का प्रितिनिधित्व करने वाली महिलाएं विशेषकर श्रीमती चन्द्रकला दुबलिश श्रीमती फूलारानी मल्होत्रा श्रीमती विष्णु देवी माता शकुन्तला गोयल अन्य महिलाओं के साथ जाया करती थी व कुछ दिन वहीं विश्राम कर वेद प्रचार में रत रहती थी। उनके आतिथ्य सत्कार की व्यवस्था पूज्य आचार्य श्री दीक्षित जी व माता सत्यबाला जी करती थी। मैं अंतिम बार आर्यसमाज के वेद प्रचार उत्सव में स्व० श्री सिया राम सिंह जी तत्कालीन प्रधान उप जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, मेरठ बागपत व अन्य महानुभावों महिलाओं के साथ २००३ में हस्तिनापुर गई थी। आचार्य श्री दीक्षित जी की टीम के सदस्यों ने बहुत परिश्रम करके समारोह को सफल बनाया। आर्यसमाज आर्य वानप्रस्थाश्रम, हस्तिनापुर के सबसे पुराने कार्यकर्ताओं श्री कान्ती प्रसाद भटनागर व श्रीमती सत्यबाला जी को उनकी विशिष्ट सेवाओं व योगदान के लिए विशेष रूप से सम्मानित किया गया था। यह सब श्रद्धेय आचार्य दीक्षित जी के मार्गदर्शन में हो पाया था। आज श्रद्धेय दीक्षित जी शरीर से हमारे मध्य नहीं है किन्तु उनका आशीर्वाद हस्तिनापुर के वैदिक प्रेमियों को ही नहीं सभी को प्राप्त हो रहा है। उनके अनेकों प्रशंसकों शिष्यगण भक्तगण उनके मिशन को आगे भी चलाते रहेंगे ऐसी मुझे आशा है।

मै श्रद्धेय दीक्षित जी को कोटि कोटि नमन करती हूं।

कैलाश सोनी

प्रधाना उपजिला आर्य प्रतिनिधि सभा

मेरठ बागपत

श्रद्धा सुमन

श्रीमती पाल प्रमिला



आर्य समाज आर्य वानप्रस्थाश्रम हस्तिनापुर के संस्थापक ए०एस० इंटर कालेज मवाना के गौरव वेदों के प्रकाण्ड पण्डित परम राष्ट्र भक्त आचार्य श्री विद्यासागर दीक्षित जी हमारे समस्त परिवार के गुरु जी किसी अन्य परिचय के मोहताज नहीं है। समझ में नहीं आ रहा है कि ऐसी महान विभूति के लिए क्या लिखूं। शब्दां में उनके गुणों का वर्णन करना कठिन है। मुझे लिखना नहीं आता यह मेरा प्रथम प्रयास है परन्तु मैं अपने आदरणीय भाई साहिब के आदेश पर श्रद्धेय गुरुजी के विषय में लिखने का प्रथम प्रयास कर रही हूं।

इयं ते यज्ञिया तनूः।

अर्थात हे मनुष्य तेरा यह शरीर यज्ञीय है तुझे यह शरीर परोपकार सत्कर्म और प्रभु प्राप्ति के लिए मिला है। यह यजुर्वेद के ४-१३ अध्याय में लिखा है। इसी सूक्ति को चरितार्थ करने वाले श्रद्धेय आचार्य दीक्षित जी को मेरा शत शत नमन्।

मुझे १ नवम्बर ८६ का एक संस्मरण याद आ रहा है जब हमारा परिवार मवाना से हस्तिनापुर ट्रैक्टर ट्राली से प्रातः ४ बजे सामान लेकर पहुंचा था व सामान को वहां एक बस में चढ़ाया जा रहा था जो हस्तिनापुर से अम्बाला जाने वाली थी। मेरी ज्येष्ठ पुत्री परू का विवाह हमें अम्बाला में करना था। हम सभी को बहुत आश्चर्य हुआ यह देखकर कि परम पूज्य गुरुजी ८२ वर्ष की आयु में हस्तिनापुर के अपने निवास से साइकिल चलाकर उस सर्दी में हमारे पास पहुंचे व उन्होने पुत्री परू के सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया व एक लिफाफे में आशीर्वाद भरा पत्र व शगुन के रुपए रखकर दिए। उस समय ऐसा आभास हो रहा था हम सभी को कि कोई देवता हमारे मध्य पधारा है अपने आशीर्वाद बधाई व शुभकामनायें देने हेतु।

उनकी इस महानता को हम कभी नहीं भूल सकते। उनके अनेकों प्रवचन यज्ञों के उपरान्त हमने अपने निवास पर सुने हैं।

ऐसे परोपकारी दानवीर दूसरों की सहायता उनके कठिन समय से करने की प्रवृत्ति कर्मशील महान आत्मा की प्रशंसा ऐसी करना व उनके विषय में कुछ लिखना सूर्य को दीपक दिखाने जैसा लगता है।

अन्त में मैं कहूंगी-

नियम है विधाता का जो आते हैं वो जाते है।

मगर कुछ लोग है ऐसे जो जा कर भी नहीं जाते।

ओ३म शान्ति शान्ति शान्ति

पाल प्रमिला
प्रवक्ता
आर्य कन्या इण्टर कालिज
मवाना-मेरठ

"अमृत वचन"

"गुरु का काम शिष्य की यथा शक्ति,
यथा योग्य सहायता करना है।
गोस्वामी तुलसीदास ने उस गुरु
को बहुत धिक्कारा है जो शिष्य
का धन तो ले परन्तु उसका
अज्ञान हरण न करे। मैं धन
के स्थान पर भक्ति को ही
महत्व देता हूं और अज्ञान हरण
का प्रयत्न करता हूं।"

वि. सा. दीक्षित
हस्तिनापुर

काव्य कुसुमांजलि



महामना विद्यासागर जी दीक्षित का पावन पुण्य स्मरण

गुरु, नेता, आचार्य, ऋषि, बुद्धिमान, श्रीमान्।
स्वतंत्रता - संग्राम के, योद्धा वीर महान।।

विद्या देती है विनय, विद्या मुक्ति दिलाय।
विद्यासागर फिर न क्यों, हों विदेह महाकाय ?

जन-जन के मन को करें, निर्मल प्रेम-प्रपात।
विनय मूर्ति वे मुक्तमन, नीति-धर्म-निष्णात।।

वेद-लोक-पथ में रहे, दीक्षित विरल समान।
कर्म योग रत नित जिये, जग में कमल समान।।

पावन तीर्थ समान शुचि, निर्मल जीवन, शील।
कितनों ने सान्निध्य पा, लिया भ्रान्ति को लील।।

श्रवण-भजन-दर्शन सभी, जिनका शिव सुख-द्वार।
महामनुज उस मूर्ति को, नमन नित्य शत बार।।

वेद प्रकाश 'वटुक'
निदेशक,
फोक लोर इन्स्टीट्यूट
बर्कले, कैलिफोर्निया

आचार्य विद्यासागर दीक्षित जी की स्मृति में



तुम आंखों से दूर हो गये
लेकिन मन में रमे हुये हो
संत और शिक्षक दोनों को
मन में साधे आयु बिताई
वाणी में थी बसी तुम्हारे
धर्म संस्कृति की गहराई
गये नहीं हो कहीं हमारी
सुधियों में ही थमे हुये हो।।

सांस सांस प्रभु की इच्छा थी
तृष्णाहीन जिया सब जीवन
आदर्शों की देह स्वयं थे
पुण्यों जैसा गौर बदन तन
सबको शुभकामना हुये थे।
ध्रुव तारा से हमें हुये हो।

तुम्हें देखकर ज्ञान हुआ यह
जीवन की परिभाषा क्या है
जग से हमको हमसे जग को
क्या पाने की आशा क्या है
किसी सुभाषित के अक्षर से
प्राण प्राण में जमे हुये हो।।

भारत भूषण
कवि निवास ६५०, ब्रह्मपुरी, मेरठ

परम् श्रद्धेय गुरुदेव ब्रह्मलीन आचार्य विद्या सागर दीक्षित जी



की दिव्य सुस्मृति को समर्पित

भाव – सुमनाञ्जलि

(१)

मुझे क़रीब से छूकर गुज़र गया कोई
मुझे लगा कि मुझी में उतर गया कोई
उसी के ध्यान में रहता हूँ 'शान्त' खोया हुआ
न जाने कैसा असर मुझपे कर गया कोई

(२)

रोशनी भी महक भी है तलाशो उसको
वो छिपा होगा यहीं, ढूंढके लाओ उसको
एक संगीत सा बजता है मेरे कानों में
मैंने अहसास जिया है जो कराओ उसको
बन्द करता हूँ मैं आँखें तो वो चेहरा उभरे
राज़ क़ी बात है चुपके से बताओ उसको
उसका अहसास ही लिखवाये है ग़ज़लें ऐसी
गुनगुनाओ उसे या झूमके गाओ उसको
मश्विरा देता हूँ ऐ 'शान्त' अगर मान सको
उसके हो जाओ कि फिर अपना बनालो उसको

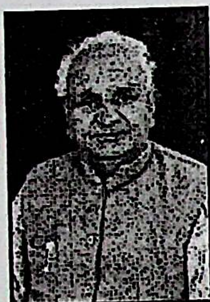
दिनांक : २२.१२.२००६ — विनयावनत्

'शान्तम्', १०/३०/२, इन्दिरा नगर
लखनऊ – २२६०१६
फोन : ०५२२-४०१७८४१, मो० ९९३५२१७८४१ — (देवकी नन्दन 'शान्त')

(१)

प्रधानाचार्य, विद्यासागर दीक्षित जी

राम निवास विद्यार्थी



प्र ज्ञानवान् क्रतुमय नागर।
धा रणावान् विद्यासागर।
न व नव गुण गरिमायुत् महान्।
आ र्योचित गुरु आचारवान।।
चा तुर्य समन्वित चारुचरित।
र मणीया ज्ञान विभा मण्डित।
य शरूपी तन से अजर अमर।
वि द्या सागर दीक्षित गुरुवर।।
द्या वा पृथ्वी युगपद के सम।
सा माजिक सेवा तव अनुपम।
ग रिमामय विद्या का आलय।
र मणीय हुआ तुमसे अतिशय।
दी तुमने उसको नई दिशा।
क्षि ति को ज्योंज्योतित करे उषा।
त त्पर प्रकाश फैलाता वर।
जीं वन तव है प्रेरक दिनकर।।

(२)

आचार्य श्री के प्रतिः-

भारत के स्वातन्त्रय समर के सेनानी।
मेरठ जनपद के गौरव गुरुवर ज्ञानी।
उत्तम शिक्षाविद् समाज सेवी अनुपम।
विद्या व्यसनी शासन से आदृत नामी।।
आर्य वानप्रस्थाश्रम के संस्थापकवर।
आर्य समाज हस्तिनापुर के प्राण प्रखर।
श्रुति सेवी वैदिक संस्कृति के संवाहक।
हे! शतक्रुत शतायु जीवन साधक नायक।।
सवितासम प्रेम प्रेरक जीवन से हम अनुचर।
ग्रहण करें तुमसे आलोक भर्ग भास्वर।
इस शताब्दी सवंत्सर के शुभ अवसर पर।
सजल नयन से तुम्हें नमन विद्यासागर।।

३५०/३, जागृति विहार
मेरठ (उ०प्र०)

नामानुरूप

श्रीमती रमा आर्य



(१)

पराधीनता देश की सह न सके,
स्वाधीनता का अभिमान जिया।
तपोनिष्ठ, उदार व्रती हो यती,
सदा वेद प्रचार में ध्यान दिया।
उपकार किया जन-जीवन का,
'रमा'शास्त्रसुधा-रसपानकिया।
गुण आगर विद्या के सागर जो,
निज नामानुरूप ही काम किया।।

(२)

पितु तुल्य कहीं बन भ्रात सखा,
ममता सुत मातु निभाते रहे।
शुभ चिन्तक प्रेरक शिक्षक के,
दृढ़ संघ की शक्ति बढ़ाते रहे।
संकल्प - विकल्प घनेरे 'रमा'
ध्रुव युक्तियों से सुलझाते रहे।
बल-बुद्धि विवेक के मान धनी,
निज नामानुरूप सुहाते रहे।।

(३)

निष्काम सुकर्म विवेचना से,
नित जीवन में गतिमान रहे।
श्रुति धर्म सुधी अध्येता से,
मन मानव के मतिमान रहे।
गुरु गौरव ज्ञान गवेषणा से,
तुम मान रहे प्रतिमान रहे।
तुम विद्या के सागर आगर से,
निज नामानुरूप महान रहे।।

भूतपूर्व प्रधान अध्यापिका
प्रा० वि०, नेपियर रोड, शिक्षक सम्मान प्राप्त
ठाकुरगंज चौक, लखनऊ

"जन-जन-मन विनत"

कौशल कुमार



विद्यासागर! विद्या-आलोक दिया है
तुमने कर्मठतामय तप त्याग जिया है
पर्याय प्रेरणा, चेतनता, जागृति के
पथ-दिग्दर्शक उन्नति के और प्रगति के
तुम रहे सत्य, सँस्कृति के अमर पुजारी
आचार्य आर्य! जन-श्रद्धा के अधिकारी
यू०पी० विधान परिषद् सदस्य सम्मानित
होती थी तुम से राजनीति अनुप्राणित
तेरे जाने से जन-जन-मन आहत है
शिक्षक-संसार सश्रद्ध, विनम्र विनत है।

प्रणाम

वेतन सुविधाओं में जिसके, श्रम से हुए सुधार।
युग-युग ऋणी रहेगा सारा, अध्यापक-संसार।।
गुरुजन-गौरव-गरिमा के तुम,उदाहरण प्रतिमान।
रहे संघ-अध्यक्ष, विधायक, मिले विविध सम्मान।।

रहे प्राण से प्रिय जीवन में सदा उच्च आदर्श।
सबको मिले प्रबोध, प्रेरणा, प्रोत्साहन, उत्कर्ष।।
जिसकी सेवा और साधना रही शुद्ध निष्काम।
विद्यासागर विनय समन्वित श्रद्धा सहित प्रणाम।।

धन्य धन्य तुम हे अनन्य
शिक्षा स्वतन्त्रता सेनानी
आदर्शों हित जूझ रहे हो,
अब तक हार नहीं मानी

हे क्रान्तिपुज के समवयस्क
हे त्याग कर्म आदर्श निष्ठ।
तुम प्रेरक सेवक जन जन के
शिक्षक समाज सेवा वरिष्ठ
उठ रहा प्रश्न यह बूंद बूदं
पग पग कण कण से तृण तृण से
है कौन विमुक्ति हेतु आतुर
हां देव मातुपितु गुरु ऋण से।

दो मुझको आशीष कि मैं यायावर बन,
घूमूं पग पग जग में अमर प्रकाश लिए।
कण-कण में आभास लिये गिरिराजों का,
बूँद बूँद में सागर का विश्वास लिए।।
उपर्युक्त रचना पर आचार्य दीक्षित जी ने तथास्तु टिप्पणी की

विनीत
कौशल कुमार
ग्राम - बहजादका, पो-पिलौना, मेरठ



हस्तिनापुर में आचार्य जी के साथ विराजमान हैं, श्रीमती एवं श्री लालमणि जोशी (हल्द्वानी) पीछे खड़े हैं आचार्य जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री जगदीश चन्द्र दीक्षित एवं पाल प्रवीण

गुरु की महिमा

वीरबाला रस्तोगी



गुरु ने हमको शब्द सिखाये
उन शब्दों के अर्थ बताये।
बचपन की उर्वर धरती में,
आदर्शों के पौध लगाये।।

गहन निराशा की रजनी में,
आशाओं के दीप जलाये।
जीवन की अशान्त घड़ियों में,
शान्तिपाठ के मंत्र सिखाये।।

स्वार्थ रहित, कर्मण्य सदा ही,
सहृदय, उदार, निष्काम।
गुरु की महिमायें अनन्त है
मेरा उनको शत शत प्रणाम।।

कौशाम्बी, गाजियाबाद

पूज्य गुरुजी



पूज्य गुरुजी के चरणों में मैं पुष्प करूँ कुछ अर्पित।
देखा नहीं आपको मैंने, फिर भी मन आकर्षित।।
श्री 'पाल', कमलेशजी द्वारा जो कुछ सुन पाया है।
गुणों और विशाल हृदय का सागर अथाह पाया है।।
शिक्षा पाने वलो शिष्य तो प्रेम गुरु से करते हैं।।
पर आपसे न मिल कर आंख से आंसू झरते हैं।।
मन पंछी कहता है गुरुके उड़कर दर्शन कर आऊं।
सागर के आशीर्वाद से शोभा जीवन सफल बनाऊं।।

१६.०१.०४

शोभा सिन्हा
पूर्व प्रवक्ता
एम.एस. ८६, से.डी. अलीगंज लखनऊ

नमन तुम्हे हे विद्यासागर

राधेश्याम आर्य, विद्यावाचस्पति



अनुगामी बन वैदिक पथ के
जीवन अपना धन्य बनाया।
अनुयायी बन दयानन्द के
जन में जीवन ज्योति जगाया।

तपोनिष्ठ है जीवन अनुपम,
शिक्षाविद् हे आर्य सुशिक्षक।
धर्म स्रोत के सदा रहे तुम
निर्भय सेनानी, संरक्षक।

आर्य वानप्रस्थाश्रम शोभित
आर्य समाज हस्तिनापुर में
वैदिक आदर्शों के हित में
जलती रही ज्योति तव उर में

स्वतंत्रताहित भारत मां की
सतत किया तुमने संघर्ष
सहन नही हो पाया तुमसे
भारत की भू काअपकर्ष

आदर्शोन्मुख रहा आपका
गौरवशाली सा यह जीवन
सिलते रहे सदा सत्कर्मों
से समाज की फटती सीवन।

शिक्षा के आदर्श सुचेता
शिक्षा के आदर्श पुरोधा।
घोर विषमतम विकट समय के
कालजयी, तुम अनुपम योधा।
धैर्य, क्षमा के सहिष्णुता के
मानवता के तुम आगर
आर्ष प्रणाली के अध्येता
नमन तुम्हें हे विद्या सागर

मुसाफिर खाना, सुल्तानपुर

गौरव गरिमा के प्रतिमान

श्रीमती गुणवती ग्रोवर



विद्या के सागर, सुन्दर-शिक्षा स्वरूप
ज्ञान-भण्डार हो तुम।
दयासागर, क्षमाशील, उदारचेता?
उत्तम चरित्रवान हो तुम।
तुम से बनती परिवार, समाज
औ राष्ट्र की सुदृढ़ नींव,
गुरु के वरद हरस्त से पाए
अर्जुन ने अस्त्र-शस्त्र-गाण्डीव।
गुरु-शिष्य परम्परा ने वर्चस्व
दर्शाया आदि काल से
बने विद्वान, कीर्तिमान, गुणवान
धर्मधुरी अध्यात्मवाद से
मर्यादाओं की चले लीक पर
वह थी सीख राम की
गुरुओं की चमत्कारिक विद्या ने
तप त्याग और साधना ने
स्पर्श किया चुम्बकीय गगन की
बाधित उत्तुग तरंगो ने
धरा सा धैर्य औ गुरुत्व व्यक्तित्व से
तुम बने देश की गौरव गरिमा के प्रतिमान।

भू.पू. प्रधानाचार्या,
मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कालेज, टाण्डा
राष्ट्रपति शिक्षक सम्मान प्राप्त
ई२/ई२, रिवर बैंक कालोनी
लखनऊ

तुम्हें प्रणाम

डा उमाशंकर शुक्ल शितिकण्ठ



नैतिकता के आदर्श सजग अध्यापन के प्रतिमान
गुरुता-गौरव दीक्षित विद्यासागर तुम्हें प्रणाम।
परम्परा गुरुशिष्य तुम्हें पा धन्य हो गयी फिर से
संस्कृति की सूखी भू पर पर्जन्य गये फिर घिर से।
खुली खिली हस्तिनापुर-मेरठ की सद्कीर्ति ललाम
गुरुता-गौरव दीक्षित विद्यासागर तुम्हें प्रणाम
न्याय-नीति के परिपोषक जन हित साधक जननायक
मानवता आदर्श आर्य संस्कृति-उद्धार विधायक।
प्रेम-ऐक्य-सद्भाव-शक्ति के आराधक मतिमान
गुरुता-गौरव दीक्षित विद्यासागर तुम्हें प्रणाम
विद्या व्यसन तुम्हारी पूजा, सदाचरण शुचि चंदन
अंधकार पर ज्योति विजय आरती लोकहित वंदन
जननी जन्मभूमि अनुरागी जन जन के अभिमान
गुरुता गौरव दीक्षित विद्यासागर तुम्हें प्रणाम
तुम जैसे सपूत जिस भू पर उसका रज कण चंदन
उज्ज्वल ज्योतिस्तंभ तुम्हारा बार बार अभिनन्दन
सेवाव्रती सौम्य सुकुती हे सत्यपथ के सन्धान
गुरुता-गौरव दीक्षित विद्यासागर तुम्हें प्रणाम।

वाणी निलय
७८, ट्रांसगोमती, त्रिवेणीनगर
लखनऊ

"ऋचाओं की छाया में" ग्रंथ से लिया हुआ

मंत्र – साभार

ओ३म् सहना ववतु। सह नौ भुनक्त। सह वीर्य करवाव है।

तेजस्विना वधीतमस्तु। मा विद्विवाव है। ओ३म् शान्तिः

शान्तिः शान्तिः। (तैत्तिरीयारण्यक, अष्टम प्रपाठक, प्रथमानुवाक)

ओ३म् सर्वरक्षक परमेश्वर, (सह) साथ-साथ (नौ) हम दोनों लेखक तथा पाठक की (अवतु) रक्षा करे। (सह नौ) हम दोनो साथ-साथ भोगें। हम साथ-साथ वीर्यवान् हों। हमारा अध्ययन हमें तेजस्वी बनाये। हम दोनों परस्पर विद्वेष न करें। त्रय तापों का शमन हो।

हम दोनों बटुक तथा गुरुवर,
हम दोनों, पथदर्शक, अनुचर,
हम दोनों अध्यापक-पाठक
श्रोता, वक्ता, लेखक-वाचक।।१।।

हम बाल-वृद्ध, हम वृद्ध-तरुण,
हम युगल परस्पर मित्र-वरूण,
हम तनय पिता, दुहिता-माता,
हम दोनों स्वसा तथा भ्राता ।।२।।

हम दोनों पुरुष तथा जाया,
हम दोनो आत्मा औ काया,
हम दोनो ब्रह्म राज्य नायक,
कुलपति सुप्रजापालक शासक ।।३।।

हम दोनो भौतिक वैज्ञानिक,
एवं सत्साधक आध्यात्मिक,
हम गृही-विरक्त, युगल आश्रम
हम सेवक सेव्य विहित आगम ।।४।।

सहरक्षक हों सहयोगी हों, सहभोगी हों हम दोनों।
हों वीर्यवान् हम साथ-साथ उद्योगी हों हम दोनों।।
शिक्षा-दीक्षा, स्वाध्याय करें हम दोनों को तेजस्वी।
हम दोनों करें न द्वेष कभी हम दोनों हो वर्चस्वी।।
तन-मन, आत्मा के त्रिविध ताप रक्षक प्रभु हरें हमारें।
हो शान्ति लाभ हो शान्ति लाभ हो।।

प्रस्तुति राम निवास विद्यार्थी
पूर्व अध्यापक जागृति विहार
मेरठ

दीक्षित जी एक धन्यवाद पुरुष

बसन्त सिंह "भृङ्ग"



ज्येष्ठ मास की भरी दोपहरी में ऊपर से बरसती हुई सूरज की आग और नीचे तपते तवे की तरह जलते हुये रेत पर कोई पथिक नंगे पांव चला जा रहा हो भूख और प्यास से बेहाल पसीने से लथ पथ। ऐसे समय उस बिह्वल पथिक को किसी वट वृक्ष की सघन छाया और वहां पर कल कल नाद करता हुआ स्वच्छ पानी का एक छोटा सा निर्झर मिल जाय तो उस समय पथिक को सुख-सन्तोष और विश्रान्ति का जैसा प्राणदायी अनुभव होता है ठीक वैसा ही आत्मानुभव मुझे तब हुआ, जब मैं सांसारिक द्वन्द्वों के मनस्ताप से जलता हुआ दीक्षित जी के निकट जाकर बैठा था।

दीक्षित जी के आभामण्डल में पहुंचते ही अन्तर्जगत में सात्विक परिवर्तन आरम्भ हो गया और लगा कि जैसे आनन्द की तरङ्गों में पावन गङ्गा स्नान सम्पन्न हो गया। मैं ऐसे शक्ति पुञ्ज पुरुषों को जीवित और जङ्गम तीर्थ मानता हूं। भौगोलिक तीर्थों के स्थान पर यदि इन जङ्गम तीर्थों का सङ्गम हमें प्राप्त हो सके तो यह मानव जीवन का परम सौभाग्य माना जायेगा और यह सौभाग्य अनायास ही न जाने हमें कितनी बार मिला है। इसके लिये हमें प्रभु का अनन्त धन्यवाद करना चाहिये। तीर्थ स्वरूप दीक्षित जी के मुख से इस स्नेहसिक्त धन्यवाद की सतत् वर्षा हुआ करती थी। उनके शब्दकोष का प्रत्येक पन्ना धन्यवाद से प्रारम्भ होता था और धन्यवाद पर ही समाप्त भी। कई बार मुझे लगा कि यह पाश्चात्य संस्कृति के थैंक्यू का ही रूपान्तरण तो नहीं है?

एक दिन साहस करके मैंने पूछ ही लिया कि हर समय आपकी वाणी से धन्यवाद की वर्षा होती रहती है इसके पीछे कोई गूढ़ार्थ छिपा है क्या? इसके सन्दर्भ में बताने की कृपा करें। इस पर उन्होने एक मुस्लिम सन्त का संस्मरण सुनाया अगर भूल नहीं रहा हूं तो सन्त श्री का नाम जुन्नैद बगदादी था। जुन्नैद ने अपने एक शिष्य फ़क़ीर साधु से पूछा कि साधना कैसी चल रही है? शिष्य ने कहा कि दो रोटी मिल जाती है तो खा लेते

है और नहीं मिली तो सन्तोष करके सो जाते हैं। जुन्नैद बोले यह तो कोई साधना न हुई यह साधना तो कुत्ते को स्वभाव से ही सिद्ध है वरन् इससे भी कुछ अधिक कुत्ता तो दो दण्डे खांकर भी इस साधना को सतत करता रहता है। यह तो कुछ भी साधना न हुई। उसके पूछने पर जुन्नैद ने बताया कि मिलें तो उस प्रभु का धन्यवाद करना चाहिये कि हमारी पात्रता न होते हुए भी उसने हमारा पोषण किया और यदि न मिले तो प्रभु की इस कृपा के लिए और भी अधिक धन्यवाद करना चाहिये कि आज उपवास का सुअवसर देकर साधना में गहरे उतरने की सुविधा उपलब्ध करा दी। यों उस दिन मुझे दीक्षित जी से धन्यवाद की व्याख्या हस्तगत हुई। दीक्षित जी से जब भी कोई मिलने आता तो वे उसे दर्शन देने के लिए धन्यवाद देते और जब वह विदा होता तो वे अपनी आभार पूर्ण कृतज्ञता भी धन्यवाद से ही अभिव्यक्त करते थे। सचमुच वह व्यक्ति के माध्यम से प्रभु के प्रति ही धन्यवाद का उद्घोष या निवेदन था। आज दीक्षित जी पंच भौतिक स्थूल शरीर से हमारे बीच में नहीं हैं पर वे अपने आध्यात्मिक सूक्ष्म शरीर से पहले से अधिक व्यापक रूप में हमारे पास मौजूद हैं बस बकौल गालिब

दिल के आइने में है तस्वीरे यार
जब जरा गर्दन झुकाई देख ली।

पर मेरे भाई अपने अहंकार की सख्त गरदन को थोड़ा झुकाना तो पड़ेगा ही। यदि विनम्र भाव से नत मस्तक होकर भीतर की ओर निगाह डालेंगे तो दीक्षित जी की प्रेमपूर्ण धन्यवाद ध्वनि वहां से तार स्वर में सुनाई पड़ने लगेगी पर अपनी बुद्धि की अकड़ तो थोड़ी देर के लिये हटाना ही पड़ेगी। आइये उस धन्यवाद पुरुष की करुणापूर्ण धन्यवाद-वर्षा में भीगने के लिये बिना किसी शर्त के लिये मेरा आमंत्रण है। तो आइये हम सब मिलकर इस आनन्दपूर्ण धन्यवाद वर्षा में भीगते हुये उत्सवपूर्ण नृत्य करें।

उस धन्यवाद पुरुष को धन्यवाद निवेदन करते हुये आप लोगों का इसलिये विशेष धन्यवाद कि आप लोगों ने पुण्य स्मरण का प्रसादपूर्ण अवसर प्रदान किया।

बसन्त सिंह 'भृङ्ग.'
७/८-ए. हस्तिनापुर मेरठ

श्री विद्यासागर दीक्षित (एक आदर्श शिक्षक)

पद्मश्री डा० कपिल देव द्विवेदी



आचार्य श्री विद्यासागर दीक्षित एक कुशल प्रबन्धक, वक्ता विधायक, कर्तव्यनिष्ठ और प्रेरणा के स्रोत व्यक्ति थे। वे एक व्यक्ति न हो कर एक संस्था थे। वे आदर्श आचार्यरहे।

आचार्य दीक्षित बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे उच्च शिक्षाविद, सफल अध्यापक समाज सेवी-गुणी एवं सुयोग्य लेखक थे। आपमें आर्यत्व कूट-कूट कर भरा हुआ था। आचार्य जी स्वावलम्बी, कर्मठ नेता थे। आपने अपने आचार-विचार और स्वभाव से अनेक व्यक्तियों को प्रभावित करके उन्हें सुयोग्य नागरिक उच्च अधिकारी और प्रतिष्ठित राजनेता बनाया। योग-साधना और अध्यात्म श्री दीक्षित जी के पूर्ण जीवन-शंतायु होने तक अंग बने रहे।

प्रधानाचार्य के पद से सेवानिवृत्त होने पर आचार्य श्री दीक्षित जी ने हस्तिनापुर जनपद मेरठ में अपना स्थाई निवास बनाया व वे अनेकों संस्थाओं से जुड़ कर समाज सेवा में पूर्ण रूपेण लग गए। उन्होने हस्तिनापुर में ही कई वर्ष पूर्व ब्लाक/नगर पंचायत से भूमि आवंटित कराई जिस पर अपने अथक प्रयासों व दूर-दूर ग्रामों, नगरों से दान स्वरूप धनराशि एकत्र करके आर्य समाज-आर्य वानप्रस्थाश्रम की स्थापना की थी। आप में आत्म विश्वास प्रबल था जिसके फलस्वरूप आप जिस काम में हाथ लगा देते थे, उसे पूरा करके ही छोड़ते थे।

मैं आचार्य दीक्षित जी से लगभग ६५ वर्ष से परिचित रहा हूं। मैने उनके साथ तीन वर्ष तक कार्य किया है जब वे नारायण स्वामी स्कूल रामगढ़ नैनीताल के हेड मास्टर नियुक्त हुए थे। महात्मा नारायण स्वामी जी के मार्गदर्शन व रामगढ़ निवासियों के आग्रह पर वहां एक स्कूल प्रारम्भ कियां गया था। मैं भी उसी

स्कूल में संस्कृत का अध्यापक था। मै श्री दीक्षित जी के कार्यों और व्यवहार से बहुत अधिक प्रभावित रहा हूं। उसी समय मुझे श्री दीक्षित जी से अंग्रेजी पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। नई उमंग थी, नया उत्साह था व प्रकृति का सुरम्य वातावरण था। महात्मा नारायण स्वामी जी के निवास सेवह भूमि देव भूमि हो गई थी। उस संस्था को जो नवजीवन श्री दीक्षित जी ने दिया था वह स्वर्ण अक्षरो में उल्लेखनीय है। साधनहीन किन्तु ईश्वराधीन उस संस्था का दो वर्षो में कायाकल्प हो गया। हाई स्कूल के लिए कमरे भी नहीं थे, भवन भी नहीं था अध्यापक भी नहीं थे परन्तु दो वर्षो में हीश्री दीक्षित ज़ी की प्रेरणा से छात्रों और अध्यापकों के कठोर परिश्रम व श्रमदान से देखते ही देखते दो मंजिला विशाल विद्यालय भवन बनकर तैयार हो गया और छात्रों में अनुशासन की भावना जागृत हुई। श्री दीक्षित जी ने विद्यालय में डा० इन्द्रसेन (मैनेजर) के अनुरोध पर हस्तशिल्प में बुक बाइंडिग सूत व ऊन कताई, काष्ठ शिल्प तथा योगासन का भी प्रशिक्षण प्रारम्भ किया जो अत्यन्त सफल रहा। मै छात्रावास का अधीक्षक था।

छात्रावास में सभी छात्रों को नियमित योगासन, दैनिक संध्या, हवन, भजन तथा शारीरिक व्यायाम की प्रक्रिया सुचारु रूप से चालू हो गई। श्री दीक्षित जी ने रामगढ़ की उस भूमि में अपना एक मकान भी बनवा लिया था।

आचार्य दीक्षित जी रामगढ़ में कुछ वर्षो तक ही रहे। सन् १९४७ में वे अपनी मातृ संस्था एग्लो संस्कृत हाई स्कूल मवाना (मेरठ) में हैड मास्टर होकर चले गये। उस विद्यालय को भी अपने कठोर परिश्रम से दो ही वर्षो में इण्टर कालेज में बदल दिया और बाद में ए०एस० डिग्री कालेज की स्थापना की।

आचार्य दीक्षित जी सक्रिय राजनीति में भी सफल रहे। आप उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ के संस्थापक अध्यक्ष रहे तथा

अपने ओजस्वी भाषणों, पत्रों, सरकुलरों व विभिन्न बैठकों के माध्यम से अध्यापकों में नई स्फूर्ति उत्पन्न की। वे अपने सहयोगी अध्यापकों के सदैव प्रेरणास्रोत रहे। आप सन् १९६२ से १९६८ तक उ०प्र० विधान परिषद के भी सदस्य रहे। आदर्श शिक्षा प्रणाली, शिक्षकों के हितों के अतिरिक्त अन्य सामाजिक उत्थान हेतु आपने विधान परिषद में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आचार्य श्री दीक्षित जी से १९६२-६८ के बीच व बाद में भी कई बार मिलना हुआ व हमारा पत्राचार होता रहा। यह ज्ञात कर सुनकर व उनकी प्रतिष्ठा में प्रकाशित पुस्तकों, विशेषांको में पढ़कर मुझे बहुत प्रसन्नता होती थी कि श्री दीक्षित जी के शिष्य, छात्राएं उनके पुराने सहयोगी उनके सम्पर्क में हैं, उनसे मिलते रहे या पत्र व्यवहार करते रहे, इतनी लम्बी अवधि के उपरान्त भी।

उनके शिष्यों, सहयोगियों व प्रशंसकों ने कुछ वर्ष पूर्व विद्यासागर फाउण्डेशन का गठन करके एक श्रेष्ठ कार्य किया है, क्योंकि अनेकों रचनात्मक कार्य उक्त फाउण्डेशन के माध्यम से निरन्तर विभिन्न स्थानों पर आयोजित होते रहते है।

मै अपने प्रेरणा स्रोत आचार्य श्री दीक्षित जी को शत शत नमन करता हूं।

पूर्व कुलपति महाविद्यालय ज्वालापुर, हरिद्वार
एवं निदेशक, विश्वभारती अनुसंधान परिषद्
ज्ञानपुर (भदोई) उ०प्र०।

सर्वाधिक वन्दनीय गुरु

आचार्य दीपंकर



श्री विद्यासागर दीक्षित अपने कर्मठ जीवन के ९० वर्ष पार कर चुके हैं। एंग्लो संस्कृत इण्टर कॉलेज, मवाना के प्राचार्य पद से निवृत्त हुए भी उनका लम्बा समय बीत गया है। करीब ३० वर्षों से भारत की प्राचीन और उजड़ी हुई राजधानी हस्तिनापुर में वे अपने परिवार के साथ वानप्रस्थ जीवन जी रहे है और बहुत प्रसन्न है। जब भी कभी हम स्वतंत्रता सेनानी एक दूसरे के सम्बन्ध में चर्चाएं करते हैं, उनका नाम बड़े आदर और आत्मीयता से लिया जाता है। इतनी आयु पार कर लेने पर भी हमें वे सदा युवा लगते है और इस आयु में आने के बाद जिस तरह लोग उदासीन हो कर रहने लगते है तथा भविष्य की चर्चा छोड़ कर केवल अपने अतीत की घटनायें गिनाने में तल्लीन रहते है, दीक्षित जी इसके अपवाद है।

दीक्षित जी का अच्छा और भरा पूरा परिवार है। उनके ज्येष्ठ पुत्र स्वयं सेवानिवृत्त हैं, उन्हीं की भांति वृद्ध श्रेणी में आ गये है तथा उन्हीं के पास के भवन में रहते है। इनके पढ़ाये हुए अनेक विद्यार्थी नागरिक तथा सैनिक सेवाओं से निवृत्त होकर वृद्धों की पंक्ति में आ गये है। परन्तु इससे क्या होता है? वे सभी इनके चरण स्पर्श करके श्रद्धा से नतमस्तक होने के बाद और कुशल क्षेम पूछ कर कोई "योग्य सेवा" का अवसर मांगना नहीं भूलते। परन्तु इन्हें किसी की सेवा की कभी आवश्यकता नहीं रहती। अतः हाथ जोड़ कर मधुर नमस्कार के साथ धन्यवाद देकर अपनी कृतज्ञता का ज्ञापन कर देते है। वे उस गुरु-परम्परा के अध्यापक रहे जो अपने शिष्यों और पुत्रों पर समान भाव से स्नेह दृष्टि करते है। यही कारण है कि "इस युग" में भी वे सर्वाधिक वन्दनीय गुरु है और सभी उनके सम्मुख नतमस्तक रहते है।

उनकी लोकप्रियता का अन्य भी एक महत्वपूर्ण कारण है।

अपने लम्बें अध्यापन जीवन में जिस निष्ठा के साथ उन्होंने शिष्यों को पढ़ाया और लिखाया है, उससे वे छात्र भी नतमस्तक रहते रहे है जो अन्य कार्यों में तो आगे रहते है परन्तु पढ़ाई के "चोर" होते है। जैसे हर बेईमान आदमी ईमानदार का आदर करता है, वैसे ही पढ़ाई का चोर विद्यार्थी भी निष्ठावान अध्यापक के प्रति निष्ठावान ही होता है।

माना कि वे राजनीति में सक्रिय रहे है देश के भविष्य और स्वतंत्रता के लिए अधीर रहे हैं आन्दोलनों में भाग लिया है और जेल गये है परन्तु यह सब तो उनके गौण कार्य रहे है। उनका मुख्य स्वरूप एक अध्यापक का है और चरित्र निर्माता का है। इनके कालिज पर भी इनकी गहरी छाप पड़ी है तथा ३० वर्ष पहले सेवा निवृत्त हो जाने पर भी अभी तक वह छाप अनुभव की जा सकती है। कालेज का अनुशासन, शिक्षण और वातावरण आज भी दूसरों के लिए अनुकरणीय है।

जब जब कोई व्यक्ति अपने कर्म का महत्व समझ जाता है, निष्ठा के साथ उसें पूरा करता है तथा फल के साथ उसे नहीं जोड़ता तो अपने जीवन में इतनी गहराइयां ऊंचाइयां अनुभव करने लगता है कि लोग स्वयमेंव नतमस्तक होते जाते है। जैसे ही कर्म गौण हो जाता है तथा फल प्रथम स्थान पर आ जाता है, सारे कर्म निष्फल और प्रभावहीन तथा नाटक होते जाते है। दीक्षित जी ने जो भी काम किया है पूरी निष्ठा के साथ किया है तथा अपना हित दांव पर लगाकर किया है। चाहे अध्यापन कार्य हो, चाहे स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी हो और चाहे अपने परिवार की देखरेख हो, किसी भी क्षेत्र में उनकी पूर्णकालिक गतिविधि के पीछे न तो कभी दिखावा रहा और न फल की कोई आकांक्षा रही। इस प्रवृत्ति में हम लोगों ने मनो में उनकी जो प्रतिमा स्थापित की है, वह एक निष्काम और निष्ठावान योद्धा की है।

यहां तक कि १९७२ के बाद जब श्रीमती इन्दिरा गांधी ने सभी स्वतंत्रता सेनानियों के लिए राजनीतिक पेंशन देने की घोषणा की तो इन्होने प्रार्थना पत्र देना अस्वीकार कर दिया इस विचार से

कि स्वतंत्रता के लिये तो उन्हें संघर्ष करना ही था और सबसे बड़ी पेंशन तो स्वयं स्वतंत्रता है जो मिल गयी है फिर पेंशन क्यो? हमारे साथी और वरिष्ठ स्वतंत्रता सेनानी श्री "भृङ्ग" जी ने अपनी ओर से प्रार्थना पत्र दे दिया और जांच लेने के बाद वह सरकार द्वारा स्वीकृत कर दिया गया।

इसी प्रकार अध्यापक साथियों और स्नातकों ने अनेक बार अपना प्रत्याशी बना कर उन्हें उत्तर प्रदेश विधान परिषद में भेजना चाहा जहां वे भारी बहुमत से विजयी रहे तथा न केवल अध्यापकों का बल्कि सर्व साधारण जनता के भी हितों का प्रतिनिधित्व करते रहे। वे अध्यापक संघ के अति प्रतिष्ठित प्रादेशिक अध्यक्ष भी रहे है। आर्य समाज के भी नेता रहे है और प्रत्येक प्रगतिशील आन्दोलन को अपनी भागीदारी से प्रभावित करते रहे है। परन्तु चर्चाओं में इन महत्वपूर्ण उपलब्धियों की कभी चर्चा नहीं करते। अपनी बड़ी से बड़ी उपलब्धियों की चर्चा न करना उनके जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है। इससे इनका व्यक्तितत्व और भी श्लाघनीय तथा आकर्षक हो गया है। उनके चाहने वाले वास्तव में केवल चाहने वाले नही बल्कि दीवाने होते है। लखनऊ, मेरठ, दिल्ली, रामगढ़, अल्मोड़ा, आजमगढ, और अन्य दूरस्थ स्थानों से आने वाले स्नेहीजन दीक्षित जी से मिले बिना अपनी यात्रा निरुद्देश्य एवं अधूरी मानते है रास्ता काट कर भी उनसे मिलने आना अपरिहार्य मांनते है।

लम्बे समय तक चर्चाओं, भीड़ और कोलाहल में रहने के बाद आज अपनी वृद्धावस्था में वे हस्तिनापुर में जिस नीरवता के साथ रह रहे है उसमें भी मग्न है और आनन्दित है। वास्तव में यह न तो नीरवता है और न कोई उदासी है। मनस्वी जीवन में कभी कोलाहल होता है और कभी शान्ति जो एक ही सक्रिय जीवन के केवल दो रूप है।

असाधारण व्यक्तितत्व का यदि कोई मानव साधारण तरीके से रहता है और अपने कर्त्तव्यों का पालन करता रहता है तो वह और भी असाधारण हो जाता है। दीक्षित जी आजकल ऐसा ही

असाधारण जीवन जी रहे है। मेरे मन में उनके लिए भारी इश्क है। जब भी कभी उनसे मिलने हस्तिनापुर अचानक गया मुझे वे अपनी रुग्ण पत्नी की रोगशय्या के किनारे बैठे मिले। वे दस वर्षों से पक्षाघात से पीड़ित है। चारपाई से उठ नहीं सकतीं। उनके बेटे, पोते, बहुएं और भरा पूरा परिवार सदैव बहिन जी की सेवा के लिए उद्यत रहता है परन्तु निष्ठावान दीक्षित जी विवाह की परिक्रमा के समय की गयी अपनी प्रतिज्ञा से बंधे है "जब तक जीऊंगा तेरी देखभाल करूंगा और रक्षा करूंगा"। संस्कृत में पति का अर्थ ही रक्षा करने वाला होता है। सभी के रहते हुए भी दीक्षित जी अपनी पत्नी की सेवा एवं सुरक्षा के लिए उसी तरह समर्पित है जैसे देश की स्वतंत्रता के लिए, अपने विद्यार्थियों के अध्ययन के लिए तथा कालेज में अनुशासन की स्थापना के लिए समर्पित थे। दीक्षित जी की इस समर्पण भावना ने उन्हें और भी ऊँचा उठा दिया है।

जो लोग पति-पत्नी के सम्बन्धों को केवल शारीरिक सम्बन्ध मानते है, उन उद्दण्ड लोगों को मनीषी विद्या सागर दीक्षित जी को समीप से देखना चाहिये। वे यह समझ जावेंगे कि विवाह मुख्यतः दो व्यक्तियों के एकाकार हो जाने का महान आध्यात्मिक सम्बन्ध है। इस धारणा के लुप्त होते जाने से धीरे धीरे परिवार टूट रहे है मनो का विखराव सामने आ रहा है तथा हमारी पारस्परिक निर्भरता नष्ट होती जा रही है। यदि विघटन की यही प्रक्रिया चलती रही तो पुनः किसी मनीषी को पुनः आना पड़ेगा तथा पारिवारिक मर्यादाओं की पुनः स्थापना करनी होगी।

मै किसी से गिड़गिड़ाकर प्रार्थना नहीं कर सकता परन्तु दीक्षित जी की इस निष्काम सेवा को देखकर यह मनौती जरूर करना चाहता हूं कि हमारी बहिन जी की आयु लम्बी हो और वे दीक्षित जी को मध्यधार में छोड़ कर बिदाई न लें इसलिए कि जिस तत्परता से वे अपनी रुग्ण पत्नी की सेवा करते है उनके चले जाने के बाद संसार दीक्षित जी को सूना दिखाई देने लगेगा जीवन निरुद्देश्य हो जायेगा। जब सवेरा होता है उन्हे सेवा का काम

मिल जाता है। दोपहर और शाम आती है दीक्षित जी को व्यस्त करती रहती है। बहिन जी के बाद तब क्या होगा?

मैं सनकी आदमी हूं परन्तु मेरा मन स्नेह से सराबोर रहता है। साल में एक-दो बार उनसे और भृंङ्ग जी से मिलने हस्तिनापुर चला जाता हूं। मेरा कार चालक मन ही मन म सवाल करता है इस जंगल में ये क्या करने आते है? परन्तु यहां आकर मुझे दो निष्ठा भरे लोगों से मिल कर सन्तोष होता है। अभी २० दिन पहिले गया तो मेरे पास बैठने का भी समय नहीं था। गोधूलि बेला हो चुकी थी और मुझे वापिस मेरठ आना था। मिले बिना आना सम्भव नहीं था। श्री दीक्षित जी रुग्ण पत्नी के सिरहाने से उठ कर झुके हुए बड़ी तेजी से मेरा स्वागत करने घर से बाहर निकले करीब करीब दौड़ते हुए। कमर अपने गुणों के भार से झुकी हुई थी और माथा तथा आंखे स्वाभिमान से ऊपर की ओर उठी हुई थी। उनका यह रूप देखकर मै विचलित हो गया। कल मेरी भी कमर झुकेगी, आपकी भी झुकेगी और सभी की झुकेगी जो ९० वर्ष तक जियेगा उसकी झुकेगी परन्तु फिर भी माथा और आंखे दीक्षित जी की तरह ऊंची उठी रहे तो हमारा बड़ा सौभाग्य होगा। मेरे लिए वह आदर्श व्यक्ति है। उन्हें देखकर मेरा मन कभी नहीं भरता। जी करता है कि सदा उन्हे देखता रहूं। मै चाहता हूं कि दीक्षित जी शतायु हों उनकी रुग्ण पत्नी भी शतायु हों और वे एक दूसरे में समर्पित होकर अशान्त मानवों को शिक्षा देते रहें कि "जिओ तो ऐसे जिओ"। इन्हीं शुभकामनाओं को आज उनके शुभ जन्म दिवस पर व्यकत कर रहा हूं।

निवासः
पूर्वी कचहरी रोड
मेरठ (उ०प्र०)
फोन : ६४६४५५

आचार्य दीपंकर
अध्यक्ष उ०प्र० स्वतंत्रता संग्राम
सेनानी संस्था और पूर्व विधायक
१९.०१.१९९७

स्व० विद्यासागर दीक्षित कुछ स्मृतियां

भारत भूषण



मनुष्य का जीवन स्मृतियों और संस्मरणों से ही भरा पूरा रहता है यह क्रम चलता ही रहता है। संयोग से कविता लिखने की प्रवृत्ति ने मुझे लगभग सारे देश की यात्रा ही करा दी और प्रदेश-प्रदेश के हजारों व्यक्तियों से परिचित करा दिया। हिन्दी भाषी समाज से प्रसिद्धि और यश मुझे बहुत मिला है। मैं अपने समाज का आभारी हूं।

मेरे जीवन का प्रारम्भ ही संतमना स्व० श्री विद्यासागर जी दीक्षित के स्नेह स्पर्श से हुआ। दीक्षित जी मवाना में ए०एस० इण्टर कालिज के प्रधानाचार्य थे और मैं इक्कीस वर्ष की आयु में उक्त विद्यालय में सहायक अध्यापक के पद पर नया-नया आया था। दीक्षित जी का जीवन बहुत संयत और एक आदर्श अध्यापक का था। १९५१ से मैंने कविता लिखना प्रारम्भ किया था और बहुत शीघ्र आस-पास लोकप्रिय हो गया था दीक्षित जी बहुत प्रसन्न होते थे। मेरी कुछ भूलों को भी अनदेखा कर जाते थे। तब मैं वीर रस की कविता लिखता था। मेरी काव्य रुचि देखकर दीक्षित जी ने मुझे कालिज की अन्त्याक्षरी की टीम का संयोजक बना दिया था। उस समय की वह टीम ऐसी बनी थी कि जहां भी जाती प्रथम होकर ही लौटती थी और दीक्षित जी उन सभी छात्रों की व मेरी प्रशंसा करते थे।

दीक्षित जी के जीवन मूल्य आर्य समाज के जीवन मूल्य थे। लगभग तभी उनके बड़े बेटे जगदीश का विवाह हुआ। घुड़चढ़ी जैसी परम्परा हुई तो घोड़ा नहीं बुलाया गया, जैसे ही जगदीश पगड़ी बांधकर अपने निवास से बाहर आये तो दीक्षित जी कालिज की ओर हाथ उठाकर बोले यह भी तो विद्यामंदिर ही है और हॉल में जाकर पूजा अर्चन करा दिया।

छोटे बेटे गोपाल का विवाह मेरे ब्रह्मपुरी निवास के पास ही रहने वाले मेरे एक अनुज मित्र की बेटी से हुआ। विदा के समय शगुन का एक

रुपया लेकर बोले मैं अब जाऊंगा विदा आप कराते रहें और अपने दो साथियों के साथ प्रसन्न और संतुष्ट होकर चले गये। आर्य समाज में दहेज या धन लेना बुरा माना जाता है। दीक्षित जी का जीवन एक आदर्श आर्य समाजी का जीवन रहा है।

सेवा निवृत्त होकर मवाना का शहरी जीवन छोड़कर हस्तिनापुर एक मकान में रहने लगे और संन्यस्त जीवन बिताने लगे। एक बार कई वर्ष पहले मैं एक काव्य गोष्ठी में मवाना ए०एस० कॉलिज में गया था। दीक्षित जी हस्तिनापुर से आये थे। मुझे सुना और बहुत सराहा मैं उनका चरण स्पर्श करके पुलकित हो गया।

दीक्षित जी का जीवन शिक्षा, समाज सेवा, आदर्श जीवन मूल्य, नैतिकता और पूर्णरूप से आर्य समाज के नियमों के पालन की आत्म समृद्धि की कथा है।

कुछ वर्ष पूर्व जब मैं नैनीताल घूमने गया था तो 'चायना पीक' के दर्शन भी किए थे। वहीं से हिमालय की अनेक चोटियों के दर्शन कर मन परम प्रफुल्लित हो गया। वहां से मित्रों के साथ लौटा तो दिनकर जी की प्रसिद्ध पंक्तियां मेरे होठों पर थी "मेरे नगपति, मेरे विशाल"। जब भी आदरणीय श्री दीक्षित जी का स्मरण करता हू तो कुछ ऐसा ही लगता है। चाहे तो मनुष्य भी इतना ऊंचा हो सकता है।

नैतिकता, कर्मठता, अध्ययन ज्ञान माधुर्य के श्री दीक्षित जी ज्योति स्तम्भ थे। उनका स्मरण भी प्राणों में प्रकाश भरता सा लगता है। मुझे गर्व है कि मैं उनके सहयोग व सामीप्य में रहा हूं।

पूज्य दीक्षित जी को कोटि कोटि नमन

९५०, ब्रह्मपुरी, मेरठ

बहुमुखी प्रतिभा के धनी आचार्य श्री विद्यासागर दीक्षित

वैद्य राजेन्द्र प्रकाश



आचिनोति च शास्त्रार्थानाचारं ग्राहयत्यपि।
स्वयं चाचरते यस्मात् तस्मादाचार्य उच्यते।।

निरुक्त : अर्थात - जो शास्त्रों के अर्थों का चयन करता है, अपने शिष्यों को आचार का ग्रहण कराता है, स्वयं ही उस सदाचार का पालन करता है अतः उसे आचार्य कहते हैं। इस शास्त्र वचनानुसार आचार्य श्री स्वयं में खरे उतरते थे। मुझे आचार्य श्री के दर्शनों का सौभाग्य सर्व प्रथम अक्टूबर १९४९में हुआ। मेरे पूज्य पिताजी का उनसे परिचय उनके रामगढ़ निवास के समय से ही था। वे महात्मा नारायण स्वामी जी द्वारा स्थापित विद्यालय, रामगढ़ में प्रधानाध्यापक थे। पिताजी विद्यालय निरीक्षक, बरेली के कार्यालय में कार्यरत थे। रामगढ़ उस समय तृतीय वृत्त बरेली (III Circle, Bareilly) के अन्तर्गत आता था। दीक्षित जी विद्यालय के कार्य हेतु बरेली कार्यालय आते रहते थे। एक ही जनपद (मेरठ) के होने से तथा आर्य समाज की समान विचारधारा के कारण दोनों के सम्बन्ध प्रगाढ़ होते गये।

अपनी आजीविका तलाशने जब मैं पिताजी के साथ उनसे मिलने गया तब वे रामबाग में बाबू विशंभर सहाय जी द्वारा बनाये गये क्वार्टर्स में दूसरी मंजिल पर रहते थे। प्रथम दर्शनों में ही मैं उनके व्यक्तित्व से इतना प्रभावित हुआ कि जीवन भर उनसे सम्पर्क में रहने का मोह नहीं छोड़ पाया।

उनके संस्मरणों को यदि लिखना चाहूं तो एक बृहदाकार ग्रन्थ बन जायेगा। सम्प्रति यह न तो सम्भव है और न उचित। कुछ घटनाओं का उल्लेख करना पर्याप्त होगा।

योग्य प्रशासक : जिस समय श्री दीक्षित जी ने ए०एस० कालिज

का कार्यभार सम्हाला तब वहां बहुत उथल पुथल, अव्यवस्था और अनुशासन हीनता का वातावरण था। शिक्षकों तथा कर्मचारियों के वेतन का प्रबन्ध भी प्रबन्धक समिति को करना पड़ता था। राज्य सरकार, जिला परिषद और नगर पालिका से एक सीमिति वार्षिक अनुदान ही मिलता था। कुछ धन विद्यार्थियों के शुल्क और कुछ धनी व्यक्तियों के दान से आता था। वेतन समय पर न मिल पाने से शिक्षक भी कुछ असन्तुष्ट रहते थे। ऐसी विषम परिस्थति में दीक्षित जी ने अपनी प्रशासनिक कुशलता से सब व्यवस्था पटरी पर ला दी। अध्यापन कार्य सुचारु रूप से अनुशासन पूर्वक चलने लगा। इतना ही नहीं परीक्षाफल भी जनपद में सर्वोत्तम रहता था।

आदर्श शिक्षक : दीक्षित जी ने मात्र अध्ययन कार्य ही नहीं कराया। प्रति मंगलवार को मंगल प्रवचन होता था। यह प्रवचन परम्परा गुरुशिष्य के पुनीत सम्बन्धों की उद्भावक बनी। गुरु अपने ज्ञान की छत्र छाया में अध्यापन कराता हुआ शिष्यों को सद् संस्कारों से युक्त करता था। अनजाने ही गुरुकुलीय वातावरण में छात्र उन संस्कारों को आत्मसात करते थे। इसी कारण यहां से निकले छात्र प्रशासनिक, न्यायिक, चिकित्सा, राजनीतिक आदि क्षेत्रों में पूर्ण ईमानदारी औरं कर्त्तव्य निष्ठा का कीर्तिमान स्थापित करते रहे है।

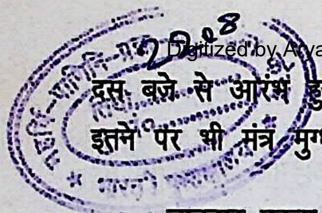
विलक्षण संगठन कर्ता : आपने शिक्षकों की समस्याओं के समाधान हेतु एक मंच की स्थापना की। उच्चतर माध्यमिक शिक्षक संघ आपकी ही देन है। आप उसके संस्थापक अध्यक्ष थे। निरंतर दो बार उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सदस्य रहे। चाहते तो राजनीति में आकर यश-आदर और धन कमा सकते थे। परन्तु उन्हे तो पीढ़ी में जीवन मूल्यों का निर्माण करना था। अपने शिष्यों को परिष्कृत कर देश को सुयोग्य चरित्रवान नागरिक प्रदान करने थे। राजनीति की कीचड़ में फंसना उन्हे नहीं भाया। लौट आये अपने पुराने मन्दिर में। जुट गये अपने शिष्यों को संवारने, सजाने तराशने और निखारने में। ऋषि परम्परा के इस व्यक्ति ने मवाना आने के बाद कभी आवश्यकता फंदजे का कॉलम नहीं देखा। बस इसी

विद्यामन्दिर को अपनी तपोस्थली बना लिया।

कुशल वक्ता : आपकी वक्तृत्व कला बड़ी अद्भुत थी। विषय का प्रस्तुतीकरण इतने सरल सामान्य प्रकार से करते थे कि अनपढ़ व्यक्ति भी उसे समझ लेता था। प्रत्येक विषय पर वह विद्वतापूर्ण ढंग से बोल लेते थे। एक बार की बात है कि मेरठ में विज्ञान के अध्यापकों ने प्रतिमाह एक वैज्ञानिक संगोष्ठी करने की योजना बनाई। मवाना से भी डिग्री कॉलिज के एक सुयोग्य प्रोफेसर को उसमें आमंन्त्रित किया गया। एक माह तक अच्छी तैयारी करके प्रोफेसर महोदय वहां भाग लेने पहुंचे परन्तु उनका सारा मसाला दस मिनट में समाप्त हो गया।

अगली बार श्री गंगाधर शर्मा प्रवक्ता एवं प्रमुख भौतिकी विभाग ए. एस. डिग्री कॉलिज मवाना ने श्री दीक्षित जी से संगोष्ठी में कुछ बोलने की प्रार्थना की। बड़े सामान्य ढंग से श्री दीक्षित जी ने कहा कि जब भी कार्यक्रम करें तो मुझे दो दिन पहले बता दें। शर्मा जी ने ऐसा ही किया। श्री दीक्षित जी एक घंटे से भी अधिक समय तक विज्ञान की विविध शाखाओं पर धारा प्रवाह बोले। उनके पास न कोई, नोट्स का कागज था न किताब न डायरी। शर्मा जी से श्रोताओं ने पूछा कि दीक्षित जी विज्ञान की कौन सी शाखा के पंडित है। शर्मा जी ने जब कहा कि ये तो हिन्दी के ज्ञाता है। मात्र एम.ए. हिन्दी बी.टी.। लोगो को आश्चर्य हुआ उन्होने दांतो तले अंगुली दबाते हुए कहा आश्चर्य है कि हिन्दी जैसे गरीब से विषय के परास्नातक विद्वान विज्ञान की इतनी जानकारी रखते है। यह सब उनके निरंतर स्वाध्याय के कारण ही सम्भव हो सका।

साहित्यिक गति विधि : पाठ्य क्रम के अतिरिक्त भी अनेक कार्यक्रमों का आयोजन भी दीक्षित जी किया करते थे। इनके समय का कवि सम्मेलन स्वयं में अद्वितीय होता था। भारत के मूर्घन्य कवि कॉलिज के कवि सम्मेलन में भाग लेते थे। शायद ही कोई प्रसिद्ध हिन्दी कवि बचा हो जो यहां के कवि सम्मेलन में न आया हो। मुझे याद है कि एक बार रात्रि को



दस बजे से आरंभ हुआ कवि सम्मेलन प्रातः ६.३० बजे तक चला था। इतने पर भी मंत्र मुग्ध श्रोता जाना नहीं चाहते थे।

व्यवहार पटुता : एक बार मैं उनके कार्यालय मे किसी कार्यवश गया था। तभी उनके परिचित एक सज्जन आए। उनसे अपने लड़के की फीस माफी का फार्म मांगने लगे। दीक्षित जी जानते थे कि यह व्यक्ति काफी सम्पन्न है। दीक्षित जी ने बहुत शालीनता से उत्तर दिया कि फार्म की क्या आवश्यकता है? बस आप इसकी फीस माफ समझें। यह हर १४ ता. की शाम को मुझसे फीस ले जाकर १५ ता. को जमा कर दिया करें। आखिर यह मेरा भी तो बेटा है। वह व्यक्ति बनावटी मुस्कान दिखाता हुआ लज्जित होकर चला गया।

अपरिग्रह : सेवानिवृत्ति के बाद भी दीक्षित जी के पास कोई विशेष धनराशि या सम्पत्ति नहीं थी। हस्तिनापुर में बहुत समय पहले खरीदा हुआ। एक साधारण सा मकान ही उनके पास था। सेवा निवृत्ति के पश्चात् नगर की आपाधापी से दूर वह हस्तिनापुर की प्राचीन ऐतिहासिक नगरी में ही मृत्युपर्यन्त रहे। वहां के आर्य समाज व आर्यं वानप्रस्थाश्रम की स्थापना का श्रेय भी आपको ही है। आपने अथक परिश्रम करके व ग्राम-ग्राम-नगरों में जा कर दान राशि एकत्र की थी-अपनी टीम तैय्यार की थी व वेद प्रचार में लगे रहे।

स्वाध्याय शील व्यक्ति : प्रायः सेवा निवृत्ति के पश्चात व्यक्ति स्वयं को निरर्थक समझकर आलसी हो जाता है। किन्तु दीक्षित जी ने सेवा निवृत्ति के बाद स्वयं को सेवा कार्य से विमुक्त होने पर स्वयं को हल्का महसूस किया। वेद, उपनिषद, दर्शन इत्यादि का अध्ययन मनन उन्होने सेवा निवृत्ति के बाद ही किया। नित्य समाचार पत्र विभिन्न पत्रिकाएं तथा पुस्तकें पढ़ते रहने के कारण उनका ज्ञान अद्यतन बना रहा। प्रत्येक विषय पर उनकी अच्छी पकड़ थी। वे कहा करते थे कि मैंने छात्रों को कभी शारीरिक दण्ड कभी नहीं दिया। फिर भी मैंने देखा कि उनके नैतिक प्रभाव से छात्र उनसे भयभीत और आतंकित न होकर उन्हें श्रद्धापूर्वक नमन करते थे।

आचार्य श्री अपने जीवन के आरंभकाल से ही परमदेशभक्त रहे थे। आप स्वतंत्रता सेनानी थे। देश, समाज और अपने छात्रों के प्रति वह पूर्णतया समर्पित रहे। छात्रों में भी उन्होने मातृभूमि के प्रति चैतन्य जागृत किया। **"आत्मनोमोक्षार्थ जगद्धिताय च"** को उन्होने जीवन का लक्ष्य बना रखा था। सरल सादा जीवन, तेजस्वी आभा मण्डल, खादी का परिधान भुलाये नहीं भूलता। जीवन के अन्तिम समय में उनके सुयोग्य ज्येष्ठ पुत्र श्री जगदीश दीक्षित और कनिष्ठ पुत्री शैला ने उनकी बहुत सेवा की। जब भी उन्हे विद्यालय में शिक्षकों और छात्रों ने निमन्त्रित किया वह सहर्ष आते रहे और दिशा निर्देश देते रहे। ऐसे पितृ तुल्य ऋषि परम्परा के उस महापुरुष को मेरा कोटिशः नमन।

कहीं शैतान मिलते हैं, कहीं भगवान मिलते हैं,

कहीं नादान मिलते हैं, कहीं विद्वान् मिलते हैं,

बहुत ढूंढा, बहुत ढूंढा, तब जाकर यह बात कहता हूं

कहां आजकल विद्यासागर दीक्षित जैसे इन्सान मिलते हैं,

पुनः मै आचार्य दीक्षित जी को नमन करता हूं।

राजेन्द्र प्रकाश वैद्य
दिव्य योग मंदिर ट्रस्ट
कृपालु बाग आश्रम
कनखल, हरिद्वार
(उत्तराखण्ड)

आदर्श शिक्षक, शिक्षाविद् एवं सद्गुरु
श्री विद्यासागर दीक्षित

लालमणि जोशी



गुरु ऋण कभी भी चुकाया नहीं जा सकता है। गुरु जी श्री दीक्षित जी की कृपा व आशीर्वाद से मुझे सदैव बड़ी शक्ति मिलती रही है।

पूरम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री विद्यासागर दीक्षित जी के उपकारों को जो उन्होंने मेरी बाल्यावस्था व विद्याध्ययन के समय लगभग ६५-६८ वर्ष पूर्व मुझ पर किये थे उन्हें न भूला हूं और न जीवन भर भूल पाऊंगा। सच पूछिये तो जीवन में जो उन्नति मैंने की व सरकारी पदों पर काम किया उन सबका श्रेय गुरुकृपा व गुरुजी के आशीर्वादों को ही जाता है।

वर्ष १९४०-४१ में रामगढ़ तल्ला, जिला-नैनीताल में नारायण स्वामी विद्यालय की स्थापना हुई जिसके हैड मास्टर पद पर श्री विद्यासागर दीक्षित जी की नियुक्ति हुई थी। मैंने अपनी मनोभावनाएं जीवन के कटु सत्य अपनी पारिवारिक स्थिति अपनी निर्धनता व परम पूज्य गुरुजी श्री दीक्षित जी ने मेरे ऊपर उन दिनों जो कृपा की थी, व जिस प्रकार Practical training आवश्यक कार्यो को पूरा करने हेतु रामगढ़ से नैनीताल पैदल जाना Picnic व Tours पर अन्य विद्यार्थियों के साथ जाना आदि के विषय में अपने एक अंग्रेजी के ५ पृष्ठों के लेख में सम्मिलित की थी।

मेरे उक्त लेख को "श्रद्धा सुमन माला" के अंतर्गत तैयार की गई पुस्तक "मेरे पूज्य गुरुदेव श्री विद्यासागर दीक्षित" में मेरे गुरु भाई श्री पाल प्रवीण जी ने सम्मिलित किया था जिससे मुझे अपार हर्ष हुआ था। परम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री दीक्षित जी के सम्मान में ८५ पृष्ठ की उक्त पुस्तक १६ जनवरी १९९९ को पूज्य गुरुजी की जन्म वर्षगांठ के शुभ अवसर पर लखनऊ में तैयार की गई थी।

अपने अंग्रेजी के ५ पृष्ठों के लेख में जो संस्मरण, उद्गार व मनोभावनाएं परम पूज्य गुरुजी के सम्मान में मैं लिख चुका हूं उनको पुनः

हिन्दी में लिखने का विचार नहीं है क्योंकि जनवरी २००३ में प्रकाशित आचार्य विद्यासागर अंक में मेरी उक्त भावनाएं व संस्मरण सम्मिलित किए जा चुके हैं। गत ८-६ वर्षों में परम पूज्य गुरुजी के पत्रों से जो उनके सिद्धान्त आदर्श व गुरु मन्त्र मुझे प्राप्त हुआ है उन्हें ही मैं अब लिख रहा हूं। परम पूज्य गुरुजी श्री दीक्षित जी अपनी वृद्धावस्था लगभग १०० वर्ष में भी अपने ज्ञान की वर्षा अपने सभी शिष्यों हितैषियों, सहयोगियों व धर्म प्रेमियों पर करते रहे है उनके मार्गदर्शन निर्देश सुझाव धार्मिक व राष्ट्रीयता की भावनाओं से ओत-प्रोत हम सभी उनके शिष्यों को उनके पत्रों के माध्यम से यदा-कदा प्राप्त होते रहे हैं। हम सभी का यह प्रयास रहता है कि उन सद् विचारों अमृत वचनों व गुरुवाणी को अधिक से अधिक गुरु भाइयों गुरुजी के पुराने शिष्यों, बुद्धिजीवियों/सहयोगियों/शिक्षकों को पत्रों के माध्यम से या छोटी पुस्तिकाएं प्रकाशित करके दूर-दूर तक पहुंचायें। इस प्रकार गुरु शिष्य परम्परा को पुनर्जीवित किया जा सकता है।

श्री पाल प्रवीण अपनी धर्मपत्नी के साथ हमारे निवास पर हल्द्वानी ६ व ७ दिसंबर १६६६ को आए थे। उसी समय वे गोरखपुर हल्द्वानी के पास महरा गांव, रामगढ़ तल्ला पूज्य गुरुदेव का कर्म क्षेत्र नारायण स्वामी आश्रम, विद्यालय व नैनीताल आदि भी घूमने गये थे जहां उन्होने बहुत से गुरु भाइयों व उनके परिवार के सदस्यों से भेंट की थी व अपने मिशन गुरु शिष्य परम्परा को आगे बढ़ाने का प्रयास किया था। पूज्य गुरुजी के लिखित आदेश-सुझाव पर व पाल जी के निमंत्रण पर मेरी पत्नी व मैं वर्ष २००१ में हस्तिनापुर गए थे। पूज्य गुरुजी व उनके सुपुत्र जगदीश भाई ने हम दोनों को ३-४ दिन अपने निवास पर ही ठहराया। वे मेरे जीवन के स्वर्णिम दिन थे। पाल जी भी उन दिनों आर्य वानप्रस्थाश्रम हस्तिनापुर में निवास कर रहे थे। पूज्य गुरुजी से रामगढ़ में व्यतीत किए कुछ वर्षों व विभिन्न विषयों पर मुख्यतः अध्यात्म व ब्रह्म विद्या पर खूब बातें होती थीं। आर्य समाज हस्तिनापुर में यज्ञ सत्संग में भी हम सम्मिलित होते रहे। वहीं आदरणीय श्री बसन्त सिंह "भृङ्ग" जी व उनके परिवार का आतिथ्य सत्कार भी मिला, जो हमें सदैव याद रहेगा।

मेरे ऊपर ईश्वर की कितनी कृपा थी कि मुझें ही नहीं वरन् सारे परिवारजनों को भी पूज्य गुरुजी श्री दीक्षित जी का ही नहीं वरन आदरणीया माता जी गुरुमाता का भी आशीर्वाद १९९८ तक मिलता ही रहा। उनके हार्दिक आशीर्वाद का ही यह चमत्कार था कि मुझ जैसे अंकिचन पत्थर को भी योग्य बना दिया व सफलता मुझे सदैव मिलती रही है। इसीलिये मैं ईश्वर से यह प्रार्थना करता हूं कि मुझे आगे के जन्मों में भी पूज्य गुरुजी व गुरुमाता के आशीर्वाद मिलते रहें। पूज्य गुरुजी सदैव मेरे स्वास्थ्य के विषय में चिंतित रहे व अपने पत्रों में बायोकैमिक औषधियों, प्राकृतिक उपचार व जल पानी पीने का तरीका लिखते रहे। पूज्य गुरु जी की कृपा व आशीर्वाद से ही मुझे प्रकाश मिला,. अन्यथा मेरे जीवन में अंधेरा ही बना रहता।

परम पूज्य गुरुदेव अपनी आत्मकथा स्वयं तैयार करने के पक्ष में कभी नहीं रहे, परन्तु मैं अपना यह पुनीत कर्तव्य समझता हूं कि उनके विभिन्न पत्रों में जो उपयोगी अंश मेरे ही लिए नहीं वरन सभी के लिए उपयोगी होंगे उन्हें प्रकाशित किया जाए। अतः मैं उन पत्रों में से कुछ को प्रकाशित करने का अनुरोध कर रहा हूं। यदि पूज्य गुरुदेव के पद चिन्हो पर २-४ बुद्धिजीवी, नई पीढ़ी के कुछ बच्चे, विद्यार्थी शिक्षक चल सकें तो मुझे हर्ष होगा। पूज्य गुरुजी श्री दीक्षित जी का शताब्दी वर्ष २००७ में मनाया जा रहा है तथा विभिन्न स्थानों पर पर्यावरण गोष्ठियां, वृक्षारोपण, शिक्षक सम्मान, योग प्राणायाम शिविरों आदि का आयोजन जनवरी २००८ तक होगा। पूज्य गुरूजी के पुराने शिष्य व सहयोगी इस दिशा में निरन्तर प्रयासरत हैं।

मुझे आशा है कि पूज्य गुरुजी की स्मृति को सदैव जीवित रखने के लिए उक्त कार्यक्रम समाज के हर प्राणी के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे। आचार्य श्री विशेषांक/स्मृतिग्रंथ के प्रकाशन हेतु मैं अपनी समस्त शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

६-३८५/८, नवाबी रोड
आनन्दीपुरम कालोनी



न्यायमूर्ति के० एल० शर्मा
पूर्व न्यायाशीध, उच्च न्यायालय
पूर्व अध्यक्ष
जांच आयोग

०५२२-२२३५४८४
२२३८४६८
१२, आवास विकास कालोनी,
माल एवेन्यु, लखनऊ-२२६००१

आचार्य विद्यासागर दीक्षित विद्वान, निष्ठावान्-आदर्श शिक्षक

परम पूज्य गुरु जी एक आदर्श गुरु, शिक्षक, प्रेरक, विचारक और समाज सुधारक थे। उन्होंने सदैव अपने शिष्यों के चरित्र निर्माण पर विशेष ध्यान दिया जिसके कारण उनके शिष्यों ने अपने अपने जीवन में सफलता प्राप्त की और समाज कल्याण के लिये महत्वपूर्ण कार्य किये। श्रद्धेय गुरु जी ने देश की स्वतन्त्रता के लिये अंग्रेजों के विरूद्ध संग्राम में बढ़ चढ़ कर भाग लिया और जीवन के अंतिम समय तक समाज सुधार के लिये अथक प्रयास किया। आदरणीय गुरु जी ने हस्तिनापुर में आर्य समाज तथा आर्य वानप्रस्थाश्रम की स्थापना फरवरी १९६९ को की थी जिसके वह प्रधान पद पर कई वर्षों तक सेवा करते रहे। वह स्वयं वैदिक प्रचार में व्यस्त रहते थे और समाज में नैतिक मूल्यों और अनुशासन की आवश्यकता पर पूरा बल देते थे।

मुझे अच्छी तरह से स्मरण है कि अपने बाल्यकाल में मैं अपने माता-पिता, भाइयों, बहिन के साथ मवाना में रहता था। मैंने १९४८ में ऐंग्लो संस्कृत कॉलिज, मवाना में आठवीं कक्षा में प्रवेश लिया था। मुझे प्रवेश मिलने में बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा क्योंकि मैं उर्दू भाषा का विद्यार्थी था व हिन्दी शिक्षक ने मुझे हिन्दी की कक्षा में प्रवेश के लिए स्पष्ट रूप से मना कर दिया था यह कहते हुऐ कि विद्यालय का नाम ऐंग्लो संस्कृत कॉलिज है अतः उर्दू के प्रेमी विद्यार्थी के लिये जगह नहीं है। मेरी मनोव्यथा का आप अनुमान नहीं लगा पाएगें। यह समस्या जब प्रधानाचार्य श्री विद्यासागर दीक्षित जी के सम्मुख प्रस्तुत की गई तो उसका समाधान हो गया। मुझे कड़ी मेहनत करके हिन्दी का प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त करने के

निर्देश दीक्षित जी ने दिए व उनसे मैं निरन्तर प्रेरणा लेता रहा। उनकी प्रेरणा स्वरूप ही मैं ने हिन्दी की "प्रथमा" परीक्षा उत्तीर्ण की व हिन्दी में प्रत्येक कक्षा में उच्च अंक निरन्तर प्राप्त करता रहा। बाद में आचार्य जी के आह्वान पर मैंने "साहित्य रत्न" की परीक्षा भी उत्तीर्ण की।

पूज्य दीक्षित जी का आकर्षक व्यक्तित्व, उनका अथक परिश्रम, कक्षाओं में अचानक पहुंचकर निरीक्षण करना मेधावी विद्यार्थियों में स्वयं रुचि लेना व उन्हे विभिन्न गतिविधियों, वाद विवाद प्रतियोगिता अन्त्याक्षरी यज्ञ करने हेतु प्रेरित करना आदि मैं कभी भी नहीं भूल सकता। हमारी मातृ संस्था ऐंग्लो संस्कृत कॉलेज की प्रगति, विस्तार व उसकी छवि चहुं ओर उज्ज्वल करने में पूज्य दीक्षित जी सदैव लगे रहे। वे अन्य शिक्षकों एवं विद्यार्थियां के लिए प्रेरणा स्रोत उस समय भी थे व अन्त तक अपनी विद्वत्ता, सूझबूझ स्वाध्याय वेद प्रचार व समाज सुधार के कार्यों में लगे रहे।

श्री दीक्षित जी एक आदर्श गुरु रहे हैं व अनुशासन पर सदैव जोर देते रहे हैं। उनके आशीर्वाद से न जाने कितने विद्यार्थियों का जीवन सफल हो गया कितने विद्यार्थी सरकारी विभागों में उच्च पदों पर रहते हुए सेवा निवृत्त हो गये एवं बहुत से आज भी विभिन्न विभागों में कार्यरत हैं।

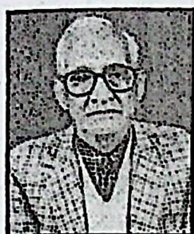
मुझे इस बात का गर्व है कि पूज्य दीक्षित जी मुझे विद्यालय का एक विद्यार्थी होने के अतिरिक्त अच्छी तरह से जानते व पहचानते थे। मैं अपनी ज्यूडिशियरी की सेवा काल में जहां भी नियुक्त रहा कई स्थानें पर आदरणीय श्री दीक्षित जी अपने आशीर्वाद देने हेतु आये व मेरी प्रोन्नति हेतु अपनी शुभ कामनाएं देते रहे।

परम श्रद्धेय गुरु जी की प्रतिष्ठामें प्रकाशित होने वाले आचार्य श्री विशेषांक-स्मृति ग्रंथ के लिए मैं अपनी समस्त शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

करणलाल शर्मा
लखनऊ

तपोभूमि रामगढ़ में गुरुदेव के सात वर्ष

नारायण सिंह बिष्ट



भारत माता की पावन भूमि में अनेक महान आत्माओं ने जन्म लिया और दिव्यता प्रदान की। उनमें से एक विभूति आचार्य श्री विद्या सागर दीक्षित जी थे। उनका जन्म १९.०१.१९०७ में हुआ। सौ वर्ष पूर्ण करने के कुछ ही माह पूर्व, ब्रह्ममय रहते हुए २८.०६.२००६ को पार्थिव शरीर त्याग कर उन्होने इस संसार से विदा ली। धन्य हैं वे माता-पिता जिन्होंने इन्हें विद्या सागर नाम दिया-यथा नाम तथा गुण। निस्सन्देह, वे विद्या के सागर ही थे- सामान्य अर्थ में अभिप्रेत 'विद्या' ही नहीं अपितु ब्रह्म-विद्या के।

मैने उन्हें सर्वप्रथम सन् १९४२ में देखा जब नैनीताल जनपद के ग्रामीण अंचल में महात्मा नारायण स्वामी हाई स्कूल की स्थापना की जा रही थी। स्कूल के लिए एक योग्य आचार्य की आवश्यकता थी। विद्यालय के प्रबन्धक डॉ इन्द्र सेन का संयोगवश सम्पर्क दिल्ली में गुरुदेव से हुआ और स्कूल के लिए एक योग्य आचार्य की आवश्यकता पर चर्चा हुई। उस समय गुरुदेव दिल्ली के प्रख्यात और पुराने रामजस स्कूल में आचार्य के स्थाई पद पर कार्यरत थे। रहने को आवास था तथा सभी सुख-सुविधाएं प्राप्त थीं।

गुरुदेव का बचपन से ही हिमालय के प्रति आकर्षण था। उनका कहना था-बचपन से ही मुझे हिमालय बुलाता रहा। हिमालय के प्यार के कारण ही मैंने हिमालय की गोद में स्थित रामगढ़ के ग्रामीण क्षेत्र के स्कूल की सेवा करने का मन बना लिया और यह सेवा स्वयं ही करने की सहमति दे दी। वेतन कम पाने और रामगढ़ में सुख-सुविधाओं के अभाव की भी चिन्ता नहीं थी।

अतः गुरुदेव ने दिल्ली के श्रेष्ठ स्कूल की सेवा छोड़ दी।

रामगढ़ सुन्दर स्थान था, परन्तु अनेक कठिनाइयां थीं। घर से जल लेने कुछ दूर नदी पर जाना पड़ता था। विद्यालय का अपना भवन नहीं था। समुचित प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों का भी अभाव था, जिला विद्यालय निरीक्षक औस्टिन एक अंग्रेज था जो तत्कालीन गवर्नर हैलेट का साढू भाई था। प्रशासन व्यवस्था में कठोर था। विद्यालयों के कार्य संचालन पर कड़ी नजर रखता था। ट्रेन्ड अध्यापकों के अभाव में उससे मान्यता प्राप्त करना टेढ़ी खीर थी। इन चुनौतियों को स्वीकार करते हुए गुरुदेव ने स्कूल की सेवा में दिन रात एक कर दिये।

सबसे महत्वपूर्ण कार्य स्कूल के लिए भवन बनवाना था। सभी छात्रों से गुरुदेव ने एक पीरियड श्रमदान करने का आह्वान किया। सभी छात्र व शिक्षक प्रतिदिन समीप की नदी से पत्थर लाते थे। गुरुदेव स्वयं इस कार्य में भाग लेते थे। कुछ ही समय में विद्यालय का भव्य भवन बन गया।

गुरुदेव के उत्साह लगन और कठोर परिश्रम को देखते हुए कठोर ऑस्टिन प्रभावित हो गया, उसने विद्यालय को मान्यता प्रदान कर दी। स्कूल निरीक्षण के अवसर पर वह टूटी-फूटी हिन्दी में अपने उदबोधन में इस प्रकार बोला-"मै मानता हूं कि इस स्कूल के पीछे एक विशेष Drive (शक्ति) काम कर रही है। मैं बेहद खुश हूं।" उस निरीक्षण की मुझे याद है। ऐसे नियम पालक ऑस्टिन से मान्यता मिलना व प्रशंसा गुरुदेव की पारदर्शक निष्ठा का प्रमाण है।

उनके कार्यकाल में स्कूल दिनोदिन प्रगति करता रहा, चाहे सामान्य शिक्षा का क्षेत्र हो अथवा खेल का, वाक्-प्रतियोगिता हो अथवा सदाचार की बात हो या अन्य रचनात्मक कार्यकलाप हों। उस अवधि में उत्तर प्रदेश के सम्पूर्ण पर्वतीय अंचल में इस विद्यालय की कीर्ति-ध्वजा फहराने लगी।

आचार्य जी के जीवन में इतनी दिव्यताएं थीं कि उनका

विस्तार से वर्णन करना इस लेख में संभव नहीं है। कुछ प्रसंग यहां दिये जा रहे हैं।

स्कूल के कार्य हेतु उन्हें १५ मील दूर नैनीताल स्थित जिला विद्यालय निरीक्षक के कार्यालय पैदल जाना पड़ता था, जिसके लिए नियमानुसार यात्रा भत्ता देय था, परन्तु गुरुदेव मात्र चार आने (¼ रूपया) की मांग प्रस्तुत करते थे। उनका कहना था कि उनका इतना ही व्यय चना-मूंगफली खाने में हुआ। कितनी महानता थी उनमें! भारत माता के ऐसे सपूत को नमन! भारत में वर्तमान में क्या हो रहा है, यह किसी से छिपा नहीं है।

स्कूल में एक विशाल वाचनालय था जिसमें लगभग ५० समाचार पत्र व पत्रिकाएं आया करती थीं। खाली पीरियड में छात्र स्वेच्छा से इन्हें पढ़ते थे, ऐसी रुचि आचार्य जी ने जगा दी थी। प्रत्येक शनिवार का आधा दिन कविता पाठ, वाक्-प्रतियोगिता तथा अन्य रचनात्मक कार्यों में लगाया जाता था। इस दिन गुरुदेव स्वयं छात्रों के लिए प्रेरणात्मक शिक्षा देते थे। उनकी कल्याणी वाणी में सरस्वती का वास था-ज्ञान की धारा बहती थी, नैतिकता और श्रेष्ठ जीवन जीने का प्रकाश मिलता था। उनके अधिकांश छात्रों ने जीवन में बड़ी ऊंचाइयों पर आरोहण किया। इस सम्बन्ध में गुरुदेव का कहना था।

Best regard of my students is my valuable possession. I shall ever cherish it. My heart is filled with pride when I hear that my dear students have attained great heights. My stature in life is measured by the heights attained by my students (12-7-1987)

ब्रिटिश शासन काल में कक्षा ८ तक उर्दू शिक्षा अनिवार्य थी, मेरे विद्यालय में उर्दू का शिक्षक उपलब्ध नहीं था। इस कमी की पूर्ति स्वयं गुरुदेव किया करते थे। यदा-कदा खाली पीरियडों में वे अचानक आकर उर्दू पढ़ाते थे। उनके पढ़ाने का ढंग इतना रोचक होता था कि मैंने कुछ ही समय में उर्दू पढ़ना और लिखना सीख लिया। एक और संस्मरण उल्लेखनीय है।

उस समय प्राइमरी शिक्षा केवल कक्षा ४ तक होती थीं उक्त शिक्षा प्राप्त कर मैं सन् १९४२ में गुरुदेव के स्कूल में आया। नियमानुसार मुझे कक्षा ३ में प्रवेश मिला। इस कक्षाके खाली पीरियडों में गुरुदेव आने लगे। आते ही वे अंग्रेजी शब्दों के स्पेलिंग पूछते थे। सही उत्तर देने पर शिक्षार्थी बैठता था। गलत उत्तर वाले खड़े रहते थे। सही उत्तर देने वाले तीन छात्रों में एक मैं भी था। तीन माह तक यह क्रम चलता रहा । एक दिन गुरुदेव ने प्रसन्न होकर कहा-कल से तुम तीनों कक्षा ४ में बैठना। शनिवार के विशेष कार्यक्रम में हमें कुर्सियों में बैठाकर सम्मानित किया गया। यह थी उनकी सोच! न कोई पक्षपात और न कोई स्वार्थ। वही करना जिसमें सबका कल्याण हो।

वार्षिक परीक्षा में कुछ छात्रों का कुछ अंको से असफल होना एक सामान्य बात है। गुरुदेव ने ऐसे छात्रों के बारे में भी सोचा। ऐसे छात्रों को अस्थाई रूप से पास कर दिया जाता था, परन्तु इस प्रतिबन्ध के साथ कि वे कठोर परिश्रम करेंगे और एक व्रत धारण करेंगे-सिर के बालों को मशीन से काट कर साल भर छोटा रखेंगे, जिससे उन्हें आभास होता रहे कि उन्हें अपनी न्यूनता पूरी करनी है। गुरुदेव प्रत्येक माह उन छात्रों का निरीक्षण करते थे। इसका आशातीत परिणाम हुआ।

आचार्य देव का अनुशासन तो अद्वितीय था। छात्र-छात्राओं का चरित्र निर्माण उनका प्रमुख ध्येय था। प्रार्थना के बाद उनके संक्षिप्त उद्बोधन में इस पर जोर दिया जाता था। वे प्रत्येक बालक/बालिका और उनके अभिभावक के बारे में सम्पूर्ण जानकारी रखते थे- वर्तमान युग के कम्प्यूटर के समान। उनकी कथनी और करनी में तनिक भी भिन्नता नहीं होती थी, उनका जीवन गंगा की भांति पावन और निर्मल था। जो उपदेश देते थे, उसे स्वयं अपने दैनिक जीवन के आचरण से सिद्ध करते थे।

अपने मूल सिद्धान्तों पर अडिग रहना उनका स्वभाव

था-इनमें कोई समझौता नहीं। सन् १९४७ में किसी मामले में सिद्धान्त लक्ष्मण रेखा के अतिक्रमण की परिस्थति में गुरुदेव ने खून पसीने से सींचे, पल्लवित एवं पुष्पित किए गये रामगढ़ के स्कूल से त्याग पत्र दे दिया। स्कूल प्रबन्धक श्री राजेन्द्र नाथ मुट्टू (जो स्वयं एक आदर्श व्यक्ति थे) के अनुरोध के बावजूद भी वे अपने निश्चय पर अकम्प रहे और मवाना (मेरठ) आ गये, जहां उन्होने अनेक संस्थाओं को संवारा स्थापित किया। रामगढ़ की क्षति मवाना की उपलब्धि हुई।

गुरुदेव को रामगढ़ छोड़ने का बड़ा दुःख हुआ, उनका कथन है: नारायण स्वामी हाई स्कूल मेरे जीवन का एक दिव्य उद्देश्य था, मै एक अध्यापक नहीं था। यह मेरा राष्ट्रीय लक्ष्य था। अपने जीवन का सर्वोत्तम भाग मैने रामगढ़ में ही बिताया और हृदय से उस क्षेत्र की सेवा की मुझे इसकी याद सदा रहेगी। मैं रामगढ़ से प्यार करता हूं। रामगढ़ मेरी चाह है। (आज भी) मैं मानसिक नेत्रों से रामगढ़ का आनन्द अनुभव करता हूं, रामगढ़ अध्यात्म के लिए आदर्श स्थान है। मैं अपनी अंतिम सांस रामगढ़ में ही लेना चाहता था, इसी उद्‌देश्य से मैंने वहां स्कूल की सेवा करनी चाही। रामगढ़ में सेवा करना मेरे लिए आजीविका अर्जन का साधन नहीं था अपितु हिमालय की गोद के ग्राम-अंचल में सेवा का अवसर था।

गुरुदेव के रामगढ़ छोड़ने से वे उस स्वप्न को साकार नहीं कर पाए जो उन्होने संजोया था-स्कूल को डिग्री कालेज स्तर तक उन्नत करना, कृषि, बागवानी, सिलाई-बुनाई, मधु-उत्पादन, पेपर टेक्नोलॉजी आदि बुनियादी शिल्पों/उद्योगों की शिक्षा की व्यवस्था। ज्ञातव्य हो कि उस समय के छात्र-छात्राओं ने आगे चलकर अप्रतिम यश और कीर्ति के स्थानों को प्राप्त किया, इसका श्रेय गुरुदेव को ही है। उस संस्था और तत्कालीन छात्रों में उनके तपः प्राण घुल थे।

उन्होने नारायण स्वामी आश्रम के निकट नदी तट पर एक

छोटी सी कुटिया भी बनवाई। नियति को कुछ और ही मंजूर था। उस कुटी के बारे में उन्होने कुछ वर्ष पूर्व लिखा-"यह घर ना मेरा था, यह तो रैन-बसेरा था। मुझे ममता नहीं।" है न यह वेद की ध्वनि-इदन्न मम? मुझे उनका अमित प्यार व स्नेह मिला। मैं अपने को धन्य समझता हूं।

गत वर्षो में मैं अपने पूरे परिवार के साथ उनके दर्शन करने हस्तिनापुर जाता रहा हूं व उनसे अंत तक पत्राचार होता रहा। गुरुदेव को शत शत नमन।

नारायण उद्यान
रामगढ़ मल्ला
नैनीताल (उत्तरांचल)

नारायण सिंह बिष्ट
पूर्व अपर निदेशक
उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण
उत्तर प्रदेश-उत्तराखंड।



आर्य समाज आर्य वानप्रस्थाश्रम, हस्तिनापुर में दिसम्बर २००५ में आयोजित वेद प्रचार समारोह के अवसर पर सभा की अध्यक्षता कर रहे श्री इत्रपाल ढाका प्रमुख अतिथि डा० वेद प्रकाश "वटुक", आचार्य जी आर्य समाज के प्रधान डा० सुखबीर सिंह एवं दयानन्द स्कूल के प्राचार्य श्री वंशला

स्वर्गीय श्री विद्यासागर दीक्षित

एक आदर्श व्यक्तित्व–निर्भीक व निष्पक्ष प्रधानाचार्य

कर्नल पाल प्रमोद



मुझे अपने बाल्यकाल का स्मरण तब से है जब मैं सन १९५४-५५ में आर्यकुमार पाठशाला मवाना (मेरठ) में कक्षा ४ में पढ़ता था। तभी से मेरी स्मृति में पूज्य दीक्षित जी समाये हैं जो उस समय ऐंग्लो संस्कृत इण्टर कालिज मवाना में प्रधानाचार्य थे। दीक्षित जी को मेरे-पूज्य बाबाजी स्व० लाला हरप्रसाद जी व पिताजी स्व० श्री प्रियपाल जी से विशेष आदर और स्नेह था और वे अक्सर शाम को पैदल या साइकिल से उनके पास मिलने आत थे हमारे बाबाजी से पास बाहर चबूतरे पर बैठकर बातचीत करते थे। उनको देख कर और उनके स्नेह व आशीर्वाद भरे हाथ को अपने सिर पर पाकर अत्यंत प्रसन्नता होती थी। जब भी वे आते थे मैं मौहल्ले के बच्चों के साथ सड़क पर या घेर में खेलता होता था। जैसे ही मैं दीक्षित जी को देखता अपना खेल छोड़कर उनके पैर छूता और बिना बाबाजी या पिताजी के आदेश प्राप्त हुये अन्दर घर में जाकर उनके लिये जल लाता और अम्माजी को उनकी जलपान व्यवस्था करने को कहता।

आर्यकुमार पाठशाला से कक्षा ५ के बाद मेरा प्रवेश कक्षा ६ में मिडिल स्कूल में करा दिया गया। लेकिन कक्षा ६ के बाद मैंने ऐग्लो संस्कृत इण्टर कालिज में ही प्रवेश पाने की जिद की ताकि मैं दीक्षित जी के प्रध ाानाचार्यत्व में शिक्षा पा सकूं। कक्षा ६ व ८ मैंने ए०एस० इण्टर कालिज से उत्तीर्ण की। इस दौरान दीक्षित जी को असीम गुणों की खान पाया। कालिज के सभी विद्यार्थी और शिक्षक उनके प्रति विशेष आदर भाव रखते थे। अनुशासन उनकी प्रथम प्राथमिकता थी जिससें उन्होंने कभी समझौता नहीं किया चाहे अनुशासन हीनता शिक्षक ने की हो या विद्यार्थी ने। समय की पाबन्दी पर उनका बड़ा ज़ोर था। वे अपने कार्यालय में बैठना पसन्द नहीं करते थे बल्कि कालिज में कक्षाओं का चक्कर काटते रहते थे यह

देखने के लिये कि शिक्षक कक्षा में उपस्थित है और सही ढंग से पढ़ा रहे हैं। एक बार एक पीरियड के दौरान उन्होंने पाया कि हमारी कक्षा में कोई अध्यापक नहीं है तुरन्त उन्होने स्वयं हमें पढ़ाना शुरू कर दिया। उनके पढ़ाने का ढंग इतना रोचक था कि मन करता था कि वे और अधिक पीरियडों में हमें पढ़ायें।

पूज्य गुरु जी एक निर्भीक और निष्पक्ष प्रधानाचार्य थे। विद्यार्थियों में उन्होंने कभी भेद भाव नहीं किया चाहे विद्यार्थी किसी बड़े अमीर घर या निर्धन परिवार का हो। कालिज की प्रबन्ध समिति के सदस्यों (जो विशेष प्रभावशाली होते थे) के बच्चों को भी वे अन्य विद्यार्थियों की तरह ही देखते थे और व्यवहार करते थें। बल्कि विशेष प्रभावशाली व जानकार व्यक्तियों के बच्चों में अनुशासन के प्रति ढील में और अधिक सख्ती से काम लेते थे।

प्रातः कालिज लगने पर प्रार्थना प्रारम्भ करने से पूर्व कालिज के गेट बंद कर दिये जाते थे और जो छात्र गेट के बाहर गेट बंद होने के बाद एकत्रित होते थे उनको मास्टर कान्हा सिंह जी लाइन बनाकर प्रार्थना की जगह लाते थे और पूरे कालिज के सामने प्रधानाचार्य जी उनके दोनों हाथ आगे कराकर दंडरूप में अपनी बेंत मारते थे ताकि भविष्य में समय के पाबंद हों। एक बार मैं भी विलम्ब से कालिज गेट बंद होने पर पहुंचा। उस दिन मुझे बड़ुत शर्म भी आई और बेंत का डर भी। फिर भी मन में आया कि शायद मेरे माता-पिता से घनिष्ट सम्बन्ध होने की वजह से मुझे ज़ोर से बेंत न मारें। लेकिन ऐसा नहीं हुआ और सबसे ज़ोर से बेंत मेरे मारी गई क्योंकि मेरी आवाज़ बेंत खाकर ज़्यादा निकली। तत्पश्चात पढ़ाई शुरू होने के बाद प्रधानाचार्य जी ने मुझे अपने कार्यालय में बुलवाया और पूछा कि मैं देर से क्यों आया? मैंने उत्तर दिया कि अम्माजी हवन करने के बाद ही कालिज जाने को कहती हैं लेकिन घर के कार्यों में व्यस्त होने की वजह से हवन करने के लिये समय से तैयांर नहीं हुई इस कारण थोडी देर हो गई। इस पर आचार्य जी ने सुझाव दिया कि तुम समय से हवन का सामान लगाकर हवन करना प्रारम्भ कर दिया करो। जब तक सामग्री

डालने का समय आयेगा तुम्हारी अम्मा जी भी हवन में सम्मिलित हो जावेंगी। इस तरह तुम १० मिनट बचा लोगे और ठीक समय कालिज पहुंचोगे। मैने ऐसे ही करना शुरू किया और उसके बाद मैं कभी कालिज देर से नहीं पहुंचा।

अध्ययन काल के बाद मेरा सम्पर्क पूज्य गुरु जी से अधिक नहीं रहा क्योंकि सन १९७२ से मैं थल सेना में कमीशन प्राप्त करने के लिये चला गया था। मेरा गुरु जी से सन १९९८-२००० में कुछ पत्र व्यवहार हुआ। उनके पत्र जो उन्होंने हस्तिनापुर से लिखे वे बहुमूल्य हैं-शिक्षाप्रद हैं और धार्मिक व आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करने वाले हैं। इस बीच मैं अपनी पत्नि व बच्चों के साथ उनके दर्शन करने हस्तिनापुर जाता रहा व उनसे आशीर्वाद प्राप्त करता रहा। सेना से मैं नवम्बर २००५ में सेवा निवृत्त होकर मेरठ में रहने लगा हूं। मैं अक्सर आचार्य जी से आशीर्वाद प्राप्त करने हेतु उनके पास हस्तिनापुर जाता रहा हूं। उनके निधन से कुछ दिन पूर्व भी उनके दर्शन करने गया था। पूरे होश हवास में उन्होने बातचीत की और मुझे आशीर्वाद दिया। दिनांक २८.६.२००६ को विधि के विधान अनुसार गुरु जी हमारे बीच से चले गये। उनके देहावसान की सूचना मिलते ही मैं हस्तिनापुर पहुंचा और उनके अत्येष्टि संस्कार में सम्मिलित हुआ। क्योंकि वे एक स्वतंत्रता सेनानी भी थे इसलिये उनका प्रशासनिक व राष्ट्रीय सम्मान के साथ अन्त्येष्टि संस्कार किया गया।

पूज्य गुरुजी के निधन से रिक्तता आ गई है जो कभी भी पूरी नहीं हो सकती। हमारा सभी का यह पावन कर्त्तव्य है कि उनके अटूट सिद्धान्तों पर हम चलने का प्रयत्न करें व उनके दिखाए मार्ग से लाभान्वित हों।

ऐसे महामानव को शत शत प्रणाम

प्रधान
आर्य समाज
गंगा नगर, मेरठ

उ०प्र० माध्यमिक शिक्षक संघ के प्रथम अध्यक्ष स्व० श्री विद्यासागर दीक्षित जी की स्मृति शेष

हरिनारायण सिंह



इस परिवर्तनशील संसार में अनेक जन्म लेते हैं किन्तु जन्म लेना उन्हीं का सार्थक होता है जो अपने चरित्र, कार्यशैली एवं वाणी से अन्यों को प्रभावित करते हैं। ऐसे ही लोगों में शीर्ष स्थान प्राप्त श्री दीक्षित जी थे। श्री दीक्षित जी का पदार्पण ऐसे व्यवसाय में हुआ जो अत्यन्त गरिमा मंडित था किन्तु वर्तमान में किन्ही कारणों से अपनी गरिमा से च्युत हो गया है।

दीक्षित जी ने शिक्षक कल्याण निमित्त उ०प्र०मा० शिक्षक संघ का गठन किया। आप संगठन के अनुकरणीय एवं आदर्श अध्यक्ष रहे हैं। दीक्षित जी अत्यन्त सरल व्यक्तित्व के धनी थे। उन्हें हम लोग देवता के रूप में मानते हैं। वे जब मंच पर हुआ करते थे तो उनकी प्रस्तुति एवं सारगर्भित विचार लोगों को मंत्रमुग्ध तथा इतना प्रभावित करते कि लोग उनकी प्रशंसा के लिए शब्द दारिद्र्य का अनुभव करते थे। देवरिया सम्मेलन में जब शिक्षा का राष्ट्रीयकरण विषय पर विचार मन्थन चल रहा था, राष्ट्रीयकरण का प्रश्न लोगों के मस्तिष्क में विभिन्न ढंग से कौंध रहा था। श्री दीक्षित जी ने अत्यन्त सरल भाव से अपना विचार प्रस्तुत किया कि यदि सम्पूर्ण लोगों की भावनाएं मेरे विचार से आहत न हों तो वर्तमान प्रबंधतंत्रीय व्यवस्था समाप्त कर दी जाय तथा शिक्षा का दायित्व राज्य सरकार को दे दिया जाय। दीक्षित जी के इस प्रस्ताव का समुपस्थित लोगों ने हर्ष ध्वनि से समर्थन किया। क्षण भर में ही कोलाहलपूर्ण वातावरण नीरवता में परिवर्तित हो गया। ऐसे विचार के धनी प्रज्ञा सम्पन्न व्यक्ति थे श्रद्धेय दीक्षित जी।

वह मानते थे कि शिक्षा एक ऐसी पूंजी है जिसके संरक्षण, परिरक्षण एवं संवर्धन से देश का सामाजिक एवं आर्थिक सन्तुलन सदैव सन्तुलित रहेगा। जिस नेता के मन में इस प्रकार के भाव प्रवाहित होते हों वह क्या साधारण व्यक्ति हो सकता है? मेरा तो मानना है कि कदापि नहीं। वह देव

तुल्य थे। देवता भी सबके कल्याण की भावना से ओत-प्रोत होता है। इसी के पर्याय श्री दीक्षित जी थे।

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ के प्रथम अध्यक्ष परम श्रद्धेय स्व० श्री विद्यासागर दीक्षित का प्रथम दर्शन मुझे फ़ैज़ाबाद सम्मेलन में हुआ था। आपकी सौम्य छवि से मैं काफ़ी प्रभावित हो गया। अगला दर्शन मुझे मुरादाबाद सम्मेंलन में हुआ जहां मुझे दीक्षित जी दुखी दिखे। मुझे इसके द्वारा यह लगा कि कुछ लोगों ने कार्य समिति का चुनाव न्यायालय सें रुकवा दिया था। इस अदालतबाज़ी से पंडित जी दुखी थे। उस समय पंडित हरिहर पाण्डेय जी अध्यक्ष बन गये थे और आगे की स्थितियां उन्होने संभाल ली। फूट का बीज तत्समय प्रस्फुटित होने से रह गया। उस सम्मेलन के बाद दीक्षित जी का आना जाना प्रायः बन्द हो गया। पं० हरिहर पाण्डेय जी के बाद श्री महेश्वर पाण्डेय अध्यक्ष हुये।

इलाहाबाद सम्मेलन में मेरे सामने प्रश्न उपस्थित हुआ कि माध्यमिक शिक्षक संघ के विघटन का वास्तविक ज़िम्मेदार कौन है क्या पुराना नेतृत्व है या और कोई? मैं तत्कालीन अध्यक्ष था, अतः समाधान के लिये खड़ा हुआ। मैंने कहा यदि पुराने नेतृत्व से आपका मतलब श्री विद्यासागर दीक्षित श्री हरिहर पाण्डेय और श्री महेश्वर पाण्डेय से है तो मैंने इन्हें देवता समझकर इस संगठन में कार्य करना प्रारम्भ किया था और उन्ही की रीति-नीति पर संगठन का जो भाग मेरे साथ कार्य कर रहा है उसे चलाने का प्रयास कर रहा हूं। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि विघटन से मेरा दूर-दूर तक कोई रिश्ता नहीं रहा है। इसके साक्षी लोग आपके बीच बैठे हैं।

एक पक्ष का लम्बे समय तक मैं अध्यक्ष रहा। मैंने श्री राम सिंह सहारनपुर से उत्तराधिकार प्राप्त किया था। इस पूरे अन्तराल में आदरणीय दीक्षित जी से मेरी मुलाकात कभी नहीं हुई। मैं उन्हें बराबर याद करता रहा तथा हाल चाल भी मेरठ के मित्रों से लेता रहता था किन्तु मेरे मन में विचार उठा कि अब तक दीक्षित जी सम्भवतः मुझे भौतिक रूप से जानते-पहचानते नहीं रहे होंगे। मेरे मन में उनके प्रति भक्ति भावना पूर्णतः

पुष्पित पल्लवित होती रही। जब मैं अध्यक्ष पद से निवृत्त हुआ और उत्तराधिकार श्री देवेन्द्र नाथ मिश्र लखनऊ को सौंपा तो अगला सम्मेलन आगरा में रखा गया। श्री मिश्र ने मुझसे परामर्श किया कि क्यों न आगरा में सभी पुराने लोगों को बुलाया जाय तो मैं उनके इस प्रस्ताव पर अति प्रसन्न हुआ और मैंने इसे सहर्ष स्वीकार किया। मुझे विश्वास हुआ कि आगरा में दीक्षित जी का दर्शन अवश्य होगा हुआ भी ऐसा ही। दीक्षित जी जिनका भक्त मैं १९६० से था १९८८ में आगरा में मुझे भौतिक रूप से पहचान सके, क्योंकि १९७७ से मेरे विषय में उनको बराबर जानकारी होती रहती थी। मैं दीक्षित जी के पुराने मित्रों के पक्षधर संगठन का प्रान्तीय अध्यक्ष था। दीक्षित जी ने कहा "आप मेरठ तो जाते थे किन्तु मेरे पास क्यों नहीं आये?" मैंने कहा कि आप हस्तिनापुर में थे और बराबर व्यस्तता के कारण मैं आ नहीं पाया जबकि हस्तिनापुर से मेरा आनुवांशिक लगाव है। मैं पाण्डवों का वंशज हूं। दीक्षित जी हंसे और कहा कि तब तो मैं तुम्हारे तीर्थ में निवास कर रहा हूं लेकिन तुम पहुंचोगे नहीं! मैंने कहा कि मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि आपका दर्शन आपके आवास पर ही करूंगा। अगले वर्ष हस्तिनापुर पहुंचा और आर्य समाज मन्दिर में दर्शन किया। उनके द्वारा दिये गये स्नेह और सत्कार से तृप्त हो गया तथा गंगा स्नान के पश्चात जैसी आत्मशुद्धि होती है ऐसा अनुभव हुआ।

इसके बाद अनेक बार हस्तिनापुर उनके दर्शन के लिये गया पत्र-व्यवहार भी होता रहा। अन्तिम दर्शन अप्रैल २००६ में उनके आवास पर पहुंचकर किया। उसके बाद भी वहां जाने का कार्यक्रम अपने मित्र नागर जी से तय किया किन्तु भगवान को पुनः दर्शन कराना मंजूर नहीं था। पूज्य दीक्षित जी का महाप्रयाण २८ जून २००६ को हो गया। सब कुछ इतिहास हो गया मैं अकिंचन हो गया।

उन्हे शत शत नमन

संरक्षकः
उ०प्र०मा०शि० संघ
आजमगढ़
दि० ५.३.२००६

प्रणम्य पं० विद्यासागर दीक्षित

महान् आचार्य – शिक्षा शास्त्री

रामतीर्थ उपाध्याय

प्रकाण्ड विद्वान, शिक्षा शास्त्री आचार्य विद्यासागर दीक्षित जी से मेरा परिचय बहुत घनिष्ठ तो नहीं था, किन्तु उनसे पत्राचार नियमित रूप से होता रहा। मैं उनके पत्र को देखकर उनके दिव्य काया वैभव का दर्शन प्राप्त कर अभिभूत हो जाता था। पत्र की काया का वर्ण-वर्ण मुझे उनके मंच से उद्‌बोधन का स्मरण दिलाते रहे हैं। शब्दें का समूह मुझे उनके लखनऊ आवास (विधान सभा सदस्य निवास) की बैठकों में ले जाता रहा है। श्रद्धेय आचार्य जी का दर्शन लाभ तो वाराणसी में, आजमगढ़ में व लखनऊ में माध्यमिक शिक्षक संघ की बैठकों व समारोहों में हुआ था। आचार्य जी का जीवन सार्थक जीवन था।

वे जनता जनार्दन की सेवा करते हुए विद्या-शिक्षा जगत में कीर्तिमान स्थापित कर चुके हैं। आचार्य जी सदैव **कर्मण्येवाधिकारास्ते** की बात कहते थे व पत्रों मे लिखते थे, जिससे हम बौनो का मार्गदर्शन होता था। वे निराश होकर बैठने और आशाओं के अम्बार में रहने वालों को सचेत करते रहे। आचार्य जी संस्कारवान थे व ज़ीवन में प्रगति उनके चरण चूमती रही। वे अरविंद दर्शन के व्यक्ति थे। उन्होने ऐसा जीवन जिया जिसमें पवित्रता, निष्कलुषता का साम्राज्य रहा है।

सूर्य के प्रचण्ड होने से अन्धकार जो कोने-अंतरे में छिपा रहता है, वह भी हाथ जोड़ भाग निकलता है। वैसे ही श्रद्धेय आचार्य जी के पत्र भी समस्त अज्ञानान्धकार भगाकर ही दम लेते थे। आचार्य जी युगद्रष्टा महात्मा गांधी और स्वामी दयानंद के ऐसे शिष्य थे, जिसने उनके आदर्शों को आत्मसात किया। वे वेदमय थे। पत्रों में उनके अक्षर एवं विचार तो मुझे इतना आनन्द प्रदान करते थे कि उनके वर्णन हेतु मैं शब्दों से सर्वथा कंगाल बना रहा। मेरे बिना टोपी के शब्द एक गांधीवादी आचार्य जी कैसे

पढ़ते होंगे। इस चिंता में डूबा रहता था। मेरे वरिष्ठ सहयोगी अनुजगण यथा श्री हरिनारायण सिंह जी प्रभृति कहा करते थे कि भाई ऐसा लिखो कि पढ़ा जा सके। श्रद्धेय आचार्य जी ने मेरे लिखे को ही सुन्दर कहा तो उनके प्रेम से रोमांचित हो उठा और नेत्रों से अश्रुकण छलक उठे।

आचार्य जी के निकटतम परिचितों में यहां श्रीयुत् हरिनारायण सिंह जी व. अन्य शिक्षकगण श्री कर्णदीनाथ पाठक, बाबू मारकण्डेय सिंह, श्री सीताराम सिंह है। इतना ही क्या पुराने सहयोगीगण, जिनसे भी श्रद्धेय दीक्षित जी की चर्चा होती थी, उनके नेत्रों से दो अश्रुबूंद झलकने लगते थे, उनके प्रति अपार श्रद्धा मुझे झांकती मिलती थी। एक पत्र में मैंने आचार्य जी को लिखा था कि "हम भारतीय संस्कृति के उपासक अस्थिपंजर में भी वही दर्शन करते हैं, जहां कृशता का कहीं पता नहीं। ऐसे में हम जब आपका दर्शन इस समय भी करेंगे तो बरबस वही मूर्ति उभरेगी जो हमारे हृदय में समाई है।"

श्रद्धेय पं० दीक्षित जी सुख को असीम सुख और दुःख को सुख में परिवर्तित करने की क्षमता रखते थे। सार्थक परोपकारी, सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन जीने के कारण वे सिद्ध पुरुष थे। उन्होंने अनाचार से लड़ाई छेड़ी, अज्ञान, अंध विश्वास से लड़े विजय श्री ने इस कारण वरण किया क्योंकि उनके संघर्ष में सदैव सत्य का समन्वय था फलतः भीतरी शक्ति आशीर्वाद प्रदान करती हुई चली गई। वे मनुष्य जीवन की सच्ची शोभा के धनी थे और मनुष्यता उनमें शरण लिए रहती थी। इसी कारण अन्याय और अनीति के प्रतिकार में आचार्य प्रवर की चिंतन धारा अविरल प्रवहमान रही। उन्होने. ६५ बसंत के पश्चात जो लोकोपकारी कार्य किए हैं वे साक्षी हैं कि वे दीन हीन तो हो ही नहीं सकते हां दीनानाथ अवश्य थे। सम्भवतः इसी कारण सब कुछ लोकोपकारी संस्थाएं यथा आर्यसमाज-आर्य वानप्रस्थाश्रम हस्तिनापुर की स्थापना निर्माण करते हुए भी अपने को अकर्ता मानते थे। वे धन्य हैं।

हम तो विद्या की झलक पाने की सामर्थ्य नहीं जुटा पाए और स्वयं जो उसी का सागर हो तो क्या कहने? आचार्य जी के दर्शन करने मैं अपने शिक्षक साथियों विशेषकर आदरणीय श्री हरिनारायण सिंह जी के साथ आजमगढ़ से हस्तिनापुर गया था। कितनी सादगी का जीवन वे जी रहे थे। उनसे वार्तालाप करके बहुत आनन्द आया था।

आचार्य श्री विशेषांक/स्मृति ग्रंथ के प्रकाशन हेतु मैं अपनी समस्त शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं तथा भगवान से प्रार्थना है कि वह मुझे श्रद्धेय दीक्षित जी महाराज के पद चिन्हों पर चलने की क्षमता प्रदान करें।

रामतीर्थ उपाध्याय
पूर्व अध्यापक
डी०ए०वी० कालिज
आजमगढ़ (उ०प्र०)

ऋषितुल्य महामानव आचार्य विद्यासागर दीक्षित

श्रीमती हेमलता दयाल



श्रद्धेय दीक्षित जी बहुत समय से क्या जब से मैं उन्हें हस्तिनापुर में २० वर्ष पूर्व मिली थी एक तपस्वी और स्वभाव से विरागी जीवन बिता रहे थे। यद्यपि आपने किसी भी ओर से कर्तव्य परायणता में कमी नहीं रखी थी न ही स्नेह देने में कृपणता। पूज्य आचार्य जी ने जर्जर काया के साथ भी ऋषि मुनियों के समान अपनी वैदिक परम्परा के अनुसार शत वर्ष पूरे किए। उस महामानवके प्रति अपनी श्रद्धांजलि तुच्छ ठहरती है। मुझे भली भांति याद है कि पूज्य दीक्षित जी जिन्हे मैं गुरु तो मानती थी किन्तु उन्हे भाई साहिब कहती थी पत्रों के उत्तर तत्काल दिया करते थे अपनी निद्रा भी पूरी नहीं करते थे श्रम करके हमजैसों को अपने पत्रों के माध्यम से शिक्षा देते रहते थे। उनका पत्र क्या होता था-क्या लिखूं ज्ञान का पिटारा होता था। बार बार पढ़ती थी वह पत्र

मेरे ही लिए नहीं सभी के लिए एक अमूल्य धरोहर होते थे। पढ़कर उसमें लिखे को समझे सोचें और गुनें। सीखने की एक सामग्री हाथ आ जाती थी। मैंने सदैव यह अनुभव किया कि पूज्यवर के पत्रों से असीम प्रेरणा मिलती थी-साहस व शक्ति भी। मेरी बड़ी बहिन श्रीमती सत्य बाला जी २५ वर्षों से भी अधिक समय से आर्य वानप्रस्थाश्रम आर्य समाज मंदिर हस्तिनापुर में अपनी कुटिया बनाकर रहती थी जिसके संस्थापक श्रद्धेय श्री विद्यासागर दीक्षित जी थे। वहां मैं ३-४ बार लखनऊ से गई हूं कुछ दिन वहां रहने के लिए। एक बार १९९६ में मैं अपने पति देव दयाल साहिब के साथ भी गई थी। पूज्य दीक्षित जी दयाल साहिब से मिलकर अत्यन्त प्रभावित व प्रसन्न हुये थे जैसा कि उन्होने अपने बाद के पत्रों में हमारे हस्तिनापुर से लखनऊ लौट कर आने के बाद लिखा था। दयाल साहिब के निधन के बाद जो सांत्वना का पत्र आदरणीय दीक्षित जी ने मुझे लिखा था अप्रैल १९९८ में वह इतना मार्मिक व सारगर्भित था कि उस पत्र की भाषा को मेरा भतीजा पाल प्रवीण व मैं प्रयोग में लाते रहते हैं उन सज्जनों-महिलाओं को भेजते हैं जिनके पतिदेव या पत्नियों का निधन हो जाता है। पूज्य दीक्षित जी के उक्त पत्र को हमसांत्वना प्रकरण का नाम देकर उनके अमृत वचनों की भांति हृदयंगम करते रहे हैं। कितना शिक्षाप्रद है वह पत्र। हम सभी सदैव परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते रहे हैं कि आदरणीय दीक्षित जी का स्वास्थ्य व उनकी स्मरण शक्ति अंत तक ठीक रहे। गुरु बिना तो हम बीच मझधार में रह जाएँगे। कौन सही रास्ता सुझाएगा? गुरु जी का संबल नितान्त आवश्यक है। पूज्य आचार्य दीक्षित जी के निधन के समाचार से मेरा ज्येष्ठ पुत्र रविदयाल उसका परिवार व मेरा कनिष्ठ पुत्र राजीव दयाल व परिवार बहुत दुःखी हो गए थे। उन्होंने अपने हृदयोदगारों को भी मुझे लिखकर प्रेषित किए थे। आचार्य श्री विशेषांक/स्मृति ग्रंथ की पठन सामग्री से पाठकों को बहुत लाभ प्राप्त होगा ऐसा मेरा विश्वास है। कृपया हमारी शुभ कामनाएँ स्वीकार कीजिए।

हेमलता दयाल
२/५६, विकास नगर, लखनऊ

गांधी वादी व्यक्तित्व के धनी, आदर्श शिक्षक, राष्ट्रभक्त आचार्य विद्या सागर दीक्षित जी को नमन्

केहर सिंह



आचार्य विद्यासागर दीक्षित जी महात्मा गांधी व हंसराज जी, लाहौर डी०ए०वी० कालिज की भावनाओं से जुड़े रहे हैं। मवाना, मेरठ का परम सौभाग्य है कि कलियुग के दधीचि ने अपनी मूल्यवान सेवाओं से हमें लाभान्वित किया।

सुविख्यात शिक्षाविद्, आदर्श शिक्षक स्वतंत्रता सेनानी आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता एवं नेतृत्व प्रदान करने वाले आचार्य विद्यासागर दीक्षित गौरव शाली व्यक्तित्व के धनी एवं उ०प्र० के शिक्षा जगत को प्रकाशमय करते हुए २८ जून २००६ को सौ वर्ष पूरा करते करते पंचतत्व में विलीन हो गए।

आपका लालन पालन ग्राम घनपुर तहसील मवाना जिला मेरठ के शिक्षित परिवार में हुआ था। आपके बड़े भाई मवाना के महान यूनानी चिकित्सक श्री रघुनाथ सहाय जी व दूसरे भाई शिक्षाविद श्री राजाराम दीक्षित जी जू० हा० मवाना में प्रधान अध्यापक थे। आचार्य जी ने कई शिक्षण संस्थाओं को अपनी योग्यता के बल पर खड़ा किया था।

आपने ए० एस० इन्टर कालिज मवाना में लम्बे समय तक आदर्श प्रधानाचार्य के पद की गरिमा को तहसील जिला व बाद में उ०प्र० के अध्यापकों की खोई हुई गरिमा को बहाल किया, शिक्षा में आमूलचूल परिवर्तन किया। सरकार व प्रबन्धतंत्र की काली करतूतों को स्वच्छ शिक्षा का रूप दिलाया। इसके लिए आपने प्रान्त के सभी जिलों का दौरा किया और माध्यमिक शिक्षक संघ की नींव डाली।

आचार्य दीक्षित जी उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ के प्रथम अध्यक्ष बने बाद में एम.एल.सी. बने। दिसम्बर १९६८ को जेल भरो

आन्दोलन चलाया जिसमें असम्भव कार्य को सम्भव बनाया। उस समय मेरठ जिले की जेल कीव्यवस्था गन्दी थी उसमें १००० कैदी रह सकते थे लगभग १५०० अध्यापक अध्यापिका नवजात लाड़लों के साथ जेल में गई। उस समय चार पांच हज़ार आदमी मिलाई के लिये आने लगे तो जेल की सारी व्यवस्था भंग हो गई। पूरे उ.प्र. में हाहाकार मच गया। अब से ३८ वर्ष पूर्व द्वितीय क्लास की जेल खर्च के भार से उत्तर प्रदेश सरकार झुक गई मांगे मान ली गई। आपने मानव मात्र की सेवा भावना से अपने अनेको साथियों, शिष्यों, अनाथों, अनपढ़ों सबका कल्याण किया। श्री दीक्षित जी जैसा शिक्षाविद मैने नहीं देखा। मान्यवर दीक्षित जी का नाम स्वर्ण अक्षरों में शिक्षाविद के रूप में लिया जाता है। मैं भी उन्हीं के साथ जेल में रहा था। मैने १९५० से आपके शिक्षण कार्य कलापों को देखा है जिनसे मुझे अत्यधिक प्रेरणाएं प्राप्त हुई है।

माध्यमिक शिक्षक संघ के माध्यम से आपने संस्थाओं में शिक्षकों के उत्पीड़न को अपनी तकलीफ समझकर कार्य किया था। ऐसी देव आत्मा के विचारों को सुनने देखने से आत्मा को शान्ति मिलती थी। जब कोई प्रदेश किसी प्रकार के संकट से गुजरता है तब उस प्रदेश के महान व्यक्तियों के जीवन वृत्त उनको मार्ग दिखाते हैं उनको संकट से जूझने की प्रेरणा देते हैं। इसी कारण निम्न पंक्तियां सदैव याद आती हैं:-

यूनान-मिश्र-रोम सब मिट गये जहां से
बाकी अगर हैं अब तक नाम-ओ निशा हमारा
कुछ बात है कि हसती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौर-ए-जहां हमारा।

पूज्य आचार्य जी सादे विचार के थे, वैसी ही उनकी पोशाक थी-धोती, कुर्ता, टोपी, खद्दर की जो उनके चरित्र को और गौरव शाली बना देती थी। आप आचार्य चाणक्य के जीवन व विचारों से ओत-प्रोत थे ऐसा मेरा मानना है। उनके अनेक शिष्य चन्द्रगुप्त मौर्य हो चुके है। श्री प्रवीण जी भी उनमें से एक हैं जो मवाना में आदर्श रहे हैं। भाई पाल

प्रवीण जी की गुरु-शिष्य की महती भावनाओं का मैं आदर करता हूं। आर्य लोकवार्ता के माध्यम से दीक्षित जी के जीवन काल में ही जिस प्रकार भीष्म की सेवा अर्जुन ने की थी बस उसी प्रकार दूसरा प्रमाण उन्होंने प्रस्तुत कर दिया विशेषांक निकाल कर।

मवाना नगर में तीन महान विचारक थे उनसे आचार्य जी का बहुत मिलना जुलना था। एक श्री विष्णु शरण दुबलिश जी जो ७ वर्ष काला पानीकी सजा काट कर आये थे देश के स्वतन्त्रता सेनानी थे १६५२ में एम. एल.ए. बने थे। दूसरे श्री पीताम्बर दास जी जो एम.एल.सी. थे एक महान विचारक थे विधान परिषद में विपक्ष के लीडर थे। ए. एस. इन्टर कालिज प्रबन्ध कमैटी के प्रभावशाली सदस्य थे, मुख्य वकील थे तीसरे श्री प्रिय पाल जी थे जो १६४६ में दो उच्च सरकारी पदों से त्याग पत्र देकर अपने परिवार के साथ मवाना आ गए थे अपने वृद्ध पिता जी की सेवाकरने व कृषि फार्म चलाने हेतु। आचार्य जी ने भी उक्त तीनों राष्ट्र भक्तों तथा अन्य उच्च शिक्षा विदों के विचारों से शिक्षा जगत में सुधार की जीवन भर कोशिश की। इसके अतिरिक्त वे आर्य समाज के देव दयानन्द महाराज जी के आदर्शों तथा वेदों के सिद्धान्तों से ओत प्रोत थे। इन कारणों से आचार्य जी ने अपने सौ वर्ष के जीवन को एक महान तपस्वी की भांति समाज में रहकर समाज की भलाई के लिए अर्पित कर दिया। इस महामना की चौ० चरण सिंह जी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। उन्होने एक अवसर पर कहा था कि "दीक्षित जी वास्तव में शिक्षा की व्याख्या से ही नहीं अपितु अपने आचरण से भी शिक्षा देते हैं। मैं ऐसे विद्वान का आदर करता हूं" दीक्षित जी हमारे बीच में ऐसे रत्न थे जो मैने शिक्षा जगत में कम देखे हैं जिनका मन-कर्म, वचन एक था। आप आदर्श शिक्षक ही नहीं आदर्श समाज सेवी, आदर्श राष्ट्र सेवक, आदर्श लेखक थे।

मधुरवाणी के धनी आचार्य जी गरीब, उच्च, वृद्धों, बच्चों के बीच

में जाते थे तो वैसे ही दिखते थे। अपने प्रेम से लिप्त हुए शब्दों में सभी को भाव विभोर करने की कला में कुशल थे। प्रसन्न मुद्रा में मुस्कराते आज भी हमें कभी कभी नज़र आते हैं। कहां से भगवान ने इस मेरठ की १०० वर्ष की धरोहर को भेजा था। आज वे यद्यपि हमसे दूर हैं परन्तु योगिराज श्री कृष्ण की लीला की भांति शिक्षा समाज सदैव आचार्य जी के उच्च आदर्शों व सिद्धान्तों को याद करता है व उनका ऋणी है।

मैं आचार्य विद्यासागर दीक्षित जी का आभार लेखनी से व्यक्त नहीं कर सकता। हृदय में उनकी प्रेरणा बसी रहती है जो हम सभी को आगे बढ़ने में बल देती है। उनके आदर्शों पर चलकर हम एक अच्छे समाज के मूल्यों को धारण कर सकते हैं। राष्ट्रों के गिरते हुये आदर्शों को पुनः प्राप्त कर सकते हैं धन, स्वास्थ्य व चरित्र को बचा सकते हैं। यदा, कदा महान प्राणी आते हैं जो अपने कर्त्तव्य से सबको गंगा जल से पखारते हुये हमसे दूर चले जाते हैं परन्तु अपनी अमर छाप छोड़ जाते हैं, जो हमारे दुःखमय जीवन को बदल देती हैं।

श्रद्धेय आचार्य जी के आदर्शों को अपना कर हम विनीत भाव से चलें तो यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। आचार्य जी को शत शत नमन

पूर्व प्रधानाचार्य
हाल प्रबन्धक
नव जीवन किसान इन्टर कालिज़
मवाना, जिला - मेरठ
(प्रधान आर्य समाज निडावली-मवाना)
नालन्दा कॉलोनी, मवाना, जिला - मेरठ

पूज्य गुरुदेव को मेरी श्रद्धांजलि

कान्तेश चन्द्र गुप्ता



परम पूज्य आचार्य विद्या सागर दीक्षित एक सौम्य, सरलभाषी, दूरदर्शी निर्णायक व्यक्तित्व के गुरु थे। आचार्य श्री का मेरे जीवन में एक बड़ा योगदान रहा है। वह एक शक्ति थे जिनकी प्रेरणावश ही मैं आज जो हूं वह बन सका। घटना सन १६४६ के आस पास की है। कक्षा आठ उत्तीर्ण करने के पश्चात छात्रों को ६वीं कक्षा मेंप्रवेश करने सें पहले विषयों का चुनाव करना होता था। इस समय हिन्दी, अंग्रेजी के साथ तीन अन्य विषय चुनने होते थे। ये विषय जीवन रेखा निर्धारित करते थे। मेरी इच्छा जीवन में आगे तकनीकी विज्ञान पढ़ने की थी। इस कारण सामान्य विज्ञान, गणित एवं आर्ट के विषय मैने चुन लिये। अर्ध वार्षिक परीक्षा हुई। परीक्षा का परिणाम निकला। मैं गणित में बुरी तरह से असफल रहा परन्तु मैने सामान्य ज्ञान में कक्षा में सबसे अधिक अंक प्राप्त किए। आंखों के आगे अन्धेरा छा गया। आकाश में तारे दिखाई देने लगे। जीवन का लक्ष्य हाथ से निकलता हुआ प्रतीत हुआ। अब क्या होगा एक बड़ा प्रश्न सामने आ गया। बहुत विचार केपश्चात् सबसे आसान रास्ता अपनाने का निर्णय मैंने लिया कि गणित के विषय को अपने रास्ते से हटा दिया जाय व विषय बदल दिया जाये। स्वतंत्रता सेनानी होने के नाते गुरु जी एवं मेरे पिता एक दूसरे से बहुत अच्छी तरह से परिचित थे। मैंने हिम्मत की और एक दिन आचार्य श्री के कक्ष में पहुंच गया। बहुत ही दयनीय सूरत बनाकर मैंने आचार्य श्री को अपनी स्थिति का वर्णन कर डाला। उनसे प्रार्थना की कि वह गणित विषय को बदलने की मेरी प्रार्थना को स्वीकृति दे दें। उन्होने बड़े ही ध्यान से मेरी प्रार्थना को सुना। मेरे सर पर हाथ रखकर, स्नेह के स्वर में गुरुदेव बोले "बेटा कठिनाइयों से डरकर भागना डरपोक, कमजोर व्यक्ति का प्रतीक है इनसे सामना करना एक निर्भय व्यक्ति का कार्य है। तुम एक वीर सेनानी पिता के पुत्र हो। क्या तुम अपने को डरपोक सिद्ध करना चाहते हो? कठोर मेहनत एवं निष्ठा से पर्वत भी पार किए जा सकते हैं। जाओ मेहनत करो तुम्हें सफलता प्रप्त होगी। इस विषय को पुनः मेरे सम्मुख नहीं लाना" उनकी प्रेरणा भरी आवाज़, उनका विश्वास मेरी समस्या का समाधान बन गया। उनके कक्ष से आत्मबल, एवं आत्म सम्मान के साथ जीवन में कुछ कर देने का निर्णय लेकर मैं एक

दूसरा ही छात्र बनकर निकला। मेरे सहपाठी करण लाल शर्मा कक्षा में प्रथम आए। मेरे सामान्य ज्ञान में सबसे ज्यादा अंक थे। हम दोनों ने एक दूसरे के साथ पढने का निर्णय लिया। कठोर परिश्रम किया। मेरे लिए जीवन की सबसे कठोर यात्रा वार्षिक परीक्षा का परिणाम निकला इतने सारे अंक बटोरे जिसकी कभी स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी। इसके पश्चात मैंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। जर्मनी गया वहां से तकनीकी विज्ञान में उपाधि प्राप्त की। अमेरिका में इन्जीनियरों से उस समय टक्कर ली जब कि भारतीय इन्जीनियरों को नीची निगाहों से देखा जाता था। यह सब उस दिन की गुरु प्रेरणा से ही सम्भव हो सका। वह दिन मेरे जीवन में एक अपूर्व छाप बन गया। यह एक गुरु की ही देन है। मैं अपने को बहुत ही भाग्यशाली मानता हूं ऐसे गुरु को पाकर।

पूज्य गुरुदेव को कोटि कोटि नमन

८३०, कमीनोरियाल न०२०२
रिडोन्डो बीच, कैलिफोर्निया ९०२७७ यू०एस०ए० (३९०) ३१६-७१९३

भारतीय संस्कृति के प्रतीक विद्यासागर दीक्षित जी



मैंने नाम के अनुरुप यदि किसी व्यक्ति को पाया तो वह थे विद्या के सागर श्री विद्यासागर दीक्षित जी। जिनके विषय में जहां उनके अनेक विशिष्ट गुणों को याद किया जावेगा वहां मैं उनके एक ऐसे गुण को बताना चाहूंगा जो बिरलों में मिलता है। स्व० दीक्षित जी ने काफी लम्बी बीमारी के दौरान अपनी धर्मपत्नि की जिस प्रकार स्वयं एवं जितनी सेवा की उतनी हजारों में एक व्यक्ति ही करता है। अगर यहां मैं यह भी कहूं कि उनका यही गुण उनको उनके स्वामी दयानंद जी के सच्चे अनुयायी होने का प्रतीक है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी और उसका ही प्रतिफल रहा कि उसी प्रकार दीक्षित जी की सेवा उनके सुपुत्र श्री जगदीश चन्द्र दीक्षित ने करके एक उदाहरण प्रस्तुत किया। मैंने व्याक्तिगत रूप से जो देखा है वही लिखा है मै तो मानता हूं कि स्वर्ग भी यही है व नरक भी यहीं है।

ऐसे महामना श्री दीक्षित जी को कोटिशः नमन

इत्रपाल सिंह ढाका
कृषि विद्यालय हस्तिनापुर (मेरठ) भू.पू. प्रधानाचार्य

श्रद्धेय आचार्य विद्यासागर दीक्षित जी मेरे प्रेरणा स्रोत

(नारायण सिंह ढैला)



आचार्य श्री विद्यासागर दीक्षित जी वह नाम है जिसके सुनते ही रामगढ़ व आसपास की जनता और पूर्व छात्रों के मस्तक अनायास ही उनके प्रति श्रद्धा से नत हो जाते हैं वे सभी आज भी ६० वर्षों के बाद भी आचार्य जी की सराहना करते हैं उनके संस्मरण सुनाते हैं। व्यक्ति तो यह चाहता है कि उसका प्रिय सदैव जीवित रहे परन्तु विधि के विधान के अनुसार ऐसा होता नहीं है। पूज्य गुरु जी से संबंधित अतीत की स्मृतियां बार-बार सामने आकर हृदय को व्यथित कर रही हैं और यह सोचकर और भी दुख होता है कि अब हमारा मार्गदर्शक और प्रेरणा स्रोत हमें छोड़ गया है। संतोष इस बात का है कि पूज्य गुरुजी अपने जीवन का उद्देश्य पूरा कर अपनी इच्छानुसर शतायु होकर संसार से विदा हुए, ऐसा अवसर केवल दिव्यात्माओं को ही प्राप्त होता है। एक न एक दिन विदा तो सभी को होना है। मुझे श्रद्धेय गुरु जी के वह शब्द याद आ रहे हैं जो उन्होंने एक पत्र में प्रसिद्ध दार्शनिक फ्रैंकलिन के वाक्य लिखकर भेजे थे, **"यदि आप नहीं चाहते कि मरने के बाद लोग आपको भूल जावें, तो कुछ ऐसा कार्य करो जिस पर लिखा जा सके"**। मैं तो बहुत चाहते हुए भी कुछ विशेष रचनात्मक कार्य नहीं कर पाया गत् ३० वर्षों में, परन्तु पूज्य गुरुदेव ने सेवा निवृत्ति के बाद भी वे सराहनीय कार्य किए हैं जिनको सदैव याद किया जाता रहेगा। शिक्षा क्षेत्र में व शिक्षकों के हितों के लिए तो पूज्यवर सदैव संघर्ष करते ही रहे नए कीर्तिमान स्थापित करते रहे किन्तु एक उच्च कोटि के आदर्श गुरु के रूप में जीवन-पर्यन्त गुरु शिष्य परम्परा को जीवित ही नहीं रखा, वरन भविष्य के लिए एक अद्वितीय उदाहरण छोड़ गए।

पूज्य गुरु जी को शत शत नमन

नारायण सदन
रामगढ़ नैनीताल (उत्तरांचल)

शिक्षक एकता के आदर्श कलियुग में सतयुगी गुरु पं० विद्यासागर दीक्षित

देवी शंकर गुप्त



आचार्य श्री विद्यासागर दीक्षित जी का व्यक्तित्व व्यवहार प्रेरक जीवन आदर्श स्वरूप था व लक्ष्य वेदानुशीलन। संकल्प-जीवेम शरदः शतम् की पूर्ति में सतत् आजीवन प्रयत्नशील रहा। आचार्य जी विद्वान वक्ता थे व चिन्तन को क्रियात्मक आधार प्रदान करने में निरन्तर गतिमान रहे। उनका दैनिक आचरण, व्यवहार साक्षात् ऋषि जीवन था। आप वैदिक मानव के सम्पूर्ण गुणों के भण्डार स्वरूप थे।

आचार्य जी मानव सुलभ बहुमुखी प्रतिभा के धनी व श्रेष्ठ सद्गुण पारखी थे। उनका आजीवन लक्ष्य भूलोक को स्वर्ग बनाना था। यह तथ्य उनके चिन्तन, वार्ता क्रम एवं आचरण से प्रकट होता था। मैं अक्टूबर १९९९ में आर्य समाज आर्य वानप्रस्थाश्रम हस्तिनापुर मेरठ (जिसके आचार्य जी संस्थापक थे) के दो दिवसीय वार्षिकोत्सव में सम्मिलित हुआ था, जिसमें मैंने आचार्य जी के परिश्रम नेतृत्व व उनके दिव्य गुणों को समीप से देखा अल्प सम्पर्क के व्यवहार से ही मैंने उनके वात्सल्य का जो अनुभव किया था उसे मैं कभी भी नहीं भूल सकता। मैं उनके एक पत्र जो उन्होंने मुझे अक्टूबर ९९ के अन्त में प्रेषित किया था को प्राप्त कर आनन्दित हो गया था।

आचार्य जी एक आदर्श शिक्षक व शिक्षा शास्त्री थे। आचार्य जी के सम्पूर्ण जीवन एवं कृतित्व के अध्ययन से एक ही तथ्य उभरता है कि वे साक्षात कृतधर्मा थे। उस दिव्य आत्मा को स्मरण कर हम अपने जीवन में कुछ क्रियात्मक अनुकरण कर सकें, यही हमारे जीवन की सार्थकता होगी।

मुझे 'विद्या वीथिका' त्रैमासिक पत्रिकाओं में आचार्य दीक्षित जी के सर्वांगीण आदर्श जीवन की प्रस्तुति पढ़ने को मिलती रही है व उनके अमृत

वचनों-अमृत विचारों के संकलन को पढ़ा है। अतः मैं यह विश्वास के साथ कह सकता हूं कि उनके अमृत विचार किसी भी पाठक की अन्तर्प्रेरणा को जागृत करने के लिए पर्याप्त ही नहीं, अपितु दिशाबोधक भी हैं। उनके अमृत विचार वास्तव में सत्य बोधक है जो भौतिकता के आकर्षणों में भी आध्यात्मिकता का प्रकाश पुंज है।

ईश्वर हमें वह शक्ति प्रदान करे जिससे हम उनके जीवन के अनुकरणीय अंशों को ग्रहण कर अपना जीवन पथ आलोकित कर सकें। यही उस आत्मा के प्रति यथार्थ श्रद्धांजलि होगी एवं अपने जीवन की सार्थकता। ऐसे जीवन ही तीर्थ धर्म और देवत्व प्रदायक होते हैं।

पूर्व अध्यापक
डी०ए०वी० कालिज
लखनऊ



ए०एस० डिग्री कालेज, मवाना की एन.एस.एस. द्वारा आयोजित कार्यक्रम में श्रद्धेय आचार्य जी फावड़ा चलाते हुये साथ में हैं शिक्षक एवं विद्यार्थी

एक भावभीनी स्मरणांजलि

सुश्री राधा भट्ट



द्वितीय विश्व युद्ध चल रहा था। मेरे पिताजी को अपनी बटालियन से पता चला कि उन्हे भी युद्ध में जाना पड़ेगा। मैं व मेरे भाई स्कूल जाने की उम्र के थे और इसी रूप में हमारी शिक्षा चल भी रही थी। पर मेरे पिताजी को यह चिन्ता थी कि हामरे गांव धुरका अल्मोड़ा मे यदि हमें रहना पड़े तो हमारी शिक्षा आगे नहीं बढ़ पायेगी। वहां विद्यालय की सुविधा तो थी ही नहीं, उन दिनों लोगों को भी शिक्षा एक व्यर्थ प्रक्रिया ही लगती थी। अतः मेरे पिताजी मुझे और मेरे दाज्यू बड़े भाई को रामगढ़ ले आये, जहां श्री नारायण स्वमी जी के नेतृत्व में आर्य समाज से जुड़े लोगों ने एक प्राईवेट हाईस्कूल की स्थापना की थी। रामगढ़ में ही फलों का बगीचा बनाने की भी संभावना थी, जिसका मेरे पिताजी को बहुत शौक था। अतः युद्ध क्षेत्र में जाने के पूर्व वे मुझे व मेरे दाज्यू को रामगढ़ छोड़कर गये जहां हमारे दादाजी के साथ रहकर हम शिक्षण पाने लगे प्राईमरी के चार वर्ष पूरे करके मैं जब हाईस्कूल में पढ़ने गयी तो मैंने विद्यालय केप्रधानाचार्य के रूप में श्री विद्यासागर दीक्षित को पहली बार निकट से देखा। वहां कई शिक्षक थे किन्तु उनके व्यक्तित्व की चुम्बकीय शक्ति ने मेरे बाल मन को पकड़ लिया था।

निश्चित समय पर नियमित रूप से विद्यालय की प्रार्थना में सामने उन्हे देखना मेरा एक अटल नियम बन गया था काला कोट सफेद पैंट गौर वर्ण का भव्य चेहरा सीधी देहयष्टि एवं सन्तुलित सधी हुई चाल। यह चित्र है श्री दक्षित जी का जो मेरे बालमन में तब अंकित हो गया था और आज भी सजीव है। कभी कभी वे एक छोटा सा काला रूल लेकर क्रीड़ांगन अथवा विद्यालय भवन के बरामदों आदि मे घूमते दिखाई देते थे। हम गांव के बच्चों के लिए हाई स्कूल एक बड़ा स्थान था उसके हैडमास्टर के रौब का तो मन पर विशेष प्रभाव था ही उस पर भी जब भी दीक्षित जी काला

रूल लेकर घूमते थे तो यह भय मिश्रित प्रभाव कुछ अधिक ही बढ़ जाता था किन्तु इसरौब के रहते भी उनके इस सुघड़ सन्तुलित भव्य व्यक्तित्व के प्रति एक गहरा आकर्षण भी सदैव बना रहता था। मन में उन जैसे बनने की ललक रहती थी।

जीवन के प्रति उनके ऊंचे आदर्शों, उसके लिए उनकी चारित्रिक प्रतिबद्धता एवं उनकी उदात्त बुद्धिमत्ता का पता तो मुझे तब लगा जब मैंने विद्यालय की प्रार्थना में प्रत्येक सोमवार को होने वाले प्रवचनों की श्रृंखला में उनको सुना। शरीर, बुद्धि व मन को गठित करने वाले विचार उनके गहरे अध्ययन के साथ साथ उनके प्रत्यक्ष अनुभवों से अनुप्राणित होते थे। अतः उन्हे सुनने में कभी ऊब आयी हो तो ऐसा मुझे याद नहीं है। वरन उनकी कही गयी बात तो आज ७४ वर्ष की आयु में भी स्पष्ट याद है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए वे कुछ कहते थे वह बाद को महात्मा गांधी जी के द्वारा लिखित प्राकृतिक जीवन शैली व प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के बारे में पढ़ते समय बहुत याद आया। छात्रों के शरीर व चरित्र गठन पर उनका विद्यालयी पढ़ाई के बराबर ही बहुत ध्यान था। वे स्वयं भी स्वस्थशरीर उदात्त चरित्र एवं गहन विद्धत्ता कीं प्रत्यक्ष प्रतिमूर्ति थे। छात्रों के समग्र व्यक्तित्व विकास के लिए मात्र प्रवचन ही नहीं पूरे विद्यालय के वातावरण की रचना ही उस तरह की हो गयी थी। विद्यालय के वाचनालय एवं पुस्तकालय में उन्होने उत्तम स्तर की पत्रिकायें एवं पुस्तकें एकत्र की थी। पुस्तकालय का उपयोग मैंने शायद अधिक न किया हो परन्तु ज्यों ही मध्यावकाश होता दौड़कर वाचनालय जाकर कुछ विशेष पत्रिकाओं को मिलजुल कर पढ़ना उनके चित्रों को ध्यान से देखना हम दो चार छात्राओं का एक दैनिक क्रम था इसकी मुझे स्पष्टयाद है सहज ही इस प्रकार के साहित्य एवं वातावरण में हमारे व्यक्तित्व का गठन होता जा रहा था जिसका उस समय हमें स्पष्टतः ज्ञान नहीं था पर आज समझ में आता है कि श्री दीक्षित जी किस प्रकार हमारे चरित्र को गढ़ने का प्रयास कर रहे थे।

विद्यालय में लड़कियों की संख्या नाम मात्र ही थी किन्तु हमारी ओर

हमारे प्रधानाचार्य जी का ध्यान था। हम वाक प्रतियोगिता एवं अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों में आगे आये। अल्प होने के करण छूट न जायं इसके लिए वें विशेष रूप से सतर्क होकर हमे आकर पढ़ाते थे। उन्होने आर्य समाज रामगढ़ की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर लड़कों के साथ साथ हम लड़कियों को भी स्वयं सेविका बनाकर उस विशाल समारोह में समाज के बीच कार्य करने का अवसर दिया था। स्वयं सेविका का बिल्ला लगाकर लोगों को पानी पिलाना, सभास्थल पर श्रोताओं को उचित स्थान पर बिठाना अथवा शान्ति बनाये रखने के काम हमें कितना आत्मविश्वास एवं गौरव देते थे उस पुराने समय में भी मात्र पढ़ने के लिए ही विद्यालय आने के दृष्टिकोण को बदलकर एक समग्र व्यक्तित्व बनाने का अवसर वे इन प्रवृत्तियों द्वारा दे रहे थे वह बाद में बहुत स्पष्टता से महसूस हुआ और उनके प्रति कृतज्ञता से मस्तक नत हो गया। इस जीवन में यदि कुछ सार्थक किया हो तो उसका श्रेय श्री दीक्षित जी की सतर्क स्नेहपूर्ण शिक्षा को निश्चय ही बहुत बड़े भाग में जाता है क्योंकि उन्होने हमारी किशोरावस्था को एक सम्यक् दिशा दी। श्री नारायणस्वामी हाईस्कूल के आर्यसमाज प्रधान वातावरण का मेरे मन पर बहुत प्रभाव पड़ा था। उसने ही मुझे मात्र स्वयं के जीवन में सुख समृद्धि लाने के एकांगी दृष्टिकोण से बाहर सोचने के लिए प्रेरित किया था और इस वातावरण की बुनियाद विद्यालय में डालने का काम श्री दीक्षित जी ने किया था। सामान्य पढ़ने लिखने कमाने खाने और परिवार के प्रति ही अपनी जिम्मेदारी निभाने के स्तर से ऊपर समाज के लिए भी कुछ करें यही घुटटी वे अप्रत्यक्ष रूप से हमारे अन्दर घोल गये थे। ईश्वर की महती कृपा व मेरे गुरु भाई श्री पाल प्रवीण जी के प्रयासों के फलस्वरूप मैं अपनी छोटी बहिन देवी व मेरी बालमित्र वीरबाला रस्तोगी के साथ पूज्य गुरुजी के दर्शन हेतु वर्ष २००१ में हस्तिनापुर गई। रात्रि विश्राम भी वहीं किया पूज्य गुरुजी व उने ज्येष्ठ पुत्र श्री जगदीश भाई साहिब से ५५-६० वर्षों उपरान्त भेंटकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई थी। अगले दिन प्रातः आर्यसमाज हस्तिनापुर में एक विशेष यज्ञ आहूत हुआ जहां पूज्य गुरुजी का प्रवचन हुआ। उसी प्रातः हमें पूज्य माता शकुन्तला गोयल जी

ने मेरठ बुलाया जहां प्रभात आश्रम गुरुकुल टीकरी मेरठ में हमे सम्मिलित होना था व पूज्य गुरुजी आचार्य दीक्षित जी को विशाल समारोह में सम्मानित किया जाना था। कार्यक्रम बहुत ही रोचक व सफल हुये। इन क्षणों को मैंन भूल पाई हूँ न भूल पाऊंगी। पूज्य गुरुजी से मेरा पत्राचार बराबर चलता रहा। मै उन सभी पत्रों को भाई प्रवीण जी को प्रेषित कर रही हूं जिनका उपयोग वे पूज्य गुरुजी की प्रतिष्ठा में प्रकाशित होने वाले आचार्य श्री स्मृतिग्रंथ में करेंगें।

श्रद्धा से अपने भाव-सुमंन उनके चरणों में अर्पित करते हुये मैं अपने को सौभाग्यशाली अनुभव कर रही हूं। उन मनस्वी महापुरुष के आशीर्वाद व किशोरावस्था में दिए कुशल मार्गदर्शन के आधार पर ही मेरा यह जीवन बना है। उनके इस अनुदान से मैं कभी उऋण नहीं हो सकती। ऐसे कर्मठ व विद्वत पुरुष श्री विद्यासागर दीक्षित, मुझ जैसे अनेकों के श्रद्धास्पद पूज्य गुरुदेव को मेरा शत शत प्रणाम।

राधा भट्ट
लक्ष्मी आश्रम
कौसानी, अल्मोड़ा
उत्तरांचल



भारत विकास परिषद मवाना के तत्कालीन अध्यक्ष डा० सुरेश चन्द्र मित्तल पूज्य आचार्य जी का अभिनन्दन करते हुये

मेरे श्रद्धेय गुरुजी श्री विद्यासागर दीक्षित

पाल प्रवीण



यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया से ३१ मई १९९५ को सेवा निवृत्ति के बाद से ही मेरी यह प्रबल इच्छा थी कि अपने परम पूज्य गुरुजी आचार्य श्री विद्यासागर दीक्षित जी के जीवन पर उनके उच्च सिद्धान्तों को दूर-दूर तक पहुंचाने हेतु प्रत्येक दो वर्ष उपरान्त ऐसी पुस्तक, पुस्तिकाएँ व पत्रिकांए तैयार की जावें जो पूरे समाज व राष्ट्र के लिये उपयोगी हों।

इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये मैं ५ सितम्बर १९९५ से इस कार्य में लग गया। यह शुभ दिन इसलिये चुना क्योंकि वह शिक्षक दिवस था जिसे हमारा सम्पूर्ण देश वर्षों से मनाता आ रहा है। मुझे गत १२ वर्षों में अपने इस शुभ संकल्प में बराबर सफलता मिलती रही क्योंकि मेरे परिवार के सदस्यों को पूज्य गुरुजी के ६५-६८ वर्ष पुराने शिष्यों व सहयोगियों का असीमित प्रेम अपनत्व व सहायता मिलती रही। पूरम पूज्य गुरुजी आचार्य शिरोमणि श्री दीक्षित जी के प्रति जो अटूट श्रद्धा गुरु भक्ति जागृत हुई उसका मुख्य कारण था परम पिता परमात्मा की असीम कृपा मेरे ऊपर रही। दूसरा परम पूज्य गुरुजी का चुम्बकीय प्रभाव उनके लम्बे पत्र उनका मार्ग दर्शन, वेद मंत्रों अन्य मुख्य धार्मिक ग्रंथों का संदर्भ जो पूज्यवर अपने पत्रों में दिया करते थे मेरी कुछ असावधानियों त्रुटियों की ओर संकेत धीरे से कर देते थे कमियों को सुधारने को १-२ बार बताना आदि आदि। उनका कहना था व लिखकर भी भेजा था कि मैं अपनी ओर से किसी को कुछ भी सलाह नहीं देता, जो मुझसे सलाह मांगता है उसी को देता हूं। उनके उक्त सिद्धान्त को मैंने बहुत बारीकी से परखा व सही पाया। एक बार मेरी पत्नी कमलेश जी ने १९९६-९७ में मुझे टोका कि आप पूज्य गुरुजी को लम्बे पत्र लिखते हैं इसी कारण पूज्य गुरुजी आपको उत्तर भी लम्बे पत्रों से तुरन्त भेजते हैं उनकी नेत्र ज्योति व स्वास्थ्य उम्र का कुछ तो ध्यान रखिए यही बात मैंने पूज्य गुरुजी को लिख भेजी थी

और उन्हें आश्वासन दिया था कि भविष्य में मैं उनसे पत्राचार पोस्ट कार्ड या अन्तर्देशीय पत्र के माध्यम से किया करुंगा। गुरुजी का तुरन्त उत्तर आया व कमलेश जी के प्रति अपना आभार व्यक्त किया कि उन्हे मेरी कितनी चिंता रहती है। छोटे छोटे पत्रों का आदान प्रदान होता रहा परन्तु फिर किसी विषय पर उन्होंने ४-५ पृष्ठों का पत्र मुझे लिखा। बस यह क्रम चलता रहा। पूज्य गुरु जी १९९८ व कुछ माह ९९ में सभी के सभी पत्रों के उत्तर अपनी सुन्दर हैण्ड राइटिंग में लिखकर भेजते रहे फिर सितम्बर ९९ से उन्होने अपने सुपुत्र जगदीश भाई साहिब को या मुझे (जब मैं वहां उनके पास होता था) dictation देना प्रारम्भ कर दिया व सभी पत्रों के उत्तर नियमित रूप से भिजवाते रहे। जो पत्र उन्होने आदरणीय श्री बसन्त सिंह भृंङ्ग जी को श्री लाल मणि जोशी जी को श्री नारायण सिंह बिष्ट जी को सुश्री राधा भट्ट (राधा बहिन) को श्री महेश्वर पाण्डेय जी को डा० अभय देव शर्मा जी श्री राम तीर्थ उपाध्याय जी श्री हरि नारायण सिंह जी व कुछ अन्य सज्जनों को लिखवाए १९९९ से २००४-०५ तक वे उच्च कोटि के प्रेरणादायक व मार्ग दर्शक थे। एक बहुत सुन्दर पत्र उन्होने आदरणीय पद्म श्री डा० कपिल देव द्विवेदी जी को लिखवाया था। २००५ व मार्च २००६ तक जो पत्र या कहिए अंतिम संदेश अपने शिष्यों पूर्व सहयोगियों हितैषियों को लिखवाए थे उनकी फोटोस्टेट प्रतियां मेरे पास सुरक्षित हैं जिनका प्रचार प्रसार होना मानव मात्र के कल्याण के लिये अत्यन्त आवश्यक है। पूज्य गुरु जी ने जो अपने विस्तृत पत्र या सूक्ष्म पत्र १९९३-९४ से १९९९ तक स्वयं लिखे अपने सहयोगियों - शिष्यों मित्रों को उनमें से अधिकतर पत्रों के अंश किसी न किसी प्रकार मुझे लखनऊ में मिलते रहे। हमारा प्रयास यह रहा कि उन पत्रों के अंशों में भी जो सर्वश्रेष्ठ वाक्य थे उन्हे हमने ७-८ वर्षों तक एकत्र किया उनके अमृत वचनों विचारों को Quotation के रूप में समय समय पर पत्रिकाओं में विषयवार प्रकाशित करते रहे एवं उनका संकलन कर भोपाल में २००४ में प्रकाशित कराया जिसको "युग बोध" विचार सरणि का रूप दिया गया था। उक्त पुस्तिका का कई स्थानों समारोहों में विमोचन व लोकार्पण हुआ। गत ३ वर्षों में लगभग ४०० पुस्तिकाएं हम

सभी परिचितों गुरु भाइयों पूज्य गुरुजी के हितैषियों को भेंट कर चुके हैं।

पूज्य गुरुजी की स्मरण शक्ति जून ०६ तक बनी रही। कुछ बातें भूल जाते थे याद दिलाने पर उन्हें याद आ जाती थीं किन्तु पुरानी बातें पुराने संस्मरण व पुराने शिष्यों सहयोगियों के विषय में उन्हे सभी कुछ याद आ जाया करता था। हवन मन्त्र सभी याद थे वआर्य समाज हस्तिनापुर में यज्ञ करते समय मन्त्र बोलते थे छोटा सा प्रवचन यज्ञ के उपरान्त २००५ तक बराबर देते रहे। वे ब्रह्मज्ञानी थे। सन्त महामानव कर्म योग ज्ञान योग भक्ति योग की त्रिवेणी जैसे सम्मान सूचक शब्दों में तो उनके पास पत्र आते थे व उनकी प्रतिष्ठा में लेख मिलते रहे। पूज्य गुरुजी गुरुडम के विरोधी थे। उनके भक्तों, शिष्यों व प्रशंसकों ने जब भी उन्हे अपने पत्रों में **गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः, गुरुर्साक्षात् परब्रह्म** लिखकर सम्बोधित किया तो उन्होने उत्तर में यह अवश्य लिखा कि यह वाक्य तो भगवान ईश्वर के लिए है तुम तो मुझमें अगाध श्रद्धा होने के कारण यह लिखते हो। पत्रिकाओं का नाम विद्या सागर उन्होने नहीं रखने दिया, नाम बदलना ही पड़ा क्योंकि गुरुजी की अप्रसन्नता का भी भय रहता था। भेंट स्वरूप वे कुछ भी वस्तु आसानी से नहीं रखते थे। एक बात जो उन्हे मेरी अच्छी नहीं लगी वह थी मोटे लिफाफे में जो पत्र व अन्य पठन सामग्री रजिस्टर्ड डाक से मैं उन्हे भेजता था उसे उन्होने अपव्यय बताया व कहा कि खर्चे अधिक करते हो कम करो।

मैं गत ४०-४५ वर्षों से यह खोजें करता रहा हूं कि गुरु कैसा हो? जिस गुरु, सन्त-महापुरुष में ये बातें हों-

१. जो हमारी दृष्टि में वास्तविक बोधवान्, तत्वज्ञ दीखते हों और जिनमें अलौकिक्ता, विलक्षणता दीखती हो। २. जो कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग आदि साधनों को तत्व से ठीक ठीक जाननेवाले हों। ३. जिनके संग से, वचनों से हमारे हृदय में रहने वाली शंकाएं बिना पूछे ही स्वतः दूर हो जाती हों। ४. जिनके पास में रहने से प्रसन्नता शान्ति का अनुभव होता हो। ५. जो हमारे साथ केवल हमारे हित के लिये ही सम्बन्ध रखते

हुए दीखते हों ६.जो हमारे से किसी भी वस्तु की लेशमात्र भी आशा न रखते हों। ७. जिनकी सम्पूर्ण चेष्टांए केवल शिष्यों व साधकों के हित के लिये ही होती हों। ८. जिनके पास में रहने से लक्ष्य की तरफ हमारी लगन स्वतः बढ़ती हो। ६. जिनके संग, दर्शन, भाषण, स्मरण आदि से हमारे दुर्गुण-दुराचार दूर होकर स्वतः सद्गुण-सदाचार रूप दैवी सम्पत्ति आती हो। मैंने सदैव पूज्य आचार्य दीक्षित जी में उक्त सद्गुणों को देखा हैं।

श्रद्धेय आचार्य जी पूज्य पाद महात्मा नारायण स्वामी जी से अत्यधिक प्रभावित हुए थे उन्ही की प्रेरणा से रामगढ़ जिला नैनीताल में नारायण स्वामी स्कूल की स्थापना की गई जिसके प्रथम हैडमास्टर आचार्य दीक्षित जी हुए। उस छोटे से स्कूल जिसमें न कमरा था न अन्य सुविधायें उसे हाई स्कूल थोड़े ही समय में आचार्य जी ने बनवा दिया अपने परिश्रम व सूझबूझ से। पूज्य आचार्य जी के आध्यात्मिक गुरु स्वामी विद्यानन्द विदेह रहे हैं जिन्हे वह वेदों का परवाना कहते थे। उन्ही की प्रेरणा से पूज्य आचार्य जी वेद प्रेमी बन गए वेदों उपनिषदों का गहन अध्ययन किया। अध्यापन कार्य से सेवा निवृत्त होकर आचार्य जी ने हस्तिनापुर में रहते हुए वहीं आर्य समाज आर्य वानप्रस्थाश्रम की स्थापना की व अपने जीवन का अधिक से अधिक समय इन संस्थाओं के विकास व वेद प्रचार मेंदेते रहे।

पूज्य गुरुजी ने धन्यवाद पत्र सदैव लिखवाए उन सज्जनों, देवियों, वैदिक धर्म प्रचारकों व अपनी टीम के सदस्यों को जिन्होने अथक परिश्रम करके आर्य समाज आर्यवानप्रस्थाश्रम हस्तिनापुर में आयोजित उत्सवों, समारोहों को सफल बनाने में अपना योगदान दिया। उनका कहना था कि दान दाताओं को यदि धन्यवाद पत्र न भी प्रेषित किए जावें फिर भी उनके नाम उन सूचियों मेंअवश्य दर्शाए जावें जो समय समय पर बनती हैं व परिसर में प्रदर्शित की जाती हैं। उन्होने एक योजना का सुझाव मुझे १६६४ में ही दिया था जिसमें उन सज्जनों महिलाओं के नाम अंकित करने थे जिन्होने अपने किसी प्रिय सम्बन्धी की स्मृति में आर्य समाज। आर्य

वानप्रस्थाश्रम हस्तिनापुर को धनराशि दान में दी थी। चाहे धनराशि का उल्लेख न हो जिसे दान दिया गया था। नित नूतन श्रद्धा सुमन वाटिका एवं सन्त भक्त रत्नावली। मुझे इस बात का गर्व है कि मैंने पूज्य गुरुजी के उक्त विचारों भावनाओं को ठीक से समझा व उसे कार्यरूप में परिणत २००३ में ही कर दिया था जिससे पूज्य गुरुजी बहुत प्रसन्न हो गए थे।

वर्ष २००५ में एक दिन मैंने पूज्य गुरुजी से पूछा था कि आपके द्वारा आर्य समाज आर्य वानप्रस्थाश्रम हस्तिनापुर में वेद मंदिर व पुस्तकालय वाचनालय। स्थापित किया गया है उसका रख रखाव व व्यवस्था कैसे होगीं? उनका संक्षेप में उत्तर था किसुल्तान कुतुबुद्दीन ने दिल्ली में कुतुब मीनार बनवाई थी उनके बाद तो वहां के प्रशासन जनता की जिम्मेदारी होती है कि उसे कैसे सुरक्षित रखा जावे। अभी संक्षेप में मैंने उन बिन्दुओं को लिखा है जो पूर्व में किसी पत्रिका पुस्तिका विशेषांक में प्रकाशित नहीं हो पाए हैं।

हमने अपने लखनऊ प्रवास में १९९५-९६ से ही वेद प्रचार व योग प्रचार प्रसार पर्यावरण राष्ट्र प्रेम के उत्थान हेतु पत्रिकाएं फोल्डर्स व अन्य पठन सामग्री तेयार करने में व उन्हे वितरित करने में अपना अधिक समय दिया। पूज्य आचार्य जी ने अपनी प्रतिक्रियायें, शुभकांक्षाए व समीक्षा उन्हें पढने के उपरान्त हमें सदैव प्रेषित की व अपने अमूल्य सुझाव, मार्गदर्शन हमारे अनुरोध पर दिए। आचार्य जी के उक्त पत्रों को यदि प्रकाशित किया जाएगा तो एक मोटा ग्रंथ तैयार हो जाएगा अतः इस स्मृति ग्रंथ में फिलहाल मैं उन पत्रों को नहीं सम्मिलित कर रहा हूं। यदि उन पत्रों में निहित ६० प्रतिशत मार्गदर्शन भी हम ग्रहण कर लें तो हमारा जीवन उज्ज्वल हो जावें।

कुछ उच्च कोटि के बुद्धिजीवियों ने भी मेरी प्रशंसा की है लिखकर जो मुझे "गुरु शिष्य परम्परा" को जीवित रखने का एक उदाहरण मानते हैं। कुछ तो यह मानते रहे गत १० वर्षों में कि मेरे ऊपर मेरे सदगुरु का इतना प्रभाव पड़ा है कि मैं सदैव पूज्य गुरु जी की ही बात करता व लिखता रहता हूं परन्तु उन्हीं बुद्धिजीवियों ने जब हमारी पत्रिकाओं

विद्यावीथिका व फिर जनवरी ०३ में प्रकाशित "आचार्य विद्यासागर अंक" पढ़ा तो उनको सत्यता व यथार्थ का आभास हुआ कि केवल पाल प्रवीण ही नहीं वरन पूज्य आचार्य दीक्षित जी के अनेकों ऐसे प्रशंसक भक्त, छात्र-छात्राएं पुराने शिक्षक सहयोगी व अन्य साहित्यकार कवि राजनेता हैं जिन्होने अपने हृदयोदगार व पुराने संस्मरण लिखे थे। मुझे इससे कितना आत्म सन्तोष व हर्ष की अनुभूति होती है आप अनुमान नहीं लगा सकते। मैं नही चाहता कि केवल मैं ही पूज्यवर गुरुजी का पट शिष्य कहलाऊं मेरी तरह कम से कम २५-३० और उनके अनन्य भक्त होने चाहिए।

पूज्य गुरुदेव जो कहते थे या लिखते थे उन सभी बातों सिद्धान्तों को अपने जीवन में पहिले ही उतार लेते थे-अमल में लाते थे। मैने भी गत ८-१० वर्षों में उनका अनुकरण करने का प्रयत्न मात्र किया है कि पूज्य गुरु जी के यदि ५० श्रेष्ठ सिद्धान्त हैं तो कम से कम उनमें से १५-२० सिद्धान्तों को अपने जीवन में उतार लूं।

मैं भी अपने विचारों को दूसरे पर थोपता नहीं और बिना मांगे सुझाव भी नहीं देता। अपवाद स्वरूप एक बात लिखता रहता हूं अपने विभिन्न पत्रों में कि पूज्य योगीराज स्वामी रामदेव महाराज के सात प्राणायामों, योग आसनों को सभी को प्रतिदिन स्वयं करना चाहिए व अधिक से अधिक सज्जनों महिलाओं बच्चों को विभिन्न टी.वी. चैनलों विशेषकर आस्था चैनल पर सभी कार्यक्रम, शिविर आदि देखते रहना चाहिए

पूज्य गुरु जी को मैने २००५-२००६ में अपने उक्त विचार बता दिए थे कि मैं क्यों दूसरों को ऐसा लिखता हूं।

गुरुडम चलाने वाले तथाकथित अनेकों धर्मगुरु जो प्रायः टी.वी. चैनल पर प्रवचन करते देखे जा सकते हैं अपने भक्तों शिष्यों को गुरुमन्त्र देते हैं व दीक्षा भी देते हैं उनसे किसी न किसी रूप में गुरुदक्षिणा ले लेते हैं परन्तु पूज्य गुरूजी श्री दीक्षित जी ने अपने किसी भी शिष्य को मौखिक

था लिखकर गुरुमन्त्र नहीं दिया वरना जो कुछ भी उन्होने अपने पत्रों में लिख लिखकर भेजा, उन्ही अमृत वचनों अमृत विचारों को हमने गुरु मन्त्र के रूप में धारण किया व हृदयंगम करने का प्रयास करते रहते हैं। उन अमृत वचनों में से भी मुख्य वे गुरुमंत्र जो उन्होने प्रतिदिन पोस्टकार्ड पर लगातार व बाद में छोटी पर्चियों पर लिखकर अपने पत्र के साथ लिफाफे मे भेजते रहे १९६५-६६ में सुलभ संदर्भ हेतु कृपया युग बोध विचार सरणि पुस्तिका जो २००४ में प्रकाशित हुई थी पृष्ठ सं २३ अन्तर्ध्वनि आकांक्षा से लेकर पृष्ठ २६-२७ Time is money watch the watch look at the second hand of the watch को पुनः अवश्य पढ़िये। पृष्ठ २५ पर विशेष ५ बिन्दु कितने महत्वपूर्ण है.....जो परिवर्तन मेरे जीवन में आया है पूज्य गुरुजी के आशीर्वाद व प्रभु की कृपा के कारण मैं चाहता हूं कि उनके प्रशंसक भक्त मित्र, पुराने सहयोगी भी यदि पूज्य गुरुजी के अमृत वचनों को नित्यप्रति भी न पढ़े तो माह में एक बार अवश्य पढ़ लिया करें और उनका क्रियान्वयन अपने ऊपर करें तो अवश्य ही उन सभी के जीवन का रूपान्तरण होगा। युग बोध विचार सरणी की एक प्रति पुनः भेंट करता हूं।

मैं अधिक न लिखते हुए अपना आभार पुनः प्रकट करता हूं आदरणीय डा० वेद प्रकाश आर्य जी के प्रति जिनके अथक प्रयास व परिश्रम से पूज्य आचार्य श्री दीक्षित जी के उज्ज्वल चरित्र व सिद्धान्तों को आर्य लोक वार्ता प्रकाशन द्वारा वर्ष २००३ से अभी तक निरन्तर दूर-दूर तक पहुंचाया जा रहा है। यही कारण है कि वर्ष २००७ को आचार्य दीक्षित जी का जन्म शताब्दी वर्ष विभिन्न स्थानों में मनाया गया व आचार्य श्री-स्मृति ग्रंथ प्रकाशित हुआ है। मैं सभी मित्रों गुरु भाइयों अपने अन्य गुरुजनों के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूं जिन्होने अपना उदार सहयोग देने की कृपा की है। बहुत प्रयत्न करने के बाद भी कुछ त्रुटियां रह गयीं हैं जिनके लिये क्षमा चाहता हूं।

पाल प्रवीण

एम.एस.१२०, सेक्टर-डी. अलीगंज, लखनऊ

विद्या के सागर आचार्य दीक्षित जी

वेदपाल शास्त्री



इस ससांर रूपी रंगमञ्च पर जाने कितने व्यक्ति आये और अपना अभिनय करके चले गये। इस रंगमञ्च पर जो भी पात्र आता है वह अपने कौशल के आधार पर अपना अभिनय प्रस्तुत करता है। कुछ पात्र तो ऐसे होते हैं जो अभिनय तो करते है परन्तु उनका अभिनय अनुकरणीय नहीं होता। इसके विपरीत कुछ पात्र ऐसे होते हैं जो अपने आकर्षक अभिनय से जन साधारण को अभिभूत कर देते हैं। ऐसे ही व्यक्तित्व का नाम है आचार्य श्री विद्या सागर दीक्षित। मेरठ की क्रान्तिकारी भूमि पर एक महान व्यक्तित्व का अवतरण हुआ जिसने अपने तपः पूत जीवन से सहसा लोगों को पवित्र किया। युवकों के प्रेरणास्रोत आचार्य दीक्षित जी बचपन से ही मेधावी छात्रों में रहे। पारिवारिक धार्मिक संस्कारों से संस्कारित दीक्षित जी ने अपने जीवन में उन संस्कारों को पल्लवित एवं पुष्पित किया।

"सादा जीवन उच्च विचार ये दोनों उन्नति के द्वार" इस आदर्श सूत्र को उन्होने अपने जीवन में पूर्ण रूपेण चरितार्थ किया। वे कहने की अपेक्षा करने में अधिक विश्वास करते थे। उनका जीवन एक कर्मयोगी का जीवन रहा है। उन्होने **"कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः"** के अनुसार ही कर्म करते हुये जीवन को सार्थक बनाया।

वस्तुतः दीक्षित जी का जीवन बड़ा ही आदर्श जीवन रहा है। प्रधानाचार्य पद को विभूषित करते हुये एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया है। गुरु शिष्य का जो सम्बन्ध होना चाहिये वंह वास्तव में दीक्षित जी में देखने को मिला। ए० एस० इण्टर कालिज मवाना के प्रत्येक छात्र से उनका आत्मीयता का सम्बन्ध रहा है। वे सभी की सुख-सुविधाओं का ध्यान रखते थे। अपने स्तर से हर प्रकार का सहयोग करना उनकी आदत बन गयी थी।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्।।

की वे जीती जागती प्रतिमूर्ति थे। शिक्षकों की समस्या के निराकरण के लिये उन्होने उ०प्र०मा०शि० संघ नामक संगठन को संगठित किया और इसके अध्यक्ष भी रहे। एम०एल०सी० के पद को सुशोभित करते हुये शिक्षकों की तन-मन व धन से सेवा की।

पूज्य दीक्षित जी विद्या के सागर व वेदों के मर्मज्ञ थे। उन्होने अपनी अमृतमयी वाणी से वेद के सन्देश को घर-घर पहुंचाने के लिये यज्ञ-हवन व प्रवचन किए। हस्तिनापुर की ऐतिहासिक स्थली पर आर्य समाज मन्दिर की स्थापना की जो दिन प्रतिदिन आगे बढ़ता हुआ अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि कर रहा है। आज उनके हजारों सुयोग्य शिष्य आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में संलग्न हैं।

भले ही आज हमारे मध्य दीक्षित जी भौतिक शरीर से विद्यमान नहीं हैं लेकिन अपने यशः शरीर से हमेशा जीवित रहेंगे, क्योंकि:-

जयन्ति ते महाभागाः जनसेवापरायणाः।

येषां कीर्तितनोः नास्ति जरामरणं भयम्।।

श्रद्धेय दीक्षित ज़ी को शत शत नमन

वेदपाल शास्त्री
एम.ए. संस्कृत व हिन्दी
अध्यापक
नव जीवन किसान
इ०का० मवाना (मेरठ)

ओ३म् श्री गुरुवे नमः

लक्ष्मण सिंह



संत शिरोमणि कविवर तुलसीदास जी ने लिखा है "बड़े भाग मानुष तन पावा" वस्तुतः यह मानव तन भाग्यवान प्राणियों को ही मिलता है क्योंकि यही वह आधार भूमि है जिस पर स्थित होकर मानव तन मुक्ति एवं लोक कल्याण में पात्रता पाता है। इस तन की सार्थकता तभी होती है जब इसके साथ उदात्त एवं निर्मल मन भी हो। स्वर्गीय गुरुवर आचार्य विद्यासागर दीक्षित जी को जहां प्रकृति ने दिव्य उज्ज्वल तन दिया था वहीं उन्हे उन्मुक्त हस्त से परम उदार संवेदनशील एवं लोक कल्याण की भावना से परिपूर्ण निर्मल मन भी प्रदान किया था। यह मेरा परम सौभाग्य था कि मुझे दीर्घ काल तक उनके स्नेहशील उदार मन की छत्रछाया में रहने तथा उन्हें निकट से देखने का अवसर मिला था। विगत शताब्दी के पंचम दशक में जब वे रामगढ़ स्थित श्री नारायण स्वामी हाईस्कूल में प्रधानाचार्य थे तो मुझे उनके सान्निध्य में सातवीं से दसवीं कक्षा तक की प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला था।

वैसे तो बाद में भी उनका स्नेह मेरे ऊपर बना रहा तथा उनके सान्निध्य में उनके घर पर भी रहने का सौभाग्य मिला किन्तु मैंने अपने विद्यार्थी जीवन मे उनके उदात्त मानस की तथा अनुकरणीय आदर्शों की जिस रूप रेखा को देखा था उसकी अमिट छाप अभी भी मेरे मन व हृदय पर यथावत् स्थित है। उनके ये आदर्श मेरे ही नहीं अनेक विद्यार्थियों के शाश्वत प्रेरणास्रोत बने रहे। इस सन्दर्भ में अधिक विस्तार में न जाकर केवल एक दो घटनाओं का उल्लेख करना ही पर्याप्त होगा।

इनमें से प्रथम घटना का सम्बन्ध है उत्तर प्रदेश अध्यापक संघ द्वारा आहूत हड़ताल से तथा द्वितीय का मैट्रिक की वार्षिक परीक्षा में निरीक्षकों की नियुक्ति से। अध्यापक संघ द्वारा आहूत हड़ताल के सन्दर्भ में मैंने देखा कि एक ओर तो उन्होने हड़ताल में सहयोग करने के लिए विद्यालय को

बन्द करवा दिया और दूसरी ओर इसमें छात्रों के अध्ययन की हानि न हो इसलिये विद्यालय के निकट खुले मैदान में कक्षाओं का आयोजन करवा दिया।

उनके जीवन में जो सबसे अधिक सराहनीय एवं अनुकरणीय घटना मैंने देखी उसका सम्बन्ध था अपने आदर्शों की रक्षा के लिए किसी भी प्रकार अनुचित समझौता न करने का। इसका जीवन्त उदाहरण था - इलाहाबाद बोर्ड द्वारा आयोजित दसवीं की वार्षिक परीक्षा के लिए निरीक्षकों की व्यवस्था का। उन दिनों रामगढ़ हाईस्कूल के छात्रों का परीक्षा केन्द्र हल्द्वानी का एम०बी० हाईस्कूल हुआ करता था।

प्रधानाचार्य के नाते उन्होने अपने विवेक से कुछ विश्वसनीय अध्यापकों को निरीक्षण कार्य के लिये छात्रों के साथ भेज दिया था किन्तु विद्यालय के प्रबन्ध अधिकारी कुछ ऐसे अध्यापकों को भेजने का आग्रह करने लगे जो उनके हितों के अनुकूल होते। किन्तु आचार्य दीक्षित जी परीक्षा के कार्य में किसी प्रकार की हेरा फेरी के सख्त खिलाफ थे। जब अधिकारी वर्ग ने उन पर दबाव डालकर अपने अनुकूल निरीक्षकों का चयन करवाना चाहा तो वे अपने पूर्व निर्णय पर दृढ़ रहे और अनौचित्य के समक्ष झुकने की अपेक्षा उस सेवा कर्म का परित्याग करना ही श्रेयस्कर मानकर त्यागपत्र देकर चले गये।

पूज्य आचार्य जी भारतीय परम्परा के आदर्श गुरु के जीवन्त रूप थे। विद्यार्थियों को वे अपने परिवार के ही सदस्य समझते थे। एक पत्र में मुझे उन्होने लिखा था कि वे मुझे सर्वमान्य विद्यार्थी न समझकर अपने परिवार का एक सदस्य समझते हैं। मैंने स्वयं भी देखा है कि यदि कभी माता श्री उनसे अपने बच्चों को प्रथक रूप से समय देने का आग्रह करती तो वे कहा करते थे कि "मेरे लिये तो मेरा समस्त विद्यार्थी वर्ग अपने ही आत्मजों के समान है। दोनों में कोई भेद-भाव नहीं कर सकता। मै जैसा इनके लिए हूं वैसा ही उनके लिए भी।"

पूज्य गुरुदेव बड़े उदार मना थे। पठनशील एवं आज्ञाकारी विद्यार्थियों के लिए उनका विशेष स्नेह था। मै उस चारित्रिक प्रमाणपत्र को अपनी अमूल्य निधि समझता हूं जो कि उन्होने स्वयं अपने कर कमलों से लिख कर मुझे दिया था कि "यह लक्ष्मण सिंह अपने वरिष्ठ जनों के उत्तम विचारों एवं कृत्यों को सदैव अपनाता है तथा अपने सहपाठियों के अनुचित गुणों का कभी अनुसरण नहीं करता" मैं समझता हूं कि मैं आज जो भी जैसा भी हूं, सब उनके आशीर्वाद से हूं।

आज उनके नाम से पूर्व "स्वर्गीय" शब्द का प्रयोग करते हुए मन विचलित सा हो रहा है। परम पिता परमात्मा से यही प्रार्थना है कि वह हमें पूज्य गुरुजी के अटूट सिद्धान्तों पर चलने की क्षमता प्रदान करें।

श्रद्धावनत शिष्य

लक्ष्मण सिंह
राम-सदन (खोलिया परिसर)
नबाबी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल)
प्रधान, आर्य समाज
हल्द्वानी



पूज्य श्री दीक्षित जी दिनांक २४.०३.८५ को शास्त्री नगर मेरठ में श्री कौशल कुमार द्वारा आयोजित अपने सम्मान समारोह में भाषण देते हुये।

आचार्य विद्यासागर जी जाज्वल्यमान शिक्षाविद् के जीवन के अन्तिम दशक की कुछ स्मृतियां।

ब्रह्म भिक्षु



मेरी सासू माता सत्य बाला जी शायद १९८० के दशक से श्री दीक्षित जी की प्रेरणा से हस्तिनापुर में स्थाई रूप से रहने लगी थी। श्री दीक्षित जी ने आर्य समाज का एक कमरा माता जी को दे दिया था और वह अकेली ही वहां रहती थीं। माता जी को मिलने जब भी मैं और पत्नी हस्तिनापुर जाते माता जी हमें श्री दीक्षित जी से मिलाने उनके घर ले जाती। दोनों ही हमें हस्तिनापुर में स्थाई रूप से रहने की प्रेरणा देते रहे। श्री दीक्षित जी की योग्यता व्यवहार कुशलता प्रंभावी व्यक्तित्व व आर्य समाज की वृद्धि में लगन में एक विलक्षण आकर्षण था जो मुझे अन्ततः हस्तिनापुर ले ही गया। मैं व मेरी पत्नी दिसम्बर १९९६ में वहां पहुंच गये व श्री विद्यासागर जी ने आर्य समाज के दो छोटे कमरे रहने के लिए दे दिए। धीरे-धीरे उनके सान्निध्य से मेरी उनके साथ घनिष्टता बढ़ती गई और मुझे उनका पिता जैसा वात्सल्य मिलना प्रारम्भ हो गया। श्री दीक्षित जी के अथक प्रयास से हस्तिनापुर आर्य समाज में साप्ताहिक सत्संग में भाग लेने वालों की संख्या बढ़ती गई। हम दोनों का मन भी वहां खूब लग गया। आर्य समाज के भवन आदि के रख रखाव चारदीवारी गेट आदि बनवाने के लिए श्री दीक्षित जी ने खूब धन दान दिया व देते रहते थे। हमारी माता जी ने एक बड़ा कमरा अपने रहने के लिए प्रारम्भ में ही बनवा लिया था। अन्य दो कमरे और लोगो ने बनवा लिए व आर्य समाज मे एक छोटा सा वानप्रस्थाश्रम बन गया जो कि श्री दीक्षित जी की प्रबल इच्छा लगन व पुरुषार्थ का ही फल था। वानप्रस्थ जीवन लक्ष्य की ओर बढ़ाने के लिए वह सप्ताह मे दो बार मध्यान्ह में बैठक रख हमारा मार्ग दर्शन व शंका समाधान करते थे। समय बीतता गया व श्री दीक्षित जी जो शतायु जीवन के अन्तिम दशक में पहुंच गये थे शारीरिक तौर पर कमजोर होने लगे व आंखों से दिखना भी कम होने लगा फिर भी वह पूरी लगन व शक्ति से

प्रधान पद का कार्य करते रहे। वह आर्य समाज के प्रधान ही नहीं केन्द्र बिन्दु भी थे। एक बार मेरे उनसे कुछ मतभेद हो गए और मेरे मुख से न चाहते हुए भी उनके लिए कुछ कटु शब्द निकल गये किन्तु उन्होने मुझे एक भी शब्द नहीं कहा। उनकी सहनशीलता को देख मन ही मन मैं बहुत लजाया और वे उदार दिल से हर रविवारीय सत्संग के प्रवचन में कहानियों के माध्यम से मुझे समझाते रहे। वर्ष २००२ में आयुर्वेदीय चिकित्सा के अभाव में मैं हस्तिनापुर छोड़ ज्वालापुर, हरिद्वार के आर्य वानप्रस्थाश्रम में स्थाई रूप से रहने आ गया। ज्वालापुर आश्रम में मेरे विद्वान पड़ोसी आचार्य विद्या रत्न जी मेरे मित्र भी बन गए। श्री विद्या रत्न जी ने मुझे बताया कि जब श्री दीक्षित जी ए०एस० इण्टर कालिज, मवाना के प्रधानाचार्य थे श्री विद्यारत्न जी भी उसी कालिज में विज्ञान अध्यापक के पद पर कार्यरत थे व उनके मुंह से मैंने श्री दीक्षित जी की बहुत प्रशंसा सुनी। श्री दीक्षित जी की पूरी लगन, योग्यता कठिन परिश्रम पवित्र राजनैतिक गतिविधियों की जानकारी से ही इण्टर कालिज का विकास हुआ और वह डिग्री कालिज बन गया। उनके गुणों के आधार पर उन्होंने कॉलेज में ही नहीं शिक्षा विभाग व नगर में भी अत्यन्त शोभायमान स्थान प्राप्त कर रखा था। वह सब अध्यापकों व विद्यार्थियों का बहुत ध्यान रखते थे व सब अध्यापक व विद्यार्थी श्री दीक्षित जी का बहुत सम्मान करते थे। श्री दीक्षित जी अन्त के कुछ वर्षो में कष्टों को प्रसन्नता पूर्वक सहते हुऐ शतायु को प्राप्त हुये। यह उनके सात्विक परोपकारी निष्ठावान वेद प्रचारक स्वाध्याय व ध्यान में मग्न रहने से ही सम्भव हो सका। मैं उस दिव्यात्मा को बारम्बार नमन करता हूँ व प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि नये जन्म में वे जहां कहीं भी हों सुख शान्ति व समृद्धि से भरपूर रहें।

अन्त में एक बार फिर उनके चरणों में नमस्कार करता हूँ।

ब्रह्म भिक्षु
(बी० डी० गुप्ता)
२/४२, आर्य वानप्रस्थ आश्रम
ज्वालापुर, हरिद्वार - २४६४०७

विलक्षण प्रतिभा के धनी थे आचार्य विद्यासागर दीक्षित

जय प्रकाश पाण्डेय



प्रख्यात शिक्षाविद् पूर्व प्रधानाचार्य एवं स्वतंत्रता सेनानी आचार्य विद्या सागर दीक्षित आज हमारे बीच भले ही न हो परन्तु उनकी स्मृति को विस्मृत नहीं किया जा सकता क्योंकि वे एक विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। ऐसा करना इसलिये भी बहुत मुश्किल है क्योंकि उनके प्रतिभावान व्यक्तित्व ने अपने जीवन काल में हर किसी को प्रभावित एवं आकर्षित किया। १६ जनवरी १६०७ को मवाना तहसील के धनपुर गांव मे जन्मे आचार्य जी का २८ जून २००६ करीब सौ वर्ष की आयु में निधन हुआ। उनके जीवन की एक नहीं अनेक घटनायें स्मृति पटल पर हैं जिन्हे भुलाया नहीं जा सकता। अपनी बाल्यावस्था शिक्षण ग्रहण के कुछ संस्मरण मैं पूर्व में प्रकाशित आचार्य विद्यासागर जनवरी २००३ में दे चुका हूं।

पिछले वर्ष २००६ की १६ जनवरी की ही तो बात है जब मै। उनसे मिला था। हस्तिनापुर मे उनके आवास पर जाकर ही उनके जन्मदिन पर उन्हे बधाई देना उपयुक्त समझा उस दिन इसी हेतु पहुंचे तोदेखा तो सामने ही अपने पलंग पर बैठे थे। कृष्काय शरीर परन्तु चेहरे की आभा वही पहले जैसी। आंखो से तो दीखता नहीं था परन्तु चरणस्पर्श कर नाम बताया तो एकदम पहचान गये। पुरानी बाते उनके स्मृति पटल पर आती चली गई। बड़े प्रसन्न हुए। उनके चेहरे की मुस्कुराहट उस समय देखते ही बनती थी। कि पता नहीं क्या अतुल धन सम्पदा मिल गई। उनके दर्शन मात्र से मन को बड़ा सुकून मिला। समाज एवं वानप्रस्थआश्रम हस्तिनापुर जिसकी स्थापना भी उन्होने ही की थी के उत्सव पर गया था। तब वे पूर्ण स्वस्थ थे बस नेत्र ज्योति कुछ कम थी। तब काफी समय उनके साथ बिताया था और भोजन भी उनके साथ बैठकर किया था चलते समय एक पत्रक पैम्फलेट मवाना आकर कार्यक्रम में जोदेखा था तथा कुछ उस पत्रक से लेकर समाचार बना दिया वही समाचार जब अखबार मे छपा और उन्होने उसे

पढ़ तो उन्होने एक पत्र मुझे आशीर्वाद रुप में लिखा था जो उनकी अमूल्य धरोहर के रुप में मैने आज भी उसे बड़े संभाल कर रखा हुआ है। पत्र इस प्रकार था-

८/२०, सिविल लाइन्स, हस्तिनापुर, मेरठ
२६/१०/१९९९

प्रिय पाण्डेय जी

सस्नेह नमस्ते।

आज के अखबार मे हामरे आर्य समाज के उत्सव की बहुत सुन्दर रिपोर्ट पढ़ने को मिली । बहुत बहुत धन्यवाद।

बड़ी चतुरता से अपने उत्सव का आंखों देखा हाल ही नहीं अपितु पत्रक का सार भी समाचार का अंग बना दिया जिसने हमारे उत्सव को चार चांद लगा दिये।

बधाई के साथ साथ आशीर्वाद भी आपने अर्जित कर लिया श्री राम जी लाल हितैषी का स्थान आपने ग्रहण कर लिया।

शुभ काम
वि.सा. दीक्षित

आशीर्वाद भरे इस पत्र को पाकर कितनी अपार खुशी और आत्मीयता मुझे महसूस हुई उसका मैं वर्णन नहीं कर सकता। आज हर चीज को लोग पैसों से तोलते हैं परन्तु पैसे से भी बढ़कर है आत्मीयता जो पैसे वालों के पास नहीं होती। यह तो केवल एक घटना प्रसंग है। इसके अलावा और भी कई घटना प्रसंग ऐसे हैं जो उनके सान्निध्य में घटित हुए और जिनसे हमें आज तक प्रेरणा मिल रही है। उनके सान्निध्य को हम भुला नहीं सकते। आचार्य जी आज इस दुनिया में नही हैं परन्तु उनकी याद हमारे हृदय में हमेशा बनी रहेगी। उनके सदुपदेश हमें सन्मार्ग दिखाते रहें इसी कामना के साथ उस महान व्यक्तित्व को शत शत नमन करते हैं।

जय प्रकाश पाण्डेय
वरिष्ठ पत्रकार एवं सम्पादक
पाण्डेय टाइम्स मवाना मेरठ

सद्गुरु आचार्य विद्या सागर दीक्षित जी

जगदीश सिंह

मैं गुरुजी से जनवरी में या दिसम्बर के अन्त में मिला था। उन्होंने मेरे लिए इतने बूढ़े शरीर को कष्ट दिया स्वयं चाय बनाई बिस्कुट लाए। इस अवस्था में भी उनमें शिष्यों के प्रति कितना प्यार है? मुझे उनके वे दिन भी याद हैं जब वे मवाना कालिज में प्रधानाचार्य थे तथा एम.एल.सी. भी थे। उनका क्या व्यक्तित्व था क्या स्वास्थ्य व शरीर था? पूरे मवाना तहसील व मेरठ के विद्यालयों में उनका नाम था। विद्यालय का रिजल्ट १०वीं, १२वीं. का ६७ प्रतिशत था, ऐसा कहीं नही हुआ होगा।

किसी समय में ए.एस. इण्टर कालिज सबसे बिगडे स्कूलों में था। दीक्षित जी ने जब प्रधानाचार्य का चार्ज लिया उस समय काफ़ी बड़े-बड़े बदमाश थे जो हर समय गुण्डागर्दी करते रहते थे। लेकिन जब गुरुजी के सम्पर्क में आये तो उनपर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उन बच्चों ने डिवीज़न प्राप्त की पढ़ाई में तथा संस्था का नाम रोशन किया।

मेरे समय में स्कूल की इमारत ख़स्ता हाल में थी। छत की जगह टीन पड़ी हुई थी। गुरु जी की लगन ईमानदारी से दिन प्रतिदिन विद्यालय उन्नति करता रहा। सारा विद्यालय लिंटल की बिल्डिंग में बदल दिया गया।

प्रत्येक कमरे में रिसीविंग सैट लगे थे। चिड़िया के बोलने की आवाज़ ऑफ़िस में पहुंचती थी। आज ए.एस. डिग्री कॉलिज जो हमदेख रहे हैं ये सब उनके परिश्रम और लगन का फल है। उनकी लगन का एक दूसरा उदाहरण और भी है। मवाना में शुगर मिल के सामने महाराणा प्रताप इण्टर कॉलिज भी उन्हीं की देन है। उन्हे जो लगन लग गई उसे पूरा करने के बाद ही दम लिया। संस्था को मान्यता प्रदान कराना कोई सरल काम नहीं है। पैसा संस्था के लिए जुटाना उनकी योग्यता की नई मिसाल है।

मैंने उनके भाषण सुने हैं। उनके जैसा वक्ता हर कोई नहीं हो

सकता। उनके पास शब्द कोष था। शैली थी। जब वे बोलना प्रारम्भ करते तो एकदम शान्ति छा जाती। यदि उन्होने संस्था के लिए दान की बात कही तो उनके कहने पर बड़े-बड़े पत्थर दिल भी पसीज गये और अपनी सामर्थ्य से अधिक दान संस्था को दिया। कई घटनाए मैंने ऐसी देखी हैं।

एक घटना की मुझे याद है मवाना में डाक्टर गोयल हुआ करते थे। उन्हें एक बार विद्यालय के समारोह में अध्यक्ष बना दिया। वे बड़े कंजूस थे परन्तु उन्होंने भी उस समय संस्था को दान देने की घोषणा की और उसे पूरा किया।

गुरु जी की वाणी में जादू था। कक्षा में भी उनकी यही दशा थी, उदाहरण देना उनकी कला थी। बच्चों में अनुशासन पैदा करना उनकी खूबी थी। मुझे उन्होंने सन् ५७, ५८, ५९ में शिक्षा शास्त्र, मनोविज्ञान पढ़ाया था। अध्यात्मवाद पर मेरा उनसे तर्क होता रहता था। कई बार मेरी शंका का समाधान किया। ऐसा नहीं कि पढ़ाते-पढ़ाते ऊब जाएं, पढ़ाने में आनन्द लेते थे। शिष्यों की संतुष्टि जब तक नहीं होती थी विषय को छोड़ा नहीं। कहां तक गिनाऊँ ऐसा आदर्शवादी व्यक्ति कहीं राजनीति में होता तो देश का महान नेता होता। ऐसी कुशल नीति के व्यक्ति हर स्थान पर हर समय नहीं मिलते, उनके विषय में मैंने स्वयं कुछ पंक्तियां लिखी हैं:-

कमल खिला है कीचड़ में, खिला गुलाब बहारों में।
इन्सानों में यहां बहुत हुए हैं दीक्षित एक हज़ारों में।
गुरुगण यहां बहुत मिले, पर दीक्षित सबसे प्यारों में।
इनको कैसे भुला सकूं, अहसान इनके हज़ारों में।
कर्म महान हैं इनके ऐसे, चमके चांद सितारों में।
याद मुझे उस आंगन की, रहे सदा दिलदारों में।
दुआएं मेरी है इनको ऐसी, ये जीवन बीते बहारो में।
चौहान का प्रणाम इन्हें, रखियों याद दुलारों में।

जगदीश सिंह चौहान
(पूर्व प्रधानाचार्य)
लक्ष्मी नगर, दिल्ली

स्व० आचार्य श्री विद्यासागर दीक्षित जी के जीवन के कुछ प्रेरणादायक क्षण

बी० के० शर्मा



विद्यालय में वार्षिक उत्सव मनाया जा रहा था सांस्कृतिक कार्यक्रम बड़ी ही शांति से चल रहा था। जिलाधिकारी मेरठ अतिथि के रूप में कार्यक्रम में उपस्थित थे। अचानक बारिश आ गयी और छात्रों में कुछ हलचल शुरू हुई, शिक्षकगण भी अपनी कुर्सियां बरांडे में खींचने लगे। दीक्षित जी तुरन्त मंच पर आये और कहा प्यारे बच्चों आज तुम्हारी परीक्षा का वक्त आ गया है तुम्हें दिखाना है कि ऐसी बारिश में भी तुम अनुशासन मे रह सकते हो मुझे तुम पर भरोसा है कि तुम विद्यालय के नाम पर धब्बा नहीं लगने दोगे और मंच से नीचे आ गये। फिर क्या था बारिश होती रही और कार्यक्रम चलता रहा कोई भी छात्र तनिक भी विचलित नहीं हुआ। जिलाधिकारी यह देख हतप्रभ रह गये और कार्यक्रम के अन्त में अपने सम्बोधन में उन्होने विद्यालय के अनुशासन, प्रधानाचार्य श्री दीक्षित जी और समस्त स्टाफ की भूरि-भूरि प्रशंसा की और दीक्षित जी के विषय में यह कहने से नहीं चूके कि दीक्षित जी वास्तव में एक कुशल प्रशासक हैं और एक निष्ठावान् शिक्षक। उनके समय में डण्डे का अनुशासन नहीं था वरन् अपने आचरण कर्त्तव्य निष्ठा और सद्व्यवहार की ऐसी छाप न केवल शिक्षकों और छात्रों पर वरन् सामान्य जन मानस पर छोड़ी थी कि जो भी उनके सम्पर्क मे आता था, प्रभावित होता था।

स्व० आचार्य श्री दीक्षित जी विलक्षण प्रतिभा के धनी थे, लेखनी के स्वामी थे और प्रखर वक्ता। मौके की नजाकत को भांपने की अद्वितीय क्षमता उनमें थी। शिक्षक आन्दोलन ज़ोरों पर था। विद्यालय के प्रबन्ध तन्त्र ने तत्कालीन शिक्षामन्त्री स्व० श्री कैलाश प्रकाश जी को विद्यालय में एक उद्घाटन कार्यक्रम में आमंन्त्रित कर रखा था लेकिन शिक्षकों के मन में शिक्षा मन्त्री का विरोध था। प्रधानाचार्य श्री दीक्षित जी ने बीच का रास्ता

निकाला। शिक्षकों से कहा कि आप समारोह में मात्र उपस्थित रहें शेष सब कुछ मैं संभाल लूंगा। शिक्षा मंत्री ज्यों ही विद्यालय के द्वार पर अपनी गाड़ी से उतरे एक छात्र दीनानाथ ने शिक्षक आन्दोलन के समर्थन में एक ज्ञापन मन्त्री जी को सौंप दिया। ज्ञापन पर नजर डाल कर मंत्री जी आवेश में आ गये और बोले दीक्षित जी क्या इसी लिये मुझे बुलाया था? दीक्षित जी ने बड़े ही सहज भाव से उत्तर दिया कि बच्चे हैं, आप अपने उद्‌बोधन में इसका उत्तर दे देना। लेकिन मन्त्री जी का क्रोध शान्त न हुआ और अपने उदबोधन में भी उस क्रोध को व्यक्त कर दिया। मन्त्री जी के भाषण के बाद श्री दीक्षित जी बोलने खड़े हुये और कहा कि मन्त्री जी आज शिक्षकों और आपके बीच लड़ाई चल रही है। जब मां और पिता के बीच घर में लड़ाई होती है तो बच्चे मां की तरफदारी करते हैं पिता की नहीं। शिक्षक मां की भूमिका में है और आप पिता की इसलिये छात्र ने आपको ज्ञापन सौंपा है आप इसे अन्यथा न लें। फिर क्या था मन्त्री जी हंस पड़े और कहा कि दीक्षित जी आपकी वाक पटुता का तो मैं कायल हूं।

श्री दीक्षित जी एम०एल०सी० थे, लखनऊ से लौट रहे थे। ज्यों ही कालिज गेट पर उतरे, चपरासी कल्लू से अपना सामान अपने निवास पर भिजवा दिया और स्वयं प्रिंसिपल आफिस में उपस्थिति पंजिका में अपने हस्ताक्षर कर ही रहे थे कि कक्षा ६ का एक छात्र आ गया और दीक्षित जी से कहा आपका पीरियड है। दीक्षित जी ने तुरन्त डस्टर उठाया और इस छात्र के साथ कक्षा में चले गये। पीरियड समाप्त होने पर ज्यों ही आफिस की ओर लौट रहे थे एक अन्य कक्षा में शिक्षक न होने के कारण उस कक्षा में गये और बच्चों से पूछा कि क्या पीरियड खाली है? बच्चों के हां करने पर स्वयं उस कक्षा में चले गये और पहले तो बच्चों से पूछा कि तुम्हारी कक्षा में पढ़ाई कैसी चल रही है, बच्चों ने कहा पढ़ाई अच्छी चल रही है तो दीक्षित जी ने पूछा क्या पढ़ोगे? बच्चों के यह कहने परकि विज्ञान का पीरियड है दीक्षित जी ने विज्ञान ही पढ़ाया। जबकि वे स्वयं हिन्दी व संस्कृत के शिक्षक थे। हर विषय में उनकी रुचि थी और हर विषय का उन्हे ज्ञान था जो एक प्रिंसिपल के लिये होना भी चाहिये। उनमें

कितनी कर्त्तव्य परायणता थी यह इस घटना से स्पष्ट हो जाता है अन्यथा कौन प्रिंसिपल ऐसा होगा जो इतनी लम्बी यात्रा के बाद विश्राम न करे। दीक्षित जी वास्तव में एक आदर्श शिक्षक थे। उनका जीवन देश भक्ति से परिपूर्ण था और वे एक नेक इन्सान थे। स्वतन्त्रता आन्दोलन में कई बार जेल गये। ऐसे आदर्श शिक्षक कुशल प्रशासक प्रखर वक्ता और स्वतन्त्रता सेनानी को मेरा शत शत नमन।

बी० के० शर्मा
पूर्व प्रधानाचार्य

एस० इण्टर कालिज, मवाना (मेरठ)
अध्यक्ष विद्यासागर फाउण्डेशन

आचार्य दीक्षित जी को नमन



मेरी कुटिया के समीप ही निवास कर रहे मेरे प्रिय श्री ब्रह्मभिक्षु (ब्रह्मदत्त गुप्त) व उनकी सहधर्मिणी सुनीता जी से ज्ञात कर बहुत प्रसन्न हुआ था कि आर्य समाज आर्य वानप्रस्थाश्रम, हस्तिनापुर मेरठ के संस्थापक आचार्य श्री विद्यासागर दीक्षित जी की प्रतिष्ठा में उनकी जन्म शताब्दी वर्ष में आचार्यश्री स्मृतिग्रंथ का प्रकाशन किया जा रहा है। श्रद्धेय आचार्य दीक्षित जी को मैं भी अपने श्रद्धासुमन अर्पित करना चाहता हूं क्योंकि प्रख्यात संस्था ए०एस० इण्टर कालेज, मवाना मेरठ में मैंने आचार्य दीक्षित के सहयोगी शिक्षक के रुप में कार्य किया था। मैं श्री दीक्षित जी के विशिष्ट गुणों से बहुत प्रभावित हुआ था। उनके मार्ग दर्शन व प्रेरणा से मुझे अत्यधिक लाभ मिला था। वे उच्च कोटि के राष्ट्रभक्त, आदर्श शिक्षाविद व कुशल प्रशासक थे। आचार्य जी अपने सभी सहयोगियों, छात्रों एवं अन्य सभी के प्रेरणास्रोत रहे हैं।

आचार्य विद्यारत्न

पूर्व उप सचिव माध्यमिक शिक्षा परिषद उ०प्र०, पूर्व उप प्रधान आर्य वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर गौशाला के प्रबन्धक एवं "स्वस्ति पंथा" पत्रिका के प्रधान संपादक

परम श्रद्धेय गुरु जी श्री विद्यासागर दीक्षित

ज्ञान सिंह महरा



हिन्दुओं के धार्मिक ग्रन्थों और अधिकारों की रक्षा के निमित्त हैदराबाद रियासत के सत्याग्रह की विजय के उपलक्ष में स्वनाम धन्य महात्मा नारायण स्वामी जी के सभापतित्व में दिनांक १५.९.१९३९ को रामगढ़ पट्टी के निवासियों ने एक विशाल सभा का आयोजन किया और स्वामी जी को अभिनन्दन पत्र समर्पित करते हुए यह इच्छा प्रकट की गयी कि रामगढ़ में एक हाई स्कूल की स्थापना की जावे। इस कार्य की सफलता एवं पूर्ति के लिए नारायण स्वामी विद्या सभा का पंजीकरण करवाया गया। पहली जौलाई १९४० को स्कूल की स्थापना की गयी। विद्यालय की स्थापना के लिए स्वामी जी के अथक प्रयासों और स्थानीय सम्मानित निवासियों के सभी प्रकार के सहयोग से विद्यालय का विशाल भवन, क्रीड़ा स्थल एवं छात्रावास के साथ अन्य इमारतें भी निर्मित की गयी। इस कार्य की सफलता के लिए उत्तर प्रदेश की अन्तरिम सरकार के मुख्य मंत्री सम्माननीय पं. गोविन्द बल्लभ पन्त जी द्वारा सहयोग, सहायता एवं मार्गदर्शन दिया गया। माननीय मुख्यमंत्री जी के दिशा निर्देशन के फलस्वरूप शिक्षा विभाग द्वारा प्रथम जौलाई १९४३ से हाई स्कूल की स्वीकृति व मान्यता दी गयी और इस विद्यालय को कुमाऊँ कमिश्नरी के प्रथम श्रेणी के स्कूलों में स्थापित किया गया। विद्यालय के सुयोग्यतम् मुख्याध्यापक/प्राचार्य श्री विद्यासागर दीक्षित जी एवं उनके सहयोगी अध्यापकों के समर्पित भाव से एवं अथक परिश्रम से तत्कालीन नैनीताल जनपद के सात हाई सकूलों में इस विद्यालय ने अपना विशिष्ट स्थान प्राप्त कर लिया। इस विशिष्ट स्थान का श्रेय एवं यश श्री दीक्षित जी के साथ ही विद्यालय की प्रबन्ध समिति को जाता है। 'नारायण स्वामी विद्या सभा' की प्रबन्ध समिति में सर्व श्री गंगा प्रसाद रिटायर्ड चीफ जज टेहरी स्टेट सत्येन्द्र प्रसाद मट्टू बच्ची सिंह, दरमवाल, कमलापति जोशी एवं दीवान सिंह मंत्री आदि सम्भ्रांत व्यक्ति थे। ग्रीष्मावकाश में देश के मूर्धन्य विद्वानों समाजसेवियों, संन्यासियों कवियों एवं शिक्षाविदों का नारायण स्वामी आश्रम, आर्य समाज रामगढ़, अरविन्द

आश्रम (तपोवन) एवं महादेवी वर्मा कर्म स्थली में प्रवास हेतु आना होता रहता था, स्वनाम धन्य पूज्य दीक्षित जी इन महानुभावों को विद्यालय में आमंत्रित करके विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन प्रतिवर्ष किया करते थे जिसके फलस्वरूप विद्यालय में शिक्षोपार्जन के साथ-साथ विभिन्न क्षेत्रों का ज्ञान प्राप्त किया जाता रहता था। इस प्रकार के सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक आयोजनों का अनवरत लाभ विद्यालय एवं छात्रावास को प्राप्त होता था, इसके परिणाम स्वरूप विद्यालय का प्रदेश के सभी विद्यालयों में विशिष्ट स्थान बनने में सफलता प्राप्त हुई। विद्यालय की बहुमुखी प्रतिभा एवं प्रतिष्ठा के लिए विभिन्न प्रकार के शैक्षणिक, क्रीड़ा संबंधी, खेलकूद एवं मैचों का आयोजन भी नियमित रूप में किया जाता था। श्री दीक्षित जी प्रारम्भिक तीन चार वर्षो तक नारायण स्वामी आश्रम की कुटियों में निवास करते रहे तथा उसके उपरान्त अपने निर्मित भवन में सपरिवार निवास करते रहे। यह भवन आपकी स्मृति एवं यादगार को तरोताजा बनाए रखने में सहयोगी प्रतीत होता है। आप विद्यालय के छात्रों के साथ ही अभिभावकों को विशेष प्यार, स्नेह, मार्गदर्शन एवं सम्मान दिया करते थे। आपका सान्निध्य पाकर अभिभावक अपने को सौभाग्यशाली समझते थे। आप की सादगी, स्वदेशी पहनावा एवं देशप्रेम की भावना का यथेष्ट लाभ छात्रों अभिभावकों एवं सहयोगी अध्यापकों को प्राप्त होता रहा तथा वह उनके लिए सदैव अनुकरणीय रहा। आप समय बद्धता, शुचिता, सरलता और निष्कपटता की सौम्यमूर्ति होने के साथ ही अनुशासन प्रिय थे। इसके परिणाम स्वरूप विद्यालय से शिक्षा प्राप्त विद्यार्थी अपने जीवन में सफल रहे है तथा वह उनके चरित्र का संबल बना रहा। पूज्य दीक्षित जी शिक्षा ज्ञान एवं विद्या-दान के साथ साथ सच्चरित्रता, स्वावलम्बन, कर्त्तव्य-न्ष्ठा धार्मिकता एवं पारिवारिक शिक्षा का ज्ञान भी दिया किरते थे। आप बिना भेदभाव के धृष्टता एवं उद्दण्डता के लिए दण्ड देते समय अपने प्रिय छात्रों एवं अपने पुत्र को समान समझा करते थे। पूज्य आचार्य जी की जन्म शताब्दी वर्ष में मै अपनी शत् शत् श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। आपकी यश कीर्ति सदैव बनी रहे ऐसी प्रार्थना मै परम पिता परमात्मा से करता हूं।

महरा गांव, नैनीताल

आदर्श शिक्षक गुरु शिष्य परम्परा के संवाहक
श्री विद्यासागर दीक्षित

प्रेमचन्द्र गुप्त



स्व० श्री विद्या सागर दीक्षित पूर्व एम०एल०सी० पूर्व प्रधानाचार्य ए०एस० इण्टर कॉलिज, मवाना मेरठ इस युग के अत्यन्त श्रेष्ठ व्यक्तियों में से एक थे। सादा जीवन उच्च विचार उनके जीवन का एक सिद्धान्त था यू०पी० एस०टी०ए० के वे आदर्श कर्मठ नेता थे।

जहां वे कार्य करते थे वह स्थान उनकी महानता के कारण उनके नाम के पीछे चलता था। अर्थात वह स्थान उनकी उपस्थिति के कारण प्रसिद्ध हो जाता था। जब मैं अपने किसी साथी शिक्षक (मवाना के बाहर) से कहता था कि मैं ए०एस० इण्टर कालिज में कार्य कर रहा हूं तो वे कहते थे क्या श्री विद्या सागर दीक्षित वाले स्कूल में। उनकी कथनी करनी में समानता थी। वे भारतीय संस्कृति के सच्चे पुजारी थे। 'जीवेम शरदः शतम्' जीवन के सौवें वर्ष में चलते हुए वे परलोक सिधार गये। उनके शताब्दी वर्ष के अवसर पर मैं उन्हे श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा हूं:-

"देखते ही देखते तुम दूर हमसे हो गये
मौत से मजबूर होकर, तुम जहां से खो गये।
तुम नहीं हो पर तुम्हारी बात बाकी रह गई
फूल-'प्रेम' के चढ़ाते याद बाकी रह गई।"

पूर्व-अध्यापक
ए० एस० इण्टर कालिज मवाना
सी०-१२, नालन्दा कालोनी, मवाना, मेरठ
फोन : २७४१५४

परम श्रद्धेय आदर्श शिक्षक उच्च शिक्षा विद्

आचार्य श्री विद्या सागर दीक्षित

मित्रेश वर्मा

परम श्रद्धेय श्री दीक्षित जी के विषय में जितना लिखा जाय कम होगा। १६ नवम्बर १६८३ को पूज्यवर ने मेरी पुत्री अरुण एवं जामाता चि० सुरेश आर्य को उनके पाणिग्रहण संस्कार में सहारनपुर पधारकर स्वयं आशीर्वाद दिया था। उनको प्रत्यक्ष देखकर दर्शन करके अपने को धन्य समझा ही था साथ में मेरे परिवार के प्रत्येक सदस्य ने अनुभव किया था कि जैसे एक देवर्षि ने कृपाकर उस महोत्सव में पधारकर आशीर्वाद दिया हो। ऋषियों की वाणी, उनका आशीर्वाद कभी निष्फल नहीं होता। मेरा मानना है कि पूज्यवर दीक्षित जी जैसे सन्त सत्पुरूष ब्रह्मर्षि का आशीर्वाद मिल जाने से हमारी पीढ़ी दर पीढ़ी तर जाएगी। मैं अपने को कृत कृत्य मानता हूं। यह मेरा अहो भाग्य है कि आचार्य दीक्षित जी जैसे बुद्धत्व प्राप्त मनीषी मुझे समय समय पर अपने आशीर्वाद देते रहें। उनका पत्र मात्र प्राप्त करने से मैं सदैव ऐसा अनुभव करता रहा कि मैं उनसे साक्षात रूप से मिल रहा हूं। उनके पत्र मेरे लिए प्रेरणा शक्ति होती रही। वह तो मेरे लिए टॉनिक का काम करता था। मैने उन्हे लिखकर अनुरोध किया था कि भविष्य में भी मुझे इस टॉनिक को देने में कृपणता न करें।

सेवा निवृत्त शिक्षक संघ के संदर्भ में श्रद्धेय दीक्षित जी जो भी तथ्य बताते थे या पत्र में लिखते थे वे वस्तुतः ऐतिहासिक होने के साथ सत्य भी होते थे। उनको इस बात से गहरा दुःख होता था कि १६६५ में प्रदेश व्यापी कोई ऐसा संगठन दृष्टि में नहीं आ रहा है जो सेवा निवृत्त शिक्षकों के हितों का संरक्षण कर रहा हो। श्रद्धेय दीक्षित जी के अध्यक्षीय भाषणों से अधिकतर शिक्षक ऊर्जावान हो जाते थें।

श्रद्धेय दीक्षित जी को शत शत नमन।

मित्रेश वर्मा एम०ए०एल०टी०
पूर्व अध्यापक
सहारनपुर (उ०प्र०)

महान समाजसेवी पथ प्रदर्शक शिक्षाविद् आचार्य विद्यासागर दीक्षित जी को नमन!

श्रीमती मिनी स्वरूप गुप्ता



आचार्य जी की महानता, योग्यता कुशलता व प्रेम के विषय में मैं बचपन से अपने बाबाजी लाला हर प्रसाद जी व पिता जी श्री प्रियपाल जी से सुनती आई हूं। जब मेरे छोटे भाई पाल प्रवीण, पाल प्रशांत व पाल प्रमोद मवाना में पढ़ रहे थे तब वहां के वार्षिकोत्सव में मुझे आचार्य जी के दर्शन हुये थे।

आचार्य जी के कुशल नेतृत्व व मार्गदर्शन में आर्य समाज आर्य वानप्रस्थाश्रम हस्तिनापुर मेरठ के दो दिवसीय समारोह अक्टूबर १६६६ में मैं अपने पतिदेव डा. आर.एस. गुप्ता व छोटी बहिन मधुर भंडारी के साथ दिल्ली से गई थी। विभिन्न आर्य समाजों के प्रतिनिधि मेरठ, मवाना से बहुत सी वैदिक विदुषी महिलाएँ माता शकुन्तला गोयल जी के साथ समारोह में सम्मिलित हुई थीं। संन्यासी गण यथा स्वामी करमानंदजी श्री सियाराम सिंह जी तत्कालीन प्रधान उप प्रतिनिधि सभा मेरठ, लखनऊ से पधारे वैदिक विद्वान श्री देवीशंकर शास्त्री, भजनोपदेशक, आदर्श शिक्षक श्री द्वारिकाधीश तिवारी वैदिक प्रवक्ता वैदिक प्रेमी सज्जन पूज्य गुरुजी के पुराने शिष्य सहयोगी व प्रशंसक दो दिन समारोह में रहे। यह सब कुछ पूज्य आचार्य जी की टीम के अथक परिश्रम का सुफल था कि समारोह से सभी लाभान्वित हुये।

जनवरी २००३ में प्रकाशित 'आचार्य विद्यासागर अंक' में पूज्य आचार्य जी के न केवल शिष्यों, सहयोगियों ने उनकी योग्यता, स्नेह अपनत्व व समाजसेवा के विषय में अपने हृदयोद्गार प्रस्तुत किए थे, वरन् अन्य बुद्धिजीवियों, विद्वानों स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों, कवियों ने जो कुछ भी अपनी मनोभावनायें व्यक्त की थी वे सभी सराहनीय है।

मैं अपने हृदयोद्गार फ़रवरी मार्च ०३ में ही व्यक्त कर चुकी हूं। आर्य लोकवार्ता के प्रधान सम्पादक व उनकी टीम ने जो परिश्रम इस विशेषांक को इतना सुन्दर व ज्ञानवर्धक बनाने में किया था उसकी हम सभी मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हैं। प्रधान सम्पादक जी ने मन में कुछ ऐसी भावनायें जागृत की थीं कि बार बार मन कहता है काश! हम सभी आचार्य जी के समान बनने का प्रयत्न करें कम से कम उनके कुछ गुणों को तो अपनाएँ तभी हमारा जीवन सार्थक बन सकेगा। मैंने अनुरोध किया था कि आचार्य जी की प्रतिष्ठा में एक अन्य पुस्तिका बनाई जावे जिसमें उनके अमृत-वचनों का व उनके लिखे विभिन्न पत्रों का संकलन हो जिसे पढ़कर अन्य बहुत से छात्र, शिक्षकगण, बुद्धिजीवी वैदिक प्रेमी शिक्षा ग्रहण कर सकें व अपने जीवन को सफल बनाने का प्रयास करें।

मुझे यह ज्ञात कर प्रसन्नता हो रही है कि विद्यासागर फाउण्डेशन के तत्वावधान मे आचार्य श्री विशेषांक/स्मृति ग्रंथ प्रकाशित किया जा रहा है। मैं अपनी व अपने परिवार की ओर से शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूं।

डी.-७-७, बसंत बिहार,
नई दिल्ली



आचार्य विद्यासागर दीक्षित जन्म शताब्दी वर्ष समारोह की श्रृंखला में आर्य समाज तांत्या टोपे नगर, भोपाल में यज्ञ एवं पर्यावरण गोष्ठी, आर्य्य लोकवार्ता, विद्यासागर फाउण्डेशन एवं आर्य समाज, टी०टी० नगर द्वारा ५ जून २००७ को आयेजित की गई। अध्यक्षता कर रहे श्री दलवीर सिंह राघव प्रधान मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं संयोजक श्री पाल प्रवीण विचार बिन्दुओं को एवं पूज्य आचार्य जी के पर्यावरण सम्बन्धी अमृत वचनों को पढ़ते हुये।

आदर्श शिक्षा शास्त्री एवं आदर्श शिक्षक पं० विद्यासागर दीक्षित

श्रीमती कुमुद गुप्ता



आर्य श्रेष्ठ आचार्य विद्यासागर दीक्षित जी के साक्षात दर्शन का सौभाग्य तो मुझे नहीं प्राप्त हुआ है किन्तु इस निष्ठावान महापुरूष के विशाल व्यक्तित्व से एक निकटता का आभास मैने अपने बचपन से ही अनुभव किया है। इसका श्रेय मेरी माता जी व मेरी ननिहाल मवाना-मेरठ के कुछ कर्मठ प्रियजनों को रहा जिन्हेंने गुरुजी के आदर्शों से प्रेरित गुरुजी के प्रति अटूट श्रद्धा-भक्ति से परिपूर्ण लोक सेवा में रत जीवन व्यतीत किया। इस महान पुरुष के प्रति श्रद्धा से नतमस्तक होना स्वाभाविक है। इधर कुछ वर्षों से अपने प्रिय अनुज श्री पाल प्रवीण जो स्वयं गुरुभक्ति का एक ज्वलन्त उदाहरण है के सम्पर्क में गुरुजी के उत्कृष्ट चरित्र एवं महान कार्य कलापों का गुणगान श्रवण करने को मिला तो उनकी वन्दना की तीव्रता दृढ़ श्रद्धा के माध्यम से मन को स्पंदित कर गई। आर्य लोक वार्ता के जनवरी २००३ के विद्यासागर विशेषांक का अध्ययन एवं मनन करके तो लगा कि मनुष्य रूप में एक देवता-महामानव सम्मुख है। यद्यपि मेरी लेखनी वंदनीय गुरुजी के अनगिनत कार्य कलापों की सराहना के लिए पर्याप्त नहीं है फिर भी अपने उद्गारों के माध्यम से श्रद्धा भक्ति के सुमनों की माला श्रद्धेय दीक्षित जी के चरणों में अर्पित करती हूं। मुझे यह ज्ञात कर और भी अधिक हर्ष हो रहा है कि विद्यासागर फाउण्डेशन के तत्वावधान में श्रद्धेय दीक्षित जी के शताब्दी वर्ष में पुनः ४ वर्षों उपरांत आचार्य श्री विशेषांक/स्मृति ग्रंथ प्रकाशित किया जा रहा है। मुझे पूरा विश्वास है कि आचार्य जी की स्मृति संजोये रखने के अतिरिक्त आचार्य श्री विशेषांक में सम्मिलित अन्य नए लेखें, कविताओं, संस्मरणों को पढ़कर अनेकों पाठक, शिक्षकगण नई पीढ़ी के बच्चे, बुद्धिजीवी लाभान्वित होंगे व समाज को नई दिशा मिलेगी। मैं अपनी समस्त शुभकामनायें स्मृति ग्रंथ के लिये प्रेषित करती हूं व पूज्य आचार्य जी को शत शत नमन करती हूं।

बी.१/११४, सेक्टर-जी
अलीगंज, लखनऊ

परम पूज्य आचार्य विद्यासागर दीक्षित

वैदिक विद्वान्–आदर्श शिक्षक

श्रीमती प्रमोद कुमारी कटियार



मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि श्रद्धेय आचार्य विद्यासागर दीक्षितजी के सम्मान में आचार्य श्री विशेषांक विद्यासागर फाउण्डेशन द्वारा हो रहा है जो एक सराहनीय कार्य है।

मानव के आदर्श विचार एवं उत्तम कर्म ही समाज और राष्ट्र को नवीन दिशा देते है। प्रत्येक मानव का प्रत्येक दिन नया होता है अतः उसे जीवन में उत्तरोत्तर अपने विचार एवं उत्तम कार्यों द्वारा प्रत्येक दिन सफल बनाना चाहिये।

यद्यपि श्रद्धेय आचार्य जी के निकट सम्पर्क में आने का मुझे अवसर तो नहीं प्राप्त हुआ परन्तु आदरणीय पाल प्रवीण जी के माध्यम से आचार्य जी के विषय में पर्याप्त जानकारी गत् ८-९ वर्षों मे प्राप्त होती रही। इस विशेषांक के अध्ययन से अन्य बहुत सी विशेषताएं आचार्य जी के जीवन व उज्ज्वल चरित्र की ज्ञात हुई। श्रद्धेय दीक्षित जी एक स्वतंत्रता सेनानी, शास्त्रों के ज्ञाता, आदर्श शिक्षक, समर्पित समाज सेवी वे उद्धारक एवं महान व्यक्तित्व के धनी थे उनको मेरा शत शत प्रणाम।

मेरी धारणा है कि यह स्मृति ग्रंथ आचार्य जी के जीवन-दर्शन से समाज एवं देश को विशेषकर भावी पीढ़ी के लिए मार्ग प्रशस्त करने का कार्य करेगा।

एस.एस-३७, सेक्टर-डी.
अलीगंज, लखनऊ

सद्गुरु श्री दीक्षित जी

अभिषेक



परम पूज्य प्रातः स्मरणीय गुरुजी आचार्य श्री विद्यासागर दीक्षित जी की प्रतिष्ठा में जो आचार्य श्री विशेषांक लखनऊ में विद्यासागर फाउण्डेशन द्वारा तैयार किया जाना है उसकी पृष्ठभूमि अर्थात उसमें सम्मिलित अनेकों लेख संस्मरण जो विभिन्न स्थानों से पूज्य गुरु जी के शिष्यों प्रशंसकों ने मेरे पिताश्री पाल प्रवीण जी को भोपाल में भेजे हैं उन्हे पढ़ने व कम्प्यूटर पर टाइप कराने व फोटो स्टेट कराने का अवसर मुझे गत ३-४ माह में मिलता रहा। मैं बहुत अधिक प्रभावित हूं उस सामग्री को पढ़कर कि कितनी श्रद्धा व भक्ति से उन्हे लिखा गया। पूज्य गुरु जी की प्रतिष्ठा मे गत १२ वर्षों में लखनऊ व भोपाल में भी जो पुस्तकें 'अमृत वचन' प्रकाशित किए गए हैं वे सभी अनुपम है। पूज्य गुरुजी के विषय में मैं क्या लिखूं किस भाषा व शब्दों का चयन करूं मेरी सामर्थ्य के बाहर है। फिर भी अपने हृदयोद्गार उनके प्रति लिखना मैं अपना कर्त्तव्य समझाता हूं। मैंने पूज्य गुरु जी के दर्शन ३-४ बार मवाना मेरी जन्म भूमि व हस्तिनापुर में किए हैं। उनसे बातें करने व उनके प्रश्नों का उत्तर भी मैंने अपनी समझ अनुसार दिया जिससे पूज्य गुरु जी अत्यन्त सन्तुष्ट हुए थे। १९९८ में मैंने उनके प्रवचन दो बार मवाना में यज्ञों के उपरान्त सुने हैं जो सभी के लिए प्रेरणादायक व मार्गदर्शक थे। जितनी बार भी मैंने उनके दर्शन किये सदैव अपने को भाग्यशाली माना। मेरी पत्नी गीतांजलि भी गुरु जी के दर्शन का लाभ प्राप्त कर चुकी है हस्तिनापुर जाकर। एक बात तो बिल्कुल अटल है कि परम पूज्य गुरु जी निश्चित रूप से ऐसे चुंबकीय व्यक्तित्व के स्वामी थे कि उनके अनेको छांत्र-छात्राएं व प्रशंसक ६०-६५ वर्षों उपरान्त भी उन्हें भूले नहीं हैं उनके सम्पर्क में हैं व अपने हृदयोद्गार उनके महाप्रयाण के बाद भी अर्पित कर रहे है। ऐसे संत समान सद्गुरु आचार्य श्री दीक्षित जी को शत शत नमन।

बी.१८०, आकृति गार्डन
नेहरू नगर, भोपाल (म०प्र०)

हमारे पूज्य बाबा जी श्री विद्यासागर दीक्षित जी

विकास शर्मा



मैं ही नहीं मेरा पूरा परिवार भाई-बहिन आदरणीय बाबा जी श्री विद्यासागर दीक्षित जी से प्रारम्भ से ही बहुत अधिक प्रभावित रहे हैं क्योंकि उनका निवास हमारे निवास के बहुत ही समीप हैं। उनके प्रति मेरे दिल में श्रद्धा व आदर इसलिए भी अधिक रहा है क्योंकि वे मेरे बाबा जी आदरणीय श्री बसन्त सिंह भृङ्ग जी के परम मित्र व प्रशंसक रहे हैं। आदरणीय दीक्षित जी जब अपने घर से आर्यसमाज मन्दिर हस्तिनापुर रविवार को साप्ताहिक सत्संग में व हमारे घर पर जब जब कवि गोष्ठियां आयोजित हुई हैं उनमें आदरणीय बाबा जी श्री दीक्षित जी भी सम्मिलित होते थें वे सभी को बेहद प्यार करते थे एवं हम सभी को उनके आशीर्वाद सदैव प्राप्त होते रहे। उन्ही के द्वारा हमारे निवास हस्तिनापुर में कभी कभी यज्ञ भी करवाये गये। मुझे गत आठ-नौ वर्षों की यादे हैं जब वे अपने निवास पर हमारी दादी जी श्रीमती दीक्षित जी की सेवा करते हुये अपने अन्य सामाजिक कार्य समाज सेवा परोपकार व वेदों, रामायण आदि का स्वाध्याय नियमित रूप से करते थे। अक्टूबर १९९९ में उन्होंने आर्य समाज आर्य वानप्रस्थाश्रम के दो दिवसीय उत्सव समारोह का आयोजन करवाया था। दूर-दूर से वेद-प्रेमी सज्जन - महिलायें व वैदिक विद्वान एवं भजन - उपदेशक उक्त समारोह में सम्मलित हुए थे। मैंने भी उक्त सभी कार्यक्रमों में भाग लिया था। कुछ वर्ष पूर्व १९ जनवरी पूज्य बाबा जी के जन्म दिवस पर उन्होने हमारे अनुरोध पर हमारे निवास पर जल पान किया था। उसी अवसर पर उनके साथ हम सभी का ग्रुप फोटोग्राफ व अन्य चित्र लिये गये थे जिन को देखकर पूज्य बाबा जी की याद ताजा हो जाती है। २८ जून २००६ की प्रातः पूज्य बाबा जी का निधन हस्तिनापुर में हो गया था। मैं उन दिनों बाहर था। जब भी में हस्तिनापुर जाता हूं, पूज्य बाबा जी की कमी मुझे बहुत महसूस होती है।

मैं उन महामानव को शत शत नमन करता हूं।

विकास शर्मा

७८-७६, बी ब्लॉक, हस्तिनापुर (मेरठ)

मेरे गुरुदेव आचार्य विद्यासागर दीक्षित जी

लक्ष्मीदत्त जोशी



मैने आंख की कमजोरी से लिखना पढ़ना बन्द कर दिया है। इसलिए इस लेख/संस्मरण को अपनी पौत्री से लिखवा रहा हूं। पूज्य गुरुजी श्री दीक्षित जी जब महात्मा नारायण स्वामी विद्यालय की स्थापना हेतु रामगढ़ पधारे थे उस समय की स्थिति बेहद कठिन थी, न कोई यातायात सुविधा थी और न जनता आशावान् थी कि इस सुनसान स्थान पर कभी हाई स्कूल चल पावेगा। पूज्य गुरुदेव ने जिस कठिन परिश्रम व निष्ठा से इस स्कूल की नींव रखी उसी का परिणाम है कि वह स्कूल आज राजकीय इण्टर कालिज है। मैं इस नव स्थापित किए जाने वाले स्कूल के प्रथम बैंच का छात्र था। गुरू जी की कड़ी मेहनत व लगन के कारण ही उस प्रथम बैंच के अनेकों छात्र-विदेशों में अच्छी सेवाओं में पहुंचे। उस समय गुरुदेव ने कठिन परिस्थितियों में स्कूल की स्थापना का भार अपने कन्धों पर लिया। प्रारम्भ में आर्य समाज के एक कमरे से स्कूल शुरू हुआ। द्वितीय वर्ष से खुले खेतों में अखरोट के पेड़ो की छाया में बैठकर शिक्षा दी। स्कूल के भवन बनने तक प्रत्येक कक्षा के छात्रों को एक पीरियड स्कूल के भवन सम्बन्धी कार्यों में लगाना पड़ता था। इस स्कूल के तीन रास्ते भिन्न-भिन्न दिशाओं को जाते थे- एक नथुवाखन ग्राम को, दूसरा झूतिया ग्राम को तथा तीसरा बोहराकोट ग्राम को। गुरु जी सुबह शाम इन तीनों रास्तों से भ्रमण करते थे। वे अपने छात्रों को दूर ही से पहचान लेते थे। वे चाहते थे कि उनका कोई छात्र गलत कार्य न करे न आवारा हो। जब कभी किसी छात्र को धूम्रपान करते अथवा आवारा घूमते हुए देखते तो प्रार्थना के बाद इस प्रकार प्रवचन देते थे कि कोई उस छात्र को पहचान नहीं पाता था परन्तु वह छात्र स्वयं आभास कर गलती त्याग देता था। छात्रों का चरित्र निर्माण उनका सदैव लक्ष्य रहा।

ब्रिटिश शासन की उस अवधि में रामगढ़ से ८ मील की दूरी पर

भारतीय पशु अनुसंधान केन्द्र, मुक्तेश्वर में था। वहां अंग्रेजी अधिकारियों की पर्वतीय यात्रा के लिए घोड़े उपलब्ध होते थे। एक दिन की घटना का स्मरण है जब दो घोड़ों से अंग्रेज और उसकी मेम स्कूल के सामने से गुजर रहे थे उसी समय हम ३०-४० छात्रों की टोली स्कूल जा रही थी। सभी ने दौड़ लगा कर कुछ छात्रों ने चारो के टोपों को उछाल कर खेतों में डाल दिया और दौड़ते हुए स्कूल पहुंच गये। सभी प्रार्थना में सम्मिलित हो गयें फिर गुरु जी का प्रवचन होने लगा। चारों गोरे स्कूल में पहुंच गये और गुरु जी से बोले तुम्हारे छात्रों ने असभ्यता का परिचय दिया है। गुरु जी ने उत्तर दिया मेरे सभी छात्र अनुशासित हैं अगर आप पहचान सकें तो बताइये मैं उन्हें अभी स्कूल से निकाल देता हूं। वे छात्रों में घूमे लेकिन पहचान न सके, उनके जाने के बाद गुरु.जी ने छात्रों को समझाया कि कोई भी गलत कार्य न करें।

गुरु जी छात्रों से फूल भी लगवाते थे आंगन की दीवार बनवाते थे। इस कार्य हेतु बच्चों की टोलियां बनाते थे। विशिष्ट उत्तम और अच्छा कार्य करने वाली टोली को प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरुस्कार दिया जाता था ५ रूपये ३ रूपये और २ रूपये। जो छात्र अपनी पढ़ाई के साथ-साथ अपने परिवार के कार्य में भी सहायता प्रदान करता था उसे भी प्रोत्साहित करते थे। ऐसी थी उनकी बहुमुखी प्रतिभा, सूझ-बूझ। मैं उनका शिष्य होने का अपना सौभाग्य समझता हूं। वस्तुतः वे विद्या के सागर थे, भारत माता के सपूत थे जिनकी मधुर स्मृति उनके छात्रों में सदा बनी रहेगी। उन्हे रामगढ़ से अथाह प्रेम था।

मैं पूज्य गुरुदेव की पावन आत्मा की शान्ति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि ऐसे महान गुरुदेव बार-बार हमारे भारत की धरती पर प्रकट होते रहे।।

प्रधान गाम पंचायत
उमागढ़ रामगढ़, नैनीताल

गुरु पूर्णिमा पर
"लेखनी स्वयं चल पड़ी"

श्रीमती शोभा सिन्हा



मुझे आज लिखना ही पड़ेगा । इतना प्रभाव हृदय और मानस पटल पर छोड़ने वाले गुरु के सम्मान में लिखने को लेखनी स्वयं ही चल पड़ी। अपने शिष्यों और चाहने वालों को ज्ञान के साथ साथ आदर्श और अनुशासन सिखलाने वाले गुरु बिरले ही होते है। गुरु जी का स्मरण आते ही मन में कुछ ऐसी उमंग सी उठती है, हृदय में कुछ ऐसी स्फूर्ति सी आती है, मस्तिष्क में कुछ ऐसा भाव उत्पन्न होता है जिसका वर्णन करना मुश्किल है। माननीय गुरु जी के कार्य व सिद्धान्त उल्लेखनीय ही नही है वरन् लोगों ने उनको अपने जीवन में ढाला भी है। आकाश में जिस प्रकार षोड्श-कला से पूर्ण चन्द्रमा अपनी कोमल स्निग्ध किरणों से प्रकाशित होता है उसी प्रकार मानव चित्त में भी किसी उज्ज्वल, प्रसन्न ज्योंति पुंज का आविर्भाव होना भी स्वाभाविक है।

गुरु श्री विद्या सागर दीक्षित जी ऐसे ही सर्व गुण सम्पन्न स्निग्ध-ज्योति महामानव थे। सही कथन है "नवो नवो भवसि जायमान:" गुरु आप भी प्रतिक्षण चित्तभूमि में आविर्भूत हो रहे हो। किसी का दिल दुखाए बिना, किसी पर आघात किए बिना कुसंस्कारों को छिन्न करने की शक्ति रखने वाले, नई संजीवनी धारा से प्राणिमात्र को उल्लसित करने वाले गुरु 'सागर' जी आज भी अपनी निराली शोभा से ज्योतिष्मान है। आज उनकी याद आए बिना नहीं रह सकती। वह अपने सहानुभूति और हित-चिंता के शस्त्र से सभी के दिलों को जीत लेते थे। प्रेम ही उनका स्वभाव था, प्रेम ही उनका साधन था। वह स्वयं प्रेम रूप थे। सच्चे प्रेम की साधना उनके जीवन का परम लक्ष्य था। गुरु जी ने अपनी

प्रेम की अद्भुत, निरभिमानी शैली से लोगों के हृदय पर रचना कर डाली। ऐसी हृदय पटल पर हलचल मचा देने वाली वाणी धन्य है। ऐसी दिव्य-ज्योति को ईश्वर कभी-कभी ही मानव देह का आश्रय करके उतारते हैं जिसे गुरु को प्रेम करने वाले लोग ईश्वर की 'अनुकम्पा' कहते हैं।

मैने विद्यासागर फाउण्डेशन व आर्य्य लोक वार्ता द्वारा आयोजित **"आदर्श शिक्षक"** सम्मान समारोहों में भाग लिया है, पूज्य आचार्य श्री विद्या सागर दीक्षित जी की प्रतिष्ठा में प्रकाशित पुस्तिकाएं व विशेषांक गत ८-९ वर्षों में पढ़े है जिनसे मै अत्यधिक प्रभावित हुई हूं। स्नेहमयी कमलेश पाल व श्री पाल प्रवीण जी से गत १५-१८ वर्षों में पूज्य आचार्य जी के विषय में बराबंर चर्चा होती रही है।

ऐसे महान् गुरु की स्मृति में मैं ईश्वर से प्रार्थना, निवेदन करती हूं कि ऐसी नई उमंग, नये उल्लास से भरे क्रियाशील गुरु का पुनः जन्म हो और हम इस क्रम से अपने गुरु से बार -बार मिलते रहें। इन्हीं शब्दों के साथ गुरु की अमृतोपम वाणी को याद करते हुए 'सागर जी' को नमन करती हूं। मेरा यह प्रणाम मेरे गुरुजी को अंगीकार हो। गुरु जी के कार्यो का क्षेत्र इतना विशाल है कि शायद यह लेखनी स्वयं कभी थम न पाए।

सेवा निवृत्त प्रवक्ता
जनता कालिज, लखनऊ

गुरु पूर्णिमा
२००७
एम.एस.-८६
सैक्टर-डी०
अलीगंज, लखनऊ



SHASTRI HOSPITAL & NURSING HOME
Dr. R. Shastri
A.M.M.S. (B.H.U.) Gold Medalist
Surgeon & Physician

X-Ray
Mawana (Meerut)

आचार्य विद्यासागर दीक्षित एक अद्भुत व्यक्तित्व

आचार्य जी के समस्त जीवन पर दृष्टि डालने से कोई भी विचारशील व्यक्ति उन्हें विभिन्न गुणों का एक ऐसा समन्वय मानेगा जो सामान्यतः बहुत कम संभव होता है। उनकी स्वाभाविक प्रतिभा, अप्रतिम साहस, उच्च त्याग भावना, कैसी भी विकट परिस्थितियों में उच्च आदर्शों के हेतु संघर्षशील बने रहकर सफलता की ओर निरन्तर बढ़ते जाना और प्रत्येक समस्या में धैर्य, आशा और दृढ़ विश्वास के साथ उसका समाधान खोज निकालना आदि कुछ ऐसे विशेष गुण इनके व्यक्तित्व में ओत-प्रोत थे कि इन्हें हमने कभी भी और कहीं भी निराश होते नहीं देखा।

चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो या समाज सेवा का चाहे शिक्षक आन्दोलन हो या दुष्टता को चेतावनी देने का इन्हें कभी भी किसी ने पीछे हटते नहीं देखा। इन्हें लोग मानव रूप में हीरा कहते थे। वास्तव में ऐसे उदार, वीर, योग्यतम, व्यक्ति समाज में बिरले ही होते हैं। अपनी बीमारियों रुग्णावस्था में (२-३ वर्ष में कभी कभी) भी आचार्य जी कभी परेशान नहीं हुए व सदैव धैर्य धारण करते रहे।

आचार्य जी की दानशीलता हम कभी नहीं भूल सकते। मेरे साथ वे दूरस्थ आदर्श विद्यालयों में २००२ में गए व एक बड़ी धन राशि उस विद्यालय की प्रगति एवं विकास के लिए प्रबन्धक कमैटी को अर्पित की।

ऐसे महामानव शिक्षाशास्त्री को शत शत नमन।

डा० राजेश्वर शास्त्री
मवाना

सद्गुरु की महिमा

हरिनाथ वर्मा



गुरु की महिमा को आर्य समाज भी मानता है। महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने एक बार अपने प्रवचन में कहा था कि "गुरु के उपकार का चिन्ह मेरे कन्धे पर है"। स्वामी जी कहते हैं कि एक बार उनकी असावधानी के कारण गुरुवर विरजानन्द जी ने उन्हे अपने डण्डे से बहुत जोर से मार दिया था जिससे उनके कन्धे पर चोट लगी और रक्त स्राव भी हुआ। अच्छा होने के बाद चोट का निशान बन गया था जो उन्हें उनकी असावधानी की याद सदैव दिलाता रहा। स्वामी जी अपने मन में अपने गुरु के प्रति कोई दुर्भाव न रखकर उनके आदेशों का पालन व गुरु भक्ति में और अधिक ध्यान देने लगे। स्वामी जी जब तक विद्याभ्यास व अध्ययन आश्रम में गुरु कुटिया में रह कर करते रहे, उस सम्बन्ध में गुरूजी से कभी चर्चा नहीं की, वरन अन्त तक अपने गुरुजी की भक्ति करते रहे, अथाह ज्ञान, विद्या ग्रहण करते रहे। आज मैं एक ऐसे ही महान गुरु आदर्श शिक्षक, शिक्षाविद्, महर्षि स्वामी दयानंद 'सरस्वती' के अनन्य उपासक, आचार्य श्री विद्यासागर दीक्षित जी के जीवन और उनके रचनात्मक कार्यों का वर्णन करना चाहता हूं जिन्होंने अपने जीवन में इतनी अधिक संख्या में शिष्य तैयार किए जो आज एक आदर्श बनकर दूर-दूर स्थानों - शहरों विदेशों में किसी न किसी व्यवसाय से जुड़े हुए हैं किसी न किसी संस्था, विभाग में कार्यरत हैं अथवा सेवा-निवृत्त होने के बाद भी ६०-६५ वर्ष उपरान्त भी अपने सद्गुरु आचार्य श्री दीक्षित जी को नहीं भूले हैं वरन् उनके दर्शन करने कभी-कभी हस्तिनापुर (मेरठ) जाते थे। आचार्य जी ने विद्यालय से सेवानिवृत्ति के उपरान्त आर्य समाज आर्य वानप्रस्थाश्रम हस्तिनापुर की स्थापना की जिसके लिए उन्होंने अथक प्रयास किया, दूर-दूर शहरों ग्रामों में जाकर दान एकत्र किया व सुचारु रूप से आश्रम का संचालन किया। मुझे श्रद्धेय आचार्य जी के उक्त रचनात्मक कार्यों का ज्ञान गत ३-४ वर्ष से है क्योंकि मै आर्य्य लोकवार्ता लखनऊ का पाठक हूं व

जनवरी २००३ में प्रकाशित आचार्य विद्यासागर अंक को मैंने ध्यान पूर्वक पढ़ा है। जिस प्रकार एक बड़े वन में चन्दन का एक ही वृक्ष पूरे जंगल को सुगन्धित करता रहता है, इसी प्रकार श्रद्धेय दीक्षित जी अपने ज्ञान को बिखेर कर समाज के अनेक लोगों को सुगन्धित करते रहे हैं। उनके विषय में कुछ लिखना केवल सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। आचार्य श्री ने अनेकों पौधे रोपे हैं अर्थात उत्तम शिष्यों को तय्यार किया है जो वर्षों वर्षों तक फल देते रहेंगे व अपने गुरु जी का नाम अमर रखेंगे।

महान शिक्षा शास्त्री, वेद प्रेमी व 'गुरु शिष्य परम्परा' को जीवित रखने वाले पूज्य आचार्य जी को शत-शत प्रणाम।

५-३५४, नेहरू नगर
भोपाल (म०प्र०)

पूज्य "पिताजी" को श्रृद्धा सुमन

श्रीमती रेखा जैन

**"जननी जने तो भक्त जन या दाता या सूर
ना तो जननी बांझ रह व्यर्थ गंवावे नूर"**

अपनी मां सौभाग्यवती महको देवी (महादेवी) की कुक्षि को धन्य बनाते हुए एवं पिता श्री हरदेव सहाय का नाम अमर करने हेतु आदरणीय श्री विद्यासागर दीक्षित (जिनसे मेरा प्रथम परिचय "पिताजी" सम्बोधन से ही हुआ) सदियों तक याद किये जाते रहेंगे। आदरणीय पिताजी न केवल पक्के आर्य समाजी एवं वेदभक्त थे, वरन दानवीर और शूरवीर भी थे जिन्होंने स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में मां भारती को बंधन मुक्त करने हेतु अपनी वीरता का परिचय दिया। उन्होंने अपनी जन्मदात्री को ही धन्य नहीं किया वरन मां भारती के श्री मुख की मलिनता को दूर करने हेतु स्वाधीनता संग्राम में कूद जननी जन्म भूमि के गौरव में चार चांद लगाए। आदरणीय पिताजी के निकट सम्पर्क में मैं और मेरा परिवार १६७६ से निरंतर रहे। अच्छे और श्रेष्ठतम कार्यों के लिए सदैव ही हमें पिताजी का

मार्ग दर्शन एवं प्रेरणा मिलती रही एवं उनका वरद हस्त भी मेरे परिवार पर रहा।

मेरे पास शब्द नहीं है जिनके माध्यम से मैं पूज्य पिताजी के उपकारों को गिनाऊं। उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि तभी सार्थक होगी जब हम पूज्य पिताजी के दिखाए मार्ग पर चलें।

प्रधानाचार्या
राजकीय कन्या उ०मा० विद्यालय
बावली (बागपत) उ०प्र०

पूज्य पिता जी श्री दीक्षित जी जिन्हे मैं भूल नहीं सकता

डा0 नगेन्द्र जैन

आज से लगभग ४० वर्ष पूर्व की घटना जब मैं जनता इण्टर कॉलिज भोपा जिला मुजफ्फर नगर उ०प्र० में कक्षा आठ का छात्र था पुनः मुझे याद आ गई।

हमें बताया गया था कि हमारे विद्यालय में एक महान स्वतन्त्रता सेनानी, सदस्य विधान परिषद व माध्यमिक शिक्षक संघ के संस्थापक अध्यक्ष के चरण कमल विद्यालय को पवित्र करने आ रहे हैं। एक स्वतन्त्रता सेनानी हमारे ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय में आ रहे हैं सुनकर हम सभी में बड़ा उत्साह व उमंग पैदा हुई थी। सम्पूर्ण क्षेत्र में भी यह समाचार तेजी से फैल गया कि श्री विद्यासागर जी दीक्षित विद्यालय में पधार रहे हैं। मैं व मेरे सभी सहपाठी अपने अध्यापकों के दिशा निर्देशों के अनुरूप विद्यालय के मुख्य मार्ग के दोनों ओर फुलवाड़ी लगा रहे थे मार्ग को बड़ी लगन व परिश्रम से मखमल का रूप दिया जा रहा था। विद्यालय को सजाया जा रहा था। निश्चित दिन आदरणीय श्री विद्यासागर दीक्षित जी हमारे विद्यालय में पधारे। उनके दर्शनों के लिए इतनी भीड़ थी कि विद्यालय का मैदान छोटा पड़ गया था। प्रत्येक जन आदरणीय दीक्षित जी को निकट से देखना चाहता

था। उस दिन के सभी कार्यक्रम व मुख्य अतिथि दीक्षित जी का भाषण बहुत ही रोमांचकारी था। सभी उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे थे। उक्त घटना के उपरान्त वर्ष १९७९ में मेरी पत्नी रेखा जी का स्थानान्तरण राजकीय इण्टर कालिज हस्तिनापुर (मेरठ) में हो गया था। हम सभी उसी विद्यालय में कार्यरत श्रीमती शैला शर्मा जी के निकट वाले आवासीय घर में रहने लगे थे। शैला जी के पिता जी जिनको उनका विशेष नाती, नातिन पुन्नी व अन्य सभी पिताजी कहते थे मैने भी उन्हे अनायास पिताजी कह कर सम्बोधित किया व नमन किया। कई माह बाद मुझे उनके विषय में व नाम जानने की उत्सुक्ता हुई तभी मुझे पता चला कि पिताजी का नाम श्री विद्यासागर दीक्षित है। मुझे बचपन की अपने भोपा विद्यालय की उक्त घटना की याद तुरन्त आ गई व मैं भागते हुए पूज्य पिताजी के आवास पर गया उनके चरण स्पर्श कर उनका आशीर्वाद लिया व उन्हे अपने बचपन की उस घटना को सुनाया जब मैं उनके चरण छूना चाहता था किन्तु अपार जन समूह के कारण दूर से ही उन्हे नमन कर पाया था। उसके बाद तो हमारी पिताजी से और भी अधिक आत्मीयता हो गई। मैं जब कभी हस्तिनापुर जाता था उनके दर्शन अवश्य करता था। मेरी सदैव यह इच्छा रहती थी कि मैं उनके पास अधिक से अधिक समय व्यतीत करूं व अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करूं क्योंकि वे तो विद्या के सागर हैं। हमारे ऊपर उनकी छत्र छाया सदैव बनी रहे। हम तो यही प्रार्थना करते रहते थे किन्तु विधि के विधान को कौन टाल सकता है? पूज्य पिताजी को शत शत नमन।

१७८५, ब्रह्मपुरी
मेरठ (उ०प्र०)

गुरुदेव श्री विद्या सागर दीक्षित जी

रामदत्त पाण्डेय

श्री गुरु चरण सरोज रज निजमन मुकुर सुधार,
वर्णों गुरुवर विमल यश जो दायक फल चार,
बल, बुद्धि, विद्या देहु मोहि हरहु क्लेश विकार।

पूज्य पाद श्री श्री १००८ महात्मा नारायण स्वामी जी की प्रेरणा पर उनके नाम से एवं उन्हीं के आश्रम के निकट तल्ला रामगढ़, जिला-नैनीताल में वर्ष १९४०-४१ में स्कूल की स्थापना हुई थी। मुझे गुरुवर श्री विद्यासागर दीक्षित जी से शिक्षा ग्रहण करने एवं सेवारत अल्पकाल के लिए रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। हाईस्कूल की स्थापना, व्यवस्थापक मण्डल, गुरुजनों के सम्बन्ध में यादें एक लम्बे अन्तराल के बाद विस्मृति के गर्त में विलीन हो चुकी है जो स्वाभाविक है। गुरुवर के सम्बन्ध में जो कुछ स्मरण स्मृति पटल पर साधारण रूपेण अब भी अंकित है उनको निम्न खण्डों में विभाजित किया जा सकता है:-

१. गुरु जी का संक्षिप्त परिचय
२. व्यवस्थापक व शिक्षक मण्डल
३. शिक्षार्थियों का संक्षिप्त परिचय
४. गुरु जी की विचारधारा व उनकी शिक्षा का स्तर

गुरुजी अपने पारिवारिक सदस्यों, पत्नी, पुत्र जगदीश चन्द्र दीक्षित, पुत्री उषा के साथ प्रधानाचार्य के पद पर श्री नारायण स्वामी विद्यालय में पधारे थे। तब विद्यालय प्रारम्भिक स्तर पर था। न भवन था न आर्थिक स्थिति ही ठीक थी, शिक्षक वर्ग भी विशेष न था। प्रारम्भिक कक्षाएं आर्य समाज भवन में चलती थी।

व्यवस्थापक मण्डल में स्थानीय सज्जन मुख्यतः थे:-
श्री राजेन्द्र नाथ मट्टू जी - व्यवस्थापक श्री दीवान सिंह जी - मंत्री श्री बच्ची सिंह दरमबाल प्रधान श्री कमलापति जोशी, डा० किशन सिंह आदि प्रमुख सदस्य थे। श्री राजेन्द्र नाथ मुट्टू जी गुरु जी के कार्यकाल में व्यवस्थापक थे और एक कर्मठ कांग्रेसी थे। सेना में कैप्टन पद से त्यागपत्र

देकर विद्यालय के समीपवर्ती स्थान ग्राम झूतिया में आ बसे थे। त्यागपत्र देने का मुख्य कारण था कि अंग्रेजों के शासन काल में साफा (पगड़ी) उतारने से इन्कार कर दिया था। वह वैज्ञानिक विधि से मधु-मक्खी पालन व मधु उत्पादन के एक मात्र अधिष्ठाता एवं संस्थापक थे और अवैतनिक रूप से उच्चतम पदों पर आसीन रहे। दूसरी ओर गुरुजी भी कट्टर कांग्रेसी थे। उनका पहनावा भी मुख्यतया धोती, कुर्ता व जवाहर कट वास्कट था। वे कालाकोट व सफेद पैंट भी पहनते थे। व्यवस्थापक जी के सहयोग से गुरु जी ने विद्यालय में उच्चतम शिक्षकों को स्थान दिया। जिसमें मुख्यतः सर्वश्री ईश्वरीदत्त जोशी, राम उत्साह सिंह, डा० कपिलदेव शास्त्री, मधुसूदन शर्मा, सद्गुरु शरण श्रीवास्तव आदि थे। शिक्षार्थियों में विभिन्न कक्षाओं में अनेक छात्र ऐसे थे जिन्होने गुरुजी के संरक्षण में उच्चतर शिक्षा प्राप्त की और अपने जीवन काल में उच्च पदों पर आसीन रहते हुए कठिन परिश्रम, देशभक्ति, सच्चाई व ईमानदारी का परिचय दिया। श्री प्रताप सिंह (प्रताप भैया) जैसे व्यक्तियों ने गुरु जी से देशभक्ति की शिक्षा प्राप्त कर उत्तर प्रदेश में मंत्री पद को सुशोभित किया। मुझे अपने अन्य साथियों के साथ मान्यता प्राप्त विद्यालय में प्रथम बैच में सन १९४५ में हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अन्य कुछ साथी थे सर्व श्री लालमणि जोशी, नारायण सिंह बिष्ट, इन्द्र लाल साह, नारायण सिंह ढैला, धनन्जय कुमार, लक्ष्मण चन्द, सुश्री राधाभट्ट, वीर वाला, दुर्गादत्त जोशी, राजेन्द्र सिंह आदि। शिक्षा का स्तर केवल पाठय पुस्तकों तक ही सीमित नहीं था बल्कि दैहिक, दैविक, भौतिक सभी स्तर पर शिक्षा दी जाती थी। प्रतिदिन प्रातः कालीन प्रार्थना के बाद प्रवचन हुआ करते थे जिसमें शारीरिक, मानसिक, धार्मिक, राजनैतिक आदि सभी विषयों पर चर्चा की जाती थी। इसी प्रकार के नियम छात्रावास में भी थे। व्यक्तिगत तौर पर मुझे पांच वर्षों तक गुरुजी के आशीर्वाद का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैने कक्षा ४ तक की शिक्षा रामगढ़ में ही प्राप्त की। तत्पश्चात् मिडिल कक्षा तक भीमताल में शिक्षा प्राप्त करने के बाद आर्थिक एवं अन्य कठिनाइयों के कारण पिता जी ने घर पर ही रोक लिया। उस जमाने में रामगढ़ के लिए मोटर मार्ग नहीं था, भवाली से चार

मील की खड़ी चढ़ाई गागर तक तथा उसके बाद ४ मील का उतराई का मार्ग पैदल हीं तय करना पड़ता था। गागर में पिता जी दुकान किया करते थे। एक दिन वहां पर विश्राम करते हुए गुरु जी ने मुझे स्कूल न भेजने का प्रश्न किया तो पिता जी ने आर्थिक कठिनाई बताई क्योंकि मुझसे छोटा भाई उसी विद्यालय में पढ़ रहा था। गुरुजी द्वारा सहायता का आश्वासन देने पर मेरी शिक्षा पुनः प्रारम्भ हुई। विद्यालय में **"पुअर ब्वॉयज़ फ़ण्ड"** हुआ करता था और मेरी फीस आदि उसी फ़ण्ड से दी जाती थी। कई अवसरों पर गुरुजी ने अपने पास से पैसा देकर फ़ीस की पूर्ति की। इस तरह पुस्तकों की भी व्यवस्था होती रही और अन्ततः १९४५ में मैंने हाईस्कूल की परीक्षा पास की। इस अवधि के बीच १९४२ में स्वतंत्रता आन्दोलन जोरो पर चला हुआ था। एक दिन भवाली से मुक्तेश्वर जाते हुए आई०वी०आर०आई० के कुछ अंग्रेज़ घुड़सवारों पर स्कूल भवन के पास ही स्थित प्राइमरी पाठशाला से कुछ छात्रों ने पत्थर फेंक दिये। घुड़सवार अंग्रेज़ तो चले गये लेकिन बाद में एक दिन एक अंग्रेज़ अफसर सम्भवतः डी०आई०जी० तथा ५-६ संगीन याफता सिपाही विद्यालय गेट पर आ पहुंचे और गुरु जी को बुलाया। गुरु जी ने जाकर जो भी बातें की हों अंग्रेज को साथ लेकर सारी कक्षाओं का निरीक्षण करवाया। अंग्रेज़ अफसर प्रसन्न होकर छात्रों के लिए मिठाई हेतु कुछ धनराशि देकर वापिस चला गया। यह था गुरु जी के एक कट्टर कांग्रेसी व देश प्रेमी होने का एक उदाहरण। अन्य कुछ बातों की यादें मामूली तौर पर निम्नवत हैं:-

सप्ताह में एक दिन सभी छात्र स्कूल हॉल में शिक्षकों की उपस्थिति में वाद-विवाद प्रतियोगिता तथा किसी एक पूर्व प्रदत्त विषय पर व्याख्यान में सम्मिलित हुआ करते थे। इससे छात्रों का मनोबल बढ़ने के साथ ही ज्ञान वृद्धि भी होती थी। शारीरिक परिश्रम व स्वावलम्बन के लिए छात्रों का एक पीरियड निर्धारित होता था जिसमें छात्रों ने अपने खेलने के लिए मैदान तैयार किया था। दूसरा उदाहरण था भवन निर्माण के लिये आर्थिक कमी अथवा अन्य कारणों से नदी किनारे से भवन स्थल तक पत्थर ढुलान करना। इतना याद पड़ता है कि पत्थर उठाकर सीढ़ी चढ़कर भवन के ऊपरी

मंज़िल तक पहुंचाया जाता था।

आर्य समाज भवन में छात्रों के लिए स्थान की कमी होने से हम लोगों की कुछ कक्षायें खुले मैदान में नदी के किनारे खेतों में अखरोट-पाकड़ के पेड़ों के नीचे कुछ समय के लिए लगीं थीं। गुरु जी ने इसका नामकरण "टैगोर मेमोरियल स्कूल" रखा था। इससे गुरु जी की दूरदर्शी विचारधारा प्रकट होती है कि शान्ति निकेतन के अधिष्ठाता श्री रवीन्द्र नाथ टैगोर की मूल अभिलाषा पूर्ण हो। श्री टैगोर ने इस अभिलाषा से कुछ समय पूर्व रामगढ़ में निवास किया था। मुझे एक अवसर कुछ समय तक विद्यालय लिपिक पद पर गुरु जी की कृपा से कार्य करने का भी मिला। इस पद की कार्य प्रणाली का ज्ञान भी उनके द्वारा मुझे मिला। वह सत्यता व ईमानदारी के सर्वथा समर्थक रहे और यही शिक्षा उन्होने सदा अपने छात्रों को दी। उनके बताए हुए मार्ग पर चलते हुए मुझे १६५० से १६८६ तक राजकीय सेवा सफलता पूर्वक करने का अवसर प्राप्त हुआ।

गुरु जी के कार्यकाल की स्मरणीय बात यह भी उल्लेखनीय है कि तब विद्यालय में मध्यान्तर में सभी छात्रों को खाद्य पदार्थ वितरित किए जाते थे। कितनी दूरगामी विचारधारा थी। हमारी लोकप्रिय सरकार ने सभी बच्चों के लिए मध्यान्तर भोजन का प्रावधान स्वतंत्रता के ५० वर्षों के बाद किया है लेकिन गुरु जी ने इसको १६४० के दशक में प्रारम्भ कर दिया था।

गुरु जी ने उसी समय भ्रमण (excursion) कैम्प फायर वाद-विवाद प्रतियोगिता, नाटक आदि को भी प्रारम्भ किया। भ्रमण कार्यक्रमों में दो बार पद यात्रा में भाग लेने का शुभ अवसर मुझे भी प्राप्त हुआ। वह सदा उत्तम प्रवचन प्रार्थना के समय करते थे। एक बार उन्होंने कहा था कि हम लोग अधिकतर शीशे में अपना चेहरा देखकर अपने स्वास्थ्य का अन्दाज़ा लगाते हैं व चेहरे के रंग व अंगुलियों के नाखून से भी स्वास्थ्य विदित हो जाता है। इस कथन पर गहन विचार कर निष्कर्ष निकाला जा सकता है।

ईमानदारी, सच्चाई, परिश्रम आदि के गुरुजी प्रबल समर्थक थे। उस

ज़माने में कन्ट्रोल की दुकानों की शुरुवात हुई थी। विद्यालय स्टाफ़ आदि के लिए चीनी मिट्टी का तेल, आटा, चावल आदि का परमिट था जिस पर राशन की दुकान से सामान मिलता था। दुकानदार द्वारा निर्धारित क़ीमत से अधिक पैसा सामान का लिया जाता रहा और यह बात गुरुजी के ध्यान में आई तो दुकानदार को अधिक दण्डित न कराकर क्षमा तो कर दिया लेकिन बेइमानी से अधिक ली गई धनराशि वापस करा ली।

एकबार आर्य समाज के वार्षिकोत्सव में अथवा किसी अन्य आयोजन में व्यवस्थापक मण्डल में विद्यालय के अनेक छात्रों को उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य सौंपे। मेरे लघु भ्राता श्री अम्बादत्त पाण्डेय व उनके सहपाठी कौस्तुभानन्द तिवाड़ी को आगन्तुकों के स्वागत का भार सौंपा गया जो उन्होने सफलता पूर्वक निभाया। यह़ छात्रों के उत्साह वर्धन का एवं स्वावलम्बन का एक प्रमाण है।

इस तरह की छोटी मोटी बातें भले ही बहुत सारी होंगी लेकिन इतने लम्बे अन्तराल के बाद स्मरण कर पाना सम्भव नहीं है। जो कुछ ऊपर लिखा है वह विस्मृति से कुछ लौट आया है और वही लेखनी बद्ध करके परम पूज्य श्री विद्या सागर दीक्षित जी को शत शत नमन करता हूं।

रामदत्त पाण्डेय
नैनीताल

19.1.97



विद्यासागर सदन, हस्तिनापुर में आचार्य जी की जन्मवर्ष गांठ पर उन्हें सम्मानित करते हुये मवाना के पत्रकार

मेरे प्रेरणास्रोत आचार्य श्री विद्यासागर दीक्षित

सुरेश चन्द्र आर्य
सिद्धान्त शास्त्री



यजुर्वेद के ३६वें अध्याय के २४ वें मंत्र की सूक्ति 'जीवेम शरदः शतम्' को चरितार्थ करने वाले शतायु गुरुवर आचार्य श्रद्धेय श्री विद्यासागर जी दीक्षित का जीवन सामान्य जन मानस के लिए प्रेरणा स्रोत रहा है।

मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद यह शतपथ ब्राह्मण का वचन है। वास्तव में बच्चे के तीन गुरु होते हैं। माता व पिता के अतिरिक्त आचार्य तीसरा गुरु है। आचार्य अपने आचरण के द्वारा शिष्यों को संस्कारित करता है। दीक्षित जी ऐसे ही संस्कारवान आदर्श गुरु थे। आप स्वतंत्रता सेनानी थे। उ०प्र० माध्यमिक शिक्षक संघ का आपके द्वारा ही वर्ष १९५८ में गठन हुआ और आप इसके प्रान्तीय अध्यक्ष निर्वाचित हुए। ऐंग्लों संस्कृत हाई स्कूल, मवाना, मेरठ में आपका पदार्पण प्रधानाचार्य के पद पर वर्ष १९४६ में हुआ। उस समय मैं कक्षा ५ का विद्यार्थी था। आपके प्रयासों से यह संस्था दिनों दिन प्रगति करती हुई हाई स्कूल से इन्टर कालिज में परिवर्तित हो गई। आप प्रार्थना स्थल पर प्रतिदिन सभी छात्रों को ५-१० मिनट का बौद्धिक प्रवचन देते थे।

आचार्य जी ने अपने समय में कालिज में हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना कराई जिसके तत्वावधान में वाद-विवाद प्रतियोगिता, अन्त्याक्षरी, नाटक एवं अखिल भारतीय स्तर के कवि सम्मेलन प्रतिवर्ष आयोजित होते थे। आपके समय मे कालिज की वार्षिक पत्रिका अशोक का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। आप प्रतिवर्ष दीक्षान्त भाषण के लिए पूज्य स्वामी विद्यानन्द विदेह जी को विद्यालय में आमंत्रित करते थे। अनुपम लाभ सभी को प्राप्त होता था।

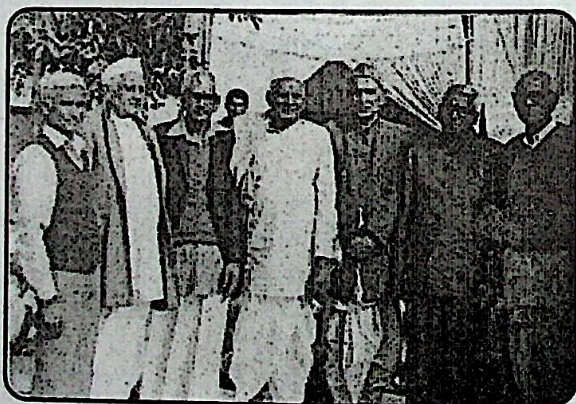
सन १९५० में मैं आर्य कुमार सभा, मवाना का मंत्री था और आचार्य जी को आर्य कुमार सभा, मवाना का प्रधान मनोनीत किया गया

था। आर्यसमाज मवाना के आप आर्य सभासद रहे। आप वेदों के मर्मज्ञ थे।

प्रधानाचार्य पद से सेवा निवृत्ति के उपरान्त हस्तिनापुर में आर्य समाज मन्दिर एवं वानप्रस्थ आश्रम की स्थापना आपके ही प्रयासों से सम्भव हो सकी। आर्य समाज हस्तिनापुर के अक्टूबर १६६६ के दो दिवसीय समारोहों में मैं भी सम्मिलित हुआ था। पूज्य गुरुजी ने अपनी टीम के सदस्यों व कार्यकारिणी के सदस्यों के सहयोग से बहुत सुन्दर आयोजन किए जिनसे हम सभी अत्यधिक प्रभावित हुए।

मैंने उनके सान्निध्य में रहकर बहुत कुछ सीखा है। मैं सदैव उनका ऋणी रहूंगा। वास्तव में आज के समय में ऐसे गुरु एवं आचार्य दुर्लभ ही है।

दयानन्द बाजार,
मवाना, (मेरठ)



श्री कौशल कुमार जी की बेटी पुष्पा के विवाहोत्सव पर मित्र एवं सम्बन्धी जन के साथ पूज्य आचार्य जी

पूज्य गुरुदेव

प्रताप सिंह

हमारे हजारों विद्यार्थियों के परम श्रद्धेय गुरु श्री विद्या सागर जी ने २८ जून २००६ को प्रातः काल जीवन का सौवाँ वर्ष पूरा करते-करते शरीर छोड़ा। मैंने हाई स्कूल उन्ही के दिशा निर्देश पर किया था, और मैंने नजदीक से देखा था कि वे जितने साफ़ सुथरे कपड़े पहनते थे, उतना ही उनका हृदय भी साफ़ था। वे विद्यार्थियों के लिए अन्दर से कोमल और बाहर से कठोर थे। उनके व्यक्तित्व का प्रभाव पूरे विद्यालय के शिक्षकों व विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों पर था। उनके नेतृत्व में वर्तमान नारायण स्वामी विद्यालय के निर्माण में गंधेरों से हमने पत्थर सारे थे, खुद एक पत्थर वे उठाते थे और बाकी छात्र व शिक्षक ले जाते थे। इसके अलावा वे जब विधान परिषद के सदस्य बने तो मैं विधान सभा का सदस्य था। वे मुझे बहुत प्यार करते थे, मुझे आज भी याद है कि वे सफ़ेद धोती, सफ़ेद कोट, सफ़ेद टोपी पहना करते थे। जैसे ही विधान सभा में दोपहर का विश्राम हो रहा था, तो सौ विधायक अन्दर ही थे मैंने साष्टांग प्रणाम किया तो लोगों ने कहा कि ये कौन हैं क्या ए०आई०सी०सी० के पदाधिकारी है फिर उन्होने कहा कि ये इन्दिरा गांधी से बड़े है तो मैंने कहा हां उन्होने कहा अब तो बताओ कौन है? हमने कहा हमारे जीवन के निर्माता गुरु जी हैं, तब सभी ने उनके व्यक्तित्व को प्रणाम किया। तीसरी सीख हमें -एक बार सभी शिक्षक पदमपुरी से आगे ले गये तो वहां सभी ने नाश्ता किया जब भुगतान करने की बात आयी तो स्थानीय शिक्षक स्वः मधुसूदन शर्मा जी ने पैसे निकाले परन्तु गुरुजी ने कहा कि यह बात सही है कि तुम्हारी जेब में अधिक ध न है, पर मैं प्रधानाचार्य हूं और तुमसे सीनियर हूं अतः भुगतान गुरुजी ने किया। इस बात को जीवन पर्यन्त आज भी मैं प्रयोग में लाता हूं। हमारे गुरु जी बोलचाल में पहनावे में और व्यवहार में भारतीय संस्कृति के महान् प्रवर्तक थे। हमने उनके साथ अपने जीवन के दो साल बिताये हैं वह हमारे लिए बहुत बड़ी निधि हैं उसको संजोने में उसकी एक बड़ी पुस्तक बन सकती है। उन्होने मुझे तभी आशीर्वाद दिया था कि "भविष्य में तुम एक

दिन मिनिस्टर अवश्य बनोगे" उनकी भविष्यवाणी सही निकली। ऐसे देव तुल्य गुरुजी का वर्णन करने में मैं अपना सौभाग्य समझ रहा हूं और उनका शिष्य होना एक गौरव की बात है। मुझे विश्वास है कि उनका यह स्मृति ग्रन्थ न केवल उनके छात्रों के लिए वरन् लाखों छात्रों, शिक्षकों के लिये एक महान प्रेरणा का ग्रन्थ होगा उन सबका मार्ग भी प्रशस्त करेगा।

सम्पूर्ण श्रद्धासुमन सहित

प्रताप सिंह (उर्फ प्रताप भैय्या)
पूर्व मन्त्री उ०प्र० सरकार
मेविला, नैनीताल, उत्तरांचल

आचार्य श्री विद्या सागर दीक्षित – अनुपम गुरु

राधाकान्त चतुर्वेदी



६५ वर्ष की आयु प्राप्त कर जब कभी मैं अतीत में झांकता हूं, विगत घटनाओं की झलकियां कुछ स्पष्ट तो कुछ धुंधली नज़र आती हैं। विश्लेषण करता हूं तो निष्कर्ष निकलता है कि छोटी छोटी घटनाओं का प्रभाव ही मनुष्य के व्यक्तित्व निर्माण का प्रमुख आधार बनता है। विद्यालय से महाविद्यालय तक जिन्होंने मुझे प्रशिक्षित किया उन लगभग सभी शिक्षकों की यादें अभी तक मेरे साथ हैं। जीवन की आपाधापी में कहां सें कहां आ गया परन्तु विगत अनेक वर्षों की यादें अभी भी शेष हैं। निश्चित रूप से मैं कह सकता हूं कि वे भाग्यशाली होते हैं जिन्हें श्रेष्ठ शिक्षक मिलते हैं। आचार्य श्री विद्यासागर दीक्षित भी एक ऐसे ही श्रेष्ठ शिक्षक थे। यद्यपि मैं उनके सम्पर्क में कभी नहीं रहा, तथापि लगभग ४ वर्षों से भाई श्री पाल प्रवीण एवं उनके परिवार के साथ उनके पड़ौसी के रूप में रहने का सुअवसर भोपाल में प्राप्त हुआ है। प्रवीण जी का मुझ पर बहुत स्नेह रहा है व उनसे मुझे श्रेष्ठ पुस्तकें, पत्रिकाएँ पढ़ने को मिलती रही हैं। उन्होंने अपने पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री दीक्षित जी की यादों को मेरे साथ बांटा है

तथा जनवरी २००३ में प्रकाशित "आचार्य विद्यासागर अंक" को मैने बहुत ही श्रद्धा के साथ पढ़ा है। मैं आश्वस्त हूं कि श्रद्धेय श्री विद्यासागर कोई मामूली हस्ती नहीं थे, वे एक महान शिक्षाविद आदर्श शिक्षाशास्त्री व कुशल प्रशासक थे जिन्हें उनके दशकों पूर्व के शिष्य व सहयोगी प्रशंसक आज भी नहीं भूले हैं। इतने वर्ष बीत जाने के बाद भी वे अपनी बचपन की घटनाओं को याद रखे हुए हैं। आचार्य जी का व्यक्तित्व इतना चुम्बकीय था कि उनका प्रभाव तनिक भी कम नहीं हुआ है। उनके शिष्य व सहयोगी उनको सदैव सम्मानित करते रहते हैं। ऐसे सद्‌गुरु को ही ध्यान में रखकर सम्भवतः कहा गया है कि:-

"गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूं पाय
बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो मिलाय"।

आचार्य श्री दीक्षित जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व हम सभी को यह अनूठा संदेश देता है कि:-

"अपने लिए जिए तो क्या जिए
तू जिए ऐ दिल जमाने के लिए"

ऐसे अद्‌भुत व्यक्तित्व के मालिक को मेरा हार्दिक नमन।

ईश्वर उनके व्यक्तित्व का लेश मात्र भी मुझे प्रदान करे तो इसे मैं अपना परम सौभाग्य मानूंगा।

श्रद्धांजलि के साथ

राधाकान्त चतुर्वेदी
सेवा निवृत्त प्राचार्य,
उच्च शिक्षा विभाग म०प्र० शासन

डी०-३८ आकृति गार्डन
नेहरू नगर, भोपाल (म०प्र०)

मेरे पूज्य गुरुजी श्री विद्यासागर दीक्षित

डा० इन्दुभूषण राजवंशी

परम पूज्य गुरुजी श्री विद्यासागर जी दीक्षित सर्वगुण सम्पन्न, शिक्षाविद्, परम स्नेही एवं उच्च चरित्र निर्माता हैं। अनेकों में से स्थानाभाव होते हुए भी उनके कुछ गुणों को उद्धृत करना अत्यावश्यक है। यथाः- प्रार्थना स्थल पर छात्रों से अपने माता-पिता एवं अन्य पूज्य जनों के नाम से पूर्व आदर सूचक शब्द न लगाने पर, पूर्ण विद्यालय के सम्मुख उसे दण्डित करना, उच्च शिक्षा में रुचि व स्पर्धा के प्रति सार्वजनिक रूप से ही क्रिया के रूप पूछना आदि तथा विद्यालय के अनुशासन व शिक्षा संचालन हेतु कक्षा में जाकर दृष्टि गोचर करना अपना कर्तव्य समझते थे। आपके प्रगाढ़ स्नेह की कृपा तो मेरे साथ भी घटी, यद्यपि मैं ऐंग्लों संस्कृत इण्टर कॉलिज मवाना में केवल प्रारम्भिक कक्षाओं ६,७,८ में ही पढ़ा। उत्तम स्थान प्राप्त करने पर उनके कर-कमलों द्वारा पुरस्कृत होना भी सौभाग्य रहा। गुरुजी एम.एल.सी. बनने पर मेरे एम.बी.बी.एस. अध्ययन काल में अक्सर लखनऊ होस्टल में आकर मुझे आशीर्वाद प्रदान करते रहे। ऐसे महान पुरुष को देखते ही नतमस्तक व चरण स्पर्श हेतु मन लालायित हो उठता है। एक अन्य उदाहरण उनकी अपने शिष्यों को उत्साहित करने की प्रवृत्ति का। कॉलिज के छात्र श्री अशोक कुमार सुपुत्र स्व० श्री पीताम्बर दास जो Air Commodore Air Force से Retd. है के Pilot के लिये चयनित होने पर पूरे विद्यालय परिवार के सम्मुख उन्हे सम्मानित कियां तथा उसी दिन पत्रिका का नाम उन्हीं के नाम पर अशोक रखने की घोषणा की व उनका विशाल चित्र विद्यालय में प्रदर्शित किया गया।

परम पूज्य गुरुजी श्री दीक्षित जी ने अपना समस्त जीवन छात्रों विद्यालय की उन्नति प्रगति व समाज सेवा में लगाया जो हम सबके लिए एक उदाहरण एवं आदर्श है। ऐसे महान व्यक्ति समाज सुधारक को मैं शत शत नमन करता हूं।

नन्द भवन, रामबाग
मवाना (मिरठ)

"सद्गुरु वेदों के ज्ञाता, वेदमार्ग का अनुसरण करने वाले वंदनीय आचार्य विद्यासागर दीक्षित"

पन्ना लाल तिवारी



मैं शिक्षण कार्य से सदैव जुड़ा रहा हूं और डी.ए.वी. कॉलेज लखनऊ से सेवा निवृत्त होने के उपरान्त अपने परिवार के साथ अलीगंज में निवास कर रहा हूं।

१९८२ से ही मैं श्रीपाल प्रवीण से परिचित रहा हूं। बैंक की सेवानिवृत्ति के उपरांत श्री पाल प्रवीण ने लखनऊ में ही दिसम्बर १९९५ में एक पुस्तिका "मेरे पूज्य गुरु जी श्री विद्यासागर दीक्षित" तैयार की थी जिसकी १५० प्रतियां प्रकाशित हुई थीं। उस पुस्तक में श्री प्रवीण जी ने अपने अन्य सभी गुरुजनों, आदर्श शिक्षकों की जानकारी भी दी थी। उन्होंने यह अनुरोध सभी पाठकों, मित्रों शिक्षकों से किया था कि वे अपने-अपने आदर्श शिक्षकों, गुरुजनों की जानकारी उपलब्ध करावें, जो आज भी अपनी वृद्धावस्था, ७५-८०-९० वर्ष की आयु होने पर भी अपने शिष्यों का मार्गदर्शन कर रहे हों, सामाजिक कार्यों में अपना समय देते हों व शिष्यों को समाज सेवा हेतु प्रेरित करते हों। दस वर्षों के उपरांत भी व बहुत खोजबीन करने पर भी कोई भी अपने आदर्श गुरु का नाम नहीं बता पाए है। परम श्रद्धेय श्री विद्यासागर दीक्षित जी १९३०-३२ से आज तक एक आदर्श गुरु, आदर्श शिक्षक के रूप में जाने जाते है।

आर्य्य लोक वार्ता के "आचार्य विद्यासागर अंक" जनवरी २००३ को पढ़कर मैने अपने हृदयोद्गार प्रस्तुत किये थे जिन्हें मैं पुनः उद्धृत कर रहा हूं। मेरा यह मत है कि व्यक्ति विशेष में जिन-जिन गुणों का अधिक से अधिक जितना समावेश हो सकता है वह सभी पूज्य आचार्य दीक्षित में ओतप्रोत है।

आचार्य विद्यासागर दीक्षितजी उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ के

संस्थापक अध्यक्ष रहे हैं व शिक्षक हितों के लिए वे त्याग, तप व परिश्रम करते रहे हैं। उनके चुंबकीय व्यक्तित्व उनकी योग्यता, कार्यकुशलता, निःस्वार्थ सेवाभाव से सभी शिक्षकगण ही नहीं, वरन मंत्री उच्च अधिकारी उपकुल पति, बड़े बड़े नेता व छात्र सदैव प्रभावित होते थे। परन्तु आचार्य जी के मन में कुछ टीस अंतिम दिनों तक थी कि वे बहुत से कार्य व सुधार नहीं पूरा कर पाए। यह भावना उन्होंने सच्चे हृदय से व्यक्त की थी जब दिसम्बर २००२ में उनसे एक साक्षात्कार डां० रमेश चन्द, निवासी-हस्तिनापुर ने लिया था प्रश्न था कि आप अगले जन्म में क्या बनना चाहेंगे? आचार्य जी ने तुरन्त उत्तर दिया था अगले जन्म में मैं पुनः शिक्षक बनना चाहूंगा। धन्य है पूज्यवर कि उन्हे शिक्षण कार्य कितना अधिक पसंद था।

मुझे यह ज्ञात कर अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है कि ४ वर्षो के उपरान्त पुनः आरणीय पं. विद्यासागर दीक्षित जी की स्मृति में "आचार्य श्री विशेषांक" प्रकाशित किया जा रहा है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आचार्य जी के शताब्दी वर्ष में विभिन्न स्थानों-शहरों में पर्यावरण गोष्ठी, वृक्षारोपण, आदर्श शिक्षक सम्मान, मेधावी निर्धन छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहन पुरुस्कार योग-प्राणायाम शिविर आदि आयोजित किए जा रहे है।

मैं सभी उत्तम कार्यो एवं स्मृति-ग्रंथ के प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

पन्नालाल तिवारी
सेवानिवृत्त अध्यापक
डी.ए.वी. इण्टर
लखनऊ

एम.एस.४६, सेक्टर डी.
अलीगंज, लखनऊ

आदर्श प्रधानाचार्य दीक्षित जी

मैं अपने को बहुत भाग्यशाली मानता हूं कि मैने अपनी बाल्यावस्था में शिक्षा उस आदर्श विद्यालय में प्राप्त की जिसके प्रधानाचार्य श्री विद्यासागर दीक्षित जी रहे। हमारी मातृ संस्था ए.एस. इण्टर कालेज, मवाना की ख्याति मेरठ में ही नही वरन पूरे उत्तर प्रदेश में थी। आचार्य श्री विद्यासागर दीक्षित जी ने १९४८ मे प्रधानाचार्य का चार्ज लिया। अनुभवी हैडमास्टर श्री दीक्षित जी ने विद्यालय की चतुर्दिक प्रगति की ओर प्रारम्भ से ही ध्यान रखा। नई नई योजनाएं, फार्म निर्माण एवं पुवर ब्याज फंड आदि का क्रियान्वयन उन्होंने करवाया। पक्षपात व जाति पाति भेदभाव पूज्य आचार्य जी न स्वयं किसी से करते थे और अन्यों को भी नहीं करने देते थे। उनके आशीर्वादों व प्रेरणा से न जाने कितने अध्यापकों व छात्रों का जीवन ही बदल गया।

मैं बार बार उन्हे नमन करता हूं।

तुफैल अहमद
मेरठ

पूज्य आचार्य जी

दीपक मिल्टन



परम प्रभु के आशीर्वाद से काकोरी काण्ड के संदर्भ में आजादी के दीवाने नाम का एक कैसे अपने मित्रों सर्व श्री महेन्द्र, डी.पी. गोस्वामी, अनिल, शर्मा, डा. ज्ञान, सुशील दुबलिश व कुछ अन्य मित्रों के सहयोग से तैयार किया था। उक्त कैसेट मे शहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला खां, के परम प्रिय गीतों सरफरोशी की तमन्ना कुछ आरजू नहीं है सुनायें गम की किसे हानी मिट गया जब मिटने वाला के अतिरिक्त कुछ अन्य गीतों यथा हम बालकों की ओर भी व विशेष स्वामी दयानन्द भारत में का समावेश किया गया है स्वर वन्दना बाजपेई व सत्य अधिकारी के हैं।

उक्त कैसेट की एक प्रति मैने अपनी सम्पूर्ण श्रद्धा के साथ महान शिक्षाविद स्वतंत्रता सेनानी आचार्य श्री विद्यासागर दीक्षित जी को भेंट की। कुछ दिनों बाद एक दिन प्रातः काल आचार्य जी मुझसे मिलने मेरे घर आये। मैने उनके चरण स्पर्श किये और कहा, गुरुजी आपने क्यों कष्ट किया मुझे आदेश किया होता मैं स्वयं उपस्थित हो जाता। पूज्य गुरुजी के शब्द आज भी मेरे कानों में गूंज रहे हैं बेटा तुमने अपने मित्रों के सहयोग सेजो अनुपम कैसेट बनाया है और जो तुमने कुछ दिन पूर्व भेंट किया था उसकी दोनों साइड के गीत मैने अपने टेपरिकार्डर पर सुने। मै झूम उठा। आजादी के दीवानों के मशहूर गीत सुनकर मुझे अपनी युवा अवस्था के वे दिन याद आ गये जब प्रभात फेरियों में मैं भी इन गीतों को गाता फिरता था गलियों में गांवों में। बेटा तुमने तो कमाल ही कर दिया विशेषकर स्वामी दयानन्द भारत में गीत का समावेश करके आशीर्वाद मैं तुम्हें अपने घर बुलाकर भी दे सकता था किन्तु वह इतना फलीभूत नहीं होता जितना तुम्हारे घर परआने पर अब दूंगा। पूज्य आचार्य जी के शब्द व उनकी दिव्य मूर्ति मैं कैसे भूल सकता हूं।

दीपक मिल्टन
हस्तिनापुर, मरेठ



श्री कौशल कुमार जी द्वारा आयोजित वीर भगत सिंह काव्य परिचर्चा में पूज्य आचार्य ज़ी अपने विचार रखते हुये, पीछे बैठे हुये डा० धन प्रकाश मिश्र, हिन्दी विभागाध्यक्ष, एन०ए०एस० पी०जी० कालेज, मेरठ, डा० शत्रुघन हिन्दी विभागाध्यक्ष, किसानी पी०जी० कालेज, नालन्दा, खड़े हुये सुकवि पद्म सिंह पदम्

"महामानव का महाप्रयाण देवता बना मनुष्य है यही प्रमाण"

कर्नल पाल प्रमोद

मैं अपने हृदयोद्गार परम पूज्य गुरुजी आचार्य श्री दीक्षित जी की प्रतिष्ठा में गतवर्षो में कई बार प्रस्तुत कर चुका हूं जो पूर्व में विद्या वीथिका पुस्तिका में व आर्यलोक वार्ता, लखनऊ द्वारा प्रकाशित जनवरी २००३ "आचार्य विद्यासागर अंक" में सम्मिलित हो चुके है।

परम पूज्य प्रातः स्मरणीय गुरु जी आचार्य शिरोमणि श्री विद्यासागर दीक्षित जी के स्वास्थ्य के विषय में उनके सभी शिष्यगण, सहयोगी शिक्षकगण, सम्बन्धी व हितैषी समय-समय पर जानकारी प्राप्त करते रहते थे व मिलते भी रहते थे। १९ जनवरी २००६ को ९९वां वर्ष पूर्ण कर १००वें वर्ष में प्रवेश किया था। भगवान की कृपा से वे अपने मनोबल व योग साधना के द्वारा अंत समय तक अपना मानसिक संतुलन बनाए रहे व किसी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता उन्हें नहीं हुई। हम सभी भाई अपने परिवार जनों के साथ मई के अंतिम सप्ताह व जून ०६ के प्रथम सप्ताह में हस्तिनापुर जाते रहे व मैं पुनः ९ जून ०६ को गुरुजी के दर्शन करने हस्तिनापुर गया। उनके ७७ वर्षीय सुपुत्र श्री जगदीश भाई साहिब व मैं सभी आश्वस्त थे कि हम पूज्य गुरुजी का शताब्दी वर्ष उनके जीवन काल में ही एक अनूठे प्रकार से मनाएंगे-कुछ ठोस रचनात्मक कार्यक्रम-समारोह आयोजित करेंगे जिसकी रूप रेखा पूज्य गुरुजी के बहुत से शिष्य व प्रशंसक अभी से बना रहे है। हम आदरणीय श्री जगदीश भाई साहब से जून ०६ में दूरभाष पर पूज्य गुरुजी के स्वास्थ्य के विषय में पूछते रहे। अचानक २८ जून की प्रातः सूचना मिली कि पूज्य गुरुजी का देहावसान कुछ क्षण पहले हो गया। मैंने तुरन्त यह सूचना दूरभाष पर अपने अग्रज श्री पाल प्रवीण जी को भोपाल में दी। मैंने २८

जून को प्रातः ही मेरठ से हस्तिनापुर जाकर पूज्य गुरुजी की अन्त्येष्टि में भाग लिया व उसी शाम भाई साहब को वहां के सभी समाचारों-पूज्य गुरुजी को सरकारी तन्त्र द्वारा राष्ट्रिय सम्मान दिया जाना, राष्ट्रिय ध्वज की व्यवस्था उत्तर प्रदेश के राज्य स्तरीय मंत्री विधायक श्री प्रभुदयाल बाल्मीकि तहसील स्तर के सभी सरकारी अधिकारियों, मेरठ पुलिस द्वारा गार्ड ऑफ आनर, शिक्षक संघो के प्रतिनिधियों, नागरिकों द्वारा वैदिक मंत्रों के साथ पूज्य गुरु जी को अंतिम विदाई दी से अवगत कराया-समस्त समाचार सुनकर उन्होने सन्तोष प्रकट किया। वे ३० जून ०६ की प्रातः भोपाल से हस्तिनापुर पहुंच गए व १२ जुलाई ०६ तक आदरणीय श्री जगदीश भाई साहब के पास रहे। दूर-दूरसे शिक्षकगण, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, शिष्य, शिक्षण संस्थाओं की प्रबंधक कमेटी के पदाधिकारी, सम्बन्धी अपनी श्रद्धांजलि देने हेतु हस्तिनापुर प्रतिदिन पहुंचते रहे। पूज्य गुरुजी के सम्मान में उनकी प्रतिष्ठा, गुणों का गुणगान विभिन्न संस्थाओं, शिक्षक संघों ने अपने पत्रों व प्रस्तावों द्वारा किया जो हमारे पास है। मवाना में 'विद्यासागर फाउण्डेशन' व शिक्षकों के संघों द्वारा दिनांक ६ जुलाई को एक श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। हस्तिनापुर में गुरुजी केनिवास पर ही शांति यज्ञ १० जुलाई की प्रातः श्री वेदपाल शास्त्री जी के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। उसी अपराहन ३ बजे वहीं एक विशाल श्रद्धांजलि सभा आयोजित हुई। शांतियज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा में भाग लेने वालों में प्रमुख थे स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी आदर्श शिक्षक वेद प्रेमी वयोवृद्ध श्री कान्ती प्रसाद भटनागर, डा० आर० शास्त्री, अध्यक्ष विद्यासागर फाउण्डेशन, बिग्रेडियर आर० के० गुप्ता (मेरठ) श्री जगदीश सिंह चौहान (दिल्ली) श्री कृष्ण कुमार नागर (मेरठ) कर्नल पाल प्रमोद, श्रीमती प्रतिभा पाल श्री वी०के० शर्मा (न्यू ब्लूम) श्री जय प्रकाश पाण्डेय वरिष्ठ पत्रकार (मवाना) श्री मगन फोटो वाले,

श्रीमती मिल्टन, विख्यात स्वतन्त्रता सेनानी व आदर्श कृषक महाकवि, ग्रन्थकार श्री बसन्त सिंह 'भृंङ्ग' जी श्री सुरेश दीक्षित (देहरादून) श्री कान्ती प्रसाद गुप्ता जी, श्री भानुप्रताप सिंह (मवाना) बाल भारती, मवाना के निदेशक संचालक श्री अभयवीर गर्ग, आर्य कन्या इण्टर कालेज, मवाना की श्रीमती पाल प्रमिला, श्रीमती अरुषि मित्तल, श्री सुशील कामिल (मवाना) महर्षि दयानन्द विद्यालय, हस्तिनापुर के प्राचार्य श्री भोपाल सिंह बंसला, डॉ० सुखवीर सिंह, प्रधान आर्य समाज हस्तिनापुर, श्रीमती शांति देवी, पूर्व ब्लाक प्रमुख श्री हाकिमराय जी श्री सच्चे सिंह, श्री किशनलाल जी, श्री हेमन्त कुमार दुबलिश एडवोकेट, श्रीमती प्रेमलता दुबलिश, डा० रमेश चन्द्र, श्री गुरूचरणदास गर्ग, श्री अरण्य कुमार, श्री पवन कुमार शर्मा, आर्य वानप्रस्थाश्रम हस्तिनापुर में निवास कररहे साधक, आर्य समाज हस्तिनापुर से संबंधित सभी महिलायें, सज्जन पदाधिकारीगण, विभिन्न बैंको व सरकारी कार्यालयों में कार्यरत सज्जन, विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के प्रतिनिधि, गुरुद्वारा हस्तिनापुर के ग्रंथी प्रतिनिधि व विभिन्न शिक्षक संघो मेरठ, लखनऊ मवाना, सहारनपुर से पधारे प्रतिनिधिगण। श्रद्धांजलि सभा की अध्यक्षता की पूज्य गुरुजी के पुराने शिष्य व पूर्व सांसद ठा० अमर पाल सिंह जी ने। श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों व वक्ताओ में उल्लेखनीय थे श्री हाकिम राय जी श्री सुरेश चन्द्र आर्य वैदिक विद्वान, मवाना, श्रीमती मधु गुप्ता, पूर्व प्राचार्या जी जी० आई०सी० हस्तिनापुर डा० नागेन्द्र जैन मेरठ, श्री विनोद कुमार गोयल मेरठ, श्री नगेन्द्र सिंह आर्य श्री बी०के० शर्मा, प्राचार्य श्री केहर सिंह जी, मवाना, के पूर्व अध्यक्ष नगरपालिका डा० नरेश चन्द्रा, कृषक नेता श्री ऊधम सिंह गुढ़ा।

सभा का संचालन श्री पाल प्रवीण ने किया जो बीच-बीच में पूज्य गुरु देव के अमृत-प्रेरक विचारों व उनके द्वारा गत १-२

वर्षों में लिखवाए गये पत्रों के अंशो को पढ़कर सुनाते रहे। हस्तिनापुर के वरिष्ठ नागरिक एवं आदर्श शिक्षक आदरणीय श्री इत्रपाल ढाका जी ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि "पूज्य दीक्षित जी मानव नहीं थे वे महामानव थे सफल जीवन जीने का उदाहरण उन्होने समस्त मानवता को दिया।" श्री ढाका जी ने पूज्य आचार्य जी के सुपुत्र श्री जगदीश चन्द्र दीक्षित जी की सराहना की कि किस प्रकार स्वयं वयोवृद्ध होते हुए भी उन्होने अपने माता-पिता की श्रद्धापूर्वक सेवा की व माता जी के देहान्त के बाद गत ७ वर्षों से श्रवण कुमार की भांति पिता श्री की सेवा की। उन्होंने यह दिखा दिया कि किस प्रकार मातृ ऋण, पितृऋण, गुरुऋण से उऋण हुआ जा सकता है।

श्री पाल प्रवीण ने पूज्य आचार्य जी द्वारा लिखवाया हुआ दिनांक १०.०३.२००६ का अंतिम संदेश पढ़कर सुनाया विशेष कर वह अंश जिसमें उन्होने आर्य समाज आर्य वानप्रस्थाश्रम हस्तिनापुर की वर्तमान प्रबंधक कमेटी ही नहीं वरन उनकी पूरी टीम की प्रशंसा की जो उनकी इच्छाओं व मार्गदर्शन के अनुरूप ही कार्य कर रही है। श्री पाल प्रवीण ने सभी को सूचित किया कि किस प्रकार आर्य समाज के वर्तमान प्रधान डॉ० सुखवीर सिंह जी ने व श्री राधे श्याम यादव ने पूज्य गुरु जी की २७ जून की रात्रि व २८ जून २००६ को प्रातः ही उनके निवास पर जाकर सेवा की। श्री पाल प्रवीण ने महर्षि स्वामी दयानन्द 'सरस्वती' जी के जीवन के अंतिम क्षणों का संदर्भ देते हुए बताया कि पूज्य गुरुजी भी अंतिम क्षणों में यह बोले थे "जगदीश तुम्हारी इच्छा पूरी हो"।

सभा के अध्यक्ष ठा० अमरपाल सिंह ने बहुत ही मार्मिक शब्दों से पूज्य आचार्य जी को श्रृद्धांजलि दी व बताया कि समय-समय पर श्रद्धेय गुरु जी उन्हे विधान सभा व संसद के नियमों आदि के विषय में गुरुमंत्र व आशीर्वाद दिया करते थे।

उन्होने कुछ पुराने संस्मरण भी सुनाए व पूज्य गुरुजी को एक सच्चा राष्ट्रभक्त व आदर्श शिक्षक, शिक्षाविद बताया। साथ ही उन्होने यह भी अनुरोध किया कि पूज्य आचार्य जी को सच्ची श्रद्धांजलि यह होगी कि पूज्य गुरुजी के जीवन से हम कुछ शिक्षा ग्रहण करें व उनके द्वारा दर्शाए सिद्धान्तों पर चलें।

अंत में कविवर श्री कौशल कुमार जी बहज़ादका निवासी ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए सभी आगन्तुकों, अतिथियों, बुद्धिजीवियों पूज्य गुरुजी के पुराने शिष्यों सहयोगियों, हस्तिनापुर निवासियों ग्रामवासियों को धन्यवाद दिया साथ ही साथ अपने पुराने (पूज्य गुरुजी से जुड़े हुए) संस्मरण सुनाए।

कर्नल पाल प्रमोद
सेवा निवृत्त
७४, ग्रेटर गंगा, गंगानगर
मेरठ (उ०प्र०)
मो० ९४१२७८२३८९

प्रधान आर्य समाज
गंगानगर, मेरठ

महाप्रयाण का चित्र



२८ जून २००६ की प्रातः आचार्य जी का पार्थिव शरीर राष्ट्रीय ध्वज में बैठे हुये हैं श्री जगदीश चन्द्र दीक्षित श्रीमती ऊषा शर्मा, श्रीमती शैला शर्मा अन्य परिवार जन शिक्षक एवं राजकीय अधिकारी आदि

गुरु शिष्य परम्परा का अनूठा उदाहरण

भारतीय स्वतंत्रता के मूर्धन्य नेता, प्राच्य-पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृतियों के मर्मज्ञ तथा वाराणसी के सामाजिक जीवन में लब्ध प्रतिष्ठ एवं समाज शास्त्र के अध्यापक डा० सम्पूर्णानन्द जी उ०प्र० के पूर्व मुख्यमंत्री का

शुभ आशीर्वाद–आचार्य दीपंकर को उनकी बाल्यावस्था में जब वे केवलानन्द के नाम से जाने जाते थे :–

न तो मैं कवि हूं और न काव्यमर्मज्ञ हूं। कौन से गुण और दोष काव्य का अलंकार बन जाते हैं या उसे दूषित कर देते हैं, इसका निर्णय करने में भी सक्षम नहीं हूं मैं, परन्तु मनोहर शब्दावली, भावों की कोमलता किसी के प्रति समर्पण भावना ऐसे गुण हैं जो हर एक के मन में अमित आनन्द का संचार कर देते हैं। बालकवि शर्मा वास्तव में बालकवि है।

यदि इस छोटी सी आयु में जो अभी परिपक्व अवस्था में नहीं आये है ऐसे काव्य की रचना कर सकते है तो परिपक्व आयु मे क्या क्या नहीं करेंगें यह सोचकर हमारा मन अत्यन्त प्रसन्नता अनुभव करता है। केवलानन्द मुझे गुरु मानते है। परन्तु गुरु तो एक भी श्लोक की रचना नहीं कर पाता। परन्तु शिष्य से कैसी स्पर्धा? शास्त्राकारों ने कहा भी है:-

"सबको जीतने की इच्छा करो

और पुत्र तथा शिष्य से हारने की"

अतः मैं भी अपने शिष्य केवलानन्द शर्मा से काव्य के क्षेत्र में हारकर स्वयं को बड़ा गर्वित अनुभव करता हूं। इस कवि की प्रतिभा अद्भुत है। संस्कृत में नवीन विचारों और भावों को अपूर्व रूप में प्रकट करते है। ऐसा मैंने किसी को करते नहीं देखा। आजकल पठन-पाठन के क्षेत्र मे अग्रणी स्थान पर रहते हुए वे जिस प्रकार की नवीनता का परिचय देते हैं, वहीं समर्पण भावना एक दिन इन्हें स्वतंत्रता संग्राम में भी अग्रिम स्थान पर

स्थापित करेगी, इसमे सन्देह नहीं हैं। "यतीन्द्र शतकम्" में कवि ने स्वामी दयानन्द के प्रति जो श्रद्धा व्यक्त की है, वही प्रत्येक पाठक के मन में भी प्रकट होगी, इसमें भी मुझे कोई सन्देह नहीं है।

हम अपने आशीर्वादों से इस बालकवि का आनन्दपूर्वक अभिनन्दन करते हैं।

सम्पूर्णानन्द
काशी विद्यापीठ
काशी

गुरु शिष्य सम्बन्ध

आधत्त पितरो गर्भं कुमारं पुष्करस्रजम्।

यथेह पुरुषोऽसत् ।।२ । ३३।।

पदार्थः (पितरः) विद्यादान से रक्षा करने वाले विद्वान पुरुषो! आप यथा जैसे यह ब्रह्मचारी (इह) इस संसार वा हमारे कुल मे अपने शरीर औरआत्मा के बल को प्राप्त होके पुरुषः विद्या और पुरुषार्थ युक्त मनुष्य असत् हो वैसे गर्भ के समान पुष्करस्रजम् विद्या-ग्रहण के लिए फूलों की माला धारण किये हुए कुमारम् ब्रह्मचारी को आधत्त (अच्छी प्रकार) स्वीकार कीजिए।

भावार्थः इस मन्त्र में लुप्तोपमालंकार हैं। ईश्वर आज्ञा देता है कि विद्वान पुरुषों और स्त्रियों को चाहिये कि विद्यार्थी कुमार व कुमारी को विद्या देने के लिए गर्भ के समान धारण करें। जैसे क्रमक्रम से गर्भ के बीच देह बढ़ता है वैसे अध्यापक लोगों को चाहिये कि अच्छी अच्छी शिक्षा से ब्रह्मचारी कुमार वा कुमारी को श्रेष्ठ विद्या में वृद्धियुक्त करें तथा जो पालन करने योग्य हैं वे विद्या के योग से धर्मात्मा और पुरुषार्थयुक्त होकर सदा सुखी हों। यह अनुष्ठान सदैव करना चाहिये।

सद्गुरुशरण

स्व० श्री किशोर लाल, मश्रूवाला

(ऋषि ने कहा मन्त्र और सूत्रकार ने मन्त्र को समेटकर रख दिया सूत्र में। सूत्रकार का कौशल है कि ज्ञान का अनन्त सा विशाल समुद्र सूत्र के बिन्दुवत शरीर में सिकोड़ कर रख दें, पर बिन्दु का सौन्दर्य है कि उसमें सागर की अपार दिव्यता का दर्शन हो। पर जब शास्त्रकार के रचना-कौशल में तत्व उलझकर रह जाय, जब उसे किसी सुलझाने वाले की जरूरत होती है। प्रयोग और अनुभव, मनन और चिन्तन का तत्व ऋषि के द्वारा मन्त्र में फूट पड़ता है -पर विद्वानों द्वारा कभी - कभी मन्त्र के अर्थ का अनर्थ किया जाता है उस समय जन - साधाराण को मंत्र बोध कराने के लिये भाष्यकार का उदय होता है। बापू के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी आचार्य बिनोबा ने ग्रामदान का जो मन्त्र दिया - उसके व्याख्याकार अगर दादा धर्माधिकारी है तो गांधी के तत्व दर्शन का सही सही विश्लेषण करने वाले थे - स्व. किशोर लाल मश्रूवाला। किशोरलाल केवल व्याख्याकार नहीं थे। उन्होने व्याख्या को अपने जीवन में उतारा और हमारे लिये उनका जीवन एक सद्प्रेरक आख्यान है। जीवन शोधन के लिये सद्गुरु का कितना महत्व है-यह इस लेख में मननीय है। जो साधक साधन के पथ में अधिक मार्गदर्शन चाहें, उनसे किशोरलाल भाई की पुस्तक जीवन -शोधन के पढ़ने के बाद उनके गुरु पूज्य केदारनाथ जी द्वारा लिखित **विवेक और साधना** ग्रन्थ पढ़ने का निवेदन है। सम्पादक **"आत्मसमर्पण"** (श्री बसन्त सिंह "भृंग")

एक तरफ उपनिषत्कारों से लेकर अनेक ज्ञानमार्गी भक्तों ने - उसे **जानने के लिए वह हाथ में समिधा लेकर श्रुति-सम्पन्न और ब्रह्मनिष्ठ गुरु के पास ही जाय।**

सदगुरु - शरण बिना अज्ञान तिमिर टलशे नहि रें (केशवकृति) ऐसे उद्गार प्रकट किये है।

दूसरी ओर महावीर का आग्रह था कि अपने ही पुरुषार्थ से, बिना किसी की सहायता के मैं ज्ञान प्राप्त करुगां बुद्ध ने यद्यपि इस पर जोर नहीं दिया तो भी कोई गुरु उनका पूरा समाधान नहीं कर सका था और इसलिये उन्हें स्वतंत्र रुप से शान्ति की तलाश करनी पड़ी थी। गांधी जी ने भी बार बार कहा है कि वे गुरु की तलाश में हैं, परन्तु अभी तक उन्हें कोई ऐसा गुरु नहीं दिखाई दिया, जिसे उनका हृदय स्वीकार कर सके। अतः गुरुप्राप्ति की इच्छा रखते हुए भी गुरु बिना ही उन्हें अपना मार्ग खोजना पड़ रहा है।

फिर राजनीतिज्ञ क्षेत्र की अनेक शाहियों की तरह अध्यात्म मार्ग में भी गुरुशाही ने इतना अनर्थ और पाखण्ड फैलाया है कि गुरु शब्द ही आज अनेक लोगों को अरुचिकर हो गया है।

यदि मैं तैरना न जानता होऊँ और फिर भी अपने को तैरने का उस्ताद बताऊँ तो मेरा पोलखाता एक दिन भी न चल सकेगा। क्योंकि पानी में पैर रखते ही मेरी उस्तादी की परीक्षा हो जायगी। परन्तु यदि मैं किसी ऐसी विद्या का उस्ताद बन बैंठूं, जैसे हस्ताक्षर या मस्तक-विद्या का जिसकी व्यवहार में बार-बार जरूरत न पड़ती हो और जिसकी कोई स्थूल पहिचान भी न हो और साथ ही अपना माल खपाने के लिए व्यापारियों में जैसी प्रचार-कला होती है वैसी कला भी मुझ में हो, तो मेरा पोलखाता बहुत दिन तक चल सकेगा और शायद जिन्दगी भर भी चलता रहे। क्योंकि जिन विषयों में बहुत से लोगों की ज्यादा गति न हो आम लोगों को जिसकी बहुत जरूरत भी न पड़ती हो और जो विषय बड़े गहन समझ लिये गये हों, उनका उस्ताद होना अधिक आसान है। विषय जितना ही गूढ़ और कम लोगों को परिचित होगा, उतना ही अनेकों को उसका उस्ताद मनवाना अधिक आसान है।

इस तरह ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु कहलाना एक तरह से बड़ा आसान पेशा है और अपने देश में बहुत लोगों ने बड़ी सफलतापूर्वक इसको चलाया है

और आज भी चलाते दिखाई देते है। शिष्यों को मोक्ष, और खुद को भोग प्राप्त कराने वाला धन्धा है तो बड़ा लाभदायक।

गुरुओं के ऐसे कड़वे अनुभवों के कारण गुरु शब्द और किसी के गुरु के नाम से परिचित पुरुष, बहुतों को आज अविश्वास और तिरस्कार के पात्र मालूम होते हैं। और कई श्रेयार्थी ऐसे दिखाई पड़ते है, जिन्होने ऐसा निश्चय कर लिया है कि मैं किसी को अपना गुरु नहीं बनाऊँगा बल्कि खुद ही अपना रास्ता ढूंढ निकालूंगा।

सच है कि शास्त्रों में सद्गुरु की आवश्यकता बताई गई है। परन्तु उसका अर्थ ऐसा तो नहीं किया जा सकता कि कोई मनुष्य खुद अपने बल पर सत्य की खोज कर ही नहीं सकता। क्योंकि यदि ऐसा कहें तो शुरुआत में जिसने आत्मतत्व की खोज की वह किस गुरु की शरण गया था? फिर भी ऐसा व्यक्ति जिसे विकट जंगलों में से अपना रास्ता निकालना हो यदि यह जिद पकड़े कि कोई जानकार मिल जाय तब भी मैं रास्ता नहीं पूछूंगा, और ऐसी दशा में वह कहीं गिरकर चकनाचूर हो जाय तो आश्चर्य नहीं और यदि वह सही सलामत उसमें से पार पड़ जाय तो गनीमत समझना चाहिये। ऐसी अवस्था में यदि वह सफल हो जाय तो हम उसका गौरव करेंगे। किन्तु हम यह नहीं कह सकते कि इस साहस में समझदारी ही थी और मिथ्याभिमान नहीं था। इसी तरह किसी को गुरु नहीं बनाने का हठ सम्भव है सत्य के लिए व्याकुल व्यक्ति को बहुत चक्कर में डाल दे और इस दुरभिमान की बदौलत वह सत्य से वंचित भी रह जाय।

यदि सदगुरु की खोज में भूल होजाय तो शिष्य को हानि उठानी पड़ेगी। अतएव भोलेपन से हर किसी में विश्वास कर लेना कभी वांछनीय नहीं हो सकता। शास्त्रों में सद्गुरु के जो अनेक लक्षण बताये गये है वे विचार करने योग्य हैं। परन्तु नीचे लिखी बातें तो खास-तौर से ध्यान देने लायक हैं-

१. सद्गुरु का व्यवहार विवेक-युक्त होना चहिये। ऐसे ख्याल गलत

है कि ब्रह्मनिष्ठ पुरुष सदाचार के नियम से परे है। अथवा सामान्य विवेकी और सदाचारी गृहस्थ सदाचार के जिन नियमों को पालते हैं वे उसके लिए बन्धन कारक नहीं है। उलटे उसका आचरण उदाहरण रूप होना चाहिये। इसक ारण यदि कभी वह सामान्य लोकाचार का भंग करता है तो अपनी किसी विशेषता के बहाने नहीं बल्कि इसलिये कि वह लोकाचार उसको अनुचित मालूम होता है और उसमें सुधार करने की जरूरत है।

२. सद्गुरु की भावना शिष्य के प्रति अनुग्रह या उपकार की नहीं होगी, बल्कि ऐसी होगी मानों वह साधारण मनुष्य धर्म का पालन करता हो। जैसे रास्ते चलते किसी बुढ़िया के सिर पर कोई मनुष्य बोझा चढ़ा दे और फिर अपने इस उपकार को दिन रात गिनाया करे अथवा कोई समर्थ विद्वान किसी बालक को जोड़ बाकी सिखा दे औरउस बात को हमेशा जता या करे तो यह उसकी नालायकी ही समझी जायेगी इसी प्रकार कोई पुरुष यह मानता हो कि अमुक अमुक मेरे शिष्य है उन्हें मेरी कृपा से आत्मज्ञान प्राप्त हुआ है तो यह ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु के लक्षण नहीं। उसे जो कुछ प्राप्त हुआ है वह दूसरे शोधक को प्रेमपूर्वक देना अथवा जो कठिनाइयां खुद उसे उठानी पड़ी हैं वे दूसरों को न उठानी पड़ें और उन्हें फिजूल भटकना न पड़े इसका उपाय बताना उस मनुष्य का स्वाभाविक कर्त्तव्य ही हो जाता है। जिसने सचमुच ही मनुष्य के श्रेय के लिए कोई महत्वपूर्ण वस्तु प्राप्त की हो, कर्तव्य का पालन करते हुए किसी प्रकार का उपकार करने का भाव न होना चाहिये।

यह हुई सदगुरु के हृदय की भावना। अब शिष्य की भावना अपनी सारी जिन्दगी की गुत्थी सुलझ जाने से अत्यन्त कृतज्ञ रहना भी उतनाही स्वाभाविक है। जहां एक और ऐसी सहजता मानों कोई खास बात न की हो तथा प्रेमयुक्त मित्रभाव हो ओर दूसरी ओर अत्यन्त कृतज्ञता और प्रेमयुक्त शरण हो वही योग्य गुरु-शिष्य सम्बन्ध कहा जा सकता है।

अब श्रेयार्थी चाहे ब्रह्मवादी हो या ब्रह्म शोधक हो, सबके संस्कार

गुत्थियां समस्यायें एक सी नहीं होतीं। जिस स्थान से बगैर मुश्किल अनुभव किये एक श्रेयार्थी सीधा सर्राट चला गया हो, सम्भव है वहां कोई दूसरा अटक पड़ा हो और भटकता फिरता हो। उसकी भूल मामूली ही रही हो, परन्तु उससे उसकी प्रगति रुक गई हो। उस एक भूल से यदि कोई उसे छुड़ा दे तो सम्भव है कि वह आगे सीधा सर्राट चला जाय इस भूल से जो उसे छुड़ा दे उसका वह बहुत ही अहसान माने और उसे अपना गुरु समझने लगे तो इसमें कौन आश्चर्य है? परन्तु यदि किसी दूसरे के सामने कठिनाई न आयी हो तो और उसके मन में उस मार्ग दर्शक के प्रति गुरुनिष्ठा न हो तो इसमें भी कौन आश्चर्य की बात है? इस कारण से ऐसा हो सकता है कि जो पुरुष एक का गुरु हो, वह दूसरे साधक या शोध क का गुरु न हो सके। परन्तु इससे यह न समझ लेना चाहिये कि इस तरह अगर कोई किसी की भूल बता देता हैतो इतने ही से वह सद्गुरु शब्द के योग्य हो जाता है। सद्गुरु में ब्रह्मनिष्ठा के उपरान्त और भी अनेक गुणों व संस्कारों की पूर्णता होनी चाहिए।

यदि किसी पुरूष में ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु के लक्षणों के उपरान्त विभूतिमत्ता भी हो उसके कार्य व योजनायें धर्मयुक्त तथा जगदव्यापी हों तो वह विभूतिहीन सद्गुरु से श्रेष्ठ है। यदि हम उसे सच्चे अर्थ में जगद्गुरु कहें तो निरतिशय भक्तिपूर्वक अपना जीवन समर्पण करते हुए ऐसे सद्गुरू के साथ अपना जीवन जोड़ने से ही अधिक से अधिक कृतार्थता मालूम हो सकती है। इतर सद्गुरु जगदगुरु की भक्ति के लिए कहिये अथवा सम्यक् धर्म के पालन के लिये कहिये दोनों एक ही हैं अपने शिष्यों को तैयार करें वहीं तक उनका कार्य उचित समझना चाहिये। सम्भव है कि ऐसा जगद्गुरु अप्राप्त ही रहे कल्पनागम्य ही रहे। और इसलिए तब तक गुरुभक्ति के क्षेत्र को मातृभक्ति पितृभक्ति इत्यादि के क्षेत्र जैसा मर्यादित ही समझना चाहिए। धर्म जैसे माता-पिता से परे है वैसे ही वह सद्गुरु से भी परे और विशेष है।

गुरुभक्ति और पूजा

अब हम इस बात का विचार करें कि गुरु की भक्ति या पूजा किस तरह करनी चाहिये। यह मानकर चलिये कि अमुक पुरुष सद्गुरु या जगद्गुरु कहलाने के लायक है तो फिर यह कैसे कहा जा सकता है कि उसका शिष्य एक खास सीमा में ही उसके प्रति अपना भक्तिभाव प्रदर्शित करे? इस भक्तिभाव के चिन्ह -स्वरूप वह गुरु की जो पूजा करता है उसमें अब बस ऐसा कोई तीसरा व्यक्ति कैसे कह सकता है? अतएव यहां गूरु के प्रति निरतिशय पूज्य बुद्धि और छोटी बड़ी सब प्रकार की उसकी सेवा करने की भावना में दोष बताने का हमारा उद्देश्य नहीं है। बल्कि गुरु सम्बन्धी हमारी भ्रम पूर्ण कल्पना और उसकी बदौलत पोषित गुरुपूजा के गलत आदर्श के सम्बन्ध में ही हमें कहना है।

गुरु ही श्रेष्ठ देव है ऐसा मानते मानते जब भक्त यह भी मानने लगता है कि जिस तरह देवता जड़ पाषाण या चित्र का बना होता है और इसलिये जैसी चाहे वैसी उसकी पूजा की जा सकती है उसी तरह गुरु को भी सचेतन पाषाण मानकर उसकी वैसी ही पूजा करनी चाहिये - तो उसे गुरु की पूजा नहीं बल्कि विडम्बना कहना चाहिये।

मैं जानता हूं कि ऐसी पूजा विधि को सहन करने वाले ही नहीं बल्कि उसका समर्थन करने वाले गुरु भी मौजूद है। मेरी राय में या तो उन्होंने इस विषय में गहरा विचार ही नहीं किया है और महज रूढ़ियों को पकड़े बैठे हैं या दूसरे प्रकार क़ी स्वार्थ सिद्धि के लिये वे ऐसी विडम्बना सहन कर लेते हैं।

फ़र्ज़ कीजिए कि गांधी जी ब्रह्मनिष्ठ हैं और उसके अनुयायी आज जिस हद तक उनके प्रति गुरुभाव रखते हैं, उससे अधिक वे उनके पूर्ण गुरुदेव बन जायं और फिर उन पर रोज या पर्व त्यौहार पर ऐसा फर्ज आ पड़े कि जब कोई भक्त घण्टी बजाये और जागों मोहन प्यारे गावे तभी वे उठ पावें और कोई शिष्य उन पर दूध-दही-घी-शहद-शक्कर और पानी

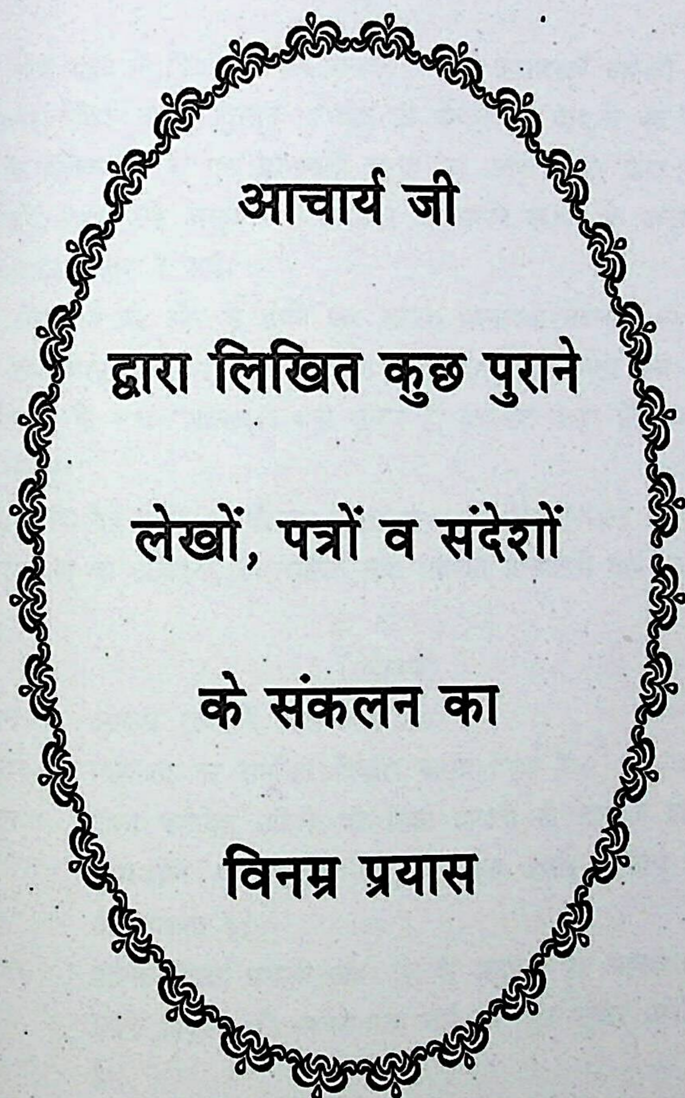
डालकर जब पंचामृत से स्नान करावे तभी वे स्नान करें दिन में कम से कम पांच बार और इनके अलावा दूसरे शिष्य ज़ब जब प्रसादी कराना चाहें तब तब उन्हें नैवेद्य चखकर उसे प्रसादी बना देना पड़े चरणोदक करके देना पड़े तो उनका जीवन कितना कृत्रिम बन जाय? भले ही ऐसा जीवन किसी को ईर्ष्या योग्य मालूम हो, परन्तु कर्मयोगी पुरुष को तो वह करुणास्पद और बन्धन ही मालूम पड़ेगा।

गुरु बनने के पहले साधारण व्यक्ति के तौर पर जिस प्रकार का जीवन गुरु, व्यतीत करता है उससे जुदा ही प्रकार का जीवन बिताने का और जुदा ही प्रकार की प्रतिष्ठा या शान दिखाने का फर्ज उस पर डाला जाय या गुरु की ओर से स्वीकार किया जाय तो उसमें मुझे गुरु और शिष्य दोनों में, विचार की खामी दिखाई पड़ती है।

पाषाण या चित्र लिखित देव से अतृप्त रहने वाला भक्त जब अपने गुरुदेव को प्राप्त कर उनके साथ ऐसा व्यवहार करने लगे मानो वे पाषाण के ही हों, तो उसकी यह गुरु प्राप्ति नहीं के समान ही समझनी चाहिये।

गुरु की शोध आखिर किसलिये है और गुरु प्राप्ति की आवश्यकता भी किसलिए है? इस विषय की स्पष्ट समझ न होने के कारण जहां पन्थ खड़े ही न होने चाहिये। वहां वे खड़े हो जाते हैं गद्दियां चल निकलती हैं, पूजा-पधरामणी के आडम्बर रचे जाते हैं और गुरुपन विरासत में भी मिल जाता हैं।

किशोर लाल मश्रूवाला
संकलनकर्ता
श्री बसन्त सिंह "भृंग"
ग्राम-कुण्डा, हस्तिनापुर
स्रोत-"आत्म समर्पण" साभार



आचार्य जी

द्वारा लिखित कुछ पुराने

लेखों, पत्रों व संदेशों

के संकलन का

विनम्र प्रयास



मैं अगले जन्म में भी शिक्षक बनना चाहता हूं!

आर्य्य लोक वार्ता के विद्या विशेषांक जनवरी ०३ में प्रकाशनार्थ आचार्य श्री विद्यासागर दीक्षित जी से विस्तृत बातचीत की योजना थी बाद में यह तय हुआ कि दीक्षित जी को एक प्रश्नावली प्रस्तुत कर उनके विचार प्राप्त कर लिये जायें, ताकि उन्हे असुविधा न हो और वह अपने स्वभाव के अनुसार टू द प्वाइंट उत्तर दे सकें।

आर्य्य लोकवार्ता की ओर से हमने एक सम्यक प्रश्नावली नवम्बर ०२ में प्रेषित की। जैसा होना था, दीक्षित जी ने टु द प्वाइंट उत्तरावली भेज दी, इस टिप्पणी के साथ "प्रश्नावली बड़ी सुन्दर है, यथामति उत्तर लिखवाकर भेज रहा हूं।"

ज्ञातव्य है कि नेत्र-ज्योति की क्षीणता के कारण उनका लिखना-पढ़ना बिल्कुल बन्द हो गया था अविकल, असम्पादित तथा यथावत प्रश्नोत्तरी यहां प्रस्तुत है।

(संयोजक)

प्रश्न : आपकी दृष्टि में शिक्षा क्या है?

उत्तर : व्यक्तित्व का समुचित विकास करना शिक्षा है।

प्रश्न : आज कमोबेश अंग्रेजों की शिक्षा प्रणाली ही लागू है इसके लाभ-हानि का गणित क्या है? क्या इसके विकल्प की आवश्यकता है?

उत्तर : वर्तमान शिक्षा प्रणाली अब तक के अनुभवों पर आधारित है इसके विकल्प की आवश्यकता नहीं है। कुछ सुधार अपेक्षित है।

प्रश्न : शिक्षा का माध्यम क्या होना चाहिए अंग्रेजी या मातृ-भाषा सूत्र से आप कहां तक सहमत रहे हैं क्या यह सूत्र विफल हो गया है?

उत्तर : मातृभाषा माता के दूध के समान उपयोगी है, उच्च शिक्षा के लिए त्रि-भाषा आवश्यक हैं।

प्रश्न : आपकी दृष्टि में छात्रों पर पाठ्यक्रम का बोझ कैसा है, हल्का, उचित या भारी? क्यों?

उत्तर : वर्तमान पाठ्यक्रम का बोझ भारी है। इसमें परिवर्तन की आवश्यकता है।

प्रश्न : किताबी -ज्ञान से इतर व्यावहारिक ज्ञान को बढ़ावा देने में स्कूलों-कालेजों की क्या भूमिका हो सकती है?

उत्तर : व्यावहारिक ज्ञान के बिना पुस्तकीय ज्ञान अधूरा है। स्कूलों कालेजों की भूमिका उचित है।

प्रश्न : रोजगार परक शिक्षा की अवधारणा से कहां तक सहमत है?

उत्तर : रोजगार-परक शिक्षा बच्चों की आयु, रुचि और मानसिक अवस्थापर विचारोपरान्त देनी चाहिए।

प्रश्न : शिक्षा व्यवस्था समाज सेवियों के हाथ से निकलकर व्यापारियों के हाथों में आ रही है ऐसे में छात्रों के भविष्य को लेकर आपकी क्या टिप्पणी है?

उत्तर : व्यापारियों के शिक्षा में दखल से बच्चों में शिक्षा के प्रति अरुचि पैदा हो जायेगी।

प्रश्न : मैकाले की शिक्षा व्यवस्था से समाज को बचाने के लिए आपकी पीढ़ी ने क्या किया? क्यों असफल रहे?

उत्तर : मैकाले की शिक्षा से बचाने के लिये गुरुकुलों की स्थापना की गयी थी।

प्रश्न : शिक्षा अब मुक्ति के लिये नहीं युक्ति के लिए ली दी जाती है परिणाम सामने है लोग पढ़ लिखकर महान नहीं बड़े बन रहे है। इस विसंगति को कैसे दूर किया जा सकता है?

उत्तर : जब तक शिक्षा का उददेश्य जीवन में सफलता है, तब तक मुक्ति का विचार ही अप्रासंगिक है।

प्रश्न : गुरु शिष्य के बीच की खाई दिनों दिन चौड़ी होती जा रही है। इसके लिए गुरु और शिष्य में ज्यादा जिम्मेदार कौन है?

उत्तर : गुरु अपने उत्तरदायित्व को भूलते जा रहे है। वेतन प्राप्त करना ही मुख्य उद्देश्य बन गया है। शिष्य भी पथ भ्रष्ट हो रहे है।

प्रश्न : आर्य समाज जैसी संस्थाओं ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्तिकारी पहल की थी। आज इनमें पहले जैसा उत्साह नहीं रहा इसके लिए आप किसे जिम्मेदार समझते है। और क्यों?

उत्तर : इसके लिए हमारा समाज जिम्मेदार है।

प्रश्न : सरकार अल्पसंख्यक समुदायों को अपने नियमों मे उदारतापूर्वक छूट देकर शिक्षा संस्थानों को चलाने का अधिकार देती है। आप इससे कहां तक सहमत है?

उत्तर : मैं इससे सहमत हूं।

प्रश्न : क्या स्कूलों में धार्मिक शिक्षा दी जानी चाहिये?

उत्तर : नहीं सर्व धर्म समझाना भी आवश्यक है।

प्रश्न : स्कूलो में यौन शिक्षा की कोई भूमिका हो सकती है?

उत्तर : अठारह वर्ष से कम आयु के बच्चें को यौन शिक्षा नहीं दी जानी चाहिए।

प्रश्न : शिक्षा के क्षेत्र में आप अपनी भूमिका से कितने संतुष्ट है?

उत्तर : लाचारी है। किन्तु अपनी सामर्थ्य एवं विवेक से आदर्श शिक्षा के प्रोत्साहन हेतु सदैव तत्पर रहा।

प्रश्न : आपके अनेक शिष्य समाज में महत्वपूर्ण स्थानों पर आसीन है।, आप उनसे कितना संतुष्ट है?

उत्तर : संतोषजनक संतुष्ट । अनेकों शिष्य उच्च पदो पर सरकार व सेना से सेवा निवृत्त हुए है। मातृ संस्था का मान बढ़ाया है।

प्रश्न : आपके शिष्य, जो अनेकानेक कारणों से अब भी याद आते है?

उत्तर : उनके व्यक्तिगत गुणों के कारण याद आते है। वे गुरू शिष्य परम्परा चला रहे है।

प्रश्न : आप अध्यापक और शैक्षिक प्रशासक दोनों भूमिका में सक्रिय रहे हैं अध्यापक के तौर पर शैक्षिंक प्रशासको प्रिंसिपल प्रबन्धक,सरकारी इंस्पेक्टर आदि से और शैक्षिक प्रशासक के तौरपर अध्यापकों से निबटने में क्या अन्तर महसूस करते है?

उत्तर : मैं अपनी युक्ति के बल पर ही सफल रहा। कटु अनुभव भी हुए परन्तु सफलता ही मिली।

प्रश्न : एक अच्छे अध्यापक को लेकर आपके मन में क्या खाका बनता है? कुछ अच्छे अध्यापक बताएं जो याद आते है।?

उत्तर : श्रद्धा की भावना पैदा होती है। उनकी प्रायः याद आती है श्री सदानन्द आर्य श्री शिवनारायण शर्मा श्री नत्थू सिंह पाण्डेय श्री दुर्गा प्रसाद श्री नन्दलाल

प्रश्न : एक अच्छे छात्र को लेकर आपके मन में क्या चित्र बनता है? वह छात्र कौन है, जो स्मरणीय है?

उत्तर : होनहार विरवान के होत चीकने पात। लालमणि जो एक सर्वोच्च पद पर रहे गरिमा प्राप्त की। न्यायमूर्ति करण लाल शर्मा। कर्नल पाल प्रमोद बिग्रेडियर आर के गुप्ता, नारायण सिंह विष्ट

प्रश्न : आपने किन छात्रों से बाद में भी सम्पर्क रखा? किन छात्रों ने आपके बाद में भी सम्मान देना जारी रखा?

उत्तर : प्रताप सिंह, जो विधान सभा में मंत्री भी रह चुके है। श्री पाल प्रवीण, सुश्री राधा भटट, श्री विष्ट, श्री लक्ष्मण सिंह श्री जय प्रकाश पाण्डेय, वीर बाला रस्तोगी

प्रश्न : कुछ स्मरणीय धटनायें?

उत्तर : साइमन कमीशन के आगमन पर आक्रोश तथा एक विद्यार्थी के भूख हड़ताल पर अन्न त्याग देने पर मैने एम.ए. कक्षा मे पढ़ना छोड़कर राजनीति में भाग लिया।

प्रश्न : इच्छाएं जो अधूरी रह गयी?

उत्तर : कोई नही।

प्रश्न : वर्तमान से कितना सन्तुष्ट है अपने और अन्य अध्यापकों के जो रिटायर हो चुके है?

उत्तर : मैं पूर्णतया संतुष्ट हूं। क्योंकि मैने इस क्षेत्र में सम्पूर्ण जीवन लगा दिया।

प्रश्न : अगले जन्म में क्या बनना चाहते है?

उत्तर : मैं अगले जन्म में भी एक शिक्षक बनना चाहता हूं।

प्रश्न : भावी पीढ़ी को क्या कहना चाहते है?

उत्तर : आदर्श बिना जीवन बेकार है। अनुशासन एवं दृढ़संकल्प होना आवश्यक है।

प्रश्न : आपकी दृष्टि में भारत का भविष्य कैसा है?

उत्तर : भारत का भविष्य परम उज्ज्वल है।

प्रश्न : आज की राजनीति पर कोई टिप्पणी?

उत्तर : आज की राजनीति देशभक्ति परक न होकर स्वार्थपरक रह गई है।

प्रश्न : गुरुकुल प्रणाली के शिक्षा संस्थानों की आज के सन्दर्भ में क्या भूमिका है?

उत्तर : गुरुकुल प्रणाली परम आवश्यक है परन्तु रोजगार पाने की दृष्टि से लोग इसको भूलते जा रहे हैं।

प्रश्न : आर्य्य लोक वार्ता पत्र से आपका परिचय कब हुआ? इस पत्र के प्रति आपकी क्या अवधारणा है?

उत्तर : आर्य्य लोक वार्ता एक पूर्ण वैदिक पत्र ही नहीं वरन वैदिक प्रचार का श्रेष्ठ माध्यम है मेरे प्रिय शिष्य श्री पाल प्रवीण जब हस्तिनापुर मे निवास करते हैं तो मुझे पढ़कर सुनाते है। प्रध ान सम्पादक बधाई के पात्र है। में गत दो वर्षो से पठन सामग्री से बहुत लाभान्वित हुआ हूं।

प्रश्न : महात्मा नारायण स्वामी गंगा प्रसाद चीफ जज स्वामी विद्यानन्द विदेह प्रकाश वीर शास्त्री इत्यादि से आपकी भेंट हुई है कोई संस्मरण हो तो बताएं।

उत्तर : महात्मा नारायण स्वामी जी के घनिष्ठ सम्पर्क में रहा। उन्हीं के नाम पर रामगढ़ नैनीताल में एक विद्यालय स्थापित हुआ जिसका मैं हेड मास्टर नियुक्त हुआ दो तीन वर्षों की कठिन तपस्या परिश्रम व श्रमदान से स्कूल बिल्डिंग निर्मित हुई। हाई स्कूल की मान्यता अंग्रेजी सरकार ने बहुत मुश्किल से दी। हम सभी के त्याग व श्रम को देखने के बाद।

श्री गंगा प्रसाद जी चीफ जस्टिस टेहरी मुझसे प्रभावित थे। अतः उन्हीं के अनुरोध पर मैं दिल्ली का विद्यालय छोड़कर रामगढ़ आया और महात्मा नारायण स्वामी विद्यालय की स्थापना की।

स्वामी विद्यानन्द विदेह से मेरा परिचय १९४८ में हुा। वे मेरे आध्यात्म गुरु रहे है। वे मेरे निमन्त्रण पर मवाना आते रहे व दीक्षान्त समारोहो में भाग लिया। उन्हीं की प्रेरणा से सेवा निवृत्ति के बाद वैदिक प्रचार में जुट गया। आर्य समाजज व वानप्रस्थआश्रम की स्थापना हसितनापुर में की। स्वामी विदेह जी द्वारा रचित सम्पूर्ण वैदिक साहित्य हमारे आर्य समाज के पुस्तकालय में उपलब्ध है।

श्री प्रकाश वीर शास्त्री व चौ. चरण सिंह जी को मैने बहुत समीप से देखा, उनके साथ काम किया। मैने उन्हे पक्का वैदिक प्रेमी माना। इन दोनों ने आर्य समाज का गौरव बढ़ाया है। चौ. चरण सिंह बाद तक मवाना आते रहे।

२००४ की प्रश्नावली के उत्तर इस प्रकार है

प्रश्न : आपने अपने जीवन काल में अनेको सभाओ को सम्बोधित किया व अनेको पुस्तको के विमोचन किए उनमें प्रमुख कौन से थे?

उत्तर : बाल कवि कौशल कुमार का रचना वीर भगत सिंह की पाण्डुलिपि को मैंने १६८५ में पूरा पढ़ा मै बहुत अधिक प्रभावित हुआ। इसी कारण उक्त ग्रंथ का विमोचन कुछ माह बाद करने का अवसर मुझे मेरठ में प्राप्त हुआ।

प्रश्न : आप अपने शिष्यों अनेको छात्रों शिक्षको बुद्धिजीवियों को अपने जीवन के कुछ अनुभव व लाभकारी बातें विचार, मार्ग दर्शन देना चाहेंगे?

उत्तर : मेरे शिष्य पाल प्रवीण व नारायण सिंह विष्ट इस दिशा में कार्य करते रहते हैं मेरे विचारो व जीवन के अनुभवों को लिखते रहते है इस आशय से कि उनका अधिक से अधिक प्रचार विस्तार तथा छात्रों-सहयोगियों से सम्पर्क बना रहे।

प्रश्न : आपके पुराने शिष्यों व कुछ सहयोगियों, प्रशंसकों ने विद्या सागर फाउण्डेशन का गठन किया है व उसके मुख्य उद्देश्यों के क्रियान्वयन हेतु कार्य करते रहते है आपकी टिप्पणी

उत्तर : मैं नहीं चाहता था कि मेरे नाम पर कोई संगठन या संस्था बनाई जावे परन्तु मेरे पुराने शिष्यों ने मुझे आश्वस्त किया कि फाउण्डेशन के माध्यम से ठोस व रचनात्मक कार्य ही किए जावेंगे यथा पर्यावरण गोष्ठियां वृक्षा रोपण आदर्श शिक्षक सम्मान निर्धन मेधावी छात्रों को छात्रवृत्ति प्रोत्साहन पुरुस्कार देना आदि अतः मैं सन्तुष्ट हूं।

आचार्य विद्यासागर दीक्षित जी के जीवन के कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु

१. माता पिता पहिले गुरु होते हैं। उनकी माता जी के पिता उस युग के माने हुए विद्वान महामहोपाध्याय की उपाधि से विभूषित थे। ऐसी माता गुरुदेव श्री दीक्षित जी की संस्कारदा थीं।

२. गुरुजी के पिता जी भी अपार प्रेरणा के स्रोत रहे।

३. उन्हें गुरु मिले तो ऐसे जिनकी छाप पूज्य दीक्षित जी पर जीवन भर रही।

४. गुरुजी के मित्रों में कभी कोई दुष्ट प्रवृत्ति का नहीं रहा।

५. स्वयं परिश्रम से विद्या प्राप्त करने के कारण गुरुजी के जीवन में किसी व्यसन का प्रवेश नहीं हुआं।

६. शिक्षक का जीवन एक आदर्श संस्था विद्या भवन उदयपुर से प्रारम्भ हुआ जो उनके जीवन के लिए आधार शिलाा बन गया।

७. राष्ट्रिय आंदोलन में भाग लेने के कारण राष्ट्रीयता उनके जीवन का मुख्य अंग बन गया।

८. गुरुजी को पत्नि संस्कार युक्त मिली जिसके कारण उनके जीवन में निम्नलिखित सिद्धान्त स्थिर हो गयें-

- मांगना तो केवल ईश्वर से मांगना।
- उपभोग करना तो अपनी कमाई के बल पर करना।
- पैर उतनें ही फैलाना जितनी लम्बी सौर हो।
- नेक कमाई ही काम आती है।
- मानव है तो सबसे मानवता का ही व्यवहार करना है।
- जो कुछ अपने पास है वह प्रभु की कृपा की देन है न उस पर अभिमान करना न दुरुपयोग करना।
- जो शिक्षक का जवीन मिला है वह पेट भरने के लिए नहीं वरन बच्चों का चरित्र निर्माण करने के लिए ही है।
- जो सम्मान वर्तमान पद के कारण आज प्राप्त है वह अवकाश प्राप्ति के बाद भी बना रहे तो आवश्यक है कि अहंकार को सदा के लिए विदा कर दिया जाए।
- स्वाध्याय में कभी प्रमाद न किया जाए अच्छा साहित्य ही पढ़ा जाए।
- सत्संग जहां भी मिल जाए उससे लाभ उठाया जाए।

हमारा दायित्व

बचपन में युगाण्डा में रेल-पथ बनाते समय आने वाली रोमाञ्चकारी कठिनाइयों का वर्णन पढ़ा था। उस समय दक्षिण अफ्रीका में बड़े भयंकर जंगल थे। जंगलों को काटने में ही बहुत सी कठिनाइयां आई थी। परन्तु सबसे बड़ी कठिनाई थी वहां के बबर शेरों का मुकाबला करना। चाहे जैसी ही मजबूत सुरक्षा व्यवस्था करें परन्तु वे उन्हे कूदकर रोज मजदूर या अफसरों को उठाकर ले जाते थे। उन शेरों को मारने के सभी प्रयत्न निष्फल हो जाते थे। उन रोमांचक वर्णनों को पढ़कर ऐसा प्रतीत होता था मानो वे मनुष्य भक्षी शेर पूरे मनोवैज्ञानिक या ज्योतिषी थे। जहां घात से शिकारी बैठते थे, वे वहां छापा न मारकर दूसरी जगह अपना कर्तब दिखा जाते थे। कितने खतरे मोल लेकर कितने जीवनों को बलिदान करके, युगाण्डा में रेल पथ बिछाया गया था।

मुझे इस घटना ने भारत वर्ष के प्राचीन ऋषियों द्वारा की गई तपस्या तथा बलिदानों का स्मरण करा दिया। उन्होने कितनी सूझबूझ तथा दूरदर्शिता से काम लेकर भारत का धार्मिक तथा सामाजिक फौलादी ढांचा बनाया था कि जो इतना समय व्यतीत होने पर भी हमारी रक्षा कर रहा है। हमारे सामाजिक जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं जिसमें ईश्वरनिवास और आध्यात्मिकता की छाप न हों। इसने ही विभिन्न भाषाओं, विभिन्न विचारों तथा मतमतान्तरो के भारत को एकता के सूत्र में बांधे रखा है। इसके कारण ही भारत अनेक उतार चढ़ाव पार करके भी अमर है। इस देश की इसी विशेषता ने सर मुहम्मद इकबाल को हैरत में डाल दिया था:-

कुछ बात है कि हस्ती
मिटती नहीं हमारी।
सदियों रहा है दुश्मन
दौरे जहां हमारा।।
यूनान मिस्र रूमा
सब मिट गये जहां से।
अब तक मगर है बाकी
नामों निशां हमारा।।

वह यह नहीं समझ सके कि संसार की अन्य देशों की सभ्यता काल कवलित हो गई परन्तु अनेक झंझावातों को सहते हुये भी भारतीय संस्कृति क्यों अमर है। वह यह तो समझ गये कि अवश्य कोई बात है, परन्तु यह समझ में नही आया कि आखिर रहस्य क्या है? प्राचीन ऋषियों द्वारा प्रदत्त धरोहर में यह रहस्य निहित है।

मैकाले उस रहस्य तक पहुंच गया था और उसने अंग्रेजी राज्य को भारत में अमर बनाने के लिये अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार करके हमारी उस संस्कृति का उन्मूलन करना चाहा था। उसके बोए बीज अभी तक फल दे रहे हैं और जब तक हम उधर दृष्टि नहीं डालेंगे तब तक अंग्रेजी सभ्यता भारत में फलती फूलती रहेगी। शरीर से स्वतन्त्र होते हुए भी आत्मना हम दास ही रहेंगे। हमारे देश के कर्णधारों ने देश को स्वतन्त्र कराने तथा स्वतंन्त्र भारत की भौतिक उन्नति के लिये जो कुछ किया है वह चिरस्मरणीय रहेगा। परन्तु उस रहस्य की अवहेलना हो जाने के कारण भारत में अव्यवस्थाजन्य तूफान आते रहते हैं। देश के नौजवान आक्रोश व्यक्त करते है सरकार को दोषी ठहराते हैं। देश के नेता भी अपने अपने विचारों के अनुसार देश को शान्ति, सुरक्षा तथा सम्पन्नता प्रदान करने के लिये भरसक प्रयत्न करते हैं। परन्तु मर्ज बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की। क्योंकि असली रोग तक डाक्टरों का ध्यान ही नहीं पहुंचा।

देश में चाहे कोई सी पार्टी शासन की बागडोर सम्भाले, चाहे कोई सा वाद या तन्त्र चलावे परन्तु वास्तविक उन्नति तब तक नहीं हो सकती जब तक भारतीय मानस को स्वीकृत धर्मतन्त्र के सूत्र पुनः न पकड़े जायें। इन चुनावों से पूर्व कोई भी पार्टी बहुमत पाने का दावा नही करती थी सभी स्वच्छ प्रशासन प्रदान करने तथा मंहगाई, बेरोजगारी, गरीबी आदि को दूर भगाने का दृढ़ संकल्प व्यक्त करते थे। परन्तु कौन सा ऐसा चमत्कार हुआ कि कांग्रेस (आई) को इतना प्रबल आशातीत समर्थन मिल गया। क्या कांग्रेस के सिद्धांतों ने या इन्दिरा के व्यक्तित्व ने जनता को मोहित करके यह समर्थन प्राप्त कर लिया? नहीं। 'इदन्न मम' की भावना-जो भारतीय जन

मानस में व्याप्त है-ने यह चमत्कार कर दिखाया और देशों में ऐसे प्रचार, रंगीन प्रलोभनलोगों कोभ्रमित कर सकते हैं, परन्तु भारत में ये कारगर सिद्ध नहीं होते क्योंकि 'इदन्न मम' की भावना नाना पुराण निगमागम् सम्मत रामायण तथा गीता में पहुंचकर भारत हृदय में समा गई है। यह भावना यावच्चन्द्रदिवाकरो अक्षुण्ण बनी रहेगी। इसी भावना से प्रेरित होकररास्ते को भूलकर हमारे नेता सेवा का मुखौटा पहिनकर कुर्सी दौड़ में भाग ले रहे थे। भारत की समष्टि आत्मा से यह भावना विलुप्त नहीं हुई है क्योंकि इसकी बुनियाद हमारे पूर्वज ऋषियों ने बड़े त्याग तपस्या द्वारा डाली थी। उसी भावना से प्रेरित होकर भारतीय जन मानस ने सत्ता के भूखे भेड़ियों को भगा दिया है।

क्या जनता ने कांग्रेस को चुना है या इन्दिरा को चुना है? नहीं उसने तो केवल एक होने वाले संकट को टाला है और उन दल वलों को दलदल से निकाल फेंका है जो स्वर्गीय जय प्रकाश नारायण के अथक प्रयत्नों के फलस्वरूप नारंगी की तरह एक होगये थे। सम्भव है इस चपत से उन्हे बुद्धि आ जाए और वे आपसी स्वार्थों को भुलाकर परहित निरत भावना का महत्व समझ जाए। व्यक्ति समझ सकें तो समझ जावें अन्यथा भारत की समष्टि आत्मा जो अमर है-सब काम ठीक कर देगी क्योंकि हमारी परम्परा हमें विश्वास दिलाती है कि जब जब महा अभिमानी असुर बढ़ेंगे और धर्म की ग्लानि होगी तब-तब भारत माता राम और कृष्ण भेजकर उद्धार करेंगी।

यदि हम बुद्धिजीवी नवयुवक इस रहस्य को समझ कर जनता का मार्ग प्रदर्शन करें तो अल्प काल में ही उन सभी समस्याओं का निराकरण हो जायेगा जिसे सभी राजनीतिज्ञ न कर सकें और न कर सकेंगे। उदाहरण हमारे सामने हैं। सन् १९४७ से १९६५ तक के दीर्घ काल में भी भारत की खाद्य समस्या हल नहीं हुई और हम उधार का मांगा हुआ अन्न खाते रहे परन्तु ढीली धोती वाले दुबले-पतले व्यक्ति-स्वर्गीय लालबहादुर शास्त्री ने कुछ महीनों में ही हल करके दिखा दी।

इस चिरन्तन ज्ञान को ध्यान में रखते हुए ही वेद ने कहा है-

ओम उत्तिष्ठ ब्राह्मणस्पते देवान्यज्ञेन बोधय।

आयुः प्राण प्रजां पशुं कीर्तिं यज्ञमानं च वर्धय।।

अथर्ववेद १६/६३/१

हे बुद्धिजीवी! उठ खड़ा होऔर इदन्नमम की भावना से भारत के देवों को जगा दे। शायद आज कल जैसी ही परिस्थतियों को लक्ष्य करके वेद माता ने यह मन्त्र ऋषि मन से संचारित किया था। पाश्चात्य विचारों की चकाचौंध से हमारे युवकों में मतिभ्रम उत्पन्न हो गया है। वे कहते हैं कि भारत की जो उन्नति हुई है याहोने वाली है वह पाश्चात्य अनुकरण के कारण ही सम्भव है, परन्तु वे भूल जाते हैं कि सिंह की खाल पहिनने से गदहा सिंह नहीं बन सकता। सिंह यदि है तो अपने सत्य के बल पर ही मृगेन्द्र बन सकता है।

भारत के सपूत अपने महत्व को समझें और भारत को पुनः अपने प्रतिष्ठित पद पर प्रतिष्ठित करें। सब युवकों में यह भावना भरना भारत के बुद्धिजीवियों का दायित्व है। बुद्धिजीवियों का मार्गदर्शन स्वयं भगवान करेंगे जैसा कि वे सदा से करते आये हैं, बशर्ते कि वे उसके अस्तित्व को स्वीकार कर यह प्रार्थना करें कि-

ओ३म् अग्ने नय सुपथा रायेऽ अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्म जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नमऽउक्तिं विधेम।।

यजुं० अ०४०/मं० १६।।

विद्यासागर दीक्षित
हस्तिनापुर

शिशु मन्दिर की शिक्षा का आधार

विद्यासागर दीक्षित
हस्तिनापुर

शिशु मन्दिर की शिक्षा का मूलाधार वर्तमान दुराग्रह पर कुठाराघात करके श्रेष्ठ नागरिक बनाना है। इन विद्यालयों में प्रवेश पाने वाले बालक बालिकाओं में मातृत्व भाव जागृत करके तथाकथित भ्रान्त वर्णव्यवस्था के दोष का निराकरण करना है। अतः व्यवहार के हर पक्ष में समता सरसता का ध्यान रखना परमावश्यक है। यह व्यवहार उन में इतनी गहराई से अंकित करना है कि विद्यालय से बाहर जाने पर भी वह मिट न सके। जो जाति पाँति विहीन मन्दिर के अन्दर हो वह बाहर समाज में जाकर भी वैसी ही बनी रहे। विषमता में समता उत्पन्न करने के लिए वेद के पुरुष सूक्त को आधार बनाना चाहिए। यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड एक विराट पुरुष है जिसमें प्रत्येक पिण्ड में ब्रह्माण्ड के गुण है। विश्व में विषमता ही विषमता है जो आवश्यक तथा सौन्दर्य प्रदाता है। उदाहरणों द्वारा बच्चों के मन में दृढ़ता से यह अंकित करना चाहिए कि हम सब उस परम के अंग हैं जिसमें विषमता बाधक नहीं वरन् साधक है, एक दूसरे की पूरक सहायक है। शरीर के अंग से इस शिक्षा का आभास हो सकता है। मानव हाथ हमारी सभ्यता का आधार है। अन्य किसी जीव को इस प्रकार के हाथ पैर प्रदान नहीं किए। विचार पूर्वक समझाकर बच्चों के मस्तिष्क पर यह अंकित कर देना चाहिए कि यदि हमारे हाथ पैर ऐसे न होते तो क्या हम इतने उन्नत हो सकते थे। फिर यह समझाना आवश्यक है कि हाथ की पांचो उंगलियां विषम होते हुए भी एक दूसरे की सहायक तथा पूरक है जो प्रगति के लिये आवश्यक है। इससे आगे यह भावना जगानी चाहिए कि हम सब एक ही प्रकार की मशीन के उत्पाद्य हैं भगवान ने हम सबको बिना किसी भेद भाव के सभी चीजें एक सी प्रदान की हैं फिर यह भेद कैसा? हमारे सभी कार्य भी समान होने चाहिए। अन्तिम पाठ यह पढ़ाना चाहिये कि समानता में भी योग्यता भेद होता है जिसके अनेक कारण हैं जो धीरे-धीरे समझ में आ जायेंगे। जैसे सभी बच्चों को कक्षा में एक सी शिक्षा दी जाती है परन्तु फिर

भी ग्राह्यता में स्वतः अन्तर आ जाता है। परिणामतः कुछ बच्चे शत प्रतिशत अंक प्राप्त करके उत्तीर्ण होते हैं कुछ ८० प्रतिशत कुछ ३३ प्रतिशत कुछ उससे भी कम सहारा देकर उत्तीर्ण किये जाते हैं और कुछ तो उत्तीर्ण ही नहीं होते। ऐसा क्यों? और उसे स्वीकार क्यों करना पड़ता है? इत्यादि बातों पर ध्यान देना चाहिये।

जन शिक्षण का महत्व

विद्यासागर दीक्षित
हस्तिनापुर

परिवार विश्व की सबसे छोटी इकाई है। परिवार में ही व्यक्ति का निर्माण होता है। मानव शिशु के अतिरिक्त सभी प्राणियों के शिशु बिना किसी शिक्षा या सहायता के बड़े हो सकते हैं, जीवन निर्वाह कर सकते हैं। परन्तु सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी, मानव का शिशु सहारे की आवश्यकता अनुभव करता है। परिवार में पालित शिशु समाज में गठित होने की शिक्षा किसी विद्यालय में ही प्राप्त कर सकता है। ऐसे विद्यालयों में प्राप्त शिक्षा परिवारों को सुखी समाज बनाने में सहायक होती है। शिशु विद्यालयों को प्राचीन काल में गुरुकुल कहा जाता था क्योंकि वहां कुल (परिवार) जैसा पुनीत वातावरण प्रदान किया जाता था। आजकल उस पारिवारिक भावना को सुरक्षित रखते हुए भी एक पग आगे उठाया गया है, अर्थात कुल मन्दिर बन सकें जहां देवताओं का निर्माण हो। देव स्वरूप बाल ही वे जन बन सकेंगे जो जनतंत्र को सफल तथा सार्थक बना सकेंगे और वर्तमान कमी को दूर कर सकेंगे। विचारणीय प्रश्न यह है कि इस जन शिक्षण का केन्द्र बिन्दु क्या होना चाहिये। हमारे पूज्य स्मृतिकारों ने समयानुकूल स्मृति ग्रंथों का निर्माण करके समाज का मार्गदर्शन किया था। परन्तु वर्तमान समय में स्वार्थी लोगों ने स्मृतियों का मनमाना अर्थ करके जनता को भ्रमित कर अपना स्वार्थ सिद्ध किया है जिसका दुष्परिणाम समूचे राष्ट्र को भुगतना पड़ रहा है।

मनुस्मृति का अध्ययन किए बिना ही मनुवाद को कोसना शुरू करके

राष्ट्रीय वातावरण को दूषित कर दिया है।

प्रथम तो वर्ण जन्म पर आधारित नहीं होता। गुरुकुल की शिक्षा के उपरांत प्रत्येक युवक को अपनी योग्यता तथा अभिरुचि के अनुसार वर्ण को वरण (चुनने) का अधिकार होता था। अतः इसमें जोर जबर का प्रश्न ही नहीं उठता था। स्वेच्छा से वरण किया गया वर्ण सर्वमान्य होता था। दूसरे वर्ण व्यवस्था सम्पूर्ण समाज के लिए नहीं होती केवल गृहस्थाश्रम केलिए ही होती है। शेष तीनों आश्रम वर्ण व्यवस्था हीन होते हैं परन्तु जन्म पर आध ारित मानकर आजकल सभी आश्रमों में इसे लागू किया जाने लगा जो मूर्खता ही है। गृहस्थ पार करते ही वानप्रस्थी तथा संन्यासी का कोई वर्ण नही रहता। तब व्यक्ति समाज सेवक रहता है जिसका जाति पाति, ऊँच नींच का कोई प्रश्न ही नहीं रहता। वे ही समाज मेंसमता, सरसता, मातृत्व भावना भरते हैं। गृहस्थ आश्रम में भी वर्ण व्यवस्था में वैमनस्य नहीं अपितु सहयोग होता है। वे सभी एक दूसरे के पूरक होते हैं।

विद्यासागर दीक्षित

आर्य समाज का विकास व मानव का नैतिक उत्थान कैसे हो?

(अन्तिम सन्देश)

१०.३.२००६

क्षिति जल पावक गगन समीरा
पंच रचित यह अधम शरीरा।

१. जो व्यक्ति अपना और संसार का भला चाहता है, उसे इन पंच तत्वों को शुद्ध रखना होगा।

२. इस संसार में जो कुछ भी दिखाई देता है वह दो तत्वों का समूह है।

जो आत्म तत्व है उनको आत्मा द्वारा ही विचारा और संवारा जा सकता है।

जो अनात्म तत्व है वे स्वतः तत्व के शुद्ध होने पर शुद्ध और पवित्र होने लगते हैं। हमारे धर्म शास्त्रों में इन दोनों बिन्दुओं पर ध्यान दिया गया है इसी आधार पर भारतीय संस्कृति संसार में सर्वमान्य है।

अपने चारों तरफ ध्यान दिया जाये तो हमें इस बात का पता चलेगा कि हमारे धर्म शास्त्र इन बातों पर आधारित होने के कारण ही संसार में आदर पाते हैं। आत्म तत्व के सुधार के लिए आत्मा को समझना चाहिए। जो कुछ भी जीवन्त है वह आत्म तत्व है। अपने उपयोग के लिए वह निर्जीव तत्व को स्वच्छ बनाए रख सकता है। इस बात को समझने के लिए हमें प्रकृति पर ध्यान देना चाहिए। सूर्य जो इस संसार का केन्द्र बिन्दु माना जाता है वह एक अग्नि पुंज ही तो है। अनात्म तत्व से शक्ति पाकर यह अग्नि पुंज सारे संसार को शुद्ध और पवित्र करता है। हमारे पूर्वजों ने इस बात पर बहुत ध्यान दिया था और वे इस निर्णय पर पहुंचे कि हम यदि स्वयं जीवित रहना चाहते हैं तो हमें सूर्य को जीव तत्व रक्षक मान कर उसका पूजन करना चाहिए। ध्यानपूर्वक यदि हम इस सृष्टि पर विचार करें तो हमें पता चलेगा कि हमारे चारों तरफ सूक्ष्म रूप में समस्त वायु मण्डल इन्ही तत्वों द्वारा शक्ति पुंज बना रहता है। उदाहरण के लिए जब कभी घटाएं छा जाती है अर्थात वायु मण्डल में जो सूक्ष्म तत्व हर समय घूमते रहते हैं वे सूर्य से शक्ति पाकर जीवित रहते हैं और पनपते रहते है। हमने देखा है कि जब कभी वायु मण्डल में तैरते हुए अधिक संख्या में बढ़ जाते हैं तो वे सूर्य मण्डल का प्रकाश फैलने मे बाधक हो जाते हैं।

आर्य समाज आर्य वानप्रस्थाश्रम, हस्तिनापुर एक अनुपम संस्था है जिसके विकास के लिए आप सभी ने गत २०-२५ वर्षों से अथक प्रयास किया है। कुछ पुराने व्यक्ति व महिलाएं अपना पूर्ण सहयोग देकर इस आर्य समाज को नया रूप देकर परलोक सिधार गए उदाहरण के लिए स्वामी शान्तानन्द जी महाराज, महाशय अतर सिंह जी, श्रीमती चन्द्रकला आर्या। कुछ पुरुष व महिलाएं अपना सब कुछ इस आर्य समाज की उन्नति व विकास के लिए अर्पण करते-करते अब वृद्ध व शिथिल हो गए है उदाहरण के लिए श्री कान्ती प्रसाद भटनागर जी व श्रीमती सत्यबाला जी जिन्हें हम

कभी भी नहीं भूल सकते। अब समय आ गया है कि इस अनुपम संस्था आर्य समाज हस्तिनापुर के जीर्णोद्धार का कार्य तुरन्त प्रारम्भ कर दिया जाये। इस कार्य को पूर्ण करने के लिए निमित्त बनकर हमारे बीच आ गई है श्रीमती प्रेमलता दुबलिश जो एक उच्च्य आर्य समाजी परिवार की प्रतिनिधि है व गत १०-१२ वर्षों से वे इस संस्था के विकास के लिए चिंतित रहती है अपना योगदान समय-समय पर देती रहती है।

श्रीमती प्रेमलता दुबलिश अब आर्य समाज-आर्य वानप्रस्थाश्रम हस्तिनापुर में रहा करेंगी व निम्नकार्य अपनी देख-रेख में २-३ माह में पूरा करेंगी।

१. जिन कमरों की प्लास्टरिंग टूटने लगी है उनकी मरम्मत नई प्लास्टरिंग खिड़कियों की मरम्मत जाली लगवाने का कार्य करवाएँगी।

२. पीछे के शौचालय - स्नानागार की मरम्मत सफ़ाई करवाएंगी।

३. वेद मंदिर व पुस्तकालय जो १६६६ में स्थापित किए थे उनको यथावत रखवाएंगी व पुस्तकों-ग्रंथों की सूची रजिस्टर में अंकित करेंगी।

उक्त सभी कार्यों को सफलता पूर्वक पूरा करने हेतु मेरा श्री राधेश्याम यादव, डा० सुखबीर सिंह प्रधान जी श्री श्रवण कुमार, श्री पाल प्रवीण से अनुरोध है कि वे श्रीमती प्रेमलता दुबलिश जी को अपना पूरा सहयोग समय व धनराशि बराबर देते रहें। यदि आप सभी सहमत हों तो मैं आज ही इसी समय रू० ५०००/- की धनराशि उक्त कार्यो के करने हेतु देने को तैयार हूं। श्री पाल प्रवीण निकट भविष्य में रू० ५०००/- की दानराशि स्वयं दें व रू० १००००/- अन्य दान दाताओं से प्राप्त कर आर्यसमाज को देंगे। श्री शर्मा जी जो कई माह से आर्य समाज में रह रहे हें उन्हें हिसाब-किताब लेखा जोखा रखने का कार्य २ माह के लिए दिया जाना चाहिए।

वि०सा० दीक्षित
हस्तिनापुर

प्रिय लालमणि,

नमस्ते,

हस्तिनापुर (मेरठ)

पुराने पत्रों में पढ़कर या पढ़वा कर नव जीवन संचार हुआ। अब मैं अपने जीवन के ६६वें वर्ष में पूर्व समय के लिखे हुए पत्रों में से किसी एक पत्र को पढ़वाकर प्रिय पाल प्रवीण से अपनी मनो भावनाएँ लिखवा रहा हूं। इस लघु जीवन में यदि हमने अपना अमूल्य समय जीवन की साधारण घटनाओं मे लगाकर सन्तोष कर लिया तो कुछ विशेष नहीं किया। पत्र की सार्थकता और पाठक की खोज ने इसे सार्थक बना दिया। अन्त में इतना पुनः लिखना चाहूंगा कि यह जीवन साधारण कार्यों में लगाकर ही व्यतीत नहीं करना चाहिए - प्रत्येक क्षण वहां से ही आ रहा है जहां हर पल अमृत झरना बहता रहता है। उसमें गोता लगाना वर्तमान और भविष्य दोनों को अमरत्व प्रदान कर देता है। खोजने वाले को हर स्थान में रत्न जटित पदार्थ मिलते रहते हैं। जिन खोजा तिन पाइया......इसी पत्र के साथ प्रिय पाल प्रवीण ने मेरी बहुत पुरानी शिष्या (१६४२-रामगढ़ की सुश्री राधा भट्ट के पत्र जो उन्होने मुझे कुछ वर्ष पूर्व मसूरी से प्रेषित किये थे आपके अवलोकनार्थ संलग्न करने की अनुमति मांगी है जिस पर मैंने अपनी सहमति दे दीं है। पुराने शिष्यों सहयोगियों के पत्रों- या पत्रोत्तरों को प्रिय पाल प्रवीण सुरक्षित रखे हुए हैं।

यदि इस प्रकार ही हमारा आपका पत्र व्यवहार पत्राचार चलता रहा तो सभी लाभान्वित होंगे ऐसी मुझे आशा है।

परिवार में सभी को मेरा प्यार देना, आशीर्वाद प्राप्त हो।

तुम्हारा शुभ चिन्तकः

श्री लालमणि जोशी
हल्द्वानी

विद्या सागर दीक्षित
हस्तिनापुर (मेरठ)

(सुश्री राधा भट्ट के पत्र की प्रतिलिपि)

परम श्रद्धेय गुरुवर,

आपका पत्र २४ सितम्बर ०१ को मिला, नेत्र ज्योति कम हो जाने के बाद भी मेरे लिए इतने दुलार पूर्ण आशीर्वाद भेजने हेतु ६ पेजों का पत्र लिखकर आपने मुझे गौरवान्वित एवं भाव विभोर कर दिया है। मेरा कितना सौभाग्य है। आपके पत्र ने जीवन को सावधानी और गहराई से जीने की कला व विज्ञान मेरे सामने प्रस्तुत कर दिया है। इन दिनों २-४ माह पूर्व से मेरे सामने अनेक बार ऐसे क्षण पेश हुए हैं जहां पर मुझे अपने अन्तर की गहराई में चिन्तन करके खोजना पड़ा है कि मेरा कदम कैसा उठना चाहिए? किस दिशा में चलने का निर्णय लेना है आदि और हर बार कहीं अन्तरतम से सही उत्तर मिला है। निर्भीक, निष्पक्ष और निर्द्वन्द्व सलाह या निर्णय प्राप्त हुआ है आज जब आपके पत्र में पढ़ा कि "अपने अन्तः मन में झांक कर देखो, प्रातः प्रार्थना में भगवान से बात करो" तो मन अत्यन्त आनन्द से भर उठा, सही रूप में प्रभु को अपना सखा, सारथी, दिशा दर्शक बना लेना शायद इसे ही कहते होंगे कि द्विविधा की घड़ी में अपने अन्दर की स्पष्ट आवाज को सुनना, वह सुनाई दे, इतना तटस्थ व शान्त हो जाना निराग्रही होकर सब उसको सौंप दिया हो मानो ऐसी निर्लिप्त मनः स्थिति बना देना, तब कहीं से एक ऐसा विचार उग जाता है, मानों किसी ने कानों में उसे बोल दिया हो। आपने मुझे "भीतर झांकने" के लिए कहा है इसी से आपको अपना उक्त अनुभव लिख रही हूं। आपका पत्र मैने कई बार पढ़ा है, हर बार उससे मुझे बल मिलता है दिशा मिलती है और हरबार एक कृतज्ञता का भाव मनमें आता है कि प्रभुने आपके द्वारा मुझे कितने आशीर्वाद दिलाये है। अब मेरे मन की वृत्ति ऐसी बड़ी जिम्मेवारियां उठाने की ओर से विरत होती जा रही है जैसी अभी मेरे ऊपर है। सहज कुछ न कुछ कर्मशीलता तो कभी बन्द नहीं होगी, परन्तु बड़ी जिम्मेदारी जैसी अभी है अब छूट जाय, तो प्रभु की कृपा होगी। जिम्मेदारी देने व छुड़ाने वाला वही है पर अपनी मनोवृत्ति को समझना भी आवश्यक है, उसे मैं बराबर बोलती रहती हूं द्रष्टाभाव से देखती रहती हूं।

आपके मन पर हस्तिनापुर आर्य समाज में यज्ञ के बाद जल्दी उठकर मेरठ जाने व आशीर्वचन नहीं कह पाने का दुख बना हुआ है, यह आपके पत्र से पता चलता है। आपके मनोभाव आपके प्रथम दिन में हमारे बारे में व्यक्त किये गये आपके, अनमोल वचनों से हमे प्राप्त हो गये थे। वह भाव परिपूर्ण आशीर्वाद को पुनः कहते तो आपको सन्तोष होता, यह मैं मानती हूं पर आपके आशीर्वाद से हम पहले दिन ही परितुष्ट थी, हमें कोई अभाव नहीं लगा न मुझे न मेरी सहेली वीरबाला को। आप मन से यह सब हटा ही दें। आपने हमें इतना दिया है, आज भी दे रहे हैं, हम कृत, कृत्य हैं।

आपका पत्र मैंने ठीक से पढ़ लिया है, सभी शब्द वाक्य स्पष्ट थे, मेरा पत्र आप किन्हीं महानुभाव सेपढ़ा लीजिएगा, कृपया सभी को मेरे प्रणाम बता दीजिए। मैंने आपके पत्र का उत्तर देर से दिया है, कुछ तो मैं पहले आपके पंत्र को हृदयंगम करना चाहती थी, मात्र भावावेश में उत्तर नहीं लिखना चाहती थी दूसरे जैसा कि मेरा कार्य है अक्टूबर का पूरा महीना यात्राओं में बीत गया, पहले आसाम, दिल्ली व गुजरात जाना पड़ा बाद को अल्मोड़ा व मसूरी होते हुए दिल्ली की यात्रा पर हूं। अभी मंसूरी से ही आपको यह पत्र भेज रही हूं।

प्रभु आपको तन मन से स्वस्थ रखें-

आपकी भौतिक नेत्रों की ज्योति भले ही कम हो गई हो पर आपकी अन्तर ज्योति आपके अन्तर को नहीं हमारे अन्तर को भी प्रकाश मान कर रही है, यह सही ज्योति अमर रहे।

प्रतिष्ठा में
श्री विद्यासागर दीक्षित
हस्तिनापुर

विनम्र प्रणाम के साथ
आपकी बेटी, राधा
२.१२.०१

यह धन्यवाद पत्र आचार्य जी ने उन सभी सज्जनों-महिलाओं को लिखवाया था जो १८ दिसम्बर ०५ के वेदप्रचार समारोह में भाग लेने आए थे।

हस्तिनापुर (मेरठ)
२२.१२.०५

हमारे आर्य समाज हस्तिनापुर का वेदप्रचार समारोह दिनांक १८/१२/२००५ को सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। ऐसे साधारण स्थान में ऐसी सुन्दर संस्था बनाकर और सफलता पूर्वक संचालन करके एक उदाहरण यहां के निवासियें व आस पास के दान-दाताओं ने प्रस्तुत किया है।

आप उक्त समारोह में प्रातः यज्ञ में तथा बाद में गोष्ठी में सम्मिलित हुए इससे मुझे अत्यधिक प्रसन्नता है। मैं इस पत्र को प्रिय पाल प्रवीण से लिखवा कर आपको अपना आशीर्वाद एवं धन्यवाद प्रेषित करवा रहा हूं। कृपया भविष्य में भी इसी प्रकार अपना योगदान इस संस्था को देते रहें। मुझे आशा है कि आपके सहयोग से यह संस्था एक उच्च कोटि की आदर्श संस्था बन जाएगी। मेरी इच्छा है कि इस संस्था के माध्यम से योग व प्राणायाम कराने व करने के लिए युवाओं व अन्य सभी को प्रेरित किया जाए।

मैं हृदय से आपके उत्तम स्वास्थ्य व समृद्धि की प्रार्थना प्रभु से करता हूं।

शुभकाम
विद्यासागर दीक्षित
हस्तिनापुर (मेरठ)

प्रिय नारायण सिंह जी,

नमस्ते। हस्तिनापुर (मेरठ)

बहुत दिनों से तुम्हारा कोई समाचार नहीं मिला आशा है कि तुम सपरिवार सानन्द होंगे।

जीवन भर भरपूर देश सेवा कर जब वृद्धावस्था आती है (जो हर एक प्राणी के लिए अनिवार्य है) तब वह संसार की सब चीजों से उकता कर उस परम प्रभु की याद करता है। यह याद आना बड़ा सौभाग्य का लक्षण है जिसे प्रभु की याद नहीं आती संसार के प्रलोभनों में फंसे हुए लोग उसकी कोई चिंता नहीं करते। यह उनके दुर्भाग्य का लक्षण है। ठोकर खाकर ही कोई सम्भल कर चलनें लगता है, तब उसे परम प्रभु की याद आती है। खैर, देर आयद, दुरुस्त आयद भले ही देर से सही परन्तु उसे याद तो आई, यही प्रभु का वरदान है। इस रहस्य को जब व्यक्ति कष्ट उठाकर या गुरुजन के उपदेशों से प्रभावित होकर उसेयाद करने लगता है तो कल्याण हो जाता है। तुम जैसे अनुभवी व्यक्ति के लिए कुछ लिखना उचित तो नहीं है परन्तु अपने प्रिय जन के लिए यह लिखना मैं अपना सौभाग्य समझता हूं कि मेरे बहुत से शिष्य श्रेष्ठता के सर्वोच्च शिखर तक देख आए हैं व बहुत से सहयोगी मित्र जीवन में सफलता अर्जित कर चुके हैं। ईश्वर सद्‌बुद्धि बनाये रखे। अन्त में एक सुझाव देता हूं कि प्रभु को याद करने के साथ, उसको सदैव धन्यवाद भी देते रहना चाहिए क्योंकि कुछ ही लोग उनको धन्यवाद देते हैं। पाल प्रवीण यहां आया हुआ है उसी के माध्यम से यह पत्र तुम्हें लिखवा रहा हूँ। मेरी नेत्र ज्योति बहुत क्षीण हो जाने के कारण, लिखना पढ़ना बंद है। मेरी सेवा प्रिय पुत्र जगदीश सदैव करता रहता है।

अपने समाचारों से अवगत कराते रहा करो। यहां का फोन नं. ०१२३३-२८०१९६ कभी कभी प्रिय जगदीश से बात करना श्रेयस्कर होगा।

सद्‌भावना सहित

शुभेच्छु

श्री नारायण सिंह विष्ट
रामगढ़

विद्यासागर दीक्षित
हस्तिनापुर (मेरठ)

प्रिय लालमणि,

नमस्ते,

हस्तिनापुर (मेरठ)

मैं पूर्व से तुम्हें बराबर पत्र प्रेषित कराता रहता हूं उनका लक्ष्य यह है कितुम्हारा ध्यान केन्द्रित करने केलिए तुम्हें प्रेरित करता रहूं। इस संसार में हमने यह जन्म लिया है केवल सांसारिक वस्तुओं से सम्बन्ध रखना व उनसे लाभ उठाना परन्तु यह संकीर्ण अर्थ है। इसका वास्तविक अर्थ उस शक्ति कोअपने अन्दर व्याप्त करना है जिसे सन्ध्या कहते हैं जिसका मुख्य लक्ष्यहै क्योंकि संसार को चलाने वाली शक्ति का नाम ईश्वर है और हमें संसार में उसी की उपासना करनी चाहिए इस लिए उसका ध्यान हमारे लिए आवश्यक है। अतः सन्ध्या के समय शान्त होकर बैठने का मुख्य अभिप्राय यही है कि हम उस शक्ति से प्रभावित रहें। यह सब कुछ तब तक सम्भव नहीं जब तक हम अपने बिखरे हुए विचारों को सम्यक् ध्यान द्वारा केन्द्रित न करें। इस ध्यान की प्रक्रिया को केन्द्रित करने के लिए महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने कुछ मन्त्रों का चयन किया है। इसलिए जब हम सन्ध्या करने बैठें तब कुछ मन्त्रो का जाप कर लेना ही पर्याप्त नहीं है हमारा मुख्य लक्ष्य अपने ध्यान को संयत करके उस विश्वव्यापी शक्ति से जोड़ना है। तभी सन्ध्या की सार्थकता पूरी होगी।

शुभेच्छु
वि.सा. दीक्षित
हस्तिनापुर (मेरठ)

श्री लालमणि जोशी
हल्द्वानी

Respected Dr. Gupta,

Hastinapur
12-11-99

Namastay.

We were very much delighted to see you both in the function organised in a very short time. It was so nice of you to have attended all themorning and evening sessions. I am sorry I could

not entertain you in a suitable way. I hope you will not mind and will bless us by visiting Arya Samaj, Arya Vanprastha Ashram, Hastinapur when ever you find time during your visit to Mawana.

Your obedient son Piyush Gupta along with dear Ruchira and kids were good enough in visiting Hastinapur in July 1999. end. More over his sending a donation of Rs,20000 for our institution is a remarkable step. I have addressed a letter to him separately which is enclosed, kindly pass on this to dear Piyush through FAX if not inconvenient. A short report on two days annual function is being prepared and will be sent to you shortly.

With best regards & Wishing you a very happy Deepawali

Yours affectionately

Dr. R.S. Gupta **V. S. Dikshit**

Vasant Vihar New Delhi

My dear Piyush, 12-11-99

It was so nice of you to have spared some time for visiting Arya Samaj and Arya Vanprastha Ashram, Hastinapur in the end of July 1999. I am extremely grateful for your kind visit to my residence also along with your wife and kids. Your valued donation of Rs. 20,000 in the memory of your Dada-Dadi and Nana-Nani will go a long way in developing this centre as a religious place in this district. I shall very much appreciate if you kindly give your suggestions for its development. your noble parents had also attended the two days Annual Function of Arya Samaj, Hastinapur on 23-24th October, 1999. I am sending a letter of thanks to them separately.

With best of love to you all,

Shri Piyush Gupta **Yours**

Jakarta (Indonesia) V.S. Dikshit

Hastinapur.

परम प्रिय, पाल प्रमोद

सदा सुखी रहो।

तुम्हारा प्रेम तथा श्रद्धापूर्ण पत्र पाकर मैं कृत कृत्य हो गया। मैं भी तुम्हारे लिये नववर्ष की शुभकामना तथा सुन्दर स्वास्थ्य के लिये शुभाशीष प्रेषित करता हूं। मैं इसे अपना सौभाग्य समझता हूं यदि मेरे कुछ शब्दों से तुम्हारे जीवन में कुछ आध्यात्मिक परिवर्तन आता है। वास्तव में धर्म ही एक ऐसा है जो अन्त में साथ जाता है। तुम्हारी उन्नति पर मुझे गर्व है और मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि तुम अपने व्यवसाय के उच्च शिखर को प्राप्त कर सको जो तुम्हारी प्रतिभा के सर्वथा अनुरूप है। सेना का सेनापति भी तो आखिर एक मनुष्य ही है। मेरे कई शिष्य ऐसे हैं जिन्होने अपने जीवन में आशातीत उन्नति की है। एक अध्यापक का कद उसके शिष्य के कद से नापा जाता है। जल जितना ऊपर उठता है कमल उतना ही स्वतः ऊपर उठ जाता है जल से कमल की और कमल से जल की तथा दोनों से जलाशय की शोभा होती है इसी कारण गुरु सदैव अपने शिष्य को अपने से भी बड़ा देखना चाहता है। शास्त्र का आदेश है **सर्वत्र विजयं इच्छेत्, शिष्यात् इच्छेत् पराजयम्।** अतः तुम्हारी गौरव वृद्धि को मैं अपनी ही गौरव वृद्धि मानता हूं। दूसरी विशेषता तुम्हारी यह है कि तुमने अपने कुल को उज्ज्वल बनाकर अपना जीवन सफल बना लिया। शास्त्र का प्रमाण है **असारेत्मिन संसारे मृतः को वा न जायते। सजाते येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्।** संसार में गुणों की कमी नहीं है लेकिन गुण ग्राहक बिरले ही होते हैं। तुममे यह गुण है इस कारण ही तुम्हें जहां से भी कोई गुण मिलता है उसे ग्रहण कर लेते हो। गुण न हिरानों गुण ग्राहक हिरानों है तुम धन्य हो ईश्वर तुम्हें शुद्ध बुद्धि और दीर्घ आयु प्रदान करे। तुमने अपनी ताई जी के लिये शुभ कामना भेजी है। धन्यवाद। ईश्वर की कृपा से उसका २८.०१.१९९९ को बिना किसी कष्ट के शरीर पूरा हो गया। १०. ०२.१९९९ को आरिष्ठी है। मेरी आंखों में काले मोतिया बिन्द का पानी इतना अधिक उतर आया है कि न अब पढ़ सकता हूं और न लिख सकता हूं। परन्तु यह शरीर यदि किसी के काम आ जाये तो इससे बढ़कर और क्या हो सकता है।

शुभकांम !

वि सा. दीक्षित
हस्तिनापुर

कर्नल पाल प्रमोद
धौलाकुआं नई दिल्ली

प्रिय श्री देवीशंकर जी, ११.११.९९

सप्रेम नमस्ते! हस्तिनापुर

आप हमारे आमंत्रण पर इस छोटी सी संस्था के वार्षिकोत्सव के लिए पधारे एवं दोनों दिन अपने प्रवचन देकर उत्सव में अमूल्य योगदान दिया। मैं आपका हृदय से आभारी हूं एवं आशा करता हूं कि भविष्य में भी आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार करेंगे। आपके भोजन की समुचित व्यवस्था हम नहीं कर पाये इसका मुझे दुख है।

सद्भावना सहित। आपका हितैषी
वि० सा० दीक्षित

प्रतिष्ठा में,
श्री देवी शंकर जी
राजाजी पुरम, लखनऊ

बन्धुवर तिवारी जी,

सप्रेम नमस्ते!

आपने हमारे आमंत्रण पर आर्य समाज हस्तिनापुर के सम्मेलन में पधार कर हमें अनुग्रहीत किया। आपने अपने विद्वत्तापूर्ण भाषण में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती एवं वेदों की महिमा जिस शैली में की उससे सभी लाभान्वित हुए। आपको ध्यान्यवाद देने में मैं बड़ी प्रसन्नता अनुभव कर रहा हूं। बाद में आपने देवभाषा संस्कृत में जो भाव प्रकट किये वह हृदय ग्राही थे। हस्तिनापुर की प्राचीन पृष्ठभूमि के साथ-साथ हस्तिनापुर आर्य समाज के वार्षिकोत्सव पर आपने जो रचना प्रस्तुत की वह अनुपम है। संस्कृत का ज्ञान रखने वाले उसे सुनकर गद्-गद् हो गये।

शुभ काम आपका हितैषी
वि. सा. दीक्षित

प्रतिष्ठा में,
डा. द्वारिकाधीश तिवारी
संस्कृत विभागाध्यक्ष राजकीय इन्टर कालिज
हस्तिनापुर (मेरठ)

प्रिय बिटिया सर्वेश,

सप्रेम नमस्ते। हस्तिनापुर

यह मेरे प्रति आपका प्रेम ही था जो आपको इस छोटे से नगर के आर्य समाज के वार्षिकोत्सव में खींच लाया। अपने स्वभाव के अनुसार व प्रभु कृपा से जीवन के अंतिम छोर पर बैठा हुआ भी मैं इस प्रकार के कार्यों में लगा हुआ हूं। तुम्हारे प्रेम की मैं कद्र करता हूं और हृदय से ध न्यवाद देता हूं। आपके पधारने से हमारे उत्सव की शोभा व हमारा मनोबल बढ़ गया।

तुम्हारे प्रवचन सभी को अच्छे लगे थे।

सद्भावना सहित!

श्रीमती सर्वेश चौधरी — विद्यासागर दीक्षित

हस्तिनापुर

१२.३.०१

मेरी प्यारी दुलारी राधा बिटिया, हस्तिनापुर

स्वस्ति तेऽस्तु।

तुम्हारा श्रद्धा व प्रेम भरा पत्र पाकर मैं गद् गद् हो गया। मुझे गर्व है कि तुमने अपने तपस्वी जीवन से एक महान जीवन प्राप्त कर लिया है। **"श्रमेण तपसा सृष्टा ब्रह्मणा वित्तेऽश्रिटा"** यह अथर्ववेद का मन्त्र है जिसका अर्थ है कि सृष्टा ने तप के बल से ही सृष्टि की रचना की और उसे ज्ञान पर आधारित कर दिया। पतंजलि ऋषि ने जो योगशास्त्र लिखा वह केवल एक सूत्र की व्याख्या है जो इस प्रकार है **"तपः, स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि क्रिया योगः"**। वही तप तुम्हारे उत्थान का अधार है। ईश्वर को तप के द्वारा ही अपने अन्दर किया जा सकता है। मुझे प्रसन्नता है कि तुमनें सही मार्ग पकड़ लिया है। लक्ष्य की प्राप्ति का समय आने पर आनन्द ही आनन्द प्राप्त होगा। तुम्हारे द्वारा प्रेषित जन्म दिवस शुभकामना के लिए धन्यवाद् प्रभात गुरुकुल आश्रम में जिस प्रकार शोर मचाने वाली भीड़ को शान्त करके बिना उद्विग्नता के अपनी बात सुरुचिपूर्ण ढंग से

तुमने रखी उसे देखकर मैं मुग्ध होगया हूं। तुम धन्य हो। तुम्हारे विचारों की परिपक्वता को देखकर अब तुम्हे दुलारी बिटिया कहने में संकोच सा होता है परन्तु मैं स्वभाव से लाचार हूं। तुम्हारी छोटी बहिन देवी तथा वीरबाला बिटिया को देख कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई जब तुम तीनों प्रिय प्रवीण के साथ मेरठ से हस्तिनापुर हमसे १३ जनवरी को मिलने आई थी परन्तु मुझे खेद है कि मैं दीर्घायु जनित नेत्र ज्योति की क्षीणता के कारण तुम सभी का ठीक से दर्शन नहीं कर सका केवल आकार ही देख सका। ईश्वर तुम्हे यश लाभ कराए। प्रिय बिटिया देवी द्वारा प्रेषित फोटोग्राफ भी तुम्हारे पत्र में प्राप्त हुआ जिसमे प्रिय वीर बाला मुझे तुम सभी की ओर से आर्य समाज मंदिर की यज्ञवेदी पर शाल उढ़ा कर सम्मान कर रही है व चित्र में तुम व प्रवीण भी हो इस चित्र को सभी ने सराहा। जगदीश नमस्ते लिखाता है।

सुश्री राधा भट्ट
कस्तूरबा आश्रम
इन्दौर (म०प्र०)

सद्भावना सहित शुभेच्छु
वि. सा. दीक्षित
लेखक पाल प्रवीण
हस्तिनापुर

प्रियवर लालमणि,
सस्नेह नमस्ते।

हस्तिनापुर

तुमने मेरे जन्म दिवस पर जो शुभ कामनाएँ अपने विस्तृत पत्र द्वारा भेजी उसके लिए हार्दिक धन्यवाद। पीठ के फोड़े इत्यादि की कोई चिंता मत करो क्योंकि **शरीरं व्याधि मंदिरम** के अनुसार जब तक शरीर है तब तक व्याधियां तो चलती ही रहेंगी केवल ध्यान इतना रखना है कि शरीर के गुण आत्मा को दबा न लें। फोड़ा इलाज के द्वारा अब ठीक हो गया है तुम चिंता न करो। तुम्हारी बहुमूल्य भेंट प्राप्त हुई धन्यवाद इस दिशा मे प्रवीण जो कार्य कर रहा है उसके विषय में वह स्वयं तुम्हे लिखेगा। पुराने परिचित विद्यार्थीयों के नाम लिखकर तुमने मुझे पुराने दिनों की याद ताजा करा दी कृपया श्री सेबन्त सिंह को व सभी को मेरा शुभाशीर्वाद पहुंचाना तथा लिखना कि उनका रोग क्या है अपने पहिले दो पत्रों में मैंने जल सेवन

व जल की उपयोगिता के विषय में तुम्हें लिखा था उसी संदर्भ में यह भी नोट कर लो कि दिन में एक बार जल के गिलास में एक चम्मच ग्लूकोज डी मिला कर पिया करो तथा भोजन के अंत में अधिक पानी नहीं पीना चाहिए यथा भोजनान्ते विषम् वारि कृपया अपने अगले पत्र में यह अवश्य लिखना कि मेरे उक्त पत्र तुम्हें मिले भी है या नहीं पत्रों की प्राप्ति सूचना मिलना आवश्यक होता है। यदि मिल गए हों तो अपनी टिप्पणी सुझाव या अनुपालन सूचित करना। बहुत पहिले मैंने तुम्हे बायो। कैमिक दवा काली फास ३ग या ३ग लेने को कहा था लेकिन उसके विषय में तुमने कभी भी कुछ नहीं लिखा। सप्ताह मेंएक बार प्रातः निहार मुह सल्फर ३० की एक खुराक ले लिया करो तो डिप्रेशन होना बन्द हो जायेगा। जब कभी भी कोई तकलीफ हुआ करे तो मुझे लिख भेजा करो अधिक दवाओं या विभिन्न चिकित्सकों को दिखाने पर उलझन पैदा हो जाती है।

मुझे ऐसा ख्याल है कि तुमने किसी पहिले पत्र में अपनी अंगुलियों के हिलने के विषय में लिखा था यह पार किन्सन की बीमारी है जिसका मूल कारण मस्तिष्क की नसों पर दबाव पड़ना है अर्थात तुम चिंता अधिक मत किया करो। रोग की दवा होती है परन्तु व्यर्थ चिंतन की कोई भी नहीं है। बार बार इस मन्त्र को दोहराया करो

मन्त्र : अहं इन्द्रं न शरीरम" अर्थात मैं आत्मा हूं शरीर नहीं हूं। ऐसा करते करते आत्मा बलवान हो जावेगी और रोग दुम दबा कर भाग जावेंगे।

तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर इस प्रकार है:-

१. जीवन के चार साधन है जिसे शास्त्रीय भाषा में साधन चतुष्टय कहा जाता है अर्थात धर्म अर्थ काम मोक्ष। इसी में तुम्हारे पहिले प्रश्न का उत्तर निहित है अर्थात् मानव जीवन का लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति है।
२. कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन तुम गीता के प्रेमी हो अतः गीता का ही उदाहरण तुम्हारे सामने है। अतः कर्म करने की पूर्ण स्वतन्त्रता है।
३. प्रकृति का अर्थ Nature नहीं है वरन इसका अर्थ स्वभाव है और

स्वभाव बनता है कर्म करने से जो व्यक्ति जैसे कर्म करने लगता है वैसी ही उसकी प्रकृति बन जाती है वही उसके कर्मों का हेतु है। इन कर्मों का फल अनचाहे भी मिलता है क्योंकि वही दैवयोग कहलाता है। कर्मों के अनुसार फल तो भोगने ही पड़ते हैं। आपके मन में जो उलझन पैदा हो रही है वह केवल इस संदर्भ में स्वभाव के स्थान पर Nature प्रकृति मान लेने के कारण होती है। सीधी सी बात है कि कर्म के अनुसार फल तथा फल के अनुसार भोग शुभ व अशुभ अनिवार्य है।

४. कर्म करने का अधिकार जीव को प्राप्त है कर्मों का आधार, आचार, विचार खान-पान रहन सहन आदि पर है।

५. संस्कारों के विषय में तुम्हारे मन में व्यर्थ की शंका है जिन संस्कारों के विषय में तुमने लिखा है वे सभी सामाजिक संस्कार विधियां हैं परन्तु जो संस्कार कर्म करने के कारण हमारे मन में संचित हो जाते है वे ऐसे ही संस्कार है जैसे पृथ्वी पर पानी का गिलास लुढ़क जाने पर पृथ्वी पर जल का अलग लेप दिखाई देता है जो सूखने पर और भी अधिक स्पष्ट हो जाता है। आशा है यह बिन्दु अब स्पष्ट हो गया है। जहां तक संस्कारों के लोप होने का प्रश्न है वह अविचार पर निर्धारित है सब ज्ञानवान पुरुष इन सभी संस्कारों को करते कराते है केवल मूर्ख ही इनकी अवहेलना करते हैं। उनके कारण सम्पूर्ण समाज को दोषी मानना ठीक नहीं है।

६. तुमने अपने पत्र में आगे जो लिखा है कि मूल भूत सिद्धान्तो की शिक्षा नहीं दी जाती उसका कारण यह है कि स्कूलों की शिक्षा और सामाजिक धर्मो की शिक्षा अलग अलग है। स्कूली शिक्षा शिक्षकों द्वारा शिक्षण सस्थाओं में दी जाती है और दूसरी शिक्षा धर्माचार्यों के क्षेत्र में आती है।

तुम्हारे पत्र से यह तो विदित होता है कि तुम अध्ययन शील हो आहार निद्रा भय में से पता चलता है कि तुमने पढ़ा बहुत है परन्तु उसे गुणा नहीं है। उन्हीं श्लोकों से धर्मेण हीना पशुभिः समाना इससे अधिक

और क्या चाहिए?

तुम अपनी पत्नि के साथ जब कुछ माह पूर्व यहां आए थे व मेरे पास रहे थे तभी मैंने अनुमान लगा लिया था कि तुमने अच्छे संस्कार पाए हैं।

संक्षेप में मेरा सुझाव है कि अधिक पढ़ने तथा अधिक चिंतन करने के स्थान पर ईश्वर व्याप्ति की अनुभूति पर बल दो तो सारी शंकाएँ लुप्त हो जावेंगी। गीता का अंतिम श्लोक ध्यानपूर्वक पढ़ो और उसी पर ध्यान केन्द्रित करो तो सच्चा ज्ञान प्राप्त होगा और सब भ्रांतियां निर्मूल हो जावेंगी।

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठिति ।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूठानि मायया ।।

गीता १८/६१

अर्थात ईश्वर तो तुम्हारे रोमरोम में समाया हुआ है वही सब कुछ चला रहा है।

मेरी ओर से देवी जी को व तुम्हे आशीर्वाद तुम्हारी जोड़ी सदा सुखी रहे तथा जीवन के सभी सुख प्राप्त होते रहें।

उनका नाम भूल गया लिख कर भेजना

शुभकाम
वि.सा. दीक्षित
लेखक पाल प्रवीण



आचार्य जी के जन्मशताब्दी वर्ष में शिक्षक दिवस २००७ में आयोजित भव्य शिक्षक सम्मान समारोह में आदर्श शिक्षक श्रीमती शोभा सिन्हा को सम्मानित करते हुये श्रीमती कमलेश पाल

प्रिय लालमणि,

सस्नेह नमस्ते।

यहां से लौटने के बाद तुम्हारा एक प्रिय पत्र आया जिसका मैने उत्तर प्रिय पाल प्रवीण द्वारा लिखवा दिया था। आशा है मिला होगा। मैं चाहता था कि तुम्हे पत्रों का एक सिलसिला जारी करुँ उस दिशा में पहिला पत्र तुम्हें लिख चुका हूं। इस पत्र में मैं तुम्हें पीने के जल के विषय में लिख रहा हूं। तुम उबालकर तथा छानकर जल पीते हो यह बढ़ी अच्छी बात है क्योंकि जल जीवन का आधार है यह ज (जन्म से) ल (लय) जीवन पर्यन्त यह काम देता है। तुम्हारे लिए जल शोधन इसलिए आवश्यक है क्योंकि पहाड़ का पानी बहुत भारी होता है यदि जल को ताम्बे के पात्र में रखा जाये तो और भी गुणकारी होता है। इसे और भी हल्का करने का उपाय यह है कि पीने के पात्र में पानी में फिटकरी की डली लेकर उसे पात्र में ३-४ बार घुमाकर बाहर रख दो तथा डली का कपूर किसी डिबिया में बंद रखो और उसमें से बहुत छोटा सा अंश जल मे छोड़ दो इससे जल का स्वाद तथा गुण बढ़ जाते हैं। मैं पहिले पत्रो में लिख चुका हूं कि हमें प्रतिदिन ३ लीटर पानी शरीर में पहुचा देना चाहिए। समय स्वयं भी निश्चय कर सकते हो। फिर भी मैं सुझाव देता हूं:-

१. सोकर उठनें के बाद १ गिलास पानी पीकर धींरे धींरे कुछ देर ठहर कर शौच क्रिया सम्पन्न करनी चाहिए।

२. भोजन से १ या २ घंटे पूर्व १ गिलास पानी पींने से गला तथा पक्वाशय स्वच्छ हो जाते है।

३. भोजन करते समय आवश्यकतानुसार पानी लेना चाहिए परन्तु भोजन करके तुरन्त जल नहीं पीना चाहिए 'भोजनान्ते विषं वारि'।

४. यदि चाय पीने की आदत है तो चाय पीने से पूर्व पानी पी लेना हितकर है। सोने से पूर्व दूध पीना चाहिए परन्तु दूध पीने के पश्चात कुल्ला अवश्य करना चाहिए। दूध बहुत देर का रखा हुआ ठण्डा होने पर नहीं पीना चाहिए। दूध सिप करके पीने से बहुत लाभकारी होता

है। यदि तुम्हे यह सिलसिला पसन्द हो तो तुम्हारा पत्र प्राप्त होने पर मैं उसे चालू रख सकता हूं।

देवी जी को आशीर्वाद

जब तक गंग जमन जल धारा।
अचल रहे अहिवात तुम्हारा।

अपने पति के शरीर पर विशेष रूप से कमर पर सरसों का तेल मलना मत भूलना। दोनों पुत्रियों को आशीर्वाद।

शुभकाम,

तुम्हारा हितैषी
वि.सा.दीक्षित
द्वारा पाल प्रवीण
हस्तिनापुर

प्रिय लाल मणि,

स्वस्ति ते अस्तु।

तुम्हारा ४ जुलाई का पत्र प्राप्त हुआ। पढ़कर गद् गद् हो गया। तुम्हारे पूर्व पत्रों से मुझे सन्तोष नहीं होता परन्तु इस पत्र को पढ़ कर मुझे विश्वास हो गया कि तुम ठीक रास्ते पर चल पड़े हो। कारण कि तुम केदारनाथ बद्रीनाथ हो आए हो और स्वाध्याय शील हो गए हो। दीक्षांत समय पर प्राचीन काल में गुरु जो आशीर्वादात्मक उपदेश देते थे उसमें से एक वचन यह होता था **स्वाध्यायान् म प्रमदः** तुम्हारे पत्र से पता चलता है कि तुम स्वाध्याय कर रहे हो। बद्रीनाथ यात्रा में तुम दोनो को जो कष्ट हुआ वह तो एक नमूना था उस सन्देश का कि ऐसी यात्राएं बड़े कष्ट द्वारा सम्पन्न होती है। तुम्हारे पत्र से ऐसा प्रतीत होता है कि तुम अपने वर्तमान निवास स्थान से बढ़कर आश्रमों को समझते हो। मैं भी ऐसा ही सोचा करता था और अनेक आश्रमों में जाकर, रहकर और देखकर इस नतीजे पर पहुचा हूं कि यह आश्रम धर्म की आड़ में दुकानदारी चला रहे है कहीं भी सच्चे धर्म का न तो पालन होता है और न उपदेश होता है। ज्ञान विहीन जीवन से उकताए हुए लोगो को भ्रमजाल में फंसाकर अपना उल्लू

सीधा करते है। मैं तुम्हे अपने लक्ष्य से विरत करने के लिए यह नहीं लिख रहा हूं। बल्कि तुम्हारा सच्चा हितैषी होने के कारण तुम्हें उचित मार्ग दर्शन दे रहा हूं यद्यपि मैं जानता हूं कि तुम विवेकशील और श्रद्धालु हो तुम्हें किसी के उपदेश की आवश्यकता नहीं है। स्वाध्याय शील व्यक्ति के लिए श्रेष्ठ पुस्तकों की कमी नहीं है। मानव मननशील प्राणी है वह मनन करके श्रेयस्कर मार्ग का अनुसरण कर सकता है। मनुष्य के अतिरिक्त जितनी भी योनियां है वे सब भोग योनियां है। जैसा किया है उसके अनुसार ही फल भोगने के लिए उसे वह योनि प्रदान की जाती है । **अवश्यमेव भोक्तव्यम् कृतंकर्मशुभाशुभम्।** परन्तु मानव योनि कर्म करने के लिए धर्म द्वारा अर्थ प्राप्त करने तथा शुभ कामनाओं द्वारा मोक्ष प्राप्त करने के लिए दी गई है अतः यह कर्म योनि कहलाती है शेष सब योनियां भोग योनियां है अर्थात शुभ व अशुभ सब प्रकार के कर्मों का फल भोगने के लिए दी गई है। धर्म कर्म काम मोक्ष इसीलिए साधन चतुष्ठ्य कहलाते है मैं तुम्हारी मानसिक दशा कोजो कुछ भी समझ सका हूं उसका भाव यही है कि एक ही जगह रहते रहते जी उकता जाता है भ्रमण की इच्छा जाग्रत हो जाती है उसी की पूर्ति हेतु लोग आश्रमों तीर्थो में जाते हैं अतः तुम उस इच्छा की पूर्ति के लिए बाहर जाना ही चाहते हो तोसपत्नीक कुछ दिन के लिए यहां आ जाओं और उस आर्य समाज में कुछ दिन रहो जो तुम्हारा अपना है। पढ़ने के लिए मैने अपना पूरा पुस्तकालय आर्य समाज को ही दे दिया है। यहां से ६ मील ऊपर की ओर गंगा नदी से जो नहर निकली है वह हस्तिनापुर होती हुई गढ़ मुक्तेश्वर तक गई है। अतः यहां का जल गंगा जल का स्रोत ही है सुपाच्च है मेरे कई मित्र जो बहुत भ्रमण के कार्य में रहते है वे यहां आकर २-२ दिन में ही रोगमुक्त होकर चले जाते है। जल के अतिरिक्त वायु इतनी पवित्र और सुखप्रद है कि यहां वन श्रृंखला चारो ओर फैली हुई है। यहां के जैन मन्दिर समस्त भारत में प्रसिद्ध हैं। अनेक विरक्त साधु यहाँ एकान्त सेवन करते रहते हैं, अतः मेरा सुझाव है कि तुम दोनो कुछ दिन के लिए यहां आ जाओ और सच्चा उपदेश यहाँ के वातावरण से ग्रहण करके जब वापिस जाओ तो तुम्हें अपने पुराने घर में ही आश्रम का आनन्द

आने लगेगा। यहां हम सभी व पाल प्रवीण तुम्हारी सुविधाओं का ध्यान रखेंगे आर्य समाज में कई साधको ने अपनी निजी कुटियां भी बना रखी है। इसी कारण यह आर्य समाज आर्यवानप्रस्थाश्रम भी है। गुरू दक्षिणा में भारतीय प्रथा के अनुसार गुरु के पास केवल समिधाओं का बण्डल लेकर ही जाने की प्रथा उपनिषदों में है। धन की भेंट तुम यदि दान प्रवृत्ति से प्रेरित होकर धार्मिक कार्य में सहयोग देने के लिए देते हो तो वह स्वीकार्य तथा प्रशंसनीय है पाल प्रवीण ने आज यहाँ आकर तुम्हारा रू. २५००० का ड्राफ्ट लाकर दिया उसके लिए मैं तुम्हे धन्यवाद पूर्वक आशीर्वाद देता हूं कि तुम दोनो स्वस्थ तथा दीर्घायु रहो।

मैं सदैव तुम्हारे पत्रों की प्रतीक्षा यह जानने के लिए करता रहता हूं कि मेरे सुझाए हुए किसी प्रयास से तुम्हें कुछ लाभ हुआ या नहीं उस दिशा में मुझे कितनी निराशा होती है इसका तुम अनुमान नहीं कर सकते।

शुभकाम

श्री लालमणि जोशी
हल्द्वानी

वि.सा. दीक्षित
हस्तिनापुर

प्रिय लालमणि जी,

सस्नेह नमस्ते

बहुत दिनो से तुम्हारा कुशल पत्र न पाने के कारण तुम्हें पत्र लिखने बैठा ही था कि तुम्हारा रजिस्टर्ड पत्र उसी प्रकार प्राप्त हुआ जिस प्रकार प्रतीक्षारत श्री राम को संजीवनी बूटी लेकर हनुमान आ पहुंचे थे। गुरु पूर्णिमा नये गुरुओं के लिए होती है। पुराने गुरु तो सदैव अपने शिष्यों की शुभकामना करते रहते हैं फिर भी तुम्हारी भेंट के लिए धन्यवाद पूर्वक आशीर्वाद देता हूं कि तुम्हारी युगल जोड़ी चिरजीवी हो सुखी रहो प्रसन्न रहो और स्वस्थ रहो।

मेरे जीवन के दो नियम रहे है।

१. अपने वेतन में ही निर्वाह करना अतः तुम्हारी भेंट स्वीकार कर

भगवद अर्पण कर रहा हूं अर्थात वानप्रस्थाश्रम में लगा रहा हूं अतः तुम्हे पुण्य भी प्राप्त होगा।

२. पक्षपात न करने का था मैने जीवन भर इसे निबाहान स्वयं किसी से पक्षपात किया और न सहन किया परन्तु उस नियम का इस पत्र से कोई सम्बन्ध नहीं है।

मुझे सदैव तुम्हारे स्वास्थ्य की चिंता बनी रहती है। यदि तुम इस विषय में लिखते रहो तो मेरी चिंता दूर हो जाएगी। यही सच्ची गुरु दक्षिणा है। तुम यदि अपने किसी भी रोग के सम्बन्ध में लिखते तो मै उपचार का सुझाव दे देता। तुम सुखी स्वस्थ और दीर्घ जीवी होओ यही मेरी शुभ कामना है। पति को दिया हुआ आशीर्वाद पत्नि को स्वतः प्राप्त हो जाता है।

वे भी स्वस्थ रहें तो तुम्हारा Well earned rest अर्थात अवकाश प्राप्त सफल होता है।

इस पत्र का कुछ अंश जगदीश के द्वारा लिखा गया था जिसे मैं प्रवीण के द्वारा पूरा कर रहा हूं अतः प्रवीण की ओर से भी तुम दोनो के लिए शुभकामना प्राप्त हो।

श्री लालमणि जोशी तुम्हारा विद्यासागर दीक्षित
हल्द्वानी

परम पूज्य गुरुजी का पत्र श्री नारायण सिंह बिष्ट को प्रेषित

प्रिय नारायण सिंह,
सस्नेह नमस्ते।

अत्रकुशलम् तत्रास्तु। तुम्हारे दोनो पत्र २ व १० जनवरी को मिले। नववर्ष व जन्मवर्षगांठ पर आपकी शुभकामनाओं के लिए धन्यवाद। मेरी ओर से भी शुभकामना स्वीकार करें। शरीर-मरण क्षरण धर्मा है, आत्मा अमर है। शरीर रथ है आत्मा रथी है। इतने से ही तुम दोनो का अंतर समझ सकते हो। तुम्हारे वेदाध्ययन का विचार करके मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है। परन्तु कुछ बातों के विषय में तुम्हे सलाह देना मेरा कर्त्तव्य है। कब पढ़ना, कितनी

देर पढ़ना, कैसी रोशनी में पढ़ना इत्यादि बातों का ध्यान रखना नितान्त आवश्यक है। यदि आंखों में पानी उतरने लगा है तो तुरन्त इसका Operation करा लो अन्यथा देरी होने पर अधिक कष्ट होगा। काला मोतिया भी हो सकता है जिसका इलाज असम्भव नहीं तो परम कठिन तथा व्यय साध्य अवश्य है। नेत्र ज्योति की रक्षा करना जीवन का सबसे पहिला साध्य है।

स्तुतामया वरदा ...यह वेद मंत्र वेद की कुंजी है। इसके दो भाग है- १. ऋषि द्वारा वेद स्तुति की महत्ता बताई गई है। २. ऋषि द्वारा आदेश दिया गया है कि वेद स्तुति की प्राप्ति के बाद जो सात रत्न प्राप्त होते हैं उन्हे जनता को देकर ही ब्रह्म लोक को प्राप्त कर सकते हो। मन्त्र मनन करने की चीज है केवल शब्दार्थ से काम नहीं चलेगा। चिंतन किया करो। वेद माता को माता मानकर स्तुति किया करो अर्थ स्वतः ही स्पष्ट हो जाएगा। प्रिय शैलेश के विषय में कोई चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। १. निजीकरण के पश्चात भी कार्यकर्ताओं की आवश्यकता होगी - अनुभव के आधार पर शैलेश को स्वयं स्थान वांछित पोस्ट मिल जाएगी। २. विदेश की चिंता न करो जहां उसके जाने से तुम्हे कुछ परेशानी होगी इससे कुछ लाभ भी मिल सकता है। यदि सभी सुविधायें उपलब्ध हो तो अवश्य चले जाना चाहिए। ३. मेरे विचार से उन्हे यहां ही सम्मानपूर्वक स्थान मिल जाएगा। मेरे स्वास्थ्य के विषय में अधिक चिंता मत करो। वृद्धावस्था में छोटे -मोटे रोग होना साधारण बात है। मेरठ में व यहां १३-१४ जनवरी २००१ में एक बहुत अच्छा उत्सव हुआ था उसमें राधा बिटिया को एक विशेष वक्ता मुख्य अतिथ के रूप में आमंत्रित किया गया था। वह अपनी छोटी-बहिन देवी ओस्लो वाली व मन्त्री श्री दीवान सिंह की पुत्री वीरबाला सहित प्रवीण के साथ यहाँ आई थी। बहुत ही अच्छा लगा - काश तुम भी आ जाते, बहुत सी पुरानी बातें हुई। देवि कमला को व बच्चों को आशीर्वाद

शुभकाम,
वि०सा०दीक्षित
लेखक पाल प्रवीण

श्री नारायण सिंह बिष्ट
रामगढ़, नैनीताल

प्रिय नारायण सिंह

स्वस्तिते अस्तु।

तुम्हारा जुलाई का पत्र मिला।

क्षत्रिय कुल में जन्मे बाबा हिमालय की गोद में पले फल फूलों से रचे पचे होते हुए भी तुम्हारा स्वास्थ मेरी चिंता का कारण बना रहता है। तुम स्वाध्याय प्रेमी भी हो और धर्म में रुचि भी रखते हो परन्तु फिर भी तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। साठ वर्ष जीवन का यौवन काल कहलाता है। साठा सो पाठा यह एक प्राचीन कहावत है परन्तु तुम ७० वर्ष की आयु में ही ह्रास के लक्षण बताने लगे हो। यह बड़े दुख की बात है। भारतीय आदर्श तो शतायु होने का है। जीवेम शरदः शतम, भूयश्च शरदः शतात। ६०० वर्ष की आयु तक के उदाहरण भारतीय इतिहास में मिलते हैं। सोचो, समझो और प्रयास करो कि तुम स्वस्थ रह सको। आर्याभिविनय महर्षि दयानन्दकी प्रथम पुस्तकहै जो चारो वेदों के गहन अध्ययन के बाद लिखी गई थी। इसे ध्यानपूर्वक अध्ययन करते रहो। मूल मन्त्र पर ध्यान दो और प्रिंटिंग की त्रुटियों पर ध्यान मत दो। मुर्गा भी कूड़े में से अन्नकण निकाल लेता है और कूड़े को अपने पंजो से दूर फेंक देता है मानव तो भगवान की सर्वश्रेष्ठ कृति है। उसे यदि उपर्युक्त परिस्थितियां प्राप्त हो जावे तों धन्य हो जाए। मैं तो प्रायः रामगढ़ का स्मरण करते करते ध्यान विभोर हो जाता हूं प्रभु मुझे अगला जन्म ऐसे ही स्थान पर दें यही मेरी कामना रहती है। देवी कमला जी तथा अलका बिटिया को शुभाशीर्वाद प्राप्त हो। आज पाल प्रवीण यहां आ पहुंचा है अतः तुम्हारे पत्र का उत्तर उसके द्वारा ही लिखवा रहा हूं। मेरे लिखने और पढ़ने की पूर्ण सामर्थ्य समाप्त हो चुकी है अतः मुझे मित्रों के पत्रों का उत्तर देने में भी किसी का सहारा लेना पड़ता है। प्रिय शैलेश जी उत्सव में यहां आए थे और केवल चलते समय मुझसे मिले व कहने लगे कि मैं आपको कभी अपने साथ ले जाऊँगा। ईश्वर उसे सपरिवार सानन्द रखे।

शुभकाम

श्री नारायण सिंह बिष्ट — वि० सा० दीक्षित

रामगढ़, नैनीताल

प्रियवर बिष्ट जी,

सस्नेह नमस्ते।

आजकल प्रिय पाल प्रवीण यहां आए हुए हैं। वे मेरे द्वारा प्राप्त किए हुए पत्रों के संग्रह को पढ़ रहे हैं। उन्होंने तुम्हारे सभी पत्र ४-५ वर्षों में जो मिले हैं पढ़े हैं विशेष कर तुम्हारे २५-८-९६ के पत्र से बहुत प्रभावित हुए है जिसे मुझे पढ़ कर सुनाया। इस पत्र में तुमने मेरे द्वारा भेजे गए मन्त्रों की व्याख्या व अन्य पठन सामग्री जो तुम्हे अच्दी लगी, उसे गुरु प्रसाद नाम से एक छोटी पुस्तिका का प्रकाशित करने की आज्ञा मांगी है।

कोई नेकी करे और पूछ पूछकर करे तो इससे बढ़ कर और क्याबात हो सकती है? तुम सहर्ष इस कार्य को कर सकते हो। मैने ६-७ दिन पूर्व तुम्हे एक पत्र प्रवीण के द्वारा लिखवाया था आशा है मिला होगा। आशा है तुम्हारे परिवार में सब स्वस्थ होगें कमला जी का पैर ठीक हो गया होगा। प्रिय शैलेश ने इच्छा व्यक्त की थी कि वह मुझे दो एक दिन के लिए दिल्ली ले जाएगा। मौसम ठीक होने पर तुम और पाल प्रवीण भी साथ हो तो गोष्ठीं में आनन्द आवेगा वहीं प्रियवीर बाला रस्तोगी भी मिल जावेगी यदि यह सूट न करे तो आप लोग हस्तिनापुर आवें। कमला जी को नमस्ते बच्चों को आशीर्वाद।

शुभकाम

वि० सा० दीक्षित

श्री नारायण सिंह बिष्ट
रामगढ़, नैनीताल

प्रिय नारायण सिंह,

प्रभु का विधान मंगलमय है। उसके मंगलमय विधान में आस्था रखना ही आस्तिकता है तथा हर प्रकार से मंगलदाता हैं। जब मनुष्य के हृदय में यह बात दृढ़ता से घर कर लेती है तो उसकी बुद्धि स्थिर हो जाती है और वह निश्चिन्त तथा अभय हो जाता है। सभी प्रकार के शुभ उसे अनायास

ही प्राप्त होने लगते है। स्वास्थ्य पर बराबर ध्यान देना चाहिए क्योंकि शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम जीवन साधना का प्रथम सोपान तो शरीर ही है। यहां आत्मा अमर है ६० वर्ष की अवस्था प्राप्त होते ही सर्व प्रथम भोजन पर ध्यान देना चाहिए। जितना भोजन जीवन भर करते रहे हैं, उसमें कुछ कमी करनी चाहिए। गरिष्ठ भोजन का भी परित्याग करना चाहिए।

मेरे स्वास्थ्य की चिन्ता मत करो। मैं अपना पूर्ण जीवन सेवा में लगा रहा हूं। जीवन की डोर उसके हाथ में है। रामगढ़ रहने का विचार शुभ है यहां रहते हुए, स्वास्थ्य पर ध्यान देते हुए, प्रातः सायं कुछ समय चिन्तन में लगाते हुए कुछ समय आस पड़ोस के बच्चों की सेवा में जरूर लगाओ। यह शरीर समाज का है। अतः समाज की सेवा करना कर्मयोग है। यह शरीर प्रतिक्षण क्षरण होता रहता है। अतः इसका जितना उपयोग कर लिया जाये, यह ज्ञान योग है। शरीर परिवर्तनशील है, परन्तु उसमें रहने वाली आत्मा अजर, अमर अविनाशी है। यह जानकर प्रभु समर्पण करके निश्चिन्त हो जाना भक्ति योग है।

प्रतिष्ठा में — शुभकाम
श्री नारायण सिंह बिष्ट — विद्यासागर दीक्षित
रामगढ़, जिला नैनीताल
प्रिय नारायण सिंह

मेरा सारा समय आध्यात्मिक पुस्तकें पढ़ने में व्यतीत होता है, उसी मार्ग पर तुम्हें ले जाने की मेरी इच्छा थी। परन्तु मुख्य मंत्री उ०प्र० की विचार हीन कार्यवाही के कारण भारत के सिरमौर हिमालय को अग्नि की लपटें झेलनें के लिए विवश होना पड़ रहा है। इसे देखकर राष्ट्रप्रेमी दुःखी है। अतः मेरे अध्ययन में भी बाधा पड़ी है और मैं तुम्हे भी इसी दिशा में प्रेरित करना चाहिता हूं। भारत माता एक जीवन्त सत्ता है। जैसे मनुष्य अथवा अन्य जीवित प्राणियों के विभिन्न अंग होते है उनमें विषमता होती है। जैसे हाथ कीपांचों उंगलियां विषम है-सभी इन्द्रियों में विषमता है। आंख देख सकती है पर सूंघ नहीं सकती। इसी प्रकार सब इन्द्रियों में विषमता

है। परन्तु व्यवहार में विषमता लेशमात्र भी नहीं। सभी अंग समन्वय से बंधे है। परन्तु विषमता मे भी एकता दृढ़ है। इसीलिए भारत माता अनेक प्रदेश, अनेक भाषा, अनेक रहन-सहन के बावजूद भी एक ही माता है। उसकी पूजा हमारा कर्त्तव्य है।

जिन लोगों ने इस बात को भुला दिया था उन्हे माता के अंगो का खण्ड करते हुए दर्द नहीं हुआ था। उसी विभाजन की विभीषिका हम भुगत रहे है। जो अनर्थ अब हो रहा है वह तो भारत के अखण्ड रहते हुए हो ही नहीं सकता था। अस्तु मैं दुःखी हूं और आशा करता हूं कि तुम तथा तुम्हारे अन्य बन्धु भी दुःखी होगे। दुःखी होने से काम नहीं चलेगा। कर्त्तव्य पथ पर आरूढ़ हो जाओं। मातृ सेवा - राष्ट्र सेवा - का एक नया अवसर आया है। यह भारत के स्वतंत्रता संग्राम से भी अधिक महत्वपूर्ण है। मुझे तुम्हारे साथियों के डाक पते नहीं प्राप्त है। अतः तुम्हारे द्वारा ही मैं यह संदेश उन तक पहुंचाना चाहता हूं। अपने व्यक्तिगत सुखों को त्याग कर संगठित होकर प्रत्येक बलिदान के लिए तैयार रहो। संगठित प्रयत्न करो। जिस भारत माता ने तुम्हें इस योग्य बनाया है, उसका ऋण चुकाने का यही अवसर हैं।

शुभकाम

विद्यासागर दीक्षित

श्री नारायण सिंह बिष्ट
रामगढ़, जिला नैनीताल

हस्तिनापुर

आदरणीय बन्धु द्विवेदी जी,

नमस्ते।

आपका प्रेम अपनत्व मुझे सदैवमिलता रहा है।

आपके सभी ग्रंथ वेद मन्दिर में आरदपूर्वक स्थापित कर दिये गये है। वेदामृतम का पूरा सैट लोगों ने बहुत पसंद किया। एक कमरा केवल इस कार्य के लिए ही सुरक्षित रखा गया है कि जो लोग वेदाध्ययन करना चाहें वे उससे लाभ उठा सकें। आपके ग्रन्थों के अतिरिक्त स्वामी विद्यानन्द

जी विदेह के सभी भाष्य तथा चारों वेद अर्थ सहित वेद मंदिर मे रखे गए है। कुछ लोग सरकार के खर्चे से विदेश यात्रा करते हैं और अधिक से अधिक मौरिशस तक घूमकर चले आते हैं। परन्तु आपने अपने खर्चे से विश्व भ्रमण करके जो वर्णन किया है वह अनुपम है। अभी आप जो लिख रहे हैं वह परम सराहनीय है। आपने अपना जीवन ही नहीं अपितु अपने पूरे परिवार कोएक आदर्श परिवार बना दिया है। वेद सम्बन्धी अभी तक आपने जो ग्रन्थ लिखे है उनके लिए आपने पूरे वेद का मन्थन कर दिया अतः अब आपको चतुर्वेदी कहना सार्थक है।

किसी जमाने में भारत वर्ष की एक विद्वत परिषद होती थी वह इस प्रकार की उपाधियां योग्यता के आधार पर प्रदान करती थी। क्या इस युग में ऐसी कोई संस्था नहीं बन सकती? इसके अभाव में वह समय आ जाएगा जब बिना पढ़े लिखे भी वंश परम्परा के आधार पर द्विवेदी-चतुर्वेदी तक कहलाने लगेंगे और जो आपकी तरह चतुर्वेदी कहलाने के अधिकारी है वे द्विवेदी बनकर रह जायेंगे। मैं आपके सुन्दर स्वास्थ्य और दीर्घजीवन की कामना प्रभु से करता हूं।

पुनश्चः उपर्युक्त पत्र लिखने के पश्चात पाल प्रवीण ने मुझे आपका वह पत्र भी दिखलाया जो आपने मेरे विषय में लिखा है। पाल प्रवीण इस प्रकार की जीवनियां लिखकर प्रचारित करते रहते है। उसी सिलसिले में उन्होने मेरे विषय में आपसे अनुरोध किया था। आपने जो कुछ लिखा है उसके विषय में किन शब्दें में धन्यवाद दूं? रामगढ़ का जीवन आजीविका के लिए नहीं था। वह तो एक मिशन था जो बीच में ही छोड़ना पड़ा। उनका जिक्र करने का समय नहीं है मैं तो इसे ईश्वरेच्छा ही समझता हूं क्योंकि रामगढ़ छोड़ने के बाद मैं अपने जीवन में जो उपलब्धियां प्राप्त कर सका वे रामगढ़ रहते हुए शायद सम्भव न होती। वहां से आने के पश्चात् मैने अपनी मातृसंस्था की सेवा करके उसे एक श्रेष्ठ विज्ञान डिग्री कॉलिज तक पहुंचा दिया। विधान परिषद की सदस्यता भी इसी जीवन की उपलब्धि है। दो टर्म अर्थात ६ वर्ष तक उत्तर प्रदेशीय माध्यमिक शिक्षक संघ का अध्यक्ष रहकर प्रदेश के कोने कोने तक घूम आया।

अब १६ जनवरी २००१ में ६४ वर्ष समाप्त हो रहे है। नेत्र ज्योति कम हो जाने के कारण लिखने पढ़ने का काम बन्द हो गया है। परिवार के सभी सदस्यों को मेरा आशीर्वाद।

प्रतिष्ठा में
पद्मश्री डा० कपिल देव द्विवेदी
ज्ञानपुर (भदोही)

शुभकाम्
वि.सा. दीक्षित
लेखक पाल प्रवीण

आदरणीय भृङ्ग जी,

सादर नमस्ते।

विद्यार्थी जीवन में पंचतंत्र पढ़ा था। उसकी बहुत सी कहानियां जनसाधारण मे प्रचलित रही है। कमाई धन्धे में फंसने के बाद दूसरे ही तंत्र में फंसा रह गया। जीवन के अंतिम छोर पर अब पुनः आपकी रचना पंचतन्त्र के दर्शन करके बड़ी प्रसन्नता हुई। आपके द्वारा प्रदत्त पंचतन्त्र तथा जयहिन्द के दर्शन कर के मुग्ध हो गया। दोनों का कलेवर बहुत सुन्दर बना है। हृदय में हिलोर उठी लेकिन नेत्र ज्योंति न होने के कारण लहर किनारा छूकर ही लौट गई। दोनो पुस्तकें आर्य समाज के पुस्तकालय को भेंट कर दी गई। आज प्रातः रविवासरीय यज्ञ के पश्चात् प्रिय प्रवीण ने पंचतन्त्र की प्रस्तावना आचार्य दीपंकर के द्वारा लिखित पढ़कर सुनाई। दीपंकर जी के विषय में अधिक क्या कहूं? वास्तव में आपने पंचतन्त्र को नवजीवन प्रदान कर दिया है। खेद यही है कि मैं स्वयं उसे पढ़ नहीं सकता। पढ़ना-लिखना दोनों ही विदा हो गए है। कभी आपके द्वारा हीसुनने का सौभाग्य मिल जाय तो मैंधन्य हो जाऊँ। देखें यह अवसर कब मिलता है?

सादर,

आपका हितैषी
वि० सा० दीक्षित

श्री बसन्त सिंह भृङ्ग
ग्राम कुण्डा, हस्तिनापुर

बंधुवर भृङ्ग जी सप्रेम नमस्ते,

राम प्रसाद बिस्मिल के विषय में श्री मदन लाल वर्मा क्रान्त ने चार खण्डों में एक शोध तथा संकलन का सम्पादन किया है। मवाना के श्री विष्णु शरण दुबलिश के सम्पर्क में रहने के कारण बिस्मिल मेरा प्रिय नेता रहा है। जेल में सभी साथी बिस्मिल की कवितायें गाते रहते थे। आपकी इच्छा थी कि बिस्मिल की कविताओं का संग्रह करके छपवाया जाये। मुझे इस ग्रंथ को पढ़कर इतना आनन्द प्राप्त हुआ कि कुछ वर्णन नहीं किया जा सकता। बिना पूर्ण किये इसे छोड़ नहीं सकता। परन्तु आपके बिस्मिल के प्रति प्रेम को देखते हुए मैं इसे अधूरा ही छोड़कर पहिला खण्ड आपकी सेवा में भेज रहा हूं। इस खण्ड में तो अनेक कविताएँ है। अन्य खण्डों में भी बहुत सामग्री है। इस खण्ड के बाद दूसरे खण्ड भी क्रमवार आपकी सेवा में भेज दूंगा। मेरी इच्छा हुई कि दूसरे खण्ड को भी भेज दूं अतः वह भी प्रस्तुत है।

प्रतिष्ठा में
श्री बसन्त सिंह भृङ्ग
ग्राम कुण्डा, हस्तिनापुर

भवदीय
वि० सा० दीक्षित
हस्तिनापुरत

० ०

आदरणीय भृङ्ग जी, हस्तिनापुर
सप्रेम नमस्ते।

कल की डाक में आपका कार्ड मिला। यह जानकर दुःख हुआ कि आप ज्वर की दशा में ही १० मई को मेरठ गये थे जिस कारण आपका ज्वर और बढ़ गया। आप अपने मनोबल से बहुत काम करते रहते हैं परन्तु शरीर पर अधिक जोर डालना उचित नहीं। मर्यादा का ध्यान भी रखना चाहिए। श्री हाकिम राय जी को मैंने आज ही लिखित धन्यवाद भेज दिया है। मैं स्वयं तो जा नहीं पाता अतः पुत्र जगदीश का सहारा लिया।

आचार्य दीपंकर जी के ग्रंथ की प्रति मुझे मिल गई है। प्रथम तो दर्शन मात्र से ही आनन्द आ गया। Getup तथा मुद्रण बहुत सुन्दर है सामग्री भी बहुत सुन्दर ढंग से संकलित की है। यह एक संग्रहणीय ग्रंथ

बन गया है। समय मिला तो इसे पूरा पढ़ूंगा और आचार्य जी को बधाई दूंगा। श्री धर्मराज सिंह जी भले ही देर से पहुंचे परन्तु उन्होंने वह सब तो देखा ही होगा जो उनके स्वागत के लिए बच्चों ने बनाया था। स्वागत की खान-पान की आपके यहां कमी रहती ही नहीं। देरी से आने के कारण लोग वहां उपस्थित नहीं रह सके तो इसमें इनका कोई दोष नहीं है।उन्होंने स्वयं अनुभव किया होगा कि किस प्रकार की तैयारी आपने की थी। फिर आप आयोजन को सारहीन क्यों मानते हैं? कोई हृदयहीन ही इस आयोजन को सारहीन समझेगा। हम तो सब आपकी सहृदयता की हृदय से सराहना करते हैं। आप पर गर्व करते हैं और सदैव आपके स्वस्थ रहते हुए चिरायु होने की कामना करते हैं। ज्वर मुक्त होने के पश्चात किसी दिन हस्तिनापुर आओ तो मेरी कुटिया पर अवश्य पधारने की कृपा करना।

आर्य समाज में दानदाताओं के नाम के पत्थर लग गये हैं बहुत सुन्दर है। मौसम अच्छा होने पर उत्सव किया जायेगा।

शुभकाम
वि० सा० दीक्षित

प्रतिष्ठा में
बसंन्त सिंह भृङ्ग
ग्राम-कुण्डा
हस्तिनापुर

हस्तिनापुर
१५ जून १९९९

परम प्रिय श्री शर्मा जी,
सस्नेह नमस्ते।

मेरे प्रस्ताव के सम्बंध में आपने जो उत्तर दिया है उसके विषय में मेरा निवेदन है कि मैं पूज्य विदेह जी का वह भक्त हूं जिस पर उन्होनें अपार प्रेम और आशीर्वाद की वर्षा की थी। उनकी बड़ी उत्कट इच्छा थी कि मैं उनके मिशन में जुट जाऊँ। मेरी भी हार्दिक इच्छा थी कि मैं ऐसा करके अपना जीवन सफल बना लूं परन्तु मेरी समस्या विकट थी, बनी रही और अब भी वैसी ही विकट बनी हुई है।

उस समय नौकरी छोड़कर उनके पास पहुंचने की इच्छा होते हुए भी मै इसलिए नहीं आ सका क्योंकि तब तक मैं परिवार के कर्त्तव्य भार से मुक्त नहीं हुआ था और मेरे परिवार में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं था जो मेरी जिम्मेदारी को ओढ़ लेता। मैंने यह भी सोचा कि पत्नी को ही आश्रम की सेवा में छोड़ दूं क्योंकि पूज्य स्वामी जी उनकी भक्ति और सेवा करने से संतुष्ट थे परन्तु वह भी नहीं हो सका क्योंकि उसे दिल्ली की जलवायु अनुकूल नहीं आई और उसे नर्सिंग होम की शरण लेनी पड़ी। इसके अतिरिक्त वह संग्रहणी की चिर रोगी है। रात्रि में समय कुसमय शौचालय जाना पड़ता है और वह जब भी जाती थी तोआश्रम वासियों की निद्रा भंग हो जाती थी, आश्रम व्यवस्था बिगड़ जाती थी। अतः उन्हें मैने अपने पास रखना ही उचित समझा अतिशय छुआ छूत और सफाई का मीनिया होने के कारण उन्हे ३ जनवरी १९९० को दायें अंग का पक्षाघात हो गया तबसे मैं स्वयं बीमार होते हुए भी उनकी सेवा में संलग्न हूं। मेरे भी तीन बार पेट का आपरेशन हो चुका है। ८८वां वर्ष समाप्त होने को आ रहा है। हमारे परिवार की आयु सीमा आ चुकी है पता नहीं कब अन्तिम क्षण आ जाए। कदाचित यह मेरा अन्तिम पत्र सिद्ध हो इसलिये जरा विस्तार से लिखकर आपके बहुमूल्य समय पर अतिक्रमण किया है। क्षमा प्रार्थी हूं।

वर्तमान परिस्थितियों को दखकर मैने अन्तिम तैयारी शुरू कर दी है। मै अपना निर्वाह अपनी पेंशन पर करता रहा हूं व बांटता रहा हूं। मेरा प्राविडेण्ट फण्ड तथा जीवन का जो शेष अंश है उसे परिवार के सदस्यों के नाम लिखकर छोड़ रहा हूं। उसी में से दस हजार रूपये मैंने पूज्य विदेह जी के ऋण से उऋण होने की दिशा में रख दिये है। आप जब भी चाहें तब मंगा लें। मैं तो आपको पूज्य विदेह जी के प्रतिरूप में ही देखता हूं।

मैं इस विषय में कोई शर्त नहीं लगाना चाहता था परन्तु स्वामी जी की उत्कट अभिलाषा एक स्थाई कोष के बनाने की थी और इसका सुन्दर तरीका जो मुझे सार्वदेशिक की योजना को देखकर सूझा वह मैंने उक्त शर्त के रूप में आपके पास भेजा था।

अतः यह राशि आपकी है। आप जिस प्रकार चाहें प्रयोग कर सकते हैं। यही पुनर्विचार है।

आपकी आज्ञा की प्रतीक्षा में,

प्रतिष्ठा में
श्री अभय देव शर्मा वेद संस्थान
राजोरी गार्डन, नई दिल्ली

आपका
विद्यासागर दीक्षित

प्रिय प्रवीण जी,

हस्तिनापुर

सस्नेह नमस्ते।

तुम्हारा अन्तर्देशीय दिनांक १२.८.६७ प्राप्त हुआ, धन्यवाद! रक्षा बंधन का आशीर्वाद सबको प्राप्त हो। मेरा काम यथावत चल रहा है। देवी जी तथा तुम्हारी भाभी उर्मिला जी भी प्रभु प्रेरणा से हम दोनों को सेवा ऋण के भार से मुक्त करके दिवंगत हो गई। सब उसी की कृपा है। कर्त्तव्य ही धर्म है, ईश्वर को धन्यवाद है कि उसने निर्मल बुद्धि प्रदान की है। लखनऊ में बैठे-बैठे भी तुम दोनों को मेरा कार्यभार संभालना है। अतः उसकी शिक्षा देने के लिए जगदीश सिंह का पत्र तथा मेरा उत्तर संलग्न है। अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि डाकघर के यमदूत जरा सा भी वजन बढ़ा हुआ देखकर Due कर देते है।

योगी के विषय में तुमने स्वयं भी भांप लिया था। यह योग्यता थोड़ा सा भी जागरूक रहने पर स्वतः आ जाती है यदि कोई कितनी भी धूर्तता करे यह उसे भांप लेता है। मैं आवश्यकता से अधिक तुम्हारी प्रशंसा नहीं करता हूं यह मेरा स्वभाव नहीं। वास्तविकता यह है कि तुम्हें अपना यह जन्म ही दिखाई देता है उसके अनुसार तुम अपने आपको एक अदद आदमी समझते हो। मुझे तुम्हारे पिछले अनेक जन्मों का ज्ञान है आश्चर्य मत करो। गीता में योगिराज श्रीकृष्ण ने अर्जुन से यही बात कही थी और जातक कथा में गौतम बुद्ध ने अनेक अनेक जन्मों की बात कही थी। योग शास्त्र में इस ज्ञान को प्राप्त करने की विधि लिखी है। मानव जन्म कुत्ते

बिल्ली का जन्म नहीं है। यह एक सतत प्रक्रिया का फल है। तुममें जो प्रतिभा है वह कई पीढ़ियों के संचित प्रयास का फल है। अधिक मिलने पर जिसे वेद ज्ञान हो गया वह कोई भी ग्रंथ पढ़े, अपने मतलब की वस्तु निकाल लेगा और शेष को गांधी जी की तरह कूड़ेदान में फेंक देगा। उसी प्रकार ज्ञानपूर्वक रामायण, गीता अथवा अन्य कोई भी ग्रंथ पढ़ो तुम अपना काम कर सकोगे परन्तु यह विवेक द्वारा ही होता है विवेक ईश्वर कृपा से प्राप्त होता है। कुछ योग के विषय में :- योग के लिए प्रयत्न मत करो। सहज भाव से लगे रहो सुई में धागा पिरोते समय बस हाथ साधकर लक्ष्य वेध कर लो। पहले शरीर-इन्द्रियों को साधो, फिर मन का नम्बर आयेगा। मन से परे मन का मीत मित्र है वह स्वतः तुम्हें गले लगा लेगा।

सबको शुभ कामना प्राप्त हो

श्री पाल प्रवीण
लखनऊ

वि.सा. दीक्षित
हस्तिनापुर
२५.११.०२

o o o o o o o o o o o o o o o o o o

प्यारी बिटिया कमलेश,
शुभाशीर्वाद,
हमारे शास्त्रों में सुन्दर जीवन दर्शन भरा है इसी कारण संसार के सभी साहित्यों में भारतीय साहित्य का सर्वोच्च स्थान है। उदाहरण के लए कटु से कटु अनुभव के प्रति सहन शक्ति का कितना सुन्दर उदाहरण है-

धीरज धर्म मित्र अरु नारी
आपतकाल परखिए चारी।
दुखः में सुमिरन सब करैं
सुख में करे ना कोय
जो सुख में सुमिरन करे
दुःख काहे को होय।

इसी आधार पर व्यक्ति का आकलन किया जाता है। तुमने जिस धैर्य से पुत्र वियोग को सहन किया है उसके आधार पर तुम उच्चकोटि में आती हो। नोएडा से तुम व प्रवीण मुझसे मिलने हस्तिनापुर ८ अक्टूबर २००२ को कुछ समय के लिए आये थे तो मैने देखा कि तुमने पुत्र वियोग होते हुए भी मुझसे शास्त्रों व वैदिक मन्त्रों के विषय में प्रश्न किए थे मै समायाभाव के कारण बहुत अधिक तो नही बता पाया था किन्तु तुम्हें सन्तुष्ट पाया था। इस पत्र के द्वारा मैं तुम्हारे धैर्य की पुनः प्रशंसा करता हूं। संक्षेप में दुःख हमें कष्ट तो पहुचाता है परन्तु उससे लाभ कुछ नहीं होता। धैर्य हमारी शक्ति को क्षीण नहीं होने देता इसी कारण इसका हमारे जीवन में बहुत उच्च्च स्थान है। हमारे शास्त्र ऐसे उदाहरणों से भरे हुए हैं जिनके आधार पर लोगों की प्रशंसा की जाती है। कुछ वर्ष पूर्व प्रिय अभिजीत अपनी पत्नी अदिति व उसकी दादी के साथ मुझसे मिलने हस्तिनापुर कुछ देर के लिए आये थे जिससे मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हूंई थी।

अन्त में गीता का साक्ष्य प्रस्तुत करता हूं-

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।

गीता २/२०

अर्थात यह आत्मा किसी काल में भी न जन्मता है और न मरता है अथवा न यह आत्मा होकर के फिर होने वाला है क्योंकि यह अजन्मा नित्य शाश्वत और पुरातन है शरीर के नाश होने पर भी यह नाश नहीं होता है।

तुम व प्रवीण लखनऊ में अपने दैनिक कार्यो वेद प्रचार आदि में व्यस्त रहते होंगे ऐसी मुझे आशा है।

शुभकाम

विद्यासागर दीक्षित
हस्तिनापुर मेरठ

श्रीमती कमलेश पाल
एम.एस. १२०
सेक्टर डी. अलीगंज, लखनऊ

हृदय के स्वर

हस्तिनापुर
८-३-८७

बन्धुवर कौशलजी, सप्रेम नमस्ते।

श्री शिवचरण शर्मा जी के सौजन्य से 'वीर भगतसिंह' के प्रथम आठ पृष्ठों की मुद्रित लिपि मिली तथा टेप रिकार्डर में आपके कण्ठ से उक्त पुस्तक के सुन्दर प्रसंगों का पाठ सुना। बहुत सुन्दर। मुद्रित रूप निराकार था तोइस रूप में वह साकार हो गया। इसको मित्रों को सुनाना चाहिए। भाई शिवचरण शर्मा जी की काव्यात्मक प्रतिक्रिया-

जिस विभूति को शैशव में ही आजादी से प्यार हो गया
उस बलिदानी का यश गायन, इस कृति काआधार हो गया
यह श्री कौशल की कविता है या फिर कविता का कौशल है
इसको पढ़ते पढ़ते सम्मुख भगत सिंह साकार हो गया

को सुनकर तो मैं गद गद हो गया। उनका सान्निध्य एक बड़ी भारी उपलब्धि हुई। कदाचित उनके कवि हृदय ने ही उन्हे पुस्तक के प्रकाशन का दायित्व सम्भालने को प्रेरित किया है।

मेरा हृदय तुम्हारे प्रेम से परिपूर्ण है। उससे यही स्वर निकलता है कि तुम चिरंजीवी, स्वस्थ सुखी सम्पन्न रहो।

ईश्वर से प्रार्थना है कि 'वीर भगत सिंह' भी उच्च स्थान प्राप्त करे। शुभं भूयात्

शुभकाम्

तुम्हारा हितैषी
विद्यासागर दीक्षित

वानप्रस्थाश्रम

विद्यासागर दीक्षित

विद्या वीथिका में बहिन हेमलता दयाल जी का लेख "गृहस्थ में ही वानप्रस्थ क्यों नही" पढ़कर प्रसन्नता हुई उनके विचार परम उपयोगी है। उन्होने वर्तमान युग की परिस्थतियों का ध्यान रखते हुए बहुत उपयोगी सुझाव दिए हैं और उनके विचार से गृहस्थ में रहते हुए भी वाप्रस्थाश्रम का निर्वाह किया जा सकता है और किया जाना चाहिए। इस विषय में मैं अपने कुछ विचार प्रस्तुत कर रहा हूं। वर्णाश्रम धर्म भारतीय संस्कृति का मूलाधार है। इस विषय पर बहुत साहित्य उपलब्ध है। महर्षि दयानन्द जी ने इसे आवश्यक समझ कर इसे संस्कार विधि में समुचित स्थान प्रदान क़िया है। उनके आदर्श के अनुसार पुरुषार्थ चतुष्ठ्यः का सम्पादन करना परमावश्यक है।

परन्त वर्तमान युग में वन तो कहां पशुओं के लिए घास के मैदान भी नहीं रहे। फिर वन में जाकर मनुष्य कैसे रह सकता है? साथ ही वानप्रस्थाश्रम का महत्व दिनों दिन बढ़ता जाता है। इसे समझाने के लिए कुछ मूल बातों को समझना आवश्यक है। वर्णाश्रम दो शब्दों से बना है वर्ण तथा आश्रम। वर्ण स्वेच्छा पर निर्भर करता है जैसे किशब्द के अर्थ से ही प्रकट है। वर्ण अर्थात जिसे वरण किया जाये। कोई जोर जबर नहीं सामाजिक दबाव नहीं गुण कर्म स्वभाव के अनुसार व्यक्ति को अपना वर्ण वरण करने की स्वतन्त्रता है परन्तु इसे जन्मना नहीं बना देना चाहिए अन्यथा इसका महत्व ही समाप्त हो जायेगा, जैसा आजकल हो रहा है। आश्रम स्वेच्छा पर निर्भर नहीं होता था। सामाजिक तकाजा होता था जैसे यदि कोई लड़का या लड़की विवाह सीमा को पार करके भी अविवाहित रह जाय तो अपवाद का पात्र बन जाता था अत आश्रम प्रणाली की रक्षा होती रहती थी। परिवारों का भी भला होता था और व्यक्तियों का भी भला होता था। आजकल जो सामाजिक कुरीतियां हमारे समाज मे घर करती जा रही है उनका मूल कारण उस पद्धति को तिलांजलि देना है। आज पचास वर्ष तो दूर मरणासन्न होने पर भी बूढ़े बुढ़िया तिजोरी की चाबी दाबे रहते है।

नव दम्पत्ति अपनी इच्छा के अनुसार कुछ नहीं कर सकती ज्यों ज्यों आयु बढ़ती जाती है त्यों त्यों तृष्णा भी बढ़ती जाती है। बच्चों की विवाह की आयु प्राप्त होने पर उनकी एक मात्र इच्छा अच्छा सहयोगी मिलने की होती है। परन्तु माता पिता धन चाहते है जिसके कारण बेमेल विवाह होते है और वृद्ध जनांकी इच्छापूर्ति न हो सके तो नववधू को मार डालने अथवा जलाने में भी उन्हें परहेज नहीं। गृहस्थ जो स्वर्गाश्रम कहलाता है वह कलहाश्रम बना हुआ है। गृहस्थी का जीवन नर्क बन जाता है। न नवयुवक सुखी और न वृद्ध जन सुखी ।संस्कार कैसे बने? संस्कार विहीन बच्चे अनेक नशीली जहरीली दवाओं के शिकार बन कर जीवन नष्ट कर लेते है। इन सब बुराइयों से ऊब कर ही अब लोग वानप्रस्थाश्रम की ओर आकृष्ठ होने लगे हैं। जगह जगह निजी तथा सरकारी आश्रम बनने लगे है। वहां वन नही अपितु सब प्रकार कीं सुविधायें उपलब्ध होती है। अतः ऐसे आवास वानप्रस्थाश्रम नहीं अपितु आरामगाह हैं। नाम से काम नहीं चलेगा। मोक्ष प्राप्ति तो बहुत दूर की बात है। अन्तिम जीवन नर्क बन जाता है। न घर के रहे न घाट कें।

आदर्श स्थापित करने के लिए किसी न किसी को साहस और दृढ़ता से आगे बढ़ना होता है। अतः वानप्रस्थाश्रम का नया रुप देने के लिए निम्नलिखित कार्यक्रम अपनाना चाहिए।

जिस व्यक्ति में वानप्रस्थ वृत्ति जाग्रत हो गई हो वहः-

१. घोषणा करे कि अमूक वर्ष में वह वानप्रस्थाश्रम ग्रहण करेगा। घर रहते हुए भी वन का सा जीवन व्यतीत करेगा।
२. वह समय आने पर अपने रिश्तेदारों को तथा नगर के प्रमुख व्यक्तियों को आमंत्रित करेगा।
३. किसी विद्वान संन्यासी द्वारा विधिवत् वानप्रस्थाश्रम की दीक्षा लेगा।
४. घर गृहस्थ से बाहर एक कमरा जो पहिले से ही तैयार किया हुआ है, उसमें रहने लगेगा। न घर न वन।
५. जो धन उसके पास है उसके तीन भाग करेगा। एक भाग दान करेगा। दूसरा भाग बैंक में जमा कराकर बच्चों के नाम निर्दिष्ट कर देगा शेष

तीसरा भाग अपने बच्चों को दे देगा।

६. स्वयं भोजन नहीं बनायेगा। जो भोजन बच्चे देगें उसे ही सहर्ष स्वीकार करेगा। सात्विक भोजन की दृष्टि से उन्हें सुझाव दे देगा कि उसके लिए किस प्रकार का किस-किस समय क्या अपेक्षित है। भिक्षा रूप यदि किसी अन्य के यहाँ से कुछ प्राप्त हो जाय तो उसे स्वीकार कर सकेगा और बच्चों को सूचित कर देगा।

७. गृहस्थ के किसी मामले में दखल नहीं देगा। परिवार वाले यदि उसका परामर्श लेना चाहें तो सहर्ष देगा।

८. संस्कार विधि में वर्णित विधि से साधना करेगा। तप स्वाध्याय यज्ञ आदि का अनुष्ठान परमावश्यक समझेगा।

९. आमंत्रित होने पर उपदेश तथा यज्ञादि में सहयोग देगा। जीवन के व्यवसाय करता रहेगा परन्तु पारिश्रमिक नहीं लेगा।

१०. निम्नलिखित का जाप सहायक तथा उपयुक्त रहेगा।

ओ३म् - परि माग्ने दुश्चरिताद्बाधस्वा मा सुचरिते भज।
उदायुषा स्वायुषोदस्थाममृता अनु।

यजु० ४/२८

सम्पादक महोदया इस विषय में पाठकों के सुझाव प्राप्त करें।

विद्या सागर दीक्षित
१८/४/९८
हस्तिनापुर

कितना अच्छा हो यदि सार्वदेशिक आर्य सभा कोई ऐसी संस्था खोले जिसमें इस प्रकार के अवैतनिक सेवक मिलकर राष्ट्र निर्माण में सहायता दें जैसा कि राम कृष्णा मिशन करता है।

वि० सा० दीक्षित

अन्तिम कविता

मैं पिता की आत्मा हूं मां हृदय उद्गार हूं मैं।
देवि ! तब मन्दिर बनाकर, अर्चना तेरी करूंगा।
काट बन्धन श्रृंखलायें, प्राण भी अर्पित करूंगा।।
मां मुझे वर वरदान दे! मैं जब कभी भी देह धारुं।
कोख से लूं जन्म तेरी पार भवसागर उतारूं।
मैं अजर हूं मैं अमर हूं। अभय अविरल राग हूं मैं।।
स्नेह के सम्मान का शुचि श्वेत स्वर्णपराग हूं मैं।।
राष्ट्र गौरव गीत हूं मैं। या धधकती आग आग हूं मैं।
मां हृदय उदगार हूं मैं।

प्रिय पाल

आदरणीय पिता जी श्री प्रियपाल जी की अंतिम कविता अप्रैल १६७० की समीक्षा भावार्थ उद्गार पूज्य गुरुदेव श्री विद्यासागर दीक्षित जी ने इस प्रकार अपने पत्र के माध्यम से प्रस्तुत किए हैं-

पृष्ठ भूमि

ईश्वर जीव और प्रकृति तीन अनादि सत्ताए हैं। शरीर अदलता बदलता वस्त्र तुल्य है परन्तु जीव अजर अमर व अविनाशी है यह सब ग्रन्थो का सार है वही सार इस अन्तिम कविता में मुखर हो उठा है। ये उद्गार उस शरीर के नहीं है जिसे हम प्रिय प्रियपाल के नाम से जानते थे । वे तो उस अजर अमर अविनाशी आत्मा के उद्गार थे जो आज भी हैं और सदैव रहेगा हमें तो शरीर का रूप स्मरण है परन्तु आत्मा के तो केवल गुण ही शेष रह जाते हैं। जो इस प्रकार की कविताओं के रूप में सुरक्षित रहते हैं। ये तो आत्मा के स्वर हैं। वाह वाह कहां से उत्पन्न हुये ये विचार! 'आत्मा वै जायते पुत्रः' क्या अभिषेक व अभिनीत तुम से प्रथक हैं? बीज को भूमि माता के गर्भ में स्थापित करने के उपरान्त समय आने पर वह अंकुरित होता है। बढ़ते बढ़ते वह पूर्ण वृक्ष बन जाता है और यह गीत गाता है:-

मैं पिता की आत्मा हूं (गर्व पूर्वक उदघोष)

मां हृदय उदगार हूं मै। (प्रेम आभार उद्‌गार)
देवि तव मंदिर बनाकर (कौन सा मंदिर मन मंदिर)
मन मंदिर में गाफिला झाड़ू रोज लगाया करा। अर्चना तेरी करूंगा किस लिए? अभिनीत सी सन्तान पाकर अभिषेक मैं तेरा करूंगा।
काट बंधन श्रृंखलाए प्राण भी अर्पित करूंगा - क्यों?
क्योंकि प्राणों से कम देना अधूरी अर्चना होगी व प्राण से अधिक प्यारा और कुछ है नहीं
मां मुझे वरदान दे क्या?

मैं जब कभी भी देह धारूं कैसी सुन्दर कामना है? अमर अविनाशी बार बार जन्म लेना चाहता है क्यों? किसी निजी स्वार्थ के लिए? ना हरगिज नहीं। स्वार्थ नहीं। स्वयं पार उतरना नहीं चाहता। उतारू किसे उतारु?

मां हृदय उद्‌गार हूं मां के उद्‌गार पूरे करने हैं उसे पार उतारना है मां भी साधारण मां नहीं मां अमर भारती है।

भारत वर्ष को फिर पुण्य भूमि बनाइये। क्या इन पंक्तियों का रचयिता कभी मर सकता है वे स्वर अमर है।

मैं अजर हूं मैं अमर हूं अभय अविरल राग हूं मैं

आत्माए अनादि है अतः राम कृष्ण आदि सभी अमर हैं आज भी है हमारे बीच है परन्तु पहिचान नहीं पाते कौन किस किस रूप में है क्यों? क्योंकि मोह का पर्दा पड़ा है जो प्रवीण है वे देखते हैं स्पष्ट देखते हैं।

अविरल राग हूं मैं स्नेह के सम्मान का शुचि श्वेत स्वर्ण पराग हूं मैं।

कौन सी आग? जो हमारे क्रांतिकारी बंधुओं के हृदय में धधकती या जो कभी शांत न हुई और न होगी।

वि० सा० दीक्षित
हस्तिनापुर

हम भले ही अपने दोष किसी को बतायें नहीं, परंतु वे छिपते नहीं। अतः उन्हें छिपाने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए। अलबत्ता जाने हुए दोष को दोहराना नहीं चाहिए। छोटे बच्चे तक हमारे दोषों को पहिचान लेते हैं। अतः खुलकर स्वीकार करके उन्हें दूर करने का प्रयत्न भी करना चाहिए। उपदेशों की अपेक्षा आदर्श जीवन व्यतीत करना अच्छा है।

Example is better than precept, हर दोष का एक प्रतिपक्षी गुण होता है। उसका अभ्यास करके इन दोषों को दबाया जा सकता है।

विश्वविख्यात दार्शनिक सोक्रेटीज अपने शिष्यों के बीच बैठे हुए बातें कर रहे थे। वहां एक Physiognomist चेहरे को देखकर चरित्र वर्णन करने वाला आ पहुंचा। उसे आदर पूर्वक बैठाया तो उसने कहा, तुम्हारे नथुने बहुत बड़े हैं-तुम तो बड़े क्रोधी हो। तुम्हारे होंठ बहुत छोटे हैं-तुम तो बहुत लोभी हो। तुम्हारी गर्दन छोटी है-तुम तो देशद्रोही बनोगे। 'इत्यादि-इत्यादि उसने बहुत सी बातें बतायीं। सोक्रेटीज ने उसे धन्यवाद देकर विदा किया तो शिष्य कहने लगे, "यह तो बड़ा दुष्ट था, आपने इसे मान क्यों दिया?" सोक्रेटीज बोले - "जो कुछ उसने बताया है, वह सब ठीक है, मेरे अंदर यह सभी दोष हैं, लेकिन उससे एक भूल हो गयी।" शिष्यों ने पूछा - "वह क्या?" उन्होने उत्तर दिया, "वह मेरे अन्तः के विषय में बताना भूल गया। मैं अपने इन सभी दोषों को अपने विवेक के द्वारा गुणों मे बदल देता हूं।"

शिक्षा - योग शास्त्र का गूढ़ अध्ययन व योगाभ्यास करके हम भी अपने दोषों को गुणों में बदल सकते हैं।

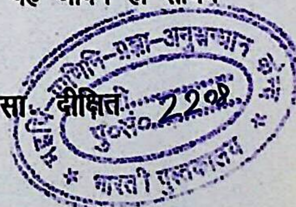
वि.सा. दीक्षित

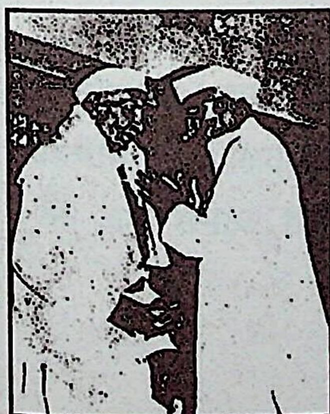
अमृत वचन

किसी व्यक्ति का जीवन समझना हो तो उसके अंतिम क्षणों का अध्ययन करना चाहिए। गुरुदत्त विज्ञान का पण्डित परन्तु पक्का नास्तिक था। केवल सत्य की खोज के लिए महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के पीछे लग गया। महर्षि ने अंतिम समय में सबको अलग करके अपने आपको एक कोठरी में बन्द कर लिया - आदेश दिया कि कोई मेरे पास न आए। परन्तु गुरुदत्त को चैन कहाँ? सत्य के खोजी आराम की नींद नहीं सोते हैं। वह उस कमरे के रोशनदान से जा चिपका और महर्षि के अंतिम क्षणों का अध्ययन करने लगा। उन क्षणों का वर्णन यहां नहीं करता हूं। इतना ही समझना कि उस अंतिम दर्शन ने गुरुदत्त को परम आस्तिक तथा वेद प्रेमी बना दिया। उनका साहित्य अनुपम देन है। महापुरुषों के जीवन की अंतिम यात्रा उनके जीवन की कुंजी होती है।

यह मानव जीवन बड़े भाग्य से मिलता हैं। यह जीवन ही साधन धाम तथा मोक्ष का द्वार है।

वि. सा. दीक्षित

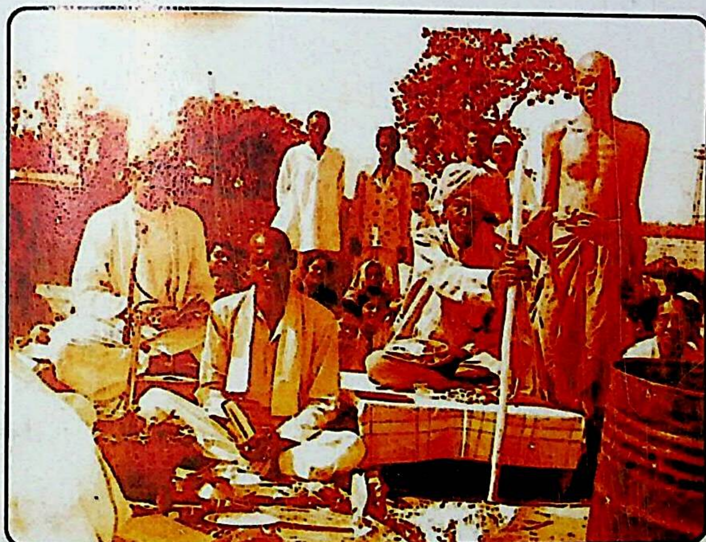




उ०प्र० के वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानियों का सम्मान प्यारे लाल शर्मा स्मारक भवन, मेरठ में आयोजित श्री आफ्ताब अहमद अलीगढ़ ६४ वर्षीय स्वतंत्रता सेनानी श्री विद्या सागर दीक्षित जी को सम्मानित करते हुये।



एक दुर्लभ चित्र



आचार्य जी के मार्गदर्शक

वीतरागी स्वामी शान्तानन्द जी (लाठी लिये हुये)
आचार्य श्री दीक्षित जी (बाएं) भूमानन्द जी (खड़े हुये)
को आर्य समाज, हस्तिनापुर (मेरठ) में दीक्षा देते हुये



आर्य समाज आर्य वानप्रस्थाश्रम, हस्तिनापुर, मे
में नवम्बर २००३ में आयोजित वेद प्रचार समार
के अवसर का चित्र



बैठे हुये : १. श्री हरिपाल शास्त्री, २. उप प्रधान, जिला सभा (गणेश पुर निवासी) ३. चौधरी सियाराम सिंह तत्कालीन प्रधान उप आर्य प्रतिनिधि सभा, मेरठ बागपत ४. डा० महावीर सिंह आर्य, वैदिक विद्वान (मेरठ विश्वविद्यालय) ५. आचार्य जी, ६. श्री कान्ती प्रसाद भटनागर, ७. वैदिक विदुषी श्रीमती कैलाश सोनी (मेरठ) ८. श्रीमती सत्यबाला जी एवं पीछे खड़े हैं आर्यसमाज हस्तिनापुर एवं रहमापुर के सदस्यगण, पदाधिकारीगण, आश्रम निवासी एवं धर्म प्रेमी वेद प्रचारक